नेपोलियन हिल

सुपर अमीर बनने की Master Key

The Master Key To Riches का हिंदी अनुवाद

VISIT…

सुपर अमीर बनने की

MASTER KEY

नेपोलियन हिल

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

सोच

सदियों पूर्व फारस के बादशाह साइरस के सलाहकार धनवान और बुद्धिमान दार्शनिक क्रोएसस ने कहा था—

"हे बादशाह! आपको याद दिलाता हूँ, आप इस सीख को अपने दिल में बिठा लें कि 'एक चक्र है जिसके इर्द-गिर्द मानव के सारे कार्यकलाप चक्कर लगाते रहते हैं और उसकी बनावट ही कुछ ऐसी है कि किसी भी मनुष्य को हमेशा भाग्यशाली बने रहने से रोकती रहती है।'

एक जीवन चक्र है, जिसके नियंत्रण में हम सभी की तकदीर है और यह विचारशक्ति के जरिए संचालित होता है।"

सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी तैयार करने का लक्ष्य आपको इसी महान् चक्र पर नियंत्रण और मास्टरी हासिल करने में मदद करना है, ताकि साधन से लेकर साध्य तक इसका परिणाम सारी वांछित प्रभुता के रूप में सामने आए। इसमें धनकुबेर बनने के वे बारह गुण भी शामिल हैं, जिनका जिक्र दूसरे अध्याय में किया गया है।

इस दर्शन का अध्ययन शुरू करनेवाले आप यह भी याद रखें कि यही चक्र किसी व्यक्ति की हमेशा भाग्यशाली बने रहने की इच्छा पूरी नहीं होने देता, लेकिन साथ किसी के हमेशा भाग्यहीन रहने की संभावना को भी नकारता है। इस चक्र का स्पष्ट संदेश है कि कोई भी व्यक्ति जीवन के मनोवांछित अभीष्ट हासिल करने के लिए पहले अपने दिलो-दिमाग को काबू में करे और एक निश्चित प्रमुख लक्ष्य पर केंद्रित करके उस दिशा में कदम बढ़ाए।

भूमिका

'अमेरिका के लोगों को मैं अपनी किस्मत का बहुत बड़ा हिस्सा सौंपता हूँ, जिसमें व्यक्तिगत उपलब्धि का दर्शन शामिल है, जिसके जरिए मैंने अपनी सारी संपदा अर्जित की है।'

यह भूमिका एक महाधनकुबेर के वसीयतनामे से शुरू करते हैं, जिसे धरती के सबसे धनाढ्य देश ने पैदा किया और इस धनकुबेर का दर्शन पाठकों के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण मोड़ ला सकता है।

यह कहानी सन् 1908 से शुरू होती है, जब एंड्रयू कार्नेगी उस व्यक्ति से मिलने गए जिस पर वे भरोसा करते थे और जिसकी लगन व निर्णय लेने की क्षमता का सम्मान करते थे। जैसा कि कार्नेगी का कहना है, उन्होंने उस व्यक्ति को यह दायित्व सौंपा कि अपनी संपत्ति का सबसे बड़ा हिस्सा अमेरिका की जनता को भेंट करे, ताकि लोग इसका राज जानें। आज 100 साल बाद आपके सामने यह कहानी इस विशाल संपदा में हिस्सेदारी के अधिकार की सूचना देने के लिए लिखी गई है और साथ में उन शर्तों की भी जानकारी देनी है, जिनके तहत आप भी वैसा कर सकते हैं।

अव्वल तो बता दें कि ये शर्तें वैसी कड़ी नहीं हैं, जो थोपी हुई जैसी लगें और पहले से ही घबराहट हो कि इस विशाल संपदा में हिस्सेदारी कैसे हो पाएगी। इसलिए हम यह कहकर आपके मन का बोझ हलका किए देते हैं कि ये शर्तें किसी भी औसत दरजे की प्रतिभावाले युवा की पहुँच के अंदर हैं। वायदे या शर्तों से जुड़ीं बातों में न कोई ट्रिक है और न ही कोई झूठा दिलासा।

इसलिए आप जान सकते हैं कि इन वायदों में वैसा कुछ है भी या नहीं, जो आप चाहते हों या जिनकी आपको जरूरत हो।

अब हम बता दें कि आखिर ये वायदे क्या हैं—

• उस फॉर्मूले का स्पष्ट विवरण जिसके जरिए आप धनकुबेर दरवाजा खोलने की मास्टर चाबी हासिल करके भरपूर लाभ उठा सकते हैं। ये वो चाबी है जो आपकी सारी समस्याओं के ताले खोलेगी और पहले की असफलताओं को अनमोल संपत्ति में बदल देगी। इससे आप आर्थिक सुरक्षा समेत धनकुबेर बनने के बारह महान् गुर जान जाएँगे।

• एंड्रयू कार्नेगी ने यह खोज उन लोगों के बीच बाँटने के लिए उपलब्ध कराई है, जो इसे प्राप्त करने में सक्षम हों। इसमें निर्देशों का भी ब्योरा है, जिसे अपनाकर आप अपनी पूरी हिस्सेदारी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

• जीवन का मुख्य लक्ष्य हासिल करने के लिए वैसे व्यक्तियों की शिक्षा, अनुभव और कारोबारी योग्यताओं का विवरण होना, जिनकी मदद से आप भरपूर लाभवाला हुनर सीख सकते हैं। ऐसे सफल जानकारों की क्षमता पूरी सफलता से हासिल करने में व्यावहारिक साधन उनके लिए भी हासिल हो सकते हैं,जो पर्याप्त शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए। इन साधनों से औपचारिक शिक्षा के नुकसान को लाभ में बदला जा सकता है।

• 500 से ज्यादा सफल लोगों की गलतियाँ और उन्हें सुधारने के अनुभव, जिनके जरिए उन

लोगों ने सफलता के दर्शन जाने तथा अपनी उपलब्धियाँ सुसंगठित कीं। सफलता का पर्याय माने जानेवाले वैसे व्यक्तियों में हेनरी फोर्ड, थॉमस ए. एडीसन, विलियम रिग्ले, जूनियर साइरस एच.के. कुर्टिस, जे. ओग्डेन आर्मर, एल्बर्ट हुबार्ड, चार्ल्स एम. श्वाब, एफ.डब्ल्यू. बूल्वर्थ, फ्रैंक ए. वेंडरलिप, एडवर्ड बोक, डॉ. एलेग्जेंडर ग्राहम बेल, क्लेरेंस डैरो और लूथर बरबैंक शामिल हैं। एक निश्चित योजना के जरिए कोई भी वेतनभोगी या मजदूरी कमानेवाला अपने नियोक्ता की अनुमति और पूरे सहयोग से अपनी आय में उछाल ला सकता है।

• एक निश्चित योजना के जरिए दूसरे के लिए काम करनेवाले पुरुष या महिलाएँ अपना कारोबार या व्यवसाय शुरू कर सकते हैं, जिसमें सफलता के चांस औसत से ज्यादा हैं। कोई भी व्यवसायी एक निश्चित योजना के तहत अपने लिए स्थायी ग्राहक बना सकता है और फिर उन्हीं की सहायता से नए ग्राहकों को आमंत्रित कर सकता है। उन्हें भी स्थायी खरीदार बनाना आसान है। जीवन बीमा या इसी तरह की उपयोगी सेवाओं के सेल्समैन निश्चित योजना बनाकर ऐसा हुनर अपना सकते हैं, ताकि खरीदार उसके साथ काम करने की इच्छा स्वयं जाहिर करें और नए खरीदार खोजने में सहायक हों। कंपनी नियोक्ता भी एक निश्चित योजना के अंतर्गत कर्मचारियों के साथ निजी दोस्तों जैसा संबंध बनाकर अपने व्यवसाय में ज्यादा मुनाफा कमा सकता है। मैत्रीपूर्ण माहौल वाली ऐसी कंपनी मालिक के साथ-साथ कर्मचारियों के लिए भी लाभप्रद है।

यहाँ आपके सामने मेरे वायदे का स्पष्ट बयान प्रस्तुत है। इसके माध्यम से अगर आप संपन्नता का पूरा फायदा चाहते हैं तो उसकी पहली शर्त यह है कि इस किताब को दो बार पढ़ें और लाइन-बाई-लाइन पढ़ें तथा पढ़ने के क्रम में इस पर सोचते जाएँ।

एक निश्चित मुकाम के बिना कुछ हासिल नहीं होता। अमेरिका दुनिया का 'सबसे अमीर और स्वतंत्र' देश ऐसे ही नहीं माना जाता है। यह महज एक चांस नहीं है। इस देश ने एक निश्चित और सुनियोजित लक्ष्य तय करके खुद को प्रभुता का पर्याय बनाया है। अमेरिकी समृद्धि के सारे रहस्य हमने एक-एक करके स्पष्ट रूप से परिभाषित किए हैं।

प्रभुता की इच्छा स्वार्थवश हो सकती है, मगर हम सभी जानते हैं कि ऐसी इच्छा स्वाभाविक है। एंड्रयू कार्नेगी अपनी विशाल संपदा त्यागने के समय यह बात समझते थे। इसलिए लोगों के साथ डीलिंग के जीवन भर के अनुभव के आधार पर वे अपने बुद्धिकौशल से निर्देशित हुए और उन्होंने कुछ खास शर्तें रखीं ताकि जो कोई इसका अंश भी हासिल करना चाहे, वह अवश्य उनका पालन करे।

कार्नेगी ने अपनी संपदा बाँटने का बिलकुल नायाब तरीका अपनाया, क्योंकि वे कुछ भी किए बगैर कुछ हासिल करने की मानवीय कमजोरी से परिचित थे। वे यह भी जानते थे कि अतीत से वर्तमान तक लोग बिना श्रम किए स्वर्ण पाने के जुगाड़ में रहते हैं, चाहे वे समाज के किसी भी वर्ग या क्षेत्र के क्यों न हों।

कार्नेगी यह भी जानते थे कि किसी भी रूप में दिया गया धन का उपहार रिटर्न के बारे में विचार किए बिना देने से पानेवाले को फायदे से ज्यादा नुकसान पहुँचा सकता है। इसीलिए उन्होंने बड़ी अकलमंदी से इसमें कुछ खास शर्तें जोड़ दीं, ताकि पानेवाला इस सामान्य कमजोरी से बचा रहे कि हाथ-पैर हिलाए बिना ही कुछ मिल जाए।

जरा इतिहास में आएँ : मोसेज और जोशुआ द्वारा जिन बच्चों की तलाश में स्काउट्स भेजे गए, वे मिस्र में ईंटें बनाते, गुलामी करते हुए भागकर फराओस पहुँच गए तथा वहाँ काफी समय तक हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहे। प्रभुता की जमीन में पहुँचने के लिए समुद्र पार करने के इंतजार में बैठे रहे। इसके पीछे कुछ भी दिए बगैर कुछ हासिल करने की सोच के सिवाय दूसरा कोई कारण नहीं था। प्रभुतावाले उस देश के नेताओं को अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए भारी विरोध के बावजूद लोगों का विश्वास जीता और इसे शुरुआती प्रयत्न के रूप में लिया।

इसी से मिलती-जुलती कहानी पुराने इंग्लैंड के वंचित वर्ग के नई दुनिया की ओर पलायनवाली है। वे न केवल प्रचुर कमाईवाली जमीन की तलाश में आए, बल्कि उन्हें निजी तौर पर प्रभुता के अवसर तलाशने के साथ-साथ अभिव्यक्ति और पूजा की आजादी भी चाहिए थी। इन प्रवासियों को अपने अभियान में जो अपार सफलता मिली, आधुनिक इतिहास में इसी वर्ग द्वारा वैसी उपलब्धि हासिल करने का इसका उदाहरण नहीं मिलता।

उन्होंने एक प्रभुता से परिपूर्ण देश विकसित किया। इस सफलता के पीछे एक ठोस दर्शन और निश्चित लक्ष्य हासिल करने की सोच काम कर रही थी, जिसे अनेक बार एंड्रयू कार्नेगी ने मान्यता दी। उन्होंने अमेरिकियों के लिए कुछ सख्त नियम बनाए, जो मास्टर चाबी के रूप में जाने जाते हैं, ताकि इसे घुमाकर वे भी धनकुबेर बन सकें।

वर्षों के उतार-चढ़ाव के बावजूद तीर्थयात्रियों की बाद की वैसी पीढ़ी ने एक ऐसी सभ्यता विकसित की, जिसके बारे में दुनिया उससे पहले नहीं जानती थी—ऐसी संस्कृति जो किसी भी समय की संस्कृतियों से महान् साबित हुई, रहन-सहन का ऐसा स्तर जिससे ऊँचा उससे पहले मानव समाज ने नहीं देखा था—सुविधा, आराम और विलासिता के सारे साधन सबके लिए उपलब्ध हुए जो उससे पहले दुनिया के लोग सोच नहीं सकते थे। ये सारी सुविधाएँ नए उभरते लोकतंत्र की ठोस आधारशिला के परिणाम हैं, वहाँ की जनता की दृढ़ इच्छाशक्ति का सबूत है, जो व्यावहारिक योजना की बदौलत सफल हुए।

ऐसी सभ्यता के बारे में मानवता के पूरे इतिहास में उसके पहले कोई जिक्र नहीं मिलता। इतिहास में ऐसे कई स्थान मिलते हैं, जब सभ्यता का विकास कई चरणों में विभक्त मिलता है, मगर एक खास युग की सभ्यता अपेक्षाकृत कुछ ही प्रतिशत लोगों तक सिमटी रही।

अतीत और वर्तमान की इन अवधियों के जिस अंतर का आज हम लुत्फ उठा रहे हैं, वह इस तथ्य पर आधारित है कि अतीत का अवाम संप्रभु शासकों के अधीन रहा जिनमें ज्यादातर अत्याचारी थे। आज हम जिस तरह के जीवन स्तर का आनंद ले रहे हैं, इसके बारे में उस समय के सम्राट् भी नहीं जानते थे।

इस तरह हम बीते दिनों और आज के सांस्कृतिक युग के अंतर का प्रतिनिधित्व करते हैं। आप जरा इस बात का अध्ययन करें कि कैसे आज अमेरिका में औसत और दोयम दरजे के लोग भी मुफ्त शिक्षा, मुफ्त आमोद-प्रमोद, रेडियो, ऑटोमोबाइल, हवाई-जहाज,हाईवे नेटवर्क, संचार के अत्याधुनिक माध्यम तथा मुफ्त पूजा के मजे ले रहे हैं। इसके अलावा हजारों ऐसी सुविधाएँ अमेरिका में आज जनसाधारण की संपत्ति हैं, जिनसे अतीत में मजदूर वंचित किए जाते रहे हैं। इरादे और लक्ष्य में मौलिक सोच की वजह से आए वर्तमान तथा अतीत के अंतर स्पष्ट हैं। यह व्यावहारिक विकास के कारण संभव हो पाया है,

जो अमेरिकियों के जीवन जीने का अपना अलग ढंग है। यूरोप में या पुराने विश्व के किसी अन्य हिस्से में पहले कभी ऐसा नहीं देखा गया।

अमेरिका में महिलाओं और पुरुषों को अपने विवेक से कुछ भी करने की छूट है। अमेरिकियों की अभिव्यक्ति, प्रेस, पूजा और राजनीतिक गतिविधियों के साथ-साथ अपनी मरजी और रुचि के मुताबिक किसी भी क्षेत्र में व्यक्तिगत तौर पर पहल करने की आजादी है और सरकार की ओर से उन्हें अपने काम का भरपूर दाम दिलाने का आश्वासन प्राप्त है।

दरअसल, देश के विकास की बुनियाद जीवन की खुशियाँ और आजादी पर टिकी है, जो प्रत्येक नागरिक की संपन्नता के लक्ष्य पर आधारित कार्यक्रम से संचालित है।

पहले कामगारों ने निजी तौर पर पहल की, फिर वह सामूहिक में बदल गई और उसके बाद उनके प्रयास कॉर्पोरेट सुरक्षा और उसकी देख-रेख में बदल गए। कामगारों और गैर कामगारों के पूँजी निवेश से कर्मचारियों ने कारोबारी कला सीखी तथा प्रतियोगी व्यवसाय भी सीखा। व्यक्तिगत पहल और ईमानदारीपूर्वक उत्पादन की आवश्यकता ने कर्मचारियों को विज्ञापन का तौर-तरीका भी सिखाया।

कम लागत में बेहतर उत्पादन के ये सारे उपाय सही दिशा में उठाए गए कदम साबित हुए, ताकि ज्यादा लोग अमेरिकी उत्पाद खरीद सकें और ज्यादा लोगों को सामान बनाने के काम में लगाया जा सके। संक्षेप में बताएँ तो यही अमेरिकी व्यवस्था ही जड़ है, अपने पर और एक-दूसरे पर भरोसा, आपसी विश्वास तथा सहयोग की भावना और निजी पहल के मानवीय संबंध में साफगोई इस व्यवस्था का दिल है।

अमेरिकी जन जीवन के नजरिए से धनकुबेर बनने के रास्ते की दास्तान पढ़ते हुए पाठकों के लिए जरूरी है कि इसमें अपनी कहानी का भी कुछ अंश जोड़ें और जो कुछ हम यहाँ कह रहे हैं, उसकी तुलना अपने अनुभव से करें। इससे पाठकों को धनकुबेर बनने के अमेरिकी सूत्रों के इतिहास की सही तसवीर मिलेगी, जो आवश्यक भी है, ताकि वे इसमें अपना भी उपयुक्त अंशदान सुनिश्चित कर सकें।

इस उत्साह से हम मास्टर चाबी का विवरण प्रस्तुत करते हैं, जिसके जरिए अमीर बनने की पूरी जानकारी मिल सकती है, जो अमेरिकी जानते हैं।

पहले तो यह स्पष्ट करते चलें कि जब हम 'धनकुबेर' की बात करते हैं, तो उससे हमारा तात्पर्य सिर्फ बैंक-बैलेंस या अन्य संपत्तियों के मालिकों से नहीं, बल्कि सभी धनकुबेरों से है।

इससे हमारा मतलब आजादी और छूट जैसी संपत्ति से भी है, जो हमें किसी भी अन्य देश से ज्यादा प्राप्त है।

हमारा तात्पर्य मानवीय संबंधों की संपदा से है, जिसके माध्यम से प्रत्येक अमेरिकी नागरिक ने अपनी पसंद के मुताबिक निजी पहल का भरपूर लाभ उठाया। स्वतंत्र उद्यम का अमेरिकी धनसंचय उद्योग पूरे विश्व के लिए ईर्ष्या का कारण बना हुआ है। इसके साथ-साथ अमेरिका स्वतंत्र प्रेस, मुफ्त पब्लिक स्कूल और पूजा स्थल की संपदा का भी धनी है।

इस तरह जब हम 'धनकुबेर' की बात करते हैं तो उसमें हर प्रकार से सुखी- संपन्न जीवन का संदर्भ आता है, जो आज अमेरिका के लोगों को हर जगह उपलब्ध है और मामूली प्रयत्न से हासिल किया जा सकता है। हम यहाँ किसी को यह सुझाव नहीं देना चाहते हैं कि धनी बनने का कौन सा लक्ष्य तय करना चाहिए और कितना धन कमाना चाहिए।

हम किसी व्यक्ति को यह नहीं बताना चाहते कि जीवन कैसे जीएँ, लेकिन अमेरिका के गरीब और अमीर दोनों को देखने के बाद हमने जाना कि सिर्फ ऐशो-आराम की भौतिक वस्तुएँ खुशहाली की गारंटी नहीं हैं।

हमें अभी तक कोई ऐसा खुश व्यक्ति नहीं मिला, जो दूसरों को लाभान्वित करने की सेवाओं से जुड़ा न हो और हम ऐसे कई अमीरों को जानते हैं, जिन्हें भौतिक सुखों के सारे साधन प्राप्त होने के बावजूद सुख न मिला हो।

इन बातों का जिक्र हम उनकी परत खोलने के लिए कर रहे हैं जिन्होंने भौतिक सुविधाओं की प्रभुता हासिल करने के बाद इसे हलके ढंग से लिया और जीवन की अनमोल वस्तुओं को तवज्जो नहीं दी, जो पैसे से हासिल नहीं की जा सकतीं।

1

धनकुबेर बनने की शुरुआत

दुनिया के सबसे बड़े होटल के सबसे बड़े कॉन्फ्रेंस हॉल में वे इकट्ठे हुए। यह वो जगह है, जहाँ हमारे समय के सभी महान् कुछ कर गुजरनेवाले वक्ता जुटते हैं। लेकिन आज अब तक का सबसे बड़ा श्रोता वर्ग एक व्यक्ति को देखना चाहता था। वे धनाढ्य बनने के गुण सीख रहे थे और यह जानना चाहते थे कि उसके स्तर की सफलता कैसे हासिल की जा सकती है। उस समारोह को प्रचारित करनेवाले विज्ञापनों में वैसे वक्ता का नाम नहीं दिया गया, मगर उसे अरबों डॉलर का मालिक बताया गया।

बड़े देशों के नेताओं ने उससे सलाह माँगी थी। टॉप अंतरराष्ट्रीय कॉर्पोरेट कंपनियों ने उससे फीडबैक माँगा था। मगर आज वह शख्स वैसे विशाल श्रोता वर्ग के बीच बोलना चाहता था, जो उसकी इस शानदार सफलता का राज जानने को बेताव था कि आखिर कैसे उसने उन्हीं लोगों के बीच से निकलकर अपनी विशिष्टतम पहचान बनाई।

वह अपने ढंग का एक अलग वक्ता था, जिसे सुनने के लिए कोई शुल्क नहीं था और उसे यह भी बताने की जरूरत नहीं थी कि पहले आप उसके किसी सम्मेलन में शामिल हुए हैं या नहीं। लेकिन भागीदारी के इच्छुक व्यक्तियों को एक वक्तव्य पर सहमति देनी थी कि सम्मेलन समाप्त होने तक उन्होंने क्या सीखा—उस संबंध में खुलकर विचारों का आदान-प्रदान करें।

कोई नहीं जानता था कि चर्चा में फोकस किस पर होगा, लेकिन समाज के हर वर्ग के लोग भाग लेने के लिए आमंत्रित थे। डॉक्टर, वकील, रात के डॉक्टर, टैक्सी चालक, दुकानदार, इंजीनियर, निर्माण मजदूर, स्कूल शिक्षक ये सभी इस वक्ता को सुनने के इंतजार में थे कि देखें, वह कहता क्या है, जो उन्हें धनकुबेर बनने के रास्ते की ओर ले जाएगा।

सभी धर्मों के पुजारी उपदेशक इस आशा में जुटे थे कि शायद इस वक्ता के भाषण से ऐसे प्रेरक विचार मिल जाएँ, जो वे अपनी मंडली तक पहुँचा सकें। अखबारों के रिपोर्टर मधुमक्खी की तरह अधिक संख्या में थे। वक्ता के मंच के चारों ओर सिर्फ मीडियाकर्मियों के कैमरे ही नजर आ रहे थे। धीरे से मंच का परदा सरकता है और खूबसूरत लिबास में व्यवसायी के संकेत वाला काला चोगा लगाए एक स्मार्ट व्यक्ति मंच पर हाथ ऊपर करके श्रोताओं को शांति बनाए रखने का इशारा करता है। बातचीत बंद हो जाती है और बिलकुल चुप्पी छा जाती है। परिचय संक्षिप्त था। उस व्यक्ति ने सरलता से कहा —"श्रोताओ! दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति का परिचय देने में मैं फख्र महसूस कर रहा हूँ। वे सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी के बारे में आपको जानकारी देने आए हैं।" ठीक उसी समय एक लंबा व्यक्ति हाथों में ढेर सारे कागजात लिये मंच पर खड़ा होता है।

लगभग 60 की उम्र का दिखनेवाला वह विशिष्ट वक्ता काले-नीले सूट और स्वर्णजटित शर्ट-टाई में श्रोताओं की ओर कुछ पल देखता है। उसके हीरे के कफ चिह्न मंच के प्रकाश में

चमकते नजर आते हैं और उसके साथ ही कैमरे बार-बार चमक उठते हैं। उसके घने घुँघराले भूरे बाल और पहनावे से ही समृद्धि झलकती है। श्रोताओं पर पूरा नियंत्रण करने के इत्मीनान के बाद उसने बोलना शुरू किया, मैं जो कुछ अभी आपसे कहूँगा, वह आपको तंत्र-मंत्र जैसा लग सकता है, लेकिन मेरा आग्रह है कि आप मेरी पूरी बात सुनें। आप यहाँ सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी के बारे में जानने आए हैं। जीवन में सबकुछ अच्छा हासिल करने की स्वाभाविक मानवीय इच्छा के कारण आप यहाँ आए हैं। हर एक की यह इच्छा होती है। आप में से कुछ लोग आर्थिक सुरक्षा चाहते हैं, जो सिर्फ पैसा दे सकता है। कुछ लोग प्रतिभाओं के लिए पुस्तिका चाहते हैं, ताकि धन कमाने के अपने रास्ते निकालने का आनंद ले सकें।

आप में से कुछ लोग धन कमाने का आसान रास्ता चाहते हैं, इस उम्मीद में कि इसमें कुछ भी न करना पड़े। ऐसा तो सब चाहते हैं। आपके फायदे के लिए इसी इच्छा में अपने अनुभव के आधार पर मैं सुधार करना चाहता हूँ। मैंने अनुभव से सीखा है कि ऐसा कोई फॉर्मूला नहीं है कि कुछ भी किए बिना काफी कुछ हाथ लग जाए, लेकिन एक रास्ते से धन कमाने का गुण हासिल होना निश्चित है और यह मास्टर चाबी से मिल सकता है, जो मैं बता रहा हूँ। श्रोता लगातार चुप रहे, कइयों को इस विशिष्ट वक्ता की बात बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई लगी। अगर वह जानी-मानी हस्ती नहीं होता, तो कई लोग उसे ग्रेट हॉल से निकालकर अपने पैसे वापस करने की माँग कर डालते। लोग उस व्यक्ति के नाम-काम से परिचित होने के कारण ऐसी भावनाओं से ऊपर उठकर अपनी सीटों पर बैठे रहे। यही उस व्यक्ति का संदेश था।

यह मास्टर चाबी ऐसा अमोघ यंत्र है, जिसे धारण करनेवाला इससे सभी समस्याओं के हलवाला दरवाजा खोल सकता है। इसकी जादुई ताकत का अंदाजा हासिल करने पर ही लग सकता है।

यह अच्छे स्वास्थ्य का दरवाजा खोलता है।

यह इश्क और रोमांस का दरवाजा खोलता है।

यह दोस्ती का दरवाजा खोलता है, क्योंकि मास्टर चाबी से ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्व हासिल होता है, जिससे हर कोई दोस्ती करना चाहेगा।

इससे वे तौर-तरीके मालूम हो जाते हैं, जिनसे किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति, असफलता, निराशा, गलती, गलत निर्णय और पहले की पराजय को अनमोल उपलब्धि में तब्दील किया जा सकता है।

निराशा को आशा में बदलनेवाली यह चाबी ऐसा फॉर्मूला है, जिसे घुमाकर विवेक का अकूत भंडार मिल सकता है। इस भरोसेमंद उपाय से विनम्र लोग पैसा, ताकत, नाम, शोहरत सब हासिल कर सकते हैं। यह हताशा में समय से पहले बूढ़े नजर आनेवाले युवकों के अंदर नई ऊर्जा, जोश और उत्साह भर देता है।

इसके जरिए दिमाग पर पूरी तरह नियंत्रण रखने का तरीका मालूम हो जाता है, जिससे दिल की भावनाएँ और सोचने की क्षमता वश में रहती हैं। अपर्याप्त और मामूली स्कूली शिक्षा हासिल करनेवाले जिन कमियों की वजह से दौड़ में पिछड़ जाते हैं, वे भी इसके जरिए धीरे-धीरे वैसे अवसर पाने के हकदार हो सकते हैं, जो अच्छी शिक्षा प्राप्त लोगों को

मिलते हैं।

अंत में, यह धनकुबेर बनने के उन बारह जीवन सूत्रों के भी दरवाजे खोलता है, जिनका विवरण मैं कुछ क्षणों में आपके सामने प्रस्तुत करूँगा।

जो कुछ मैं कहूँगा, उसे ध्यान से सुनें और सिर्फ कान ही नहीं, दिल और दिमाग भी खोलकर सुनें। याद रहे, कोई बात तब तक नहीं सुनी जा सकती, जब तक कि व्यक्ति सुनने के लिए तैयार न हो। ऐसी तैयारी में जितनी बातें शामिल हैं, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है, उद्देश्य के प्रति लगन। इसमें यह बात भी मायने रखती है कि दिल से उसके बारे में सोचें, वास्तविकता को स्वीकारें, क्योंकि कोई भी व्यक्ति सबकुछ नहीं जानता। मानव का सम्मिलित ज्ञान युद्ध में एक-दूसरे को बरबाद करने की प्रवृत्ति से हमें नहीं बचा सकता, इसके साथ ही दूसरे के श्रम के फल को चुराने और धोखा देने से भी हमें नहीं रोक सकता। हम आपको ऐसे तथ्य देंगे और उन सिद्धांतों के बारे में बताएँगे, जो आप लोगों में से बहुतों ने सुने भी नहीं होंगे। ये बातें सिर्फ वही लोग जानते हैं, जो हमारी सलाह मानने को तैयार हैं। मैं अभी तो कुछ ही वैसे व्यक्तियों का जिक्र करूँगा, लेकिन उनकी संख्या बढ़ रही है और वे फेलोशिप डिग्री हासिल कर चुके हैं।

फेलोशिप की डिग्री हासिल करना

फेलोशिप हर तबके की महिलाओं और पुरुषों से बनती है, चाहे वे किसी भी जाति या राष्ट्रीयता के क्यों न हों। इसका उद्देश्य उन कायदों की जानकारी देना है, जो विश्व बौद्धिक संपदा में भागीदारी के उत्साह से उपलब्ध होते हैं। फेलोशिप गैर-धार्मिक और गैर-व्यावसायिक है। इसके सदस्य व्यक्तिगत तौर पर कार्य करते हैं। इसके अधिकृत नेता नहीं होते, लेकिन फेलोशिप डिग्री की योग्यता पूरी करनेवाले अपने आप में नेता हो जाते हैं।

फेलोशिप सदस्यता की एक ही शर्त है और वो यह है कि इस डिग्री के लिए योग्य साबित होनेवाले व्यक्ति इन निर्देशों के जरिए प्राप्त लाभ अन्य लोगों के साथ भी शेयर करेंगे, अधिकाधिक लोगों के साथ जो लाभ पाने के लिए खुद को तैयार करने की ख्वाहिश रखते हों।

फेलोशिप पुरुषों और महिलाओं को आपस में इस तरह का मेलजोल बढ़ाने को तैयार करती है, जैसा भाई-बहन में होता है। यह सबके लिए उपलब्ध भौतिक सुखों की प्रभुता को मान्यता देती है और एक ऐसी कार्ययोजना बनाती है, ताकि हर व्यक्ति अपनी योग्यता के आधार पर ये सुख शेयर करे, जो उपयोगी सेवाओं में आता है।

यह कुछ के लिए बहुत ज्यादा और बहुतों के लिए थोड़ेवाले विचार को नकारता है, साथ ही वैसे लोगों को निरुत्साहित करता है, जो बिना हाथ-पैर हिलाए कुछ हासिल करना चाहते हैं। यह वैसी प्रवृत्ति को भी फलने नहीं देता कि पैसा कुछ ही व्यक्तियों के हाथ में केंद्रित रहे, जो अपने लालच में इतना पैसा जमा करने को बेताब हों, जितने की उन्हें जरूरत नहीं है और अन्य लोगों तक पहुँचाया जाए, जो उस पैसे से आर्थिक सुरक्षा प्राप्त कर सकें।

फेलोशिप के आगे कठिन दायित्व हैं। सभ्यता फले-फूले और पीछे की ओर नहीं, आगे की ओर बढ़े। हमें साथ रहना, बाँह में बाँह डालकर साथ चलना सीखना होगा। दुनिया का

काम इस तरह करना होगा, जिसमें गरीबी न हो, दुःख न हो और लोग भय से काँपते हुए न जीएँ। फेलोशिप सदस्यों ने अपने जीवन की कोई भी खुशी और सुख-सुविधा का त्याग किए बिना तथा व्यक्तिगत तौर पर कोई अधिकार खोए बिना, यह सब करना सीखा है। उन्हीं की यह खोज है कि खुशी हासिल करने का एकमात्र जरिया फेलोशिप पथ है। मैं आपको फेलोशिप के बारे में बताने आया हूँ और आपके हाथ में वह गुच्छा सौंपूँगा, जिसे मैं धनवान् बनने के बारह महान् उपाय मानता हूँ।

धनकुबेर बनने के बारह महान् उपायों का बखान करने से पहले आपको मैं कुछ ऐसी संपत्ति के बारे में बताता चलूँ, जो पहले से आपके पास है, लेकिन ज्यादातर लोग इसके प्रति सजग नहीं होंगे।

पहले तो यह जानें कि आप सभी बहुआयामी व्यक्तित्व रखते हैं, लेकिन शायद खुद को आप एकल व्यक्तित्ववाला मानते हैं। आप में से हर दूसरा व्यक्ति कम-से-कम दो अलग-अलग व्यक्तित्ववाला है और कई तो उससे ज्यादा व्यक्तित्व रखते हैं।

आप अपनी ओर तब देखते हैं, जब आईना सामने होता है। वह आपकी बाहरी चेष्टा है, लेकिन आपका अन्य आत्म सिर्फ घर के अंदर रहता है। उस घर में दो व्यक्तित्व होते हैं, जिनका आपस में शाश्वत टकराव चलता रहता है। उसमें एक तो व्यक्ति का नकारात्मक पहलू है, जो भय, संदेह, गरीबी, खराब सेहत के बारे में सोचता है और उसी वातावरण में रहता है। यह आत्म सिर्फ विफलता की संभावना देखता है और विरले ही निराश होता है। यह जीवन की वैसी परिस्थितियों के बारे में सोचता है जो आप चाहते नहीं हैं, लेकिन लगता है कि गरीबी, लालच, अंधविश्वास, भय, संदेह, चिंता और बीमारी में जीने की मजबूरी है।

लेकिन आपके उसी घर के अंदर 'दूसरा आत्म' भी है, जो व्यक्तित्व का सकारात्मक पहलू है। यह संपन्नता, अच्छी सेहत, प्रेम और मित्रता, व्यक्तिगत उपलब्धि, सार्थक दृष्टि और दूसरों की सेवा के बारे में सोचता है।

यह सोच गलतियों से बचाते हुए, सारे वरदान हासिल करने के रास्ते की ओर ले जाती है। एकमात्र यही आत्म बारह महान् धनकुबेरों को मान्यता देने में सक्षम और उपयुक्त है। इसी आत्म के जरिए धनकुबेर बनने की चाबी हासिल हो सकती है।

मैं जो बता रहा हूँ वह कोई काल्पनिक व्यक्तित्व नहीं है। यह यथार्थ है और वैज्ञानिक जाँच से इसकी प्रामाणिकता सिद्ध हुई है। आप में से कइयों ने शायद मार्टिन सेलिमेन का नाम सुना हो। इस जाने-माने मनोवैज्ञानिक और डॉक्टरी शोधकर्ता ने आशावाद तथा सकारात्मक सोच के असर का 25 वर्षों तक अध्ययन किया।

उनका शोध एक ऐसा वैज्ञानिक उदाहरण है, जो हमें बताता है कि किस प्रकार अपने विचारों की शक्ति से हम अपनी किस्मत बना सकते हैं।

इसके बाद कई ऐसे अनमोल धन हासिल हो जाते हैं, जिनके प्रति आप सजग नहीं होते और उस छिपे खजानों का पता मिल जाता है, जिसे आपने न तो तवज्जो दी और न ही उसका इस्तेमाल किया। उनमें आधुनिक रेडियो प्रसारण और रिसीविंग स्टेशन है, जो इतना शक्तिशाली है कि जो विचारों की थिरकन को पिकअप करके दुनिया के किसी भी हिस्से में भेज सकता है। इसमें विचार तरंगों को विवेक स्रोत से जोड़कर पुख्ता रूप देने की

भी क्षमता है।

आपका रेडियो स्टेशन स्वचालित है और हमेशा काम करता रहता है, जागते हुए भी और तब भी जब आप सोए रहते हैं। यह हर समय आपके अंदर के दो प्रमुख व्यक्तित्वों के अधीन रहता है, नकारात्मक और सकारात्मक व्यक्तित्व। जब आपका नकारात्मक व्यक्तित्व नियंत्रण में है, तो आपका रेडियो स्टेशन सिर्फ वैसी नकारात्मक विचार तरंगों को पिकअप करता है, जो दुनिया भर के करोड़ों अन्य नकारात्मक व्यक्तित्वों द्वारा भेजी जा रही हैं। ये स्वीकार कर ली जाती हैं, इनके अनुकूल काम भी शुरू हो जाता है और यह जीवन की परिस्थितियों के मुताबिक सारी शारीरिक क्षमता को हताशा के वैसे तराजू पर तौल देता है, जो आप नहीं चाहते हैं।

जब आपका सकारात्मक व्यक्तित्व नियंत्रण में है तो यह सिर्फ सार्थक तरंगों को पिकअप करता है, जो दुनिया भर के लाखों सार्थक सोचवाले व्यक्तित्वों द्वारा जारी की जा रही हैं।

ये तरंगें आपकी शारीरिक क्षमता के अनुपात को समृद्धि, अच्छी सेहत, प्रेम, आशा, विश्वास, मानसिक शांति और खुशी में बदल देती हैं, जिनकी तलाश में आप तथा अन्य सामान्य व्यक्ति भी हैं।

धन में हिस्सेदारी का दायित्व

जो कुछ मैं कह रहा हूँ उस पर आपको क्यों भरोसा करना चाहिए? आप इस पर भी क्यों भरोसा करें कि जो सीख मैं दे रहा हूँ, सफलता के लिए उसकी जरूरत है? आप जानते हैं कि मैं धनकुबेरों में से एक और दुनिया का सबसे प्रभावशाली व्यक्ति माना जाता हूँ, लेकिन मैं पैदाइशी धनकुबेर नहीं हूँ।

मैं तो एक गरीब और निरक्षर परिवार में पैदा हुआ। मेरी औपचारिक शिक्षा मामूली स्कूल से प्राप्त ज्ञान तक ही सीमित थी। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, उस सीमित पिछड़े दायरे को पार कर आज संपूर्ण विश्व मेरे सामने है, फिर मेरे दिल में प्रेम का समावेश हुआ, जिसके प्रभाव से मैंने जाना कि महान् व्यक्ति का प्रभाव क्या होता है, जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। वह मेरी पत्नी और गाइड बनी, जो मेरी निजी दुनिया के बाहर से आई। वह महिला सुसंस्कृत और सुशिक्षित थी जिससे मैंने बॉयोलोजी, केमिस्ट्री, एस्ट्रोनॉमी और फिजिक्स के रहस्य जाने। वह मेरी रूह के अंदर तक समा गई और दूसरे आत्म को उजागर किया, जिसके बारे में मुझे जानकारी नहीं थी।

धीरे-धीरे धैर्यपूर्वक प्रेम से उस महिला ने मुझे सोच व समझ की ऊँची उड़ान में शिफ्ट कर दिया। उसने मुझे तब तक वहाँ से नीचे नहीं उतरने दिया, जब तक कि मैं वह महान् उपहार हासिल करने की स्थिति में नहीं आ गया, जो मैं इस आशा के साथ आपसे शेयर कर रहा हूँ कि आप भी मेरी तरह धनवान् हो जाएँ।

उसी वरदान ने मुझे वे सारे रहस्य आपसे शेयर करने की जिम्मेदारी सौंपी है, जिसे मैं 'ग्रेट मास्टर—की (चाबी)' कहता हूँ, ताकि आप में से ज्यादा-से-ज्यादा लोग इसे प्राप्त करने को तैयार हों। लेकिन यह चेतावनी भी दिए देता हूँ कि मास्टर चाबी वही लोग सँभाल पाएँगे, जो अन्य लोगों के साथ हिस्सेदारी का दायित्व स्वीकर करें। कोई भी इसका उपयोग अपने स्वार्थ और निजी आमोद-प्रमोद के लिए न करे।

रोटरी क्लब आंदोलन के संस्थापकों ने हिस्सेदारी के नाम को महत्त्व दिया है। उनका सिद्धांत है—'जो बेहतर सेवा करता है, वही ज्यादा लाभ कमाता है।' हर सूक्ष्म पर्यवेक्षक मानता है कि व्यक्तियों की सफलता की शुरुआत अन्य व्यक्तियों के प्रभाव से और किसी-न-किसी रूप में हिस्सेदारी से हुई है।

मेरे महान् अवसर में पत्नी की मेरे साथ अपने ज्ञान शेयर करने की इच्छा के साथ-साथ वह जानकारी भी शामिल है, जो मैंने अपनी पहुँच के दायरेवाले मास्टर चाबी सिद्धांतों से हासिल की है।

आपका अवसर—मेरे द्वारा हासिल ज्ञान आपके साथ शेयर करने की मेरी इच्छा में—अच्छी तरह शामिल है, लेकिन याद रहे, मैं आपको सिर्फ भौतिक सुख देने यहाँ नहीं आया हूँ। मैं आपको अपनी वैसी जानकारी में हिस्सेदार बनाना चाहता हूँ, ताकि आप हर तरह की संपदा अपनी व्यक्तिगत पहल से प्राप्त कर सकें। यह सबसे महान् उपहार है और यह एकमात्र उपहार है, जो कोई भी हमारे जैसे महान् देश से प्राप्त करने की उम्मीद रखता है।

अतः मैं चाहता हूँ कि आप भी धनकुबेर बनने की इच्छा रखें। आपकी ख्वाहिश पूरी करने में मैं भी हिस्सेदार बनता हूँ, क्योंकि मैंने धनकुबेर पथ खोज लिया है और मैं गाइड के रूप में आपकी सेवा करने को तैयार हूँ। इस कठिन रास्ते पर कदम रखने से पहले मैंने सीखा कि यह छोटा और भरोसेमंद पथ है, जिस पर मैं चल सकता हूँ और मुझे पथ-प्रदर्शक मिला, जैसे मैं आपका पथ-प्रदर्शक बनने की उम्मीद करता हूँ।

धनकुबेर देश की यात्रा शुरू करने से पहले हमें इसकी वास्तविक रूपरेखा जाननी होगी। संपदाओं के अपनी पहुँच के अंदर आ जाने के बाद आप उसे समझें, महत्त्व दें, यह जरूरी है।

कुछ लोग समझते हैं कि धन का मतलब, सिर्फ पैसा है, लेकिन इसे जरा विस्तृत संदर्भ में देखें, तो लगेगा कि भौतिक वस्तुओं के अलावा कई अन्य मूल्य भी इसमें शामिल हैं। यह बात मैं इसमें जोड़ना चाहूँगा कि धन हासिल करने के इन मूल्यों को साथ लेकर चले बिना, जीवन में खुशियाँ नहीं मिल सकतीं।

धनकुबेर की बात करते समय दिमाग में हमेशा यह बात होती है कि इसे हासिल करनेवालों ने अपने हिसाब से जीवन को ऐसे ढर्रे पर ढाला, ताकि भरपूर प्रसन्नता से जीवन भरा रहे। इसे मैं जीवन के बारह धनकुबेर कहता हूँ और मैं गंभीरतापूर्वक आप लोगों के साथ आंशिक या पूर्ण रूप से शेयर करना चाहता हूँ।

आप हिस्सेदारी की मेरी इच्छा देखकर चकित होंगे, इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि मास्टर चाबी ही इसे हासिल करनेवालों को अपनी जानकारी, अपनी उपलब्धियाँ अन्य लोगों के साथ शेयर करने को प्रेरित करती है। यह जीवन का अनूठा मगर वास्तविक तथ्य है, अगर आप मेरी तरह धनवान् बनने की उम्मीद रखते हैं, तो इस तथ्य को आदर और महत्त्व देना होगा।

❑

2

जीवन के बारह सूत्र

यह समय है थोड़ा ब्रेक का। श्रोता अपनी सीटों से उठने लगे तो कैमरा टीमों ने भी अपने सामान समेटने शुरू कर दिए। शाम के प्रसारण के लिए आवश्यक मसाला उनको मिल चुका था और उन लोगों ने सोचा भी नहीं था कि और रिपोर्ट की जरूरत पड़ेगी। कुछ लोग दरवाजे तक गए, लेकिन फिर वापस अपनी सीट पर बैठ गए। यह जानने की बेताबी बरकरार थी कि यह कमाल का व्यक्ति आगे क्या कहता है। कुछ अंतराल में वक्ता (विशिष्ट व्यक्ति) मंच से उतर गए। जब लौटे, तो उनके हाथ में आइटमों की सूची का चार्ट था। कई श्रोताओं ने अपनी कलम निकाल ली और सूची उतारने लगे। श्रोता जल्दी ही मंच की ओर मुखातिब हो गए, इसलिए उस व्यक्ति ने फिर बोलना शुरू किया। वक्ता ने यों शुरू किया—जैसा मैंने ब्रेक से पहले कहा, 'जीवन का सबसे बड़ा धन शायद यह है कि हममें से सभी एक सार्थक मानसिक वृत्ति अपनाएँ। धन या सुख चाहे किसी भी तरह का क्यों न हो, मानसिक अवस्था से शुरू होता है और हम यह न भूलें कि एकमात्र मन की अवस्था ही है जिसे पूरी तरह वश में रखना होगा और यह बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है कि हममें से किसी का भी अपने विचारों को पसंद के अनुकूल फिट करने के सिवा किसी चीज पर नियंत्रण नहीं है।'

मानसिक वृत्ति इसलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह मस्तिष्क को एक इलेक्ट्रो मैगनेट जैसा बनाती है, जो मजबूत विचार, लक्ष्य और उद्देश्यों को आमंत्रित करता है। इसके साथ ही यह आशंका, चिंता और संदेह जैसे अपने काउंटरपार्ट को भी आकर्षित करता है।

सकारात्मक सोच सभी तरह के सुखों का आरंभिक बिंदु है, चाहे वे सुख भौतिक हों या वैसे सुख हों, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह सच्ची मैत्री के साथ-साथ उस सुख को भी आकर्षित करती है, जो कोई भी व्यक्ति भविष्य की उपलब्धि की आशा में महसूस करता है। यह प्रकृति के रहस्य महसूस करनेवाला सुख भी प्रदान करता है जैसे चाँदनी रात, सितारों भरे आकाश को निहारते स्वर्ग में तैरने की कल्पना, धरती की खूबसूरत हरियाली और दूर तक फैले क्षितिज के छोर। सकारात्मक सोच अपनी पसंद के मुताबिक दिए गए श्रम से हासिल सुख

को भी आमंत्रित करती है, जहाँ आत्मा की ऊँची उड़ान को अभिव्यक्ति मिल सकती है।

यह घरेलू संबंधों में सामंजस्य का भी सुख देती है, जहाँ परिवार के सभी सदस्य मैत्रीपूर्ण सहयोग की भावना से आपस में मिलकर काम करते हैं। यह भय से मुक्ति का सुख निर्मित करती है, जिसमें सक्रिय तथा निष्क्रिय दोनों ही उत्साह का सुख शामिल है।

यह गान और मुसकान के सुख की प्रेरणा देती है, जो दोनों ही मन की अवस्थाएँ हैं। यह साथ ही आत्म अनुशासन का सुख देती है, जिसके जरिए कोई भी यह जान लेने का आनंद उठा सकता है कि अगर दिमाग काबू में हो, तो इच्छानुकूल लक्ष्य को दृढ़ता से अंजाम तक पहुँचा सकता है।

इससे किसी लक्ष्य को हँसी-खेल में ही पूरा करने का सुख मिलता है और व्यक्ति जीवन के सारे बोझ को परे रखकर दुबारा बच्चा बन जाता है। दूसरे, आत्म की खोज का सुख, जो आत्म जानता है कि स्थायी विफलता जैसी कोई सच्चाई नहीं होती।

यह समग्र के प्रति आस्था विकसित करने का सुख देती है, जिसके बारे में हर व्यक्ति सूक्ष्मता से सोचता है।

यह योग-ध्यान का सुख देती है, जो व्यक्ति को अदृश्य शक्ति से जोड़कर अक्षय ऊर्जा स्रोत और ब्रह्मांड से निःसृत अजेय कुशाग्रता की मरजी के मुताबिक अपनी ओर खींचने की क्षमता प्रदान करती है।

इन सारे सुखों की शुरुआत सकारात्मक मानसिक वृत्ति से होती है। यह थोड़े आश्चर्य की भी बात है कि धनकुबेर बनने के बारह सूत्रों में पहला सूत्र सकारात्मक मनोवृत्ति है। यह चाबी नंबर-**1** कहलाती है।

उसके बाद अन्य ग्यारह सूत्रों का जिक्र उस व्यक्ति ने किया, जो संक्षिप्त रूप से यहाँ शामिल किया गया है—

2. बेहतर शारीरिक स्वास्थ्य—बेहतर स्वास्थ्य की शुरुआत का मतलब सेहत के प्रति जागरूकता से है। यह ऐसे मन-मस्तिष्क से पैदा होती है, जो बीमारी के संदर्भ में नहीं, बल्कि सेहत के संदर्भ में सोचता है। इसके लिए खान-पान में संयम और शारीरिक गतिविधियों पर ध्यान देने की जरूरत है।

3. आपसी संबंधों में सद्भाव—बाहरी रिश्तों में सद्भाव व्यक्ति के अपने आत्म से शुरू होता है। जैसा शेक्सपियर ने कहा है कि इस नियम का पालन करने से लाभ-ही-लाभ हैं। अगर अपने मन को साफ रखकर दिन-रात उस नियम का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ें, तो किसी रिश्ते में खटास आ ही नहीं सकती।

4. भय से मुक्ति—जो डरता है, उसके लिए कुछ भी मुक्त नहीं है। डर या आशंका सभी बुराइयों की जड़ है और धनकुबेर बनने की चाहतवाले व्यक्ति के लिए इस रुकावट को खत्म करना जरूरी है। सात प्रकार के भय हैं जो हमारे मस्तिष्क को हमेशा परेशान करते रहते हैं —1. गरीबी का भय, 2. निंदा का भय, 3. सेहत खराब होने का भय, 4. प्रेम खत्म होने का भय, 5. स्वतंत्रता (आजादी) छिन जाने का भय, 6. (बुढ़ापे का भय), 7. मृत्यु का भय।

5. उपलब्धि की आशा—अपूर्ण इच्छा से निकली उपलब्धि की आशा खुशी की सबसे बड़ी स्थिति है। अगर कोई व्यक्ति किसी कारण अपने लक्ष्य की प्राप्ति में असफल रहा हो, तो उसे सफलता में बदलने के लिए बेहतर आशा रखे, उत्साह खोए बिना प्रयत्न जारी रखे। उससे हासिल उपलब्धि से अपार खुशी मिलती है।

6. आस्था की क्षमता—आस्था चेतन मस्तिष्क और विशाल ब्रह्मांड के बीच लिंक स्थापित करने का जरिया है। यह मानव मस्तिष्क की फुलवारी की उर्वरा मिट्टी है, जहाँ से जीवन के सारे सुख पैदा हो सकते हैं। यह सृजनशीलता का शाश्वत स्रोत है, जहाँ से विचारों को पुख्ता रूप देने की शक्ति मिलती है। आस्था ही तथाकथित चमत्कारों और कई रहस्यों का आधार है, जिसकी व्याख्या तर्क या विज्ञान द्वारा नहीं हो सकती। यह आध्यात्मिक रसायन है, जो प्रार्थना से जुड़कर व्यक्ति को तत्काल ईश्वरीय अनुभूति प्रदान करता है।

आस्था वह शक्ति है, जो मामूली ऊर्जा को भी आध्यात्मिक चेतना में बदल देती है।

7. दूसरे के वरदान में हिस्सेदारी की इच्छा—हिस्सेदारी या एक-दूसरे की उपलब्धियों को आपस में बाँटना जिन्होंने नहीं सीखा, उन्होंने सुखी जीवन का रास्ता नहीं देखा। खुशी सिर्फ हिस्सेदारी से ही मिलती है। सारे सुख हासिल करने का आसान सा तरीका है कि एक-दूसरे के साथ ऐसी चीजें बाँटें, जिनसे दूसरों को भी लाभ हो। दूसरों के दिलों में जगह तभी बनाई जा सकती है, जब आप उनके प्रति सेवा भाव रखें। यह वरदान है, जो हर किसी के हिस्से में आ सकता है।

सुख चाहे भौतिक हों या आत्मिक अगर आपस में बाँटे न जाएँ, तो ये वैसे सूखकर मर जाएँगे जैसे तप्त और तूफानी हवा में गुलाब मुरझाकर जमीन पर गिर पड़ते हैं। प्रकृति का नियम है कि अगर कोई सुख उसी की तरह बाँटा न गया तो वो असमय काल कवलित होकर उस व्यक्ति को ही दुःखी कर सकता है।

8. प्रेम का श्रम—प्रेम हासिल करने और बाँटने के लिए परिश्रम करनेवाले व्यक्ति से सुखी कोई नहीं है। मानवीय इच्छा की अभिव्यक्ति का सबसे ऊँचा रूप प्रेम है। यह मनुष्य के सभी कार्यकलापों की माँग और आपूर्ति के बीच संपर्क स्थापित करता है। मानव प्रगति का सबसे आगेवाला मोर्चा है और इसी के जरिए कल्पना को साकार पंख लगते हैं। प्रेम के सारे परिश्रम आत्म अभिव्यक्ति से मूर्त रूप लेते हैं।

9. सभी विषयों पर खुला दिमाग—हर समय सभी विषयों पर खुले दिमाग से सोचनेवाला व्यक्ति ही सहनशीलता का मर्म समझ सकता है, जो संस्कृति की सबसे बड़ी देन है। खुला दिमाग रखनेवाला व्यक्ति ही वास्तव में शिक्षित है और जीवन के सुख हासिल करने में सक्षम है।

10. आत्म-अनुशासन—आत्म-अनुशासन पर मास्टरी जिसने नहीं की है, वह व्यक्ति कभी किसी और चीज का मास्टर नहीं हो सकता। अपने ऊपर मास्टरी हासिल करनेवाला व्यक्ति अपने भाग्य का मास्टर हो सकता है। आत्म-अनुशासन का वास्तविक तात्पर्य विनम्रता से है। यह विनम्रता किसी व्यक्ति में उस समय आती है, जब वह जीवन के सारे सुख हासिल करके उस शिखर पर पहुँच जाता है, जिसे सामान्यतया 'सफलता' कहा जाता है।

11. लोगों को समझने की क्षमता—वे ही व्यक्ति सही मायने में धनी हैं, जो लोगों को जानने-समझने की क्षमता रखते हैं और यह मानकर चलते हैं कि सब एक समान हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं है और किसी को अपने से कम औकातवाले नजरिए से नहीं आँकते। मनुष्य के सारे कार्यकलाप जीवन की नौ बुनियादी आकांक्षाओं से प्रेरित होते हैं, जिन्हें इस रूप में चिह्नित किया जा सकता है—

1. प्रेम की भावना
2. सेक्स की इच्छा
3. भौतिक सुख की इच्छा
4. आत्म-सुरक्षा की इच्छा
5. शरीर और मन की आजादी की इच्छा
6. आत्म-अभिव्यक्ति की इच्छा
7. मोक्ष प्राप्ति की इच्छा
8. क्रोध की भावना

9. भय की भावना

जो यह समझते हैं कि अन्य लोगों पर कौन सी भावना हावी है, वे पहले समझ लें कि खुद उनके अंदर कौन सी भावना प्रबल है।

दूसरों को समझने की क्षमता से आपसी मतभेद के कई सामान्य कारण समाप्त हो जाते हैं। सारी दोस्ती इसी पर टिकी है। समन्वय और सहयोग का भी यही आधार है। मैत्रीपूर्ण सहयोग से चलनेवाली नेतृत्व क्षमता के लिए भी यह आवश्यक है।

12. आर्थिक सुरक्षा—धनकुबेर बनने के 12 उपायों में अंतिम है आर्थिक सुरक्षा, लेकिन यह पहले वर्णित 11 उपायों से किसी भी मायने में कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। आर्थिक सुरक्षा सिर्फ पैसा जमा करने से हासिल नहीं की जा सकती है। यह दूसरे की सेवा से हासिल होती है। ऐसी लाभकारी मानवीय सेवाएँ अर्पित करने की भावना होनी चाहिए, जिसके लिए सब में पैसा ही फैक्टर नहीं है, बिना पैसे के भी सेवाएँ अर्पित की जा सकती हैं।

हेनरी फोर्ड ने केवल आर्थिक सुरक्षा, अपार धन-संपत्ति अर्जित करके हासिल नहीं की, बल्कि उससे बड़ा कारण यह है कि उसने लाखों लोगों को रोजगार दिया और पहला भरोसेमंद ऑटोमोबाइल दिया, जो आज भी सबसे ज्यादा लोगों के पास है। फोर्ड की सेवा ने पैसे को उसकी ओर खींचा, जिसका वह मालिक है। इस तरह से उसने आर्थिक सुरक्षा हासिल की।

मैं उन सिद्धांतों की जानकारी दूँगा, जिनके जरिए पैसा और धनी बनने के अन्य सारे उपाय जाने जा सकते हैं, लेकिन पहले आपको वे सिद्धांत अपनाने का मन बनाना होगा। अपने दिलो-दिमाग को वैसे धन स्वीकारने लायक बनाना होगा, जैसे जमीन बुआई के लिए तैयार होती है। शायद आपने यह अभिव्यक्ति सुनी हो कि जब छात्र तैयार रहते हैं, तभी शिक्षक पढ़ाते हैं।

इसका यह मतलब नहीं कि अगर आपको किसी चीज की जरूरत हो, तो यों ही सामने आ जाएगी। किसी चीज की आवश्यकता और उसे पूरी करने की ललक में काफी फर्क है। अगर इस अंतर पर आपने ध्यान नहीं दिया, तो मैं जो कुछ बताऊँगा, आप उसके प्रमुख लाभ से वंचित रह जाएँगे।

नए विचारों को अपनाने की चुनौती

यह शुरू में आपको अटपटा सा लग सकता है, लेकिन आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए, क्योंकि सभी नए विचार अजीब से लगते हैं। अगर आपको इसकी व्यावहारिकता पर संदेह है, तो फिर यह जानकर अपने अंदर हौसला जगाएँ कि इसी से मुझे अपार धन-संपत्ति हासिल हुई है। मानव प्रगति के हमेशा धीमे चलने की वजह यह है कि लोग प्रायः नए विचारों को अपनाने में हिचकिचाते हैं।

सैमुएल मोर्स ने जब टेलीग्राफ की खोज का ऐलान किया तो इसका स्वागत करने के बजाय दुनिया ने उसका मजाक उड़ाया। यह बिलकुल नया और कट्टरता विरोधी विचार था, उससे पहले लोगों ने वैसा सिस्टम न देखा था, न सुना था। इसलिए उसे संदेह और संशय के नजरिए से देखा गया। मार्कोनी की भी उसी तरह हँसी उड़ाई गई, जब उसने रेडियो की खोज को विकसित किया। ऐसा ही अद्‌भुत प्रतिभाशाली जीनियस था टॉमस

अल्वा एडीसन, जिसका लोहा आज दुनिया मानती है। उन्हें भी अपने जीवनकाल में सम्मान नहीं मिला, बल्कि उनके द्वारा निर्मित बिजली के बल्ब पर भी टीका-टिप्पणियाँ हुईं। फोर्ड की बिना घोड़े की बग्घी का क्या दुनिया ने स्वागत किया? नहीं, उनका अनुभव भी वैसा ही है। इसलिए राइट बंधुओं (विलबर और ओरविल) ने जब उड़नेवाली मशीन हवाई जहाज बनाया। उस वक्त लोगों ने इसे किस रूप में लिया होगा, इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। जीते जी किंवदंती बन चुके इन दोनों भाइयों ने जब अपनी अजूबी मशीन का प्रदर्शन किया, तो संवाददाताओं ने भी उसे बेतुका समझकर समारोह को कवर करने लायक नहीं समझा। अस्तित्व में आने के समय रेडियो एक चमत्कार से कम नहीं था, लेकिन लोगों ने उसे बच्चों के खिलौने से ज्यादा महत्त्व नहीं दिया। इतने सारे ऐतिहासिक उदाहरण मैं सिर्फ यही समझाने के लिए दे रहा हूँ कि आज भी इतिहास वही है। नए विचार प्रतिपादित करनेवालों को लोग उसी नजरिए से देखते हैं।

उन लोगों का प्रतिपादन सर्वथा नया और अपरिचित था। मैं जो प्रस्ताव आपके सामने रख रहा हूँ, वह भी उसी तरह नया है और मैं आपको पहले ही चेताए देता हूँ कि हतोत्साहित न हों। यह कोई जरूरी नहीं कि अपरिचित अथवा नया आइडिया हमेशा संदिग्ध और ठुकरानेवाला हो। मेरे विचार का अनुसरण करें, मेरे दर्शन को स्वीकारें और मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि यह आपके लिए वैसे ही काम करेगा, जैसे इसने मेरे लिए किया है।

गाइड की तरह आपकी सेवा करके और इस दिशा में प्रयत्न करने को मेरा मुआवजा उसी अनुपात में होगा, जो फायदा आप इसका उठाएँगे। मुआवजे का शाश्वत कानून यह सुनिश्चित करता है। मेरा मुआवजा सीधे आपकी ओर से आए, ऐसा कोई आवश्यक नहीं, यह कई रूपों में आएगा। यह उस कॉस्मिक योजना का हिस्सा है कि बिना मुआवजे के कोई भी लाभकारी सेवा अर्पित नहीं करेगा। एमर्सन ने कहा था "पहले करो तो सही, तुम्हें शक्ति का अनुभव होगा।"

चलिए, इस बात को छोड़ते हैं कि आपकी सेवा की कोशिश के बदले मुझे क्या मिलेगा, उससे ज्यादा बड़ा मुद्दा यह है कि दुनिया से जो स्नेह और आशीर्वाद मिला, उसके लिए मैं आप सभी का कृतज्ञ हूँ।

कई अन्य लोगों के सहयोग के बिना मैं ये सारी संपदा हासिल करके धनकुबेर नहीं बन सकता था। मेरा मानना है कि विपुलता की सीढ़ी चढ़नेवालों ने दो अलग-अलग तरह के हथियारों का इस्तेमाल किया। एक हाथ ऊपर करके उनकी मदद ली, जो ऊँचाई पर पहुँच चुके थे और दूसरा हाथ उनकी मदद के लिए नीचे रखा, जो सीढ़ी चढ़ने की कोशिश कर रहे थे।

आप में से भी जो इस दिशा में आगे बढ़ना चाहें, वैसे ही दोनों हाथों से सीढ़ी पर कदम बढ़ाएँ। यह जगजाहिर सत्य है कि कोई भी अपार सफलता तब तक हासिल नहीं कर सकता, जब तक कि उसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील अन्य लोगों की मदद न करे। कुछ पाने के लिए कुछ देने का भी रास्ता खुला रखें। मैं कुछ दे सकता हूँ, इसीलिए आपको यह संदेशा दे रहा हूँ।

धनकुबेर बनने के लिए अपने मन-मस्तिष्क को तैयार करने की प्रक्रिया में आपका अगला

कदम जीवन के नौ इनाम पाने के उपाय हैं।

जब मैं जगा था, तब उन लोगों ने मेरी सेवा की और जब मैं सोया था, तब भी मेरी सेवा की। उन सभी ने मुझे भय, ईर्ष्या, लोभ, लालच, संदेह और अनिर्णय की स्थिति से उबारा। उन सभी ने मुझे अपनी व्यक्तिगत पहल की दिशा में आगे बढ़ने को प्रेरित किया, मेरी कल्पना को सक्रिय रखा और निश्चित लक्ष्य को हासिल करने की दृढ़ इच्छाशक्ति प्रदान की। सही अर्थों में मेरे मस्तिष्क के कंडीशनर और सार्थक मानसिक प्रकृति के निर्माता वही थे।

अब भोजन का समय हो गया है। इसके बाद जब आप वापस बैठेंगे, तो मैं आपको वैसे पुरस्कारों के रहस्य से अवगत कराऊँगा।

❑

3

जीवन में पुरस्कार पाने के नौ उपाय

सम्मेलन के आयोजक मंच के पीछे की ओर एकत्र हो गए। कुछ श्रोता मंच की ओर बढ़ते देखे गए, वे इस विशिष्ट वक्ता से कुछ सवाल पूछने को उत्सुक थे, जो पहले ही मंच से जा चुके थे।

एक घंटे के बाद सब वापस अपनी सीटों पर बैठ गए। इस वक्त किसी को भी घर जाने की जल्दी नहीं थी। सारे श्रोता उन नौ उपायों के बारे में जानने को उतावले थे, जिनसे उन्हें सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी हाथ लगती।

श्रोताओं के सामान्य होने के कुछ ही क्षणों बाद वक्ता ने मंच पर आकर माइक सँभाल लिया।

मैं यह देखकर खुश हूँ कि आप सब-के-सब वापस आ गए हैं; उन्होंने फिर बोलना शुरू किया—वायदे के मुताबिक मैं आप लोगों से अपने वे अनुभव बाँटूँगा और उन उपायों के बारे में भी बताऊँगा, जिन्हें अपनाकर अपने जीवन का सार्थक नजरिया कायम रखने में मुझे सहूलियत हुई। आइए, अब हम आपको उन रास्तों की ओर ले चलते हैं। सबसे पहला है—कृतज्ञ होना यानी कि उन सारी चीजों के लिए कृतज्ञता का भाव होना, जो जिंदगी ने आपको दी हैं। रोज ही मैं उसकी तारीफ करता हूँ, जो मैंने प्राप्त किया है।

मेरा कहना है—

'आज का दिन बहुत सुंदर है।'

'इससे मेरा शरीर और मन स्वस्थ रहता है।'

'इसने मुझे भोजन और वस्त्र दिए हैं।'

'इसने मुझे दूसरों की सेवा करने के लिए एक और मौका दिया है।'

'इसने मुझे सारे भय से मुक्ति और मन की शांति दी है।'

'इन आशीर्वादों के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।'

अगला है, भौतिक समृद्धि का उपाय। प्रतिदिन अपने मस्तिष्क को प्रभुता और विपुलता के प्रति जागरूक रहने पर केंद्रित करें तथा गरीबी व आवश्यकता के भय से मुक्त रखें।

तीसरा अभ्यास है, शरीर पूरी तरह स्वस्थ रखने के उपाय। रोज सुबह इस बात पर गौर करें कि आप अपने शरीर के साथ कैसा सुलूक कर रहे हैं, क्या खाते हैं और तनावमुक्त रहने के लिए क्या करते हैं। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहने से आपको अपना हर काम करने में आसानी होगी और स्फूर्ति में कमी नहीं आ पाएगी।

चौथा अभ्यास है, मन की शांति के उपाय। अपने मन-मस्तिष्क को हर प्रकार की दुर्भावनाओं और नकारात्मक विचारों से मुक्त रखें और स्वयं द्वारा थोपी गई सीमाओं में न बँधने दें, ताकि आपके शरीर तथा मन को भरपूर आराम मिल सके।

अगला है, आशावान बने रहने के उपाय। आज की आकांक्षा पूरी होने के लिए कृतज्ञ महसूस करें और इनका लक्ष्य हासिल करने की आशा न छोड़ें।

छठा अभ्यास है आस्था—चाहे वह किसी भी तरह की सोच से जुड़ी क्यों न हो। मैं भगवान् के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनका मार्गदर्शन पाकर मैं उस काम की ओर प्रेरित हुआ, जिससे मुझे सफलता मिली। भगवान् की कृपा से मुझे वैसे अतीत को पीछे छोड़कर आगे बढ़ने में मदद मिली, जो मेरे मार्ग में बाधक था।

अगला है प्रेम का आभ्यास—इसका मतलब सिर्फ रोमांसवाला प्रेम नहीं है। इस प्रेम का दायरा विशाल है, जिसमें देश, परिवार, मित्र और संपूर्ण मानवता के प्रति प्रेम शामिल है। इससे प्रेरित होकर आप अपना धन उन लोगों के बीच बाँटने की सोंचें, जिनसे आपका संपर्क होता है। याद रहे, प्रेम और सद्व्यवहार से आप जीवन में मिठास ला सकते हैं और सबसे स्नेहपूर्ण संबंध बनाए रख सकते हैं।

आठवाँ अभ्यास है, रोमांस। रोमांस की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं बनती। यह आपकी अपनी रुचि और स्वभाव पर निर्भर है, जो रोमांस उम्रदराज होने के बावजूद आपके जोश व उत्साह को युवा बनाए रखे।

अंत में, संपूर्ण ज्ञान व विवेक का अभ्यास। यह अनमोल गुण है, जिसकी बदौलत अतीत की सारी विफलताओं, पराजय, फैसलों और कार्यकलापों की गलतियों, आशंकाओं तथा किसी भी तरह की प्रतिकूल परिस्थितियों से निजात पाना सरल हो जाता है। ऐसी वारदातों ने मेरे अंदर यह इच्छा जगाई कि मैं दूसरों को अपने दिमाग पर काबू पाने को प्रेरित करूँ, ताकि वे अपनी दिमागी ताकत का इस्तेमाल करके धन अर्जित कर सकें। ज्ञान और विवेक ने ही मुझे यह सुविधा दी है कि अपनी दुआएँ उन लोगों के बीच बाँटूँ, जो उन्हें प्राप्त करने को तैयार हैं, ताकि उनके जरिए और लोग भी इससे लाभान्वित हों।

मैं अपने विवेक का कृतज्ञ हूँ, जिसने मेरे मुँह से यह सत्य निकलवाया कि कोई भी मानवीय अनुभव की आवश्यकता बोझ नहीं होती। उसे उपयोगी सेवा में तबदील किया जा सकता है। वैचारिक शक्ति से पूर्ण नियंत्रित रखा जा सकता है। वैचारिक शक्ति को मनोनुकूल प्रसन्नता में बदला जा सकता है। इसकी कोई सीमा नहीं है। आप सिर्फ वही सोचें, जो आपके अपने दिमाग में है।

ये नौ उपाय आपके दिमाग के लिए कंडीशनर का काम करते हैं और इस लायक बनाते हैं, ताकि आप धनकुबेर बनने के बारह उपायों का लाभ उठा सकें। इनके माध्यम से आप अपने दिमाग को वांछित चीजों पर केंद्रित रख सकते हैं और उस तरफ से ध्यान हटा सकते हैं, जो आप नहीं चाहते। इससे नकारात्मक सोच मन में टिक नहीं पाती। ये नकारात्मक विचार को जड़-मूल से नष्ट कर देते हैं और वैसी चीज को दिमाग में पनपने नहीं देते। ये उपायों से दिमाग को जीवन के प्रमुख लक्ष्य की ओर टिकाने में मदद मिलती है। ये इनके साथ-साथ विश्व शांति में भी सहायक होते हैं और अपनी चेतना के साथ समरसता बनी रहती है।

ये उपाय अन्य आत्म के अस्तित्व को उजागर करते हैं और वैसी शक्ति जगाने के बारे में सोचते हैं, योजना बनाते हैं, उस दिशा में कदम बढ़ाते हैं, जो इस वास्तविकता को स्वीकारते हैं कि असंभव कुछ भी नहीं। ये जाँचे-परखे उपाय हैं कि हर प्रतिकूल परिस्थिति उसी अनुपात में लाभ भी लेकर आती है। इसलिए अगर कोई प्रतिकूलता आप पर हावी हो, तो बस यूँ समझ लें कि हर एक पर उसी तरह हावी है और जरा भी विचलित हुए बगैर उसी अनुपात के लाभ खोजने में जुट जाएँ तथा उसे पुष्पित-पल्लवित अवसर में बदल

डालें। इन्हीं उपायों ने मुझे सार्थक दृष्टि रखने में मदद पहुँचाई।

बारह धनकुबेर उपायों का उपयोग कैसे करें

अब आपको मैं उस दर्शन का विवरण देता हूँ, जो किसी को भी इन बारह उपायों को हासिल करने के लिए अपनाना पड़ेगा।

अभी मैंने धनकुबेर की चाबी प्राप्त करने की दिमागी तैयारी के बारे में बताया है, मगर यह तो कहानी की बस शुरुआत है। अभी यह बताना बाकी है कि यह चाबी हासिल कैसे होगी और कैसे उसका भरपूर इस्तेमाल होगा।

यह एंड्रयू कार्नेगी के आरंभिक जीवन की कहानी की झलक है, जो स्वतंत्र उद्यम की अमेरिकी व्यवस्था की एक खास तरह की पैदाइश था। कार्नेगी ने बारह उपाय हासिल कर लिये थे, जिनका वित्तीय पक्ष इतना विशाल था कि जी-ते-जी सँभालना कठिन था, इसलिए इसका ज्यादातर हिस्सा उन्होंने मानव कल्याण के लिए काम करनेवालों को दे दिया।

कार्नेगी को इन नौ उपायों के उपदेशों की दुआएँ भी प्राप्त थीं। संपूर्ण विवेक से प्रेरित होकर कार्नेगी ने भौतिक सुखों के अपने सारे साधन तो छोड़े ही, साथ-साथ धन हासिल करने के इच्छुक लोगों के लिए संपूर्ण जीवन-दर्शन भी उपलब्ध कराया।

अमेरिका के महान् संविधान और मुक्त उद्यम की अमेरिकी व्यवस्था के सत्रह सिद्धांतों की खास-खास विशेषताएँ इस दर्शन में निहित हैं।

कार्नेगी समेत पाँच सौ से ज्यादा महान् अमेरिकी उद्योगपतियों ने जीवन भर के व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर बीस वर्षों की मेहनत से इस दर्शन का संगठन तैयार किया है, जो अमेरिकी युक्त उद्यम व्यवस्था के अंतर्गत आता है।

निजी उपलब्धि के आधार पर इस तरह के संगठन की प्रेरणा को कार्नेगी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—"मैंने अन्य लोगों के प्रयत्नों से धन अर्जित किया और मैंने इसे वापस लोगों को दे दिया। इस काम में मैंने यथासंभव तेजी दिखाई, मेरी संपत्ति का बड़ा हिस्सा उस ज्ञान में समाया है, जिसके जरिए मैंने इसके भौतिक व आध्यात्मिक हिस्से प्राप्त किए। अतः मेरी इच्छा इस ज्ञान को एक दर्शन के रूप में संगठित करने और प्रत्येक वैसे व्यक्ति को उपलब्ध कराने की है, जो अमेरिकी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत आत्म-निश्चयता के अवसर चाहते हैं।"

यह वो दर्शन है, जिसके लिए कार्नेगी इसे लोगों के बीच बाँटने को प्रेरित हुए। इसी से हमने धनकुबेर के बारह उपाय और जीवन की सारी उपलब्धियों के अवसर प्राप्त किए।

मेरी इच्छा आप लोगों के बीच अपनी उपलब्धियाँ बाँटने की है और अगर आप धनकुबेर बनना चाहते हैं, तो इस दर्शन में वर्णित तरीके अपनाएँ।

इस दर्शन के सिद्धांतों की विवेचना करने से पहले मैं संक्षेप में उन उपलब्धियों का इतिहास बताता हूँ, जो दुनिया के आधे से ज्यादा लोगों ने हासिल कर ली हैं।

भारत की चार प्रमुख भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है और इस देश के 20,00,000 से ज्यादा लोगों तक यह पहुँच चुका है।

ब्राजील के लोगों के लाभ के लिए इसका अनुवाद पुर्तगाली में हुआ, जिससे वहाँ के 15,00,000 से ज्यादा लोग लाभान्वित हो चुके हैं।

महान् ब्रिटिश साम्राज्य के लोगों के बीच वितरण के लिए इसका विशेष संस्करण प्रकाशित हुआ, जिसका 20,00,000 लोगों ने फायदा उठाया। अमेरिका का कोई गाँव, शहर, कस्बा, नगर ऐसा नहीं है, जहाँ एक या इससे ज्यादा लोग इससे लाभान्वित न हुए हों। यह तकरीबन 20,00,000 लोगों के हित में साबित हुआ। यह बड़ी आसानी से दुनिया भर के लोगों के बीच आपस में मैत्रीपूर्ण सहयोग का उत्साह बढ़ाने का माध्यम बना, क्योंकि इसका आधार लोभ-लालच पर नहीं टिका है। इसमें सिर्फ सफलता के मौलिक सिद्धांत निहित हैं और मानवीय उद्यम के हर पहलू की सार्थक उपलब्धियाँ इसमें समाहित हैं।

यह सभी मजहबों का समर्थन करता है, मगर किसी का भी हिस्सा नहीं है।

इसकी बनावट इतनी व्यापक है कि यह मनुष्य को सिर्फ सफलता के रास्ते पर ले जाता है, चाहे वह कोई भी पेशा हो।

इस साक्ष्य से ज्यादा आपके लिए जानना आवश्यक है कि यह दर्शन बेहद सरल है। इतना सरल कि आप जहाँ भी जिस तरह से भी चाहें, अपने काम के साथ जोड़ सकते हैं।

ये सत्रह सिद्धांत आपके लिए भरोसेमंद रोड मैप साबित होंगे और सभी सुखों की ओर सीधे ले जाएँगे, चाहे वह आध्यात्मिक हो अथवा भौतिक। आप नक्शे का अनुसरण करें, राह नहीं भटकेंगे और कोई स्रोत छूटने नहीं पाएगा, लेकिन सारे निर्देशों का पालन करने को तैयार रहें और वे सारी जिम्मेदारियाँ स्वीकारें, जो धनकुबेर बनने पर लागू होती हैं। इसके साथ ही यह न भूलें कि अपना धन, अपनी उपलब्धि दूसरे लोगों के बीच बाँटना है, क्योंकि हर किसी को चाहे वह कुछ भी क्यों न हासिल करे, उसकी कीमत चुकानी है।

इन सत्रह सिद्धांतों में से एक के भी जरिए मास्टर चाबी के बारे में नहीं जाना जा सकता है, लेकिन इसकी तह में सबकुछ समाया है। ये सत्रह सिद्धांत दरअसल सत्रह दरवाजे हैं, जिनसे होकर आप उस तहखाने के तल तक पहुँच सकते हैं, जहाँ सारे धन के स्रोत गड़े हैं।

मास्टर चाबी से उस तहखाने का दरवाजा खुलेगा और उसके बाद यह आपके हाथ में होगा कि इसे स्वीकार करने को कब तैयार होते हैं। आपकी तैयारी सत्रह में से पहले पाँच सिद्धांतों को आत्मसात् करके शुरू होनी चाहिए, जिनके बारे में विस्तार से मैं कल बताऊँगा।

❑

4

उद्देश्य की निश्चितता

शुभरात्रि की नींद के बाद श्रोता उस विशाल कक्ष में वापस अपनी सीटों पर बैठ गए। अधिकांश थके लग रहे थे। उन लोगों ने दिन भर के सत्र में लिये गए नोट्स की समीक्षा करने में रात गुजारी। कुछ अपने अब तक के जीवन के बारे में सोचते रहे कि इन सिद्धांतों का पालन उन्होंने किया अथवा नहीं। अन्य यह जानकर मुसकराते रहे कि कई सफलताएँ तो वे पहले ही हासिल कर चुके हैं और उनमें से कुछ इस वक्ता द्वारा वर्णित नौ उपायों से मिलती-जुलती हैं। बहुत श्रोता इस उधेड़बुन में थे कि इनमें से क्या वे पहले से जानते थे, लेकिन कुल-मिलाकर यह सेमिनार वैसा नहीं था, जैसी कल्पना श्रोताओं ने पहले की होगी और वे इसमें शामिल होने के लिए स्वयं को खुशकिस्मत महसूस कर रहे थे।

तकरीबन 9 बजे वक्ता ने पीछे की ओर से हॉल में प्रवेश किया। उनका चेहरा शांत और विश्वास से भरा था। पोर्टेबल माइक्रोफोन गले में लटकाए वक्ता मंच की सीढ़ी से उतरकर ऐसी जगह खड़े हुए, ताकि सीधे श्रोताओं से मुखातिब हो सकें। उन्होंने गला साफ किया और फिर से यों शुरू हुए—यह मानना अपने आप में प्रभावी है कि इतिहास के हर काल में, जीवन के हर क्षेत्र में सारे बड़े नेताओं ने एक निश्चित उद्देश्य लेकर अपनी क्षमता का उपयोग करके नेतृत्व हासिल किया है।

इस बात का निरीक्षण करना भी कम प्रभावी नहीं है कि दौड़ में पिछड़नेवालों के पास ऐसा कोई निश्चित लक्ष्य नहीं था, लेकिन वे बार-बार बिना पतवार की नाव की तरह चक्कर-पर-चक्कर लगाते रह गए और हमेशा खाली हाथ ही लौटे, जहाँ से शुरू किया था। उनमें से कुछ असफलताएँ एक निश्चित प्रमुख उद्देश्य के साथ शुरू हुईं, लेकिन ज्यों ही अस्थायी पराजय या प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा, वे अपने लक्ष्य से भटक गए।

वे पीछे हट गए और लक्ष्य को उन्होंने छोड़ दिया। वे नहीं जानते थे कि सफलता का एक दर्शन और गणित के नियमों की तरह बिलकुल निश्चित तथा भरोसेमंद सूत्र है। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि अस्थायी हार एक तरह की परीक्षा है, जो अभिशाप में वरदान साबित हो सकती है, यही कोई अंतिम पड़ाव नहीं है। यह हमारी सभ्यता का दुःखद प्रसंग है कि प्रत्येक 100 में से 98 व्यक्ति आगे तो बढ़े, मगर इतना भी हासिल करके नहीं लौटे जिससे वे प्रमुख लक्ष्य की निश्चितता का आकलन कर सकें। इस मनहूस प्रसंग को नई परिभाषा एंड्रयू कार्नेगी ने दी जिससे 500 महान् अमेरिकी उद्योगपतियों को प्रेरणा मिली कि वे निजी उपलब्धि के इस दर्शन को संगठित करने में सहयोग करें।

कार्नेगी ने पहला प्रयोग अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं पर आजमाया, जिनकी पर्यवेक्षक पदों पर प्रोन्नति का मामला उनके पास विचाराधीन था। कार्नेगी को यह देखना था कि कुछ आगे कर गुजरने की उनकी ख्वाहिश कितनी दमदार है। कार्नेगी को दूसरी जाँच यह करनी थी कि उन लोगों ने अपना दिमाग एक निश्चित लक्ष्य पर केंद्रित किया है या नहीं, जिसमें यह भी शामिल था कि उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए आवश्यक तैयारी की गई

है या नहीं। उनके एक कर्मचारी चार्ल्स एम. शुआब का कहना है—"जब मैंने कार्नेगी से अपनी पहली प्रोन्नति के बारे में पूछा तो उन्होंने घूरते हुए जवाब दिया—अगर तुम्हारा दिल उसी पर केंद्रित है, जो तुम चाहते हो, तो उसे हासिल करने से तुम्हें रोक पाना मेरे वश का नहीं।"

शुआब जानते थे कि उन्हें क्या चाहिए। कार्नेगी के अधीन वह सबसे बड़ी नौकरी थी और कार्नेगी ने उसे हासिल करने में शुआब की मदद की। निश्चित लक्ष्य को लेकर आगे बढ़नेवालों से जुड़ी सबसे विचित्र बात उन कदमों को अपनाने को तैयार रहना है, जिनसे दुनिया पीछे हट जाती है या उन्हें परे कर देती है। इसके साथ ही उन कदमों पर चलने का जजबा और उन्हें छोड़ देनेवालों का लक्ष्य अपने कंधे पर लिये साथ-साथ बढ़ना भी शामिल है।

एंड्रयू कार्नेगी ने कुशल कर्मचारी कैसे पाया

इस दर्शन की कहानी बड़ी नाटकीय है और उस खासियत को दरशाती है, जो एंड्रयू कार्नेगी ने लक्ष्य की निश्चितता पर रखा।

कार्नेगी ने अपना विशाल इस्पात उद्योग विकसित करके अकूत संपत्ति अर्जित करने में जो दिलचस्पी ली वैसी ही उन्होंने अपनी संपत्ति के सही इस्तेमाल और वितरण में भी ली। उन्होंने अपने लक्ष्य में इस बात को भी तवज्जो दी कि संपत्ति का बड़ा हिस्सा उस ज्ञान में समाहित हो, जिसकी बदौलत ये लक्ष्य हासिल हुए और वे मानवीय संबंध से जुड़ें हों। कार्नेगी ने जीवन का प्रमुख लक्ष्य वैसे व्यक्तियों को यह दर्शन विकसित करने को प्रेरित करना रखा, ताकि उनके जरिए यह ज्ञान इस दिशा में आगे बढ़ने के इच्छुक अन्य लोगों तक पहुँचे।

कार्नेगी उसके बाद वर्षों तक अपने लक्ष्य की ओर सफलतापूर्वक बढ़ते रहे और वैसे युवकों की सेवा लेने का सिद्धांत बनाया, जो बीस वर्ष या उससे भी ज्यादा समय तक व्यक्तिगत उपलब्धि के कारणों पर शोध करने का माद्दा रखते हों। 250 से ज्यादा ऐसे संभावित सहयोगियों का इंटरव्यू उन्होंने किया, जिनके बारे में कार्नेगी को लगा कि उनमें ऐसी क्षमता हो सकती है। अचानक कार्नेगी की मुलाकात एक ऐसे युवक से हो गई, जो किसी पत्रिका की ओर से कार्नेगी की उपलब्धियों पर स्टोरी करने भेजा गया था। युवक ने जब स्टोरी के लिए इंटरव्यू से संबंधित कुछ सवाल कार्नेगी से पूछे, उसी से उनको अंदाजा हो गया कि इसमें वे गुण हैं, जिसकी उन्हें काफी समय से तलाश है।

मानव प्रकृति में परखने की गहन अंतर्दृष्टि से कार्नेगी ने उस युवक के अंदर छिपी प्रतिभा को पहचान लिया और उसकी परीक्षा लेने की योजना बना डाली।

युवक द्वारा पूछे गए कई सवालों के जवाब देने के बाद कार्नेगी ने उसे सुझाया कि दुनिया को निजी उपलब्धि के एक व्यावहारिक दर्शन की जरूरत है, जो सबसे विनम्र कार्यकर्ता को अपनी इच्छा के मुताबिक धन कमाने की इजाजत दे।

तीन दिन और तीन रात तक कार्नेगी इस बारे में विस्तार से बताते रहे कि कैसे कोई व्यक्ति इस दर्शन को अपना सकता है। जब कहानी पूरी हुई, तब कार्नेगी परीक्षा लेने की तैयारी में जुट गए। वे यह इत्मीनान करना चाहते थे कि उन्हें वैसा व्यक्ति वास्तव में मिला

है या नहीं, जिस पर वे इतना भरोसा कर सकें कि यही उनके विचार को पूर्णता तक पहुँचा सकता है।

उसके बाद कार्नेगी सीधे उस युवक से रू-ब-रू हुए और उन्होंने कहा—"अब आपको मेरे नए दर्शन की पूरी जानकारी मिल चुकी है। मैं आपसे इसी सिलसिले में एक सवाल पूछूँगा, जिसका जवाब आपको सिर्फ हाँ या ना में देना है। सवाल इस प्रकार है—अगर मैं आपको निजी उपलब्धि के दुनिया के पहले दर्शन को विकसित करने का अवसर दूँ और उन लोगों से परिचय करा दूँ, जो इस काम में आपको सहयोग करेंगे, तो क्या आप ऐसा अवसर पाना चाहेंगे तथा इसे पूर्णता तक ले जा पाएँगे?"

युवक ने गला साफ किया कुछ सेकंड धीरे-धीरे बुदबुदाया और एक छोटे से वाक्य में जवाब दिया, जिसने उसे दुनिया भर में अच्छाई के लिए अपना प्रभाव जमाने का मौका दिया।

"हाँ", उसने जवाब दिया, "यह काम मैं हाथ में लूँगा और उसे पूरा करूँगा।" वह निशंचित था, क्योंकि यह वही चीज थी, जिसकी कार्नेगी को तलाश थी—'लक्ष्य की निश्चितता।'

वर्षों बाद उस युवक ने जाना कि कार्नेगी ने उससे सवाल करते समय हाथ में एक स्टॉप वाच ले रखी थी और जवाब के लिए उसने मात्र 60 सेकंड दिए। अगर जवाब में ज्यादा समय लगता तो वह अवसर हाथ से निकल जाता। युवक ने वास्तव में 29 सेकंड में ही अपना जवाब दे दिया था।

समय की कसौटी पर उसे कसने का कारण कार्नेगी ने स्पष्ट बताया।

"यह मेरा निजी अनुभव है," उन्होंने कहा, "एक निश्चित नतीजे पर पहुँचने के लिए सारे जरूरी तथ्यों के बारे में विस्तार से बताए जाने के बावजूद अगर कोई तुरंत निर्णय न ले पाए तो वैसे व्यक्ति पर यह भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह उस काम को आगे तक ले जा पाएगा। मैंने यह भी खोज की है कि तत्काल निर्णय लेनेवाले सामान्यतया किसी निश्चित लक्ष्य को लेकर चलने में अन्य परिस्थितियों में भी सक्षम होते हैं।"

कार्नेगी की जाँच की पहली रुकावट तो रँगारंग रही, लेकिन उसके बाद दूसरी परीक्षा इस प्रकार रही—"बहुत अच्छा! तुम्हारे अंदर दो आवश्यक गुणों में से एक है, जो मेरे द्वारा वर्णित दर्शन को विकसित करनेवाले व्यक्ति के लिए जरूरी है। अब मैं यह देखना चाहता हूँ कि दूसरा गुण तुम्हारे अंदर है या नहीं।

"अगर आपको दर्शन विकसित करने का मौका दिया जाए, तो क्या आप इसकी सफलता और विफलता के कारणों पर शोध में अपने जीवन के 20 वर्ष लगाना चाहेंगे? बिना वेतन के अपने ही खर्च पर यह काम करना होगा?"

इस सवाल से युवक को धक्का लगा। युवक ने सोचा कि कार्नेगी ने इतने आवश्यक काम के लिए उसे चुना है, उसे कार्नेगी की संपत्ति से रियायत मिलेगी। बहरहाल उसने धक्के से तत्काल छुटकारा पा लिया और कार्नेगी से पूछा कि इतने महत्त्वपूर्ण दायित्व के लिए वे पैसा क्यों नहीं खर्च करना चाहते हैं?

कार्नेगी के जवाब दिया, "ऐसा नहीं है कि मैं इसके लिए पैसा नहीं देना चाहता, बल्कि मेरी इच्छा यह जानने की है कि अपनी सेवा के लिए वेतन बटोरने से पहले आपके अंदर

आगे तक कुछ कर गुजरने की स्वाभाविक क्षमता है या नहीं।''

उसके बाद उन्होंने बताया कि जीवन के हर क्षेत्र में हमेशा से वही लोग ज्यादा सफल हुए हैं, जिन्हें पैसा लेकर काम करने की तुलना में निस्स्वार्थ सेवा की आदत थी।

उन्होंने इस ओर भी ध्यान खींचा कि व्यक्ति विशेष या व्यक्तियों को रियायत के तौर पर पैसे देने से प्रायः अच्छे से ज्यादा बुरा होता है। कार्नेगी ने युवक को यह भी याद दिलाया कि उसे जो अवसर मिला है, वह 250 से ज्यादा लोगों को नहीं मिल पाया, जो उससे ज्यादा उम्रदराज और अनुभवी थे। यह कहकर उसने अपनी बात समाप्त की, ''मेरे द्वारा दिए गए अवसर का भरपूर लाभ उठाकर आप इस संपत्ति को हमसे भी ज्यादा बढ़ाकर इस देश के इच्छुक दिमागों में भर सकते हैं। अपने देश के महान् उद्यमी नेताओं के अनुभवों के जरिए आपको दुनिया के सभ्य समाज में अच्छाई के लिए अपना प्रभाव जमाने का भी मौका मिलेगा और यह उस पीढ़ी के लिए भी प्रेरणास्रोत होगा, जिसने अभी धरती पर कदम नहीं रखा है।''

कार्नेगी को वैसा व्यक्ति मिल गया, जिसको वे खोज रहे थे और उसने लक्ष्य की निश्चितता तथा कुछ आगे बढ़कर काम करने की इच्छावाला उनका पहला पाठ सीखा। 20 वर्ष बाद और अमूमन आज की तारीख तक कार्नेगी ने अपने धनकुबेर दर्शन की कहानी आठ खंडों में छपवाकर दुनिया के सामने पहुँचाई है। कोई पूछ सकते हैं कि उस व्यक्ति का क्या हुआ, जिसने 20 वर्ष बिना वेतन के इस काम में लगा दिए? अपने श्रम का आखिर उसे मुआवजा क्या मिला?

इस सवाल का पूरा जवाब नहीं मिलेगा, वह व्यक्ति खुद भी नहीं जानता कि जो लाभ उसे मिला, उसकी पूरी कीमत क्या होगी। उनमें कुछ लाभ तो ऐसे लचीले हैं, जिससे जीवन भर फायदा मिलता रहेगा।

लेकिन जो लोग धन का मतलब सिर्फ पैसे में आँकते हैं, उनके लिए इतना ही कहा जा सकता है कि कुछ आगे कर गुजरने के सिद्धांत को अपनाकर हासिल किए गए ज्ञान और अनुभव पर लिखी इस व्यक्ति की किताब ने तीस लाख डॉलर से ज्यादा मुनाफा कमाया। उस किताब को पूरा करने में मात्र चार हफ्ते लगे।

ये सिद्धांत इतने प्रभावकारी क्यों हैं?

लक्ष्य की निश्चितता और कुछ आगे कर गुजरने की आदत बेहद कल्पनाशील लोगों की कल्पना को नया रंग देती है। ये दोनों निजी उपलब्धि के सत्रह सिद्धांतों में शामिल हैं। मैं बताऊँ कि ये दोनों सिद्धांत मिलकर एक ही लक्ष्य की ओर ले जाते हैं। यह इंगित करता है कि कैसे इस दर्शन के सिद्धांत आपस में माला की लड़ियों की तरह गुँथे हैं और किस प्रकार ये सब मिलकर विकास की जबरदस्त ताकत बनते हैं, जो इनमें से किसी एक सिद्धांत को अपनाकर हासिल नहीं की जा सकती।

अब हम लक्ष्य निश्चितता की ताकत और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों की ताकत का विश्लेषण करेंगे, जिससे यह ताकत मिलती है।

पहला सिद्धांत—निजी उपलब्धि के क्षेत्र में आगे बढ़ने के शुरुआती बिंदु हैं निश्चित लक्ष्य और उसे हासिल करने के लिए एक निश्चित योजना।

दूसरा सिद्धांत—सारी उपलब्धि एक खास लक्ष्य या लक्ष्यों के मिश्रण का परिणाम है। उनमें नौ बुनियादी लक्ष्य हैं, जो सारे स्वैच्छिक कार्यों को संचालित करती हैं।
(अध्याय दो में इन लक्ष्यों के बारे में जिक्र किया जा चुका है।)
तीसरा सिद्धांत—दिमाग को झकझोरनेवाला कोई भी विचार, योजना या लक्ष्य जब कार्य में परिणत होने के लिए बार-बार दिमाग में उबलता है, तो ठीक उसी समय मस्तिष्क की अवचेतन अवस्था उस पर हावी हो जाती है और उसे एक तार्किक बिंदु पर स्थिर करके उपलब्ध साधनों के जरिए सही लक्ष्य की ओर ले जाती है।
चौथा सिद्धांत—चेतन मस्तिष्क में उभरनेवाला विचार, योजना या लक्ष्य जिसके पीछे पूर्ण विश्वास के साथ उसे कार्य रूप में देखने की इच्छा हो, तो उसे दिमाग का अवचेतन हिस्सा तत्काल अपना लेता है। ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है कि इस तरह की इच्छा पूरी नहीं हुई हो।
पाँचवाँ सिद्धांत—एकमात्र वैचारिक शक्ति है, जिस पर किसी भी व्यक्ति का पूरा नियंत्रण रहता है। यह एक अकाट्य तथ्य है, जिसे पूरी आस्था के साथ मनुष्य के मस्तिष्क और अलौकिक प्रतिभा के साथ जोड़ने की जरूरत है।
छठा सिद्धांत—अवचेतन मस्तिष्क को आस्था की बदौलत मनुष्य के दिमाग के साथ जोड़कर मन में विश्वास पैदा किया जा सकता है कि वह एक पूर्ण व्यक्ति है और सक्षम है।
सातवाँ सिद्धांत—पूर्ण विश्वास के साथ लक्ष्य तय करना अक्ल का ही एक रूप है और अक्लमंदी के साथ किए गए काम का सार्थक परिणाम सामने आता है।

लक्ष्य निश्चितता के प्रमुख लाभ

लक्ष्य की निश्चितता से आत्म-निर्भरता, व्यक्तिगत पहल, कल्पना, उत्साह, आत्म-अनुशासन का विकास होता है और प्रयास पर ध्यान लगाने में सहूलियत होती है। ये सब भौतिक सफलता हासिल करने की पूर्व शर्तें हैं।

इससे अपने समय का बजट बनाने में मदद मिलती है और रोजमर्रा के काम को नियोजित करना आसान हो जाता है। यह जीवन का प्रमुख लक्ष्य हासिल करने का रास्ता दिखाता है।

यह व्यक्ति को अपने प्रमुख लक्ष्य से संबंधित अवसरों को पहचानने के लिए चौकस बनाता है और उतने जरूरी हौसले की प्रेरणा देता है, ताकि वैसे अवसर जब नजर आएँ तो व्यक्ति चूके नहीं।

यह अन्य लोगों के सहयोग के लिए भी प्रेरित करता है। यह मस्तिष्क को उस दिशा की ओर ले जाने का रास्ता बताता है, जिसे आस्था कहा जाता है ताकि उसका भरपूर सार्थक इस्तेमाल हो और दिमाग आशंका, संशय और अनिर्णय जैसी सीमाओं से मुक्त रहे।

यह सफलता के प्रति सजगता प्रदान करता है, जिसके बिना किसी भी क्षेत्र में मनोवांछित सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती।

यह निरर्थक और लक्ष्य से भटकानेवाली सोच को मिटा डालता है और अंत में यह बारह धनकुबेर उपायों में से पहले के विकास और लगातार रख-रखाव जैसी सार्थक मानसिक अवधारणा को नेतृत्व प्रदान करता है। ये लक्ष्य निश्चितता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इसके

अन्य गुण भी हैं और बारह धनकुबेर उपायों में से प्रत्येक से जुड़े हैं, क्योंकि यह तभी हासिल किया जा सकता है, जब लक्ष्य एक ही हो।

लक्ष्य निश्चितता के सिद्धांत की बारह धनकुबेर उपायों से एक साथ तुलना करें और देखें कि उनमें से प्रत्येक को हासिल करने के लिए यह कितना आवश्यक है। उसके बाद इस देश में जनमे वैसे विशिष्ट व्यक्तियों की उपलब्धियों पर गौर करें कि किस प्रकार इससे उन्हें अपने लक्ष्य तय करने और उसे हासिल करने में मदद मिली।

हेनरी फोर्ड ने पहला कम कीमतवाला ऑटोमोबाइल बनाने पर अपना ध्यान केंद्रित किया। थॉमस एडीसन वैज्ञानिक आविष्कारों में जुटे रहे और एंड्रयू कार्नेगी इस्पात निर्माण व बिक्री में लगे रहे। एफ. डब्ल्यू पूलवर्थ को पहला बिग बाजार शुरू करने का श्रेय जाता है और शिलिप आर्मर ने गोश्त-पैकिंग और वितरण की नई प्रणाली विकसित की।

विलियम रेंडोल्फ हीयर्स्ट ने अखबारों की दुनिया को नई दिशा दी और अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने टेलीफोन का आविष्कार किया।

आज की तारीख में हर ओलंपिक एथलीट एक खास लक्ष्य सामने रखकर प्रशिक्षण लेता है।

अपने ऐतिहासिक अतीत में जाएँ तो पाएँगे कि हमारा देश जेफर्सन अब्राहम लिंकन, जॉर्ज वाशिंगटन, पेट्रिक हेनरी और थॉमस पेन जैसे खास लक्ष्यवाले महान् व्यक्तियों पर निर्भर था, जिन्होंने अपना जीवन ऐसे काम को समर्पित किया जिनका लाभ हमें आजादी के रूप में मिला।

अगर प्रत्येक महान् अमेरिकी का नाम जोड़ें तो यह सूची कई गुना लंबी हो जाएगी, जिन्होंने अमेरिकी लाइफ स्टाइल को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उसे जानकर आज आप आनंदित और लाभान्वित हो रहे हैं।

निश्चित लक्ष्य हासिल कैसे करें

एक निश्चित लक्ष्य हासिल करने का तरीका आसान है। अगर आप निम्न रास्तों को अपनाएँ, तो आपके प्रयत्नों से पारितोषिक की शुरुआत होने लगेगी—

1. जीवन का प्रमुख लक्ष्य एक शीर्षक के साथ निश्चित कर पूर्ण वक्तव्य तैयार करें तथा उसे स्पष्ट रूप में लिख डालें। उस पर दस्तखत करें और स्वयं से ही उसे याद रखने की प्रतिबद्धता जताएँ। वक्तव्य को एक बार रोज अवश्य पढ़ें और मौका मिले तो बार पढ़ें। जितनी बार-बार संभव हो, उसे दुहराते रहें और अपने अंदर मौजूद अदृश्य शाश्वत विवेक पर आस्था दृढ़ बनाए रखें।
2. तय की गई अपनी उस योजना को लिखकर रखें, जिसके जरिए आपको अपना प्रमुख लक्ष्य हासिल करने की दिशा में आगे कदम बढ़ाना है। लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा कितना समय आप दे सकते हैं, वह भी लिख डालें और लक्ष्य हासिल करने के बाद बदले में आप क्या देंगे, इसका भी लेखा-जोखा तैयार कर लें। याद रहे कि 'कुछ भी नहीं' के लिए 'कुछ' जैसी कोई चीज नहीं होती और हर चीज की कीमत है, जो किसी-न-किसी रूप में एडवांस में चुकानी पड़ती है।
3. अपनी योजना को इतना लचीला बनाएँ, ताकि उसमें कभी भी किसी भी तरह का

परिवर्तन कर सकें। यह न भूलें कि क्षण-क्षण बदलता अगम-अगोचर विवेक-पुंज आपकी हर योजना का आधार है, जो हर मामले में आपसे श्रेयस्कर है। इसलिए अपने दिमाग को हमेशा इतना खुला रखें कि जब कोई नया आइडिया आए और पहले से बेहतर लगे, तो उसे तुरंत अपना लें।

4. अपना प्रमुख लक्ष्य और अपनी योजनाएँ बिलकुल अपने तक ही सीमित रखें। इस मार्ग में मिलनेवाले अतिरिक्त निर्देशों को अपनाने के लिए मास्टर माइंड सिद्धांतों के इन बिंदुओं को ध्यान में रखें :

• यह मानकर चलने की भूल न करें कि चूँकि आप ये निर्देश शायद समझ न पाएँ, इसलिए ये सिद्धांत सही नहीं हैं। पत्र के निर्देशों का मन में विश्वास रखकर अनुकरण करें और याद रहे कि ऐसा करके आप उन महान् नेताओं के पदचिह्नों पर चल रहे हैं, जो हमारे देश ने पैदा किए हैं।

• इन निर्देशों में कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसे आप आसानी से अपना न सकते हों।

• इसमें न ऐसी कोई शर्त है और न समय-सीमा या अपेक्षित क्षमता की बात, जो औसत व्यक्ति पूरी न कर सके। तय करें कि आपके जीवन की आकांक्षाएँ क्या हैं और बदले में आपको क्या त्याग करना है। तय करें कि आप कहाँ जा रहे हैं और आप क्या पाएँगे। उसके बाद वहीं से शुरू करें, जहाँ आप अभी खड़े हैं। आप न केवल उस बिंदु को खोज लेंगे, जो आपके उपयोग में आ सकता है, बल्कि उससे अच्छे अन्य साधन भी आपको सामने दिखाई पड़ेंगे।

ये उन व्यक्तियों के अनुभव हैं, जिन्होंने संसार में सफल लोगों के रूप में पहचान बनाई है। उनमें से अधिकांश व्यक्तियों ने अपनी शुरुआत बहुत मामूली साधनों और चाहत से की। वे यात्रा शुरू करते ही लक्ष्य तक पहुँच जाने को उतावले नहीं थे।

इस तरह की चाहत में गजब का जादू है

जल्द ही आप वे सिद्धांत सीख जाएँगे, जो सारी महान् उपलब्धियों की चाबी है। अपने महान् अमेरिकी बाइक स्टाइल, स्वतंत्र उद्यम के हमारे सिस्टम, संपदा एवं हमारी आजादी की यही चाबी है। लेकिन पहले आप अपनी चाहत और लक्ष्य सुनिश्चित कर लें।

लक्ष्य निश्चित करने में सफलता देनेवाले विचार

यह सर्वविदित तथ्य है कि विचार ऐसी पूँजी होते हैं, जिनकी कोई निर्धारित कीमत नहीं है। उसी तरह यह भी सब लोग जानते हैं कि विचार ही सारी उपलब्धियों की शुरुआत है। विचार ही किस्मत का आधार है और सभी आविष्कारों का आरंभिक बिंदु है। हमारे चारों ओर वैसा वायुमंडल और वातावरण मौजूद है कि इसके माध्यम से एक दिमाग से दूसरे दिमाग तक टेलीपैथी के जरिए बात पहुँच सकती है।

एडीसन द्वारा निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने से पहले फोनोग्राफ सिवाय एक अमूर्त विचार के कुछ नहीं था। इस विचार को पैदा करनेवाले अवचेतन मस्तिष्क का जब शाश्वत विवेक स्रोत से संपर्क हुआ, तो एक कार्ययोजना बाहर निकली। फिर उस कार्ययोजना को उसने मशीन में परिणत किया और वह फलीभूत हुई। एंड्रयू कार्नेगी के दिमाग में व्यक्तिगत

उपलब्धि का दर्शन एक विचार के रूप में उभरा। लक्ष्य की निश्चितता के विचार से समर्थन देकर जो दर्शन उसने दिया, वह आज दुनिया भर के औद्योगिक देशों में लाखों लोगों को फायदा पहुँचाने के लिए उपलब्ध है। दिमाग में आनेवाला कोई भी विचार जो चाहे भय से या श्रद्धा से आकार लेता है, उसकी परिपूर्णता का सबसे उपयुक्त और सुविधाजनक स्वरूप आपके सामने है।

भय चाहे अच्छा हो या बुरा, जिसकी हम बात करते हैं, इसके एक या दूसरे स्वरूप में उभरने का एक निश्चित तरीका भरोसा है। गरीबी और कंगाली की सीमाओं से निजात पाने के लिए संघर्ष करनेवालों को यह महान् सत्य भूलना नहीं चाहिए। यह व्यक्ति के साथ-साथ देश के लोगों पर भी समान रूप में लागू होता है।

आत्म सुझाव: चेतन और अवचेतन मस्तिष्क के बीच की कड़ी

चेतन मस्तिष्क में आनेवाले विचारों, सोचों, योजनाओं, आशाओं, अवसरों के दिमाग के अवचेतन प्रकोष्ठ तक पहुँचने का एक कार्य-सिद्धांत है। प्रकृति के नियम के माध्यम से इस तरह के सारे विचार एक तार्किक निष्कर्ष तक ले जाए जाते हैं। यह कैसे होता है, इसके बारे में हम बाद में बताएँगे। इस सिद्धांत को समझना और इसे समझने की कोशिश करना भी एक वजह है कि लक्ष्य की निश्चितता सारी उपलब्धियों का कारण क्यों है।

चेतन मस्तिष्क के विचार अवचेतन प्रकोष्ठ में तेजी से ले जाए जा सकते हैं। इसका सरल तरीका यह है कि आस्था, विश्वास, भय और उत्साह जैसी तीव्रतावाले उतार-चढ़ावों को परे धकेलकर उन तमाम ढुलमुल करनेवाले कंपनों को लक्ष्य की निश्चितता पर आधारित बलवती इच्छा की बदौलत राई का रोड़ा न बनने दें। विश्वास से जुड़े विचार निश्चितता के मामले में किसी भी अन्य विचार से ज्यादा ठोस होते हैं और उसमें इतनी गति होती है, जिससे अवचेतन प्रकोष्ठ तक पहुँचना तथा एक्शन में आना आसान हो जाता है। आस्था की शक्ति जिस गति से काम करती है, उसी से बहुत लोगों के इस विश्वास को बल मिला है कि कुछ निश्चित बातें तो चमत्कार का परिणाम हैं।

मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक दोनों ही ऐसी बातों को चमत्कार मानते हैं। उनका दावा है कि जो कुछ भी होता है, उसके पीछे एक निश्चित और ऐसा कारण है, जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। जो भी हो, इतना तो विदित तथ्य है कि जो लोग आस्था कहलानेवाली मानसिक अवधारणा की बदौलत अपने दिमाग को स्वयं द्वारा थोपी गई सीमाओं से मुक्त रखने में सक्षम हैं, वे सामान्यतया जीवन की किसी भी तरह की समस्या का हल ढूँढ़ लेते हैं।

मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं कि शाश्वत विवेक हर कठिनाइयों का हल निकाल दे, यह कोई जरूरी नहीं, लेकिन इससे लक्ष्य, उद्देश्य, विचार को एक तार्किक निष्कर्ष तक पहुँचने और पूर्ण विश्वासवाले अवचेतन मस्तिष्क में बिलकुल स्पष्ट अवधारणा के रूप में ले जाने में सहूलियत होती है।

बहरहाल, शाश्वत विवेक किसी विचार को बदलने या उसमें सुधार करने की कभी कोशिश नहीं करता और यह महज इच्छा या अनिश्चित विचार, सोच, लक्ष्य पर एक्शन में नहीं आता। यह सत्य दिमाग में पुख्ता रूप लेने के बाद आपको अपनी रोजमर्रा की समस्याओं का आसानी से समाधान निकालने लायक पर्याप्त शक्ति देगा और अपनी

समस्याओं से परेशान अन्य लोगों के मुकाबले कम मेहनत में आप निजात पाएँगे।

सत्य जैसे लगनेवाले तथाकथित विश्वास प्रायः ऐसे संकेत देते हैं कि शाश्वत विवेक दिमाग के चेतन प्रकोष्ठ तक पहुँचने और उसे प्रभावित करने की कोशिश करता है, लेकिन आप पाएँगे कि प्रायः इनका प्रवेश उन विचारों, योजनाओं, लक्ष्यों या इच्छाओं के जवाब में होता है, जो अवचेतन मस्तिष्क को सौंपे जाते हैं।

ऐसे विश्वासों को सावधानीपूर्वक परखा जाना चाहिए, क्योंकि ये प्रायः आंशिक या पूर्ण रूप से इसे पानेवाले व्यक्तियों के अंतरतम मूल्यों की सूचनाएँ भेजते रहते हैं। ऐसे विश्वास अकसर कई घंटों, हफ्तों और महीनों तक दिमाग में घूमते रहते हैं तथा विचार के बाद प्रेरणा जगाते हैं कि आप शाश्वत विवेक तल में पहुँच गए हैं। इस क्रम में व्यक्ति मूल विचार भूल जाता है, जिनसे वह प्रेरित होता है।

यह गहरा और गंभीर विषय है, जिसके बारे में ज्ञानी लोग भी कम जानते हैं। यह आत्म मंथन का विषय है, जिसे सिर्फ ध्यान और विचार से जीवन में उतारा जा सकता है।

अगर आप मेरे द्वारा वर्णित दिमाग के काम करने का सिद्धांत समझ लें, तो वह सूत्र जान जाएँगे कि कैसे योग, ध्यान से कभी-कभी व्यक्ति जो चाहता है—पा लेता है। बाकी समय में प्रायः वो मिलता है, जो लोग नहीं चाहते। इस तरह की मनोवृत्ति सिर्फ आत्म अनुशासन की तैयारी से हासिल होती है। सेमिनार में बाद में हम जानेंगे कि ऐसी मनोवृत्ति कैसे विकसित की जाए।

जो सफल लोग हैं, वे सिर्फ सफलता के संदर्भ में सोचने की आदत डालने की वजह से सफल हुए हैं। लक्ष्य की निश्चितता को इस तरह दिमाग पर कब्जा जमा लेना चाहिए, ताकि असफलतावाले विचारों के लिए दिमाग में न समय हो और न वजह।

जो हार जाते हैं और खुद को असफल मान लेते हैं, वे अपने दिमाग को ऐसी समुद्री यात्रा की ओर ले जा सकते हैं, जो प्रतिकूल हवा के साथ उतनी ही ताकत से लड़कर स्थिति बदल दे और उन्हें सफलता की लहरों की ओर ले जाए। जैसा कि एक कवि ने कहा है—

"एक जहाज पूरब जाता है, एक जहाज पश्चिम,
धकेलता है एक ही गति से आत्म,
यह तेज हवा नहीं, दरियाई यात्रा का काफिला है,
जो बताता है कि जाना कहाँ है।"

जिन्हें अपने को वैसा समझने का गर्व है, जिसे दुनिया 'ठंडे दिमागवाला और व्यावहारिक' कहती है, उन्हें लक्ष्य की निश्चितता का यह सिद्धांत अव्यावहारिक लग सकता है। चेतन विचार शक्ति से भी बड़ी एक शक्ति है और प्रायः दिमाग में इसकी प्रतिछवि दिखाई नहीं देती। महान् उपलब्धि की इच्छा पर आधारित कोई निश्चित उद्देश्य सफल बनाने के लिए इस सत्य को स्वीकारना जरूरी है।

हर किसी के जीवन की प्रत्येक परिस्थिति एक निश्चित कारण का परिणाम है, चाहे वह परिस्थिति सफलता लानेवाली हो या असफलता। हर एक के जीवन की कई परिस्थितियाँ बहुत सारे कारणों की परिणाम हैं, जिन पर उस व्यक्ति का नियंत्रण है या हो सकता है। यह स्पष्ट यथार्थ लक्ष्य की निश्चितता के सिद्धांत की पहली विशेषता को महत्त्व देता है। लोगों के जीवन की परिस्थितियाँ अगर वैसी न हों, जैसी वे चाहते हैं, तो उन परिस्थितियों में

मनोवृत्ति बदलकर और नई तथा ज्यादा वांछित वैचारिक आदतों से परिवर्तन लाया जा सकता है।

लक्ष्य की निश्चितता सफलता की ओर कैसे ले जाती है

हमारे औद्योगिक सिस्टम के विकास में जितने महान् अमेरिकी उद्योगपतियों का योगदान है, उनमें स्वर्गीय वाल्टर क्रिस्लर जैसा प्रभावशाली कोई नहीं हुआ। पैसा और शोहरत कमाने की ख्वाहिश रखनेवाले प्रत्येक युवा अमेरिकी को उनकी कहानी से उम्मीद जगनी चाहिए। इससे उन्हें वे शक्ति मिलेगी, जिससे वे लक्ष्य की निश्चितता की ओर बढ़ सकते हैं।

साल्ट लेक शहर की एक रेलरोड दुकान के मैकेनिक के रूप में क्रिस्लर ने अपनी यात्रा शुरू की। बचत से उसने मात्र 4,000 डॉलर जमा किए जिन्हें उसने अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए पूँजी के रूप में रखा। अपने चारों तरफ देखकर क्रिस्लर ने ऑटोमोबाइल उद्योग के भविष्य का अंदाजा लगाने के बाद उसी क्षेत्र में कदम बढ़ाने का निश्चय किया। व्यवसाय शुरू करने का उसका तरीका बिलकुल नया और नाटकीय था।

क्रिस्लर ने शुरुआत ही ऐसी की, जिससे उसके दोस्तों को धक्का लगा और रिश्तेदार सकते में आ गए। उसने बचत के सारे पैसे एक ऑटोमोबाइल में लगा दिए। जब वो कार साल्ट लेक नगर पहुँची, तब उनके दोस्तों को दूसरा धक्का लगा, क्योंकि कार के टुकड़े नजर आ रहे थे और सारे कलपुर्जे पूरी दुकान में बिखरे पड़े थे।

उसके बाद क्रिस्लर ने सभी कलपुर्जों को एक जगह एकत्र करना शुरू किया। क्रिस्लर ने उस काम को इतनी बार दुहराया कि उसके दोस्तों को लगा कि उसकी मति मारी गई है और दिमाग खराब हो गया है। क्योंकि वे उसका लक्ष्य समझ नहीं पा रहे थे। उन लोगों ने सिर्फ इतना देखा कि क्रिस्लर ऑटोमोबाइल के साथ काम कर रहा है, लेकिन वे यह नहीं देख पा रहे थे कि वाल्टर क्रिस्लर के दिमाग में कौन सी योजना आकार ले रही थी। वह अपने दिमाग को ऑटोमोबाइल सजग बनाने में जुटा था, जिसका आधार था खास लक्ष्य।

क्रिस्लर कार के सारे कलपुर्जों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कर रहा था। जब क्रिस्लर सारे कलपुर्जों को बिखेरने और उन्हें एक साथ जोड़कर निर्माण प्रक्रिया में तल्लीन होता था, उस वक्त उसके दिमाग में उसके सभी प्लस-माइनस पॉइंट घूमते रहते थे। उसी अनुभव से क्रिस्लर ने अच्छे पॉइंट को जोड़कर और कमजोर पॉइंट को छोड़कर कार को डिजाइन करना शुरू किया। उसने इतने इत्मीनान और गहराई में डूबकर अपना काम पूरा किया कि जब क्रिस्लर का ऑटोमोबाइल बाजार में पहुँचा, तो पूरे ऑटोमोबाइल उद्योग में तहलका मच गया। क्रिस्लर को दौलत और शोहरत दोनों ही मिलनी निश्चित थी। क्योंकि शुरू करने से पहले उसे पता था कि कहाँ जा रहे हैं और उसने अपनी यात्रा के बिलकुल सही पड़ाव तक पहुँचने की तैयारी कर ली थी।

निश्चित लक्ष्य को लेकर आगे बढ़नेवाले जहाँ भी मिलें, उनके जीवन पर गौर करें। आप उनकी इस टेक्निक से प्रभावित होंगे, जिनसे उन लोगों को अन्य लोगों से मैत्रीपूर्ण सहयोग मिला।

वाल्टर क्रिस्लर का बारीकी से विश्लेषण करें कि कैसी निश्चितता से उसने जीवन के बारह

धनकुबेर उपाय हासिल किए और उनमें से कई तैयार किए। उसने उनमें से सबसे बड़े उपाय सकारात्मक मनोवृत्ति से ही अपना अभियान शुरू किया। उसी से क्रिस्लर को उपजाऊ जमीन मिली, जिसमें निश्चित प्रमुख लक्ष्य के बीज बोए और उगाए जा सकते थे। वह लक्ष्य था—उम्दा मोटरकार बनाना।

उसके बाद एक-एक करके उसने अन्य उपाय भी प्राप्त किए; अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य, मानवीय संबंधों में समरसता, भय से मुक्ति, उपलब्धि की उम्मीद, आस्था की क्षमता, दुआओं को बाँटने की तमन्ना, प्रेम का श्रम, सभी विषयों पर खुला दिमाग, आत्म-अनुशासन, लोगों को समझने की क्षमता और अंत में वित्तीय सुरक्षा।

वाल्टर क्रिस्लर की सफलता से संबंधित सबसे कमाल का तथ्य है, उनकी सरलता और सादगी, जिसकी बदौलत उन्होंने सबकुछ हासिल किया। उनके पास उद्योग शुरू करने के समय अपेक्षित कार्यरत पूँजी नहीं थी। उन्हें शिक्षा भी मामूली प्राप्त हुई थी। उनके पास समर्थन देनेवाले वैसे धनी भी नहीं थे, जो व्यवसाय खड़ा करने में मदद पहुँचा सकते थे, लेकिन क्रिस्लर ने एक व्यावहारिक आइडिया और पर्याप्त व्यक्तिगत पहल से यह सोचकर अपना काम शुरू किया कि वे जो भी कर रहे हैं, सही कर रहे हैं। अपनी निश्चित योजना को साकार करने के लिए जरूरत की सारी चीजें उनके हाथों में इतनी तेजी से आती गईं, मानो पहले से ही उसके लिए तैयार हों। ऐसा हुनर और उसके अनुकूल परिस्थिति निश्चित लक्ष्य को लेकर आगे बढ़नेवालों के लिए कोई असामान्य सी बात नहीं है।

उनके समय के एक प्रसिद्ध नेता एडवर्ड बोक बीसवीं सदी के समय तक अप्रवासी थे, जिन्होंने इन सिद्धातों का अनुसरण कर इतिहास बनाया। वे छह साल की उम्र में इस देश में आए और भाषा बोलना भी नहीं जानते थे।

वेस्टर्न यूनियन के एक चपरासी की नौकरी से शुरुआत करनेवाले एडवर्ड ने 'दि लेडीज होम जर्नल' का संपादन किया और इसे दुनिया की पहली ऐसी पत्रिका बना दिया, जिसके दस लाख पाठक हैं। सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित उन्होंने न्याग्रा फॉल्स के संरक्षण में मदद पहुँचाई और प्रिंसटन में वुडरो विल्सन लिटरेचर प्रोफेसरशिप स्थापित की।

बोक ने यह सारा कुछ प्रैक्टिकल आइडिया और निजी स्तर पर पहल से किया। अपनी निश्चित योजना को साकार करने के लिए जरूरत की सारी चीजें उन लोगों में इतनी तेजी से आती गईं मानो पहले से ही उसके लिए तैयार हों। ऐसा हुनर और वैसी परिस्थिति निश्चित लक्ष्य को लेकर आगे बढ़नेवालों के लिए कोई असामान्य सी बात नहीं है।

बोक की सारी बड़ी-बड़ी ख्वाहिशें लक्ष्य बन गईं। दरअसल, उनकी इच्छा एक महान् अमेरिकी नागरिक के रूप में पहचान बनाने की थी। जिस देश में आकर उन्होंने अपनी महत्त्वाकांक्षा पूरी की, वहाँ उन्हें उसके विशाल अवसर मिले और एडवर्ड ने अपना लक्ष्य पूरा किया।

मैं बताना चाहूँगा कि एडवर्ड के सारे लक्ष्य खुद के तय किए हुए थे और अपने दिमाग की उपज थे। इनमें से प्रत्येक उसने अपने हुनर तथा प्रयासों से हासिल किया। बोक भाग्यशाली अंतरालों पर निर्भर रहे और कुछ भी नहीं के लिए कुछ की उम्मीद रखी। उसने निश्चित लक्ष्य पर आधारित सावधानीपूर्वक तैयार योजना की बदौलत अपनी किस्मत स्वयं बनाई।

वाल्टर क्रिस्लर की तरह बोक ने भी धनकुबेर बनने के बारह उपाय हासिल करके अपने

दिमाग को सफलता पर केंद्रित किया।

एक घंटे से भी कम समय में बीस लाख डॉलर

कार्नेगी के व्यक्तिगत उपलब्धि दर्शन के कुछ ही दिन बाद 'सोचो और धनी बनो' किताब छपी। प्रकाशक को डेस मोइंस लोवा के अंदर और बाहर के बुक स्टॉलों से सप्लाई ऑर्डर मिलने लगे। इस किताब में कार्नेगी की पुस्तक के एक हिस्से की अपने ढंग से व्याख्या की गई थी।

ऑर्डरों में जल्द-से-जल्द किताबें भेजने की बात कही गई थी। अचानक इस किताब की माँग कई हफ्तों तक रहस्य बनी रही। सन लाइफ बीमा कंपनी के एक जीवन बीमा एजेंट एडवर्ड पी. चेस का एक पत्र जब प्रकाशक को मिला, तब यह रहस्य खुला। पत्र का मजमून इस प्रकार था—'आपकी किताब 'थिंक एंड ग्रो रिच' (सोचो और धनी बनो) के प्रति कृतज्ञता और प्रशंसा व्यक्त करने के लिए मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। इसमें दी गई सलाह पर चलकर हासिल आइडिए से मैंने 2 करोड़ रुपए की बीमा पॉलिसी बेची।' डेस मोइंस में इतने बड़े पैमाने पर बिक्री उससे पहले कभी नहीं हुई थी। चेस के पत्र का सबसे महत्त्वपूर्ण वाक्य उसका दूसरा वाक्य है—मैंने पत्र से उस सलाह का अनुसरण किया। उस आइडिए पर उसने निश्चित लक्ष्य के इरादे से काम किया। इससे चेस को एक घंटे से भी कम समय में इतना पैसा कमाने में मदद मिली, जो अधिकांश बीमा एजेंटों ने पाँच साल के लगातार प्रयासों से नहीं कमाए। एक ही संक्षिप्त वाक्य में चेस ने अपने व्यवसाय की पूरी कहानी कह डाली। इस व्यवसाय ने उसे अन्य सामान्य बीमा एजेंटों की श्रेणी से उठाकर सम्मानित मिलियन डॉलर राउंड टेबल का सदस्य बना दिया।

किताब पढ़ने के दौरान चेस के दिमाग का संपर्क लेखक के दिमाग से हुआ और उससे चेस के दिमाग ने इतनी तेजी से काम किया कि निश्चित इरादेवाला एक आइडिया पैदा हुआ। आइडिया इतनी जीवन बीमा पॉलिसी बेचने का था, जितनी उसने पहले कभी सोची नहीं थी। बीमा पॉलिसी बिक्री उसके जीवन का निश्चित प्रमुख लक्ष्य बन गया। बिना किसी हिचहिचाहट और देर के चेस चल पड़ा तथा एक घंटे से भी कम समय में उसने अपने लक्ष्य हासिल कर लिये।

मैंने अपनी व्यक्तिगत शक्ति की कैसे खोज की

जैसा कि एंड्रयू कार्नेगी ने एक बार कहा था कि निश्चित लक्ष्य लेकर आध्यात्मिक शक्तियों की बदौलत आगे बढ़नेवाला वैसे लोगों को चुनौती दे सकता है, जो अनिर्णय की स्थिति में सीटों की कतारों की ओर सरका देते हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि कोई पॉलिसी बेचता है या गड्ढा खोदता है।

दिमाग में उभरनेवाला कोई ताजा आइडिया इस तरह दिमाग की बॉयोकेमिस्ट्री बदल सकता है। यह आध्यात्मिक गुण हासिल करके मन में भर देता है कि हार या असफलता जैसी कोई चीज वास्तव में नहीं होती। अधिकांश लोगों की असली कमजोरी यह है, जैसा कार्नेगी प्रायः कहा करते हैं कि वे बाधाओं को तो पहचान लेते हैं, लेकिन उपलब्ध आध्यात्मिक शक्तियों को नहीं पहचान पाते, जिनकी बदौलत वे मरजी के मुताबिक उन

बाधाओं से निजात पा सकते हैं।

खुद पहचानी गई आध्यात्मिक शक्तियों की परिस्थितियाँ याद आती हैं, जो मुझे उपलब्ध हैं। अभी कल की ही बात है। कमाल देखिए कि यह पहचान उसी किताब (सोचो और धनी बनो) से मिली, जिससे एडवर्ड पी. चेस प्रेरित होकर अपने पसंदीदा व्यवसाय में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने में सफल हुए।

मेरी पत्नी ने पब्लिक लाइब्रेरी से वह किताब लाकर मुझे पढ़ने को दी। पन्ने उलटने से पहले किताब का कवर देखकर ही मैंने ऐसा अजीबोगरीब प्रेरक रोमांच महसूस किया कि तुरंत ही पढ़ डालने की इच्छा जाग उठी। पहला पाठ समाप्त करते-करते मुझे लगने लगा कि हमारे हाथों में इस किताब के आने के पीछे कुछ खास तरह की किस्मत काम कर रही है। मैं किताब लिये बिस्तर पर गया और एक-एक पन्ना पढ़ने के बाद ही सोया। सवेरे मेरे अंदर से एक नया आदमी जगा। अमूमन मेरा पुनर्जन्म हुआ और अनिर्णय तथा संशय हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो गया।

विगत छह वर्षों से उस आइडिए की बदौलत मैं दुनिया के लाखों लोगों के कल्याणार्थ अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने की स्थिति में हूँ। अंत में मैंने अपना यह धन अन्य लोगों के साथ शेयर करने की कला हासिल की, जो भगवान् की दुआ है। मैंने बारह उपाय अपने पूर्ण और कल्याणकारी रूप में हासिल किए हैं। मैंने अपने दूसरे आत्म की खोज की, जो आत्म पहले से नहीं जानता था। मैंने उन नौ प्रैक्टिसों (नियमों) का अस्तित्व भी खोजा, जिन्होंने मेरे हर काम में गाइड की तरह सहयोग किया।

अपने जीवन में आए परिवर्तन से मैं इतना खुश था कि मुझे लगा, इस किताब के लेखक से व्यक्तिगत रूप से मिलकर अपनी किस्मत बदलने के लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहिए। उन्हें ढूँढना नदी में सुई खोजने जैसा था। वे रिटायर होकर सबसे अलग कहीं एकाकी जीवन गुजार रहे थे। उनका प्रकाशक भी पता नहीं दे पाया। एक से दूसरे पते पर उन्हें तलाशता रहा और तीन बार महाद्वीप का चक्कर लगाने के बाद आखिरकार मैंने उस लेखक का ठिकाना खोज लिया।

मैं अपनी इस सोच की वजह से उनसे मिलने को बेचैन था कि उन्होंने 'सोचो और धनी बनो' किताब में व्यक्तिगत उपलब्धिवाले विषय पर संभवतः अपना सारा ज्ञान नहीं झोंका था। मेरी यह धारणा सही थी। मैंने पाया कि लेखक ने व्यक्तिगत उपलब्धि के तो सत्रह में से मात्र तीन का ही अपनी किताब में जिक्र किया है। इस तरह किताब में पूरी तरह एक नया कोर्स आ गया है, जिसमें सभी सत्रह सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं।

कुछ आगे तक कर गुजरने के सिद्धांत पर मैं बेहद भरोसा करता हूँ और इस सिलसिले में लेखक से जीवन के प्रमुख उद्देश्य के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से से जोड़ने की अनुमति माँगी। इसके पीछे उद्देश्य इस दर्शन से बीमार जगत् को जरूरत के वक्त सहायता करना है। मैंने लेखक से कहा और वही आपसे भी कह रहा हूँ कि मैं अमेरिका का राष्ट्रपति बनने के बजाय उस दर्शन का लेखक बनना पसंद करूँगा। अगला कदम मेरा दुनिया की सारी संपत्ति का मालिक बनने के बजाय दुनिया की मदद के लिए हाथ आगे करना होगा। ऐसा करने की सुविधा मुझे मिली है। इसका इस्तेमाल मैंने कई रूपों में किया है। सबसे पहला तो है, संक्षेप में यह दर्शन उपलब्ध कराना, जो धारावाहिक रेडियो प्रोग्राम के जरिए एक हफ्ते में कई

बार प्रसारित होकर लोगों तक पहुँच रहे हैं।

छपे हुए पाठों के रूप में इस दर्शन को देश भर में न्यूज स्टैंडों और बुक स्टॉलों के जरिए वितरित कराकर मैंने लोगों की दूसरी मदद की।

इसकी फिल्म बनाकर कंपनियों की बैठकों में दिखाई गई और प्रबंधन के सहयोग से भी वितरित की गई।

इसके अलावा दर्शन के इन सूत्रों के प्रचार-प्रसार के लिए मैंने देश में निजी स्टडी ग्रुपों को मदद पहुँचाई, जिनमें ये दर्शन प्रस्तुत किए गए। देश की धार्मिक संस्थाओं को मदद पहुँचाने के पीछे भी मेरा उद्देश्य था कि यह दर्शन उनके सदस्यों को उपलब्ध हो।

मैंने लेखक से बच्चों के लिए एक किताब लिखने का आग्रह किया है, जिसमें यह दर्शन इस तरह प्रस्तुत किया जाए, जो बच्चों के सोचने-समझने की शक्ति के अनुरूप हो। इस किताब का वितरण बुक स्टॉलों के माध्यम से होगा और सभी पब्लिक स्कूलों में यह किताब उपलब्ध रहेगी।

इसके साथ ही मैंने यह व्यवस्था भी कराई है कि इस दर्शन के जरिए प्राप्त अवसर इतने विशाल और विस्तृत पैमाने पर फैले हुए हों, ताकि दुनिया में कहीं भी कोई अपने लिए जगह तलाश रहा हो, तो उसे यह उपलब्ध हो।

अपने दिमाग के अंदर निश्चित प्रमुख लक्ष्य से उपजी बातों से जो योगदान मैं कर रहा हूँ, वह यकीन मानिए, वास्तव में प्रेम का श्रम है। मेरा मुआवजा लगातार बढ़ता रहनेवाला है, जो वही जानते हैं, जिन्होंने अपनी संपदा को अन्य लोगों के बीच बाँटा हो। वास्तव में सच्चा धन वही है, जो सबके साथ मिल-बैठकर भोगा जाए।

मेरी जानकारी में यह सही है, मैंने आपस में बाँटकर धन हासिल किया। रिटर्न आए बिना मैंने कभी किसी की कोई मदद नहीं की, एक या दूसरे स्रोत के जरिए जितना मेरा योगदान है, उससे दस गुना ज्यादा।

जो भी धन मैंने दूसरों को बाँटे, उसके लिए महिमामंडित होना कभी नहीं चाहा। कभी-कभार दिए जानेवाले क्षतिपूर्ति अनुदानों को छोड़कर, जहाँ नाम उजागर करना आवश्यक है, मैंने सारे योगदान बेनाम किए। नाम के बजाय मैंने अपनी आत्मा को दूसरों की मदद पहुँचाकर महिमामंडित किया। जो धन मैंने छोड़े, वे मेरे अपने ही धन से जुड़ गए।

अपना निश्चित प्रमुख लक्ष्य कैसे तलाश करें

सभी सत्यों में से सबसे विचित्र अपनी समस्या का निश्चित हल है; अपने से ज्यादा बड़ी समस्या से परेशान किसी व्यक्ति को खोजें तथा उसकी समस्या का निदान निकालने में मदद करें। इसके लिए कुछ आगे तक कर गुजरने की आदतवाला कुछ तरीका अपनाएँ।

यह सरल फॉर्मूला है, लेकिन इसमें जादू और आकर्षण है तथा यह कभी काम करना बंद नहीं करता। इसके सत्यापन की जाँच सिर्फ आप मेरे मुँह से सुनकर और उसे जानकर नहीं कर सकते। आप इसे अपनाएँ और अपने हिसाब से आजमाएँ। उसके बाद आपको इसके सत्यापन और इसकी विश्वसनीयता आजमाने की जरूरत नहीं होगी। आप पाएँगे कि कई अवसरों से आप घिरे हैं।

अपने पड़ोसियों और साथी कर्मचारियों के लिए फेलोशिप क्लब आयोजित करके आप

इसकी शुरुआत कर सकते हैं, जिसमें आप खुद को नेता और उस समूह के शिक्षक के रूप में प्रस्तुत करें। यहाँ आप एक और सत्य से रू-ब-रू होंगे कि व्यक्तिगत उपलब्धि दर्शन के सिद्धांतों को प्रयुक्त करने का सर्वोत्तम तरीका है—इससे दूसरों को परिचित कराना।

अगर कोई दूसरों को कुछ सिखाना शुरू करता है, तो वह स्वयं भी उसके साथ कुछ-कुछ सीखता जाता है। अभी आप इस दर्शन के छात्र हैं, मगर दूसरों को शिक्षित कर आप मास्टर बन सकते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या काम कर रहे हैं, यह आपके लिए एक बड़ा अवसर है कि दूसरों की सहायता करके आप शांति व सद्भाव का संबंध उनसे बनाएँ। इससे उस प्रबंधक को अपने साथियों का विश्वास जीतने और उनका पूर्ण सहयोग लेने में मदद मिलेगी, जो इस दर्शन के जरिए उसे निर्देश देते हैं।

अगर आपने पहले से जीवन में निश्चित प्रमुख लक्ष्य का सिद्धांत नहीं अपना रखा है तो वैसा करने का आपके सामने यहाँ एक अवसर है। आप जहाँ हैं, वहीं से शुरू करें और यह दर्शन उन्हें सिखाने में सहयोग दें, जिन्हें इसकी जरूरत है। एक समय आएगा, जब इससे आप अपने पड़ोसी की व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में मदद करके तो लाभान्वित होंगे ही, साथ ही हममें से प्रत्येक को आत्म-संरक्षण के साधन के रूप में भी यह काम उपयुक्त प्रतीत होगा। अगर आपके पड़ोसी के घर में आग लग जाए तो आप उसे बुझाने तुरंत दौड़ जाएँ, भले ही पड़ोसी से आपका अच्छा संबंध न हो। यह सामान्य सी बात मानकर चलें कि एक प्रकार से आप अपने ही घर में लगी आग बुझा रहे हैं। जीवन के ऐसे ठोस दर्शनवाले अपने को अवसरों से घिरे पाएँगे, जो उन्हें एक दशक पहले तक उपलब्ध नहीं थे। निश्चित प्रमुख लक्ष्य के बिना हाथ-पाँव मारनेवालों को उन लोगों से ज्यादा बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, जो औसतन व्यक्ति निबटा सकते हैं। आज और कल की दुनिया में ज्यादा लाभप्रद अवसर उन्हें मिलेंगे, जो अपनी पसंद के क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने के लिए खुद को तैयार कर लें।

किसी भी क्षेत्र में नेतृत्व के लिए ठोस दर्शन के आधार की जरूरत है। हिट और मिस के नेतृत्ववाले दिन हमेशा-हमेशा के लिए लद गए। हुनर, तकनीक और मानवीय संबंध की लगातार बदल रही आज की दुनिया में ज्यादा जरूरत है।

इस परिवर्तनशील युग में निश्चित प्रमुख लक्ष्य के बिना आप स्वयं को कहाँ पाते हैं, इसका जवाब अपने ही अंदर खोजें और नए अवसरों की तैयारी करके उनका लाभ उठाएँ। अगर मैं वैसा करने की स्थिति में हूँ तो बेशक आपके लिए एक निश्चित प्रमुख लक्ष्य पसंद कर सकता हूँ, जो आपकी योग्यता और जरूरतों के अनुरूप हो। मैं आपके लिए एक सरल योजना भी तैयार कर सकता हूँ, जिसके जरिए आप अपना लक्ष्य हासिल कर सकते हैं, लेकिन मेरे लिए उससे बेहतर आपकी सेवा यह होगी कि आपको स्वयं ही ये तैयारियाँ करने की कला सिखाऊँ। उससे क्या होगा कि वह आइडिया रास्ते में ही अपने आप आपके दिमाग में आ जाएगा और लगेगा कि आप इसकी तलाश में थे। इस दर्शन के अधिकांश छात्रों का यही अनुभव है। जब आइडिया आएगा तो आप तुरंत उसे पहचान जाएँगे, क्योंकि आइडिए में इतना बल होता है, जिससे बचकर आप भाग नहीं सकते। उसके बाद निश्चय ही आप महसूस करेंगे कि आप गंभीरता से इसकी खोज कर रहे थे। इस दर्शन की सबसे खास विशेषता यह है कि इससे नए विचार की प्रेरणा मिलती है। यह दर्शन आपको अग्रणी

रखनेवाले अवसरों से अवगत कराता है, जो पहले आपके सामने से गुजर गया और आपने ध्यान नहीं दिया।

यह दर्शन आपको उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए निजी पहल को प्रेरित करता है। इस दर्शन की यह खासियत कोई इत्तेफाक नहीं है। यह इस हिसाब से ही तैयार किया गया है, ताकि विशिष्ट असर दिखाए। खुद ही पैदा किए गए अवसर और अपनी वैचारिक शक्ति से उपजे आइडिए वैसे विचारों के मुकाबले ज्यादा लाभकारी साबित होते हैं, जो अन्य लोगों से उधार लिये होते हैं। इस तरीके से वैसे विचार व्यक्ति के दिमाग में ज्यादा पैदा होते हैं, जिनके जरिए बिना गलती किए जरूरत के समय और अतिरिक्त आइडिए का स्रोत मिल जाता है।

यह अपने आप में एक महान् उपलब्धि है कि व्यक्ति स्वयं आइडिया पैदा करने की प्रेरणा लेनेवाला स्रोत जान ले, क्योंकि आत्म-निर्भरता एक अनमोल संपदा है। उसके बाद ऐसा समय आ सकता है, जब आपको अन्य दिमागों के संसाधन अपनी ओर खींचने की जरूरत महसूस हो। उस समय आप वैसे व्यक्तियों को नेतृत्व जरूर दें, जो व्यक्तिगत उपलब्धि के उच्चतर नेतृत्व देने की इच्छा रखते हों।

अपनी निजी क्षमता का विकास कैसे करें

अब हम आपको वे साधन बताएँगे जिनके जरिए निश्चित लक्ष्य हासिल करने पर केंद्रित कई दिमागों के सम्मिश्रण से व्यक्तिगत शक्ति या क्षमता विकसित की जा सकती है। इसी साधन के जरिए एंड्रयू कार्नेगी महान् इस्पात निर्माता बने और अमेरिका को महानतम उद्योग प्रदान किया, जबकि उनके पास ऐसा उद्योग खड़ा करने लायक न तो पूँजी और न ही वैसी तालीम थी।

इसी साधन के जरिए, थॉमस एडीसन हर समय हर युग के महानतम आविष्कारक बने, जबकि उन्हें फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथमेटिक्स का ज्ञान भी नहीं था। इतना ही नहीं, टॉमस अल्वा एडीसन को इलेक्ट्रोनिक्स या कई अन्य वैज्ञानिक वस्तुओं को भी जानकारी नहीं थी, जो उनके आविष्कार से जुड़े काम के लिए आवश्यक थीं। यह जानकर आपको आशावान होना चाहिए कि शिक्षा, पूँजी और तकनीकी हुनर की कमियाँ जीवन का प्रमुख लक्ष्य स्थापित करने में आपकी बाधक नहीं बनेंगी। इस दर्शन द्वारा चिह्नित रास्ते पर चलकर औसत योग्यतावाला व्यक्ति भी अपनी पसंद के लक्ष्य तक पहुँच सकता है।

यह दर्शन आपके लिए लक्ष्य तो तय नहीं करेगा, लेकिन जब एक बार आपने लक्ष्य स्थापित कर लिया, तो यह दर्शन आपको बिना भटकाव के लक्ष्य हासिल करने का तरीका बताएगा। बिना योग्यता के भी यह वायदा है। मैं यह तो नहीं बता सकता कि आप क्या चाहत करें या कितनी सफलता की उम्मीद रखें, लेकिन वह फॉर्मूला दे सकता हूँ जिसके जरिए सफलताएँ हासिल की जा सकती हैं।

अभी तो आपका प्रमुख दायित्व है, यह पता लगाना कि आप जीवन में चाहते क्या हैं, आप कहाँ जा रहे हैं और जब आप वहाँ पहुँच जाएँगे, तो क्या करेंगे। यह वे दायित्व हैं जो आप क्या, कोई भी कल्पना से नहीं निभा सकता। ढुलमुल सोच की वजह से 100 में से 98 लोग इस संबंध में अनुमान नहीं लगा सकते। यह प्रमुख कारण है, जिसके चलते 100 में से

मात्र दो सफल माने जाते हैं।

सफलता की शुरुआत ही लक्ष्य की निश्चितता से होती है

एकमात्र लक्ष्य का होना अनमोल संपदा है, क्योंकि कुछ ही लोग ऐसा सोच पाते हैं। यह ऐसी संपत्ति है, जिसे एक क्षण के नोटिस में उपयुक्त जगह फिट किया जा सकता है। अपने जीवन की चाहत तय करने के लिए दिमाग स्थिर करके एक नतीजे पर पहुँचें, जिसका कोई विकल्प न हो। आप अनमोल संपत्तियों में से सबसे महत्त्वपूर्ण संपत्ति हासिल कर लेंगे, लेकिन आपकी ख्वाहिश महज इच्छा या उम्मीद न हो। यह एक ज्वलंत ख्वाहिश हो और इतनी बलवती हो कि इसे हासिल करने के लिए आप कोई भी कीमत चुकाने को तत्पर हों। कीमत कम भी हो सकती है, ज्यादा भी, लेकिन आप अपने दिमाग को अदायगी के लिए तैयार करें, चाहे जितनी भी हो। जीवन का निश्चित प्रमुख लक्ष्य तय करते ही आप एक विभिन्न परिस्थिति यह देखेंगे कि इसे हासिल करने के तौर-तरीके तत्काल आपके सामने खुलने शुरू हो गए हैं। जैसे अवसरों के बारे में आपने पहले सोचा भी नहीं, वे आपके रास्ते में बिछ जाएँगे।

आपको अन्य लोगों का सहयोग मिलने लगेगा और जादुई तरीके से मित्र भी मिलने लगेंगे। भय और आशंकाएँ समाप्त होने लगेंगी और आपके अंदर आत्म-निर्भरता की अनुभूति होगी।

यह वायदा सुनने में बिना पहल के और फंतासीवाला लग सकता है, मगर उन लोगों को ऐसा नहीं लगेगा, जो अनिर्णय की स्थिति से उबर चुके हैं और अपने जीवन का निश्चित लक्ष्य निर्धारित कर चुके हैं। मैं सिर्फ अन्य लोगों द्वारा प्राप्त अनुभवों द्वारा नहीं, बल्कि खुद के अनुभव के आधार पर ये बातें कह रहा हूँ। मैंने स्वयं को असफलता के कगार से निकालकर सफलता की चोटी पर पहुँचाया है, इसलिए मैं आपसे वह वायदा करने का अधिकार रखता हूँ, जिसकी आप उम्मीद करते हैं, बशर्ते कि इस दर्शन द्वारा उपलब्ध रोड मैप का आप अनुसरण करें। अपना निश्चित प्रमुख लक्ष्य तय करने की प्रेरणा जब मन में जागे तो उस समय अपने मित्रों, रिश्तेदारों और नजदीकी व्यक्तियों द्वारा दिवास्वप्न देखनेवाला कहे जाने पर हतोत्साहित न हों।

सिर्फ इतना याद रखें कि सपने बुननेवाले ही मानव प्रगति के सभी रास्तों में आगे रहते हैं। उन्हीं लोगों ने हमें मुक्त उद्यम की महान् अमेरिकी व्यवस्था दी है। उन लोगों ने हमें सबसे बड़ी संपदा दी है, जिसमें हम व्यक्तिगत आजादी और अपनी पसंद के अनुकूल सपने बुनने के अधिकार का लुत्फ उठा रहे हैं। उन लोगों ने हमें दुनिया की सबसे शक्तिशाली वायुसेना और नौसेना प्रदान की है। उन लोगों ने सभ्यता के मोर्चों को पीछे छोड़कर अमेरिकी जीवन शैली की ऐसी शानदार प्रस्तुति दी, जो दुनिया भर के लिए ईर्ष्या का कारण बनी हुई है।

क्रिस्टोफर कोलंबस ने एक अज्ञात विश्व का सपना देखा, वह अपरिचित सागर के रास्ते पर चल पड़ा और एक नई दुनिया खोज निकाली। कोपरनिकस ने एक अदृश्य जगत् का सपना देखा और एक विकसित टेलिस्कोप के जरिए भय और अंधविश्वास से परे अद्‌भुत जानकारी दुनिया को दी।

एडीसन ने एक लैंप का सपना देखा, जो बिजली से जलनेवाला था। वह अपना सपना पूरा करने में जुट गया और दस हजार असफलताओं के बावजूद एडीसन ने दुनिया को वह लैंप दिया।

इसलिए किसी को सपना देखने से हतोत्साहित करने का अवसर न दें और यह सुनिश्चित करने में जुट जाएँ कि लक्ष्य की निश्चितता पर आधारित आपका सपना एक्शन में आए। आपकी सफलता के अवसर उन्हीं की तरह ज्यादा हैं, जिनसे प्रेरित होकर आपने आगे कदम बढ़ाया है। कई मामलों में तो आपके अवसर ज्यादा महानतम हैं, क्योंकि व्यक्तिगत उपलब्धि सिद्धांत का ज्ञान हासिल करके उन लोगों की श्रेणी में अब आप आ गए हैं, जिनका लाभ आपसे पहले के लाखों सफल लोगों को कठिनाई से और लंबा रास्ता तय करके मिला है, जिन्होंने अपनी संपदा बाँटने में उदारता दिखाई है, उन्होंने भरोसा भी ज्यादा बाँटा है और वे पूरी सावधानी रखते हैं कि टस-से-मस न हों। वे लोग जब लक्ष्यों और योजनाओं की बात करते हैं तो भाषण देने के बजाय काम करके दिखाते हैं। वे लोग बुद्धिमान हैं, जो सुनते ज्यादा हैं और सँभलकर बोलते हैं। वे समझते हैं कि सुनने से उन्हें मूल्यवान बातों की जानकारी मिलेगी और कुछ सीखने का मौका मिलेगा। ज्यादा बोलनेवाले बड़बोलेपन की मूर्खता के कारण औरों की बात से कुछ सीख नहीं पाते। ज्ञानी लोग संशय की स्थिति में भी चुप रहना पसंद करते हैं। भाषण के क्रम में विचारों के आदान-प्रदान से सब लोग काम की बातें सीखते हैं, जो एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। इससे निश्चित प्रमुख लक्ष्य के लिए योजनाएँ बनाने और उन्हें जारी रखने में सहूलियत होती है। उपलब्धि के शिखर पर पहुँचे लोगों के बीच गोलमेज चर्चाएँ उनकी महत्त्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है, लेकिन ये वैसी सुस्त चर्चाओं से अलग हैं, जिनमें प्रवेश चाहनेवाले किसी व्यक्ति के लिए कुछ लोग अपना दिमाग खुला रखते हैं।

अब समय हम लोगों को फिर से लंच ब्रेक का इशारा कर रहा है।

जब आप वापस आएँगे, तो विचारों के आदान-प्रदान का सुरक्षित तरीका बताऊँगा, जिसमें आप जितना देंगे उससे ज्यादा हासिल करेंगे। इसके जरिए आप अपनी बेहतरीन योजनाओं के बारे में खुलकर बोल सकते हैं, जो आपके लिए फायदेमंद होगा।

❑

5

कुछ आगे तक कर गुजरने की आदत

लंच रूम में काफी चहल-पहल और गहमागहमी थी। उस सुबह, जो कुछ श्रोताओं ने सीखा था, उसकी चर्चा में मशगूल लोगों के बीच मुख्य बिंदु यही था कि लक्ष्य की निश्चितता हासिल करना महत्त्वपूर्ण है, जो किसी भी प्रतिबद्ध व्यक्ति को उपलब्धि के रास्ते पर ला देगा। दोपहर के सत्र में सफलता की और भी उत्साहवर्द्धक चाबियाँ देने का वायदा किया गया था, इसलिए लगभग सब-के-सब नोट्स लेने की तैयारी करके दुबारा जुट गए। जब वे सेमिनार हॉल में लौटे तो एक टेबल पर हाथ से लिखे नोटकार्ड को देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। सेमिनार में भाग ले रहे सभी लोगों के नाम प्रत्येक नोटकार्ड के किनारे पर लिखा था—

"कुछ आगे तक कर गुजरें और अपने लिए
तथा औरों के लिए भी बहुआयामी इनाम सुनिश्चित करें।"

उस पर किसी के दस्तखत नहीं थे, पर सभी जानते थे कि यह किसकी ओर से भेजे गए हैं। वे इस बात से प्रभावित हुए कि वक्ता ने हर व्यक्ति का नाम लिखने का समय निकाला। वक्ता की इस विशिष्ट छवि ने सभी श्रोताओं को यह जानने को ज्यादा उत्सुक कर दिया कि अगले सिद्धांत में वे क्या शेयर करते हैं।

श्रोताओं के अपनी सीटों पर बैठ जाने के बाद वक्ता परदा हटाकर बाहर निकले। उन्होंने पूरे हॉल पर नजर दौड़ाकर एक व्यापक मुसकान बिखेरी और पूरे उत्साह के साथ श्रोताओं की ओर मुखातिब हुए—जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में और हर व्यवसाय में सफलता का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है, कुछ आगे तक कर गुजरने की इच्छा। इससे ज्यादा बेहतर सेवा का अवसर मिलता है, जिसके लिए आप पैसे लेते हैं और अनुकूल मानसिक वृत्ति भी हासिल होती है। इस सिद्धांत के खिलाफ एक भी ठोस तर्क आप ढूँढ़ेंगे, तो नहीं मिलेगा। ऐसा भी कोई उदाहरण नहीं मिलेगा कि इस सिद्धांत पर चलनेवाले किसी को आशा के अनुरूप सफलता नहीं मिली हो।

यह सिद्धांत मानवनिर्मित नहीं, बल्कि प्रकृति के काम का एक हिस्सा है। यह बिलकुल स्पष्ट बात है कि प्रत्येक जीवधारी को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए इस सिद्धांत को अपनाना पड़ता है।

बहुत लोग चाहें तो इस सिद्धांत को न मानें, पर वे ऐसा नहीं कर सकते और साथ ही इसकी सफलता का भी लाभ उठाते हैं। सोचें कैसे, प्रकृति इस सिद्धांत के तहत मिट्टी से फसल उपजाती है। किसान को उसके लिए आगे तक कर गुजरना होता है, वह जमीन का जंगल साफ कर जोतता है, साल के सही समय में बीज बोता है और इसमें से किसी काम के लिए उसे अग्रिम वेतन नहीं मिलता।

गौर करें कि अगर वह प्रकृति के नियमों के साथ सामंजस्य रखकर अपना जरूरी श्रम करता है, तो प्रकृति वहाँ से सँभाल लेती है, जहाँ उसकी मेहनत समाप्त होती है। प्रकृति

बीज को पौधे के रूप में विकसित करती है। इस यथार्थ पर ज्यादा गौर करें कि किसान द्वारा बोए गए प्रत्येक बीज के बदले प्रकृति सौ-सौ दाने देती है तथा सीमांत उपयोगिता वृद्धि नियम के तहत किसान लाभान्वित होता है।

प्रकृति कुछ आगे तक जाकर अपनी जरूरत से ज्यादा हर चीज पैदा करती है, जो इमरजेंसी में भी काम आती है और बरबाद भी होती है। उदाहरण के तौर पर, वृक्ष में फल, उसके पहले फूलों के बीज और तालाब में मेंढक तथा समुद्र में मछली। अगर यह सत्य न हो, तो सारे जीव विलुप्त हो जाएँगे।

कुछ लोग मानते हैं कि जंगल में रहनेवाले पशु-पक्षी बिना काम किए जीते हैं, लेकिन विचारवान लोग जानते हैं कि यह बात सही नहीं है। प्रकृति ने सभी प्राणियों के लिए भोजन के स्रोत मुहैया कराए हैं, मगर प्रत्येक जीव को खाने के लिए मेहनत करनी होती है।

इस प्रकार प्रकृति वैसी आदत को प्रश्रय नहीं देती कि कुछ भी नहीं के लिए, कुछ हासिल करने का प्रयास किया जाए।

कुछ आगे तक कर गुजरने की आदत के फायदे निश्चित और समझ में आने लायक हैं। उनमें से कुछ आप यहाँ देखें और स्वयं निश्चित हो लें—

1. यह आदत व्यक्ति को वैसे लोगों के करीब लाती है, जो आत्म-विश्वास के अवसर उपलब्ध करा सकते हैं।
2. इससे व्यक्ति कई तरह के मानवीय संबंध बना सकता है, जो लंबे समय तक कायम रखे जा सकते हैं। इससे व्यक्तिगत सेवाओं के लिए औसत से ज्यादा मुआवजा माँगा जा सकता है। यह मानसिक स्तर बढ़ाती है और शारीरिक हुनर प्रदान करती है। इससे उद्यम के कई रूपों में पूर्णता हासिल होती है, जिससे कमाई की क्षमता बढ़ती है।
3. रोजगार की किल्लत के समय भी यह रोजगार से वंचित होने से बचाती है और व्यक्ति को अच्छी नौकरी की कमांडवाली स्थिति में ला देती है। यह व्यक्ति को उतना लाभवाली बनाती है, ताकि नजर में आ जाए, क्योंकि अधिकांश व्यक्ति ऐसी आदत अपनाने का अभ्यास नहीं करते।
4. यह सार्थक मानसिक वृत्ति का विकास करती है, जो सफलता के लिए आवश्यक है।
5. इससे एलर्ट और तत्पर कल्पना का विकास होता है, क्योंकि ऐसी आदत से लगातार बेहतर सेवा के नए तथा बेहतर तरीके तलाशने की प्रेरणा मिलती है।
6. यह आत्म-निर्भरता और हौसला विकसित करती है।
7. इससे व्यक्ति के अंदर वैसी कार्यक्षमता और लगन निर्मित होती है, ताकि दूसरों को उससे विश्वास जगे।
8. यह व्यक्ति को दुलमुल रवैयेवाली अनिर्णय की विनाशकारी आदत मिटाने में मदद करती है। यह लक्ष्य की निश्चितता विकसित करती है और लक्ष्यहीनता की सामान्य आदत से बचाती है।
9. कुछ आगे तक कदम बढ़ाने की आदत डालने के पीछे एक अन्य बड़ा कारण यह है कि यह एकमात्र ऐसा तार्किक कारण है, जिसके चलते व्यक्ति मुआवजा बढ़ाने की बात करता है।
10. अगर कोई कर्मचारी को, जितने काम के पैसे मिलते हैं, वह उससे ज्यादा नहीं करता, तो इसका मतलब उसे उतना ही बहुत मिल जाता है। उस कर्मचारी को अवश्य ही अपनी

नौकरी बचाने के लिए वेतन के अनुपात के मुकाबले ज्यादा काम करना चाहिए, लेकिन व्यक्ति को ज्यादा वेतन, बेहतर पद और ज्यादा वेतन की माँग उचित ठहराने के लिए हमेशा ज्यादा काम करना चाहिए। यह सद्भावना हासिल करने का भी एक जरिया है।

कुछ आगे तक कर गुजरना कैसे जुड़ा है बारह उपायों से

धनकुबेर बनने की चाहत रखनेवालों के लिए कार्नेगी ने जो सत्रह दर्शन सिद्धांत बताए हैं, उनमें से सिर्फ एक है कुछ आगे तक कर गुजरने की आदत। आइए, देखें कि किस प्रकार यह सीधे तौर पर बारह धनकुबेर उपायों से जुड़ी है।

पहला तो यह कि यह आदत धनकुबेर के बारह उपायों में से सबसे महत्त्वपूर्ण पॉइंट के विकास से जुड़ी है और वे है अनुकूल मानसिक मनोवृत्ति। जब कोई व्यक्ति अपनी भावनाओं पर मास्टरी करके दूसरों के लिए उपयोगी सेवाओं के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति की कला सीख लेता है, तो वह अनुकूल मानसिक मनोवृत्ति विकास के मार्ग में काफी आगे तक निकल जाती है। अनुकूल मानसिक मनोवृत्ति उचित विचार पैटर्न की निर्मात्री है और बारह धनकुबेर उपाय उसी पैटर्न पर ऐसे टिके हैं, जैसे प्राकृतिक रूप से रात और दिन एक-दूसरे से जुड़े हैं। इस सत्य को पहचानें और आप समझ जाएँगे कि आगे तक कर गुजरने की आदत से किस प्रकार भौतिक संपत्तियों के जमा करने से आगे तक का फायदा मिलता है, फिर आप ये भी जान जाएँगे कि कार्नेगी द्वारा बताए गए व्यक्तिगत विकास दर्शन में इस सिद्धांत को पहला स्थान क्यों दिया गया है। अब जरा हम यह देखें कि जितनी सेवा के लिए पैसे मिलते हैं, उससे ज्यादा और बेहतर की तलब में विरोधाभास है, क्योंकि किसी व्यक्ति के लिए उचित मुआवजा पाए बिना ऐसी सेवा अर्पित करना असंभव है। मुआवजे कई तरह से दिए जा सकते हैं और विभिन्न स्रोतों से आ सकते हैं, जिनमें से कुछ विचित्र तथा उम्मीद से अलग स्रोत हो सकते हैं, लेकिन जो भी हो, मिले जरूर।

ऐसा भी हो सकता है कि इस तरह की सेवा अर्पित करनेवाले श्रमिक को उस व्यक्ति से उचित मुआवजा न मिले, जिसका काम कर रहा है, मगर यह आदत उसके लिए आत्म-विकास के कई अवसर लाएगी। जिनमें नए और ज्यादा बेहतर रोजगार के स्रोत होंगे। इस तरह उसका वेतन अप्रत्यक्ष रूप से मिलेगा।

राल्फ वाल्डो एमर्सन के दिमाग में यह सत्य था, जब उसने (मुआवजे से संबंधित अपने लेख 1841 के बारे में) कहा था।

अगर आप कृतघ्न मालिक की सेवा करते हैं, तो उसकी खूब सेवा करें और भगवान् को अपना ऋणी बनाएँ। प्रत्येक दौरे का पुनर्भुगतान होगा। लंबे समय तक भुगतान का सिलसिला चलता रहेगा और तुम्हारी भलाई के लिए एकमुश्त सूद-पर-सूद बढ़ता जाएगा, जो इस खजाने की दर तथा उपभोग है।

विरोधामासवाले मुद्दे पर दुबारा आकर मैं यह याद दिलाना चाहता हूँ कि किसी के लिए भी श्रम का वही समय फायदेमंद है, जिसके एवज में वो तात्कालिक या सीधा वित्तीय मुआवजा नहीं लेता। स्मरण रहे, वेतनभोगियों के लिए दो प्रकार का मुआवजा उपलब्ध है —एक तो वह है, जिसका भुगतान पैसे में होता है। दूसरा वह हुनर है, जो अनुभव से हासिल होता है। यह एक प्रकार का मुआवजा है, जिससे प्रायः वित्तीय भुगतान बढ़ जाता

है। दूसरे अर्थों में हुनर और अनुभव सबसे महत्त्वपूर्ण स्टॉक तथा व्यापार है, जिसके जरिए ज्यादा वेतन के साथ-साथ ज्यादा बड़ी जवाबदेही भी मिलती है।

यह ऐसी संपत्ति है, जो किसी कामगार को धोखा नहीं दे सकती। उसका मालिक चाहे कितना भी लालची या स्वार्थी हो, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह एकमुश्त सूद पर एकमुश्त सूद है, जिसका एमर्सन ने जिक्र किया है। इसी संपदा की बदौलत चार्ल्स एम. शुआब एक-एक सीढ़ी चढ़ते गए।

उन्होंने शुरुआत एक मामूली दिहाड़ी मजदूर से की और उनके मालिक ने उन्हें सबसे ऊँचा पद दिया। इसी संपत्ति के चलते शुआब ने अपने वेतन का दस गुना ज्यादा बोनस पाया।

शुआब को लाखों डॉलर बोनस इसलिए मिला, क्योंकि जो भी काम उन्हें दिया गया, उसे पूरी लगन से किया और उसे बेहतर बनाने के अपने प्रयासों में कोई कमी नहीं होने दी। एक परिस्थिति सामने थी, जिसे उन्होंने पूरा नियंत्रण में रखा। हम याद करते चलें कि अगर शुआब ने कुछ आगे तक कर गुजरने की आदत का पालन नहीं किया होता, तो वैसी परिस्थिति नहीं बन पाती।

हम यहाँ नोट करते चलें कि इस तरह कुछ आगे बढ़कर काम करने की आदतवाले अपनी सेवाओं के खरीदार को फकत मुआवजा देने के दोतरफा दायित्व से बाँध देते हैं। एक तो ईमानदारी से काम करने की मनोवृत्ति पर आधारित दायित्व होता है और दूसरा एक मूल्यवान कर्मचारी से वंचित होने के डर पर आधारित दायित्व होता है।

हम यह भी समझें कि एक महान् औद्योगिक नेता के मन में क्या बात रही होगी, जब उसने कहा—"मैं व्यक्तिगत रूप से 40 घंटे प्रति सप्ताह न्यूनतम श्रम कानून के पक्ष में नहीं हूँ, क्योंकि मेरा मानना है कि एक ही दिन में 40 घंटों की भीड़ कैसे जुटाई जा सकती है।"

इसी व्यक्ति ने यह भी कहा—"अगर मुझे उपलब्धि के 17 सिद्धांतों में से एक पर सफलता की उम्मीद का जोखिम उठाने की मजबूरी हो, तो बिना किसी हिचकिचाहट के कुछ आगे तक जाने के सिद्धांत पर सारे दावे ठोकूँगा।"

सौभाग्य से उसने इस पसंद का दायित्व नहीं लिया, जबकि व्यक्तिगत उपलब्धि के सत्रह सिद्धांत आपस में एक-दूसरे से कड़ी की तरह गुँथे हैं। अतः ये सब आपसी समन्वय से महान् शक्ति का जरिया बनते हैं। इनमें से एक के भी छूट जाने से शक्ति कमजोर होती है ठीक वैसे ही, जैसे एक कड़ी हटा देने से जंजीर कमजोर हो जाती है। इनमें से हर सिद्धांत के इस्तेमाल से एक निश्चित अनुकूल दिमागी गुणवत्ता हासिल होती है और वैचारिक शक्ति द्वारा पैदा की गई हर परिस्थिति सिद्धांतों के उपयोग को बाध्य करती है।

ये सत्रह सिद्धांत शब्दबोध करानेवाले 26 अक्षर कहे जा सकते हैं, जो एक साथ मिलकर सारे मानवीय विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। अक्षरमाला का एक अक्षर अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखता, लेकिन वे मिलकर जब शब्द बनते हैं, तो उसके माध्यम से मन के विचार वाक्य बनकर व्यक्त होते हैं। ये सत्रह सिद्धांत व्यक्तिगत उपलब्धि की अक्षरमाला हैं, जिनके जरिए सारी योग्यताएँ सर्वाधिक ऊँचे और लाभप्रद रूप में व्यक्त की जा सकती हैं।

ये धनकुबेर की महान् चाबी हासिल करने के साधन भी बन सकते हैं।

कुछ लोग जो कुछ आगे तक कर गुजरने की आदत से लाभान्वित हुए, उनमें से किसी का

काम आज तक बिना परिणाम के संपन्न नहीं हुआ। अभी हम वैसे कुछ परिणामों का जायजा लें, जो आगे तक कर गुजरने की आदत से प्रेरित होने के बाद सामने आए और सही साबित हुए।

कई वर्ष पूर्व पिट्सबर्ग डिपार्टमेंटल स्टोर में खरीदारी करने पहुँची एक बुजुर्ग महिला समय काट रही थी। वह इस काउंटर से उस काउंटर घूम रही थी और कोई उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था। सारे काउंटर क्लर्कों की नजर में वह एक सुस्त महिला थी, जिसका कुछ खरीदने का इरादा नहीं था। वह महिला जब किसी काउंटर के सामने खड़ी होती, वहाँ मौजूद क्लर्क दूसरी तरफ देखने लगता। आखिर वह एक काउंटर के सामने खड़ी हुई, जहाँ ड्यूटी कर रहे एक युवा क्लर्क ने विनम्रता से पूछा कि वह उनकी कोई सेवा कर सकता है?

"नहीं", उसने जवाब दिया—"मैं सिर्फ समय काट रही हूँ, बारिश रुकने का इंतजार कर रही हूँ, ताकि मैं घर जा सकूँ।"

"बहुत अच्छा मैडम", युवक मुसकराया, "क्या मैं आपके लिए एक कुरसी ले आऊँ?" और महिला के जवाब की प्रतीक्षा किए बिना, युवक कुरसी ले आया।

बारिश थमने के बाद युवक ने उस बुजुर्ग महिला को बाँहों का सहारा देकर उठाया और सड़क तक ले जाने के बाद गुड बाई करके विदा किया। आने से पहले महिला ने उस युवक से कार्ड माँग लिया।

महीनों बाद स्टोर के मालिक को एक पत्र मिला, जिसमें उस युवक को एक मकान की सजावट का ऑर्डर लेने स्कॉटलैंड भेजने को कहा गया था। स्टोर मालिक ने जवाब दिया कि सॉरी, इस युवक ने घर फर्निशिंग विभाग में काम नहीं किया है और साथ में यह भी बताया कि इस काम के लिए किसी अनुभवी व्यक्ति को भेजकर उन्हें खुशी होगी। उसके बाद फिर जवाबी पत्र आया कि इस युवक को छोड़ दूसरा कोई भी यह काम नहीं करेगा, उन पत्रों पर एंड्रयू कार्नेगी के हस्ताक्षर थे और जो घर उससे फर्निशिंग करवाना चाहते थे, वह स्कॉटलैंड में स्किवो महल था। वह बुजुर्ग महिला कार्नेगी की माँ थी। उस युवक को स्कॉटलैंड भेज दिया गया। युवक को सैकड़ों हजार मूल्य के मकान फर्निशिंग ऑर्डर मिले और स्टोर में पार्टनरशिप भी मिली। बाद में वह स्टोर के आधे हिस्से का मालिक बना।

कुछ वर्ष पूर्व एक पत्रिका के संपादक ने डेबेनपोर्ट के एक कॉलेज में छात्रों को संबोधित करने के लिए अपने पत्रम-पुष्पम और यात्रा-व्यय पर न्योता स्वीकार कर लिया। कॉलेज में जितना समय संपादक ने गुजारा, उस दौरान उन्हें कई ऐसी स्टोरी का मसाला मिल गया, जो वे खोज रहे थे। संपादक को जब यात्रा खर्च और पत्रम-पुष्पम दिया जाने लगा, तो उन्होंने यह कहकर लेने से इनकार कर दिया कि उन्हें कई स्टोरी के रूप में भुगतान मिल गया है, जो लिखनी हैं।

संपादक ने शिकागो की ट्रेन पकड़ी और यह सोचकर संतुष्ट थे कि इस दौरे का उन्हें बहुत भुगतान मिला। शुल्क लेने से उनके इनकार कर देने की खबर पत्रकारिता के उन छात्रों तक पहुँच गई, जिनको संबोधित करने वे गए थे और जो रियल लाइफ पत्रकारिता का एक उदाहरण था। अगले हफ्ते से डेवेनपोर्ट से उनकी पत्रिका के लिए चंदे आने लगे और हफ्ता गुजरते-गुजरते उन्होंने हजारों डॉलर नकद चंदे के रूप में प्राप्त किए। उसके बाद संपादक को कॉलेज के अध्यक्ष ने पत्र लिखकर बताया कि ये सारे चंदे उनके छात्रों की ओर से भेजे

गए। दो साल के अंदर उस कॉलेज के छात्रों और स्नातकों ने उस युवा संपादक की पत्रिका के लिए 50,000 डॉलर से ज्यादा चंदे भेजे। यह स्टोरी इतनी प्रभावी साबित हुई कि अंग्रेजी बोलनेवाले कई देशों में लोगों ने इसे दिलचस्पी से पढ़ा और इस पत्रिका के लिए अन्य देशों से भी भारी रकम चंदे के रूप में आई।

इस तरह बदले में कुछ प्राप्त करने की इच्छा के बिना, अर्पित सेवा से संपादक को उपयोगिता-वृद्धि नियम के तहत अपने निवेश का 500 गुना ज्यादा मुनाफा मिला। कुछ अलग और आगे बढ़कर काम करने की आदत महज कोई सपना नहीं है। इसका रिटर्न मिलता है और अच्छा रिटर्न मिलता है। यह न भूलें कि अन्य टाइप के निवेशों की तरह कुछ आगे कर गुजरने की आदत ऐसा निवेश है, जिसका लाभांश जीवन भर मिलता रहता है।

ऐसे अवसर की उपेक्षा करनेवाले एक अन्य आदमी के साथ क्या हुआ, इसका एक उदाहरण देखिए। बरसात की एक दुपहरी में एक ऑटोमोबाइल सेल्समैन एक जानी-मानी लग्जरी कार कंपनी की न्यूयॉर्क शाखा के शोरूम में बैठा था।

दरवाजा खुला और एक अधेड़ व्यक्ति छड़ी टेकता हुआ अंदर घुसा। सेल्समैन ने दोपहर के अखबार से अपनी नजरें उठाईं और उस आगंतुक की ओर एक बार देखकर दूसरी विंडो की ओर मुखातिब हुआ, क्योंकि वह तत्काल उस तरफ बढ़ गया।

सेल्समैन फिर अखबार में डूब गया। उसने कॉफी की एक सिप ली और अपनी कुरसी से उठने की भी जरूरत नहीं समझी। छड़ी टेकता वह व्यक्ति शोरूम में घूम-घूमकर एक-एक कर कारें देखने लगा। आखिर में वह अखबार में डूबे उस सेल्समैन के पास गया और छड़ी के सहारे खड़े-खड़े तीन अलग-अलग मॉडल की कारों की कीमत पूछी। अखबार से अपनी आँखें उठाए बिना सेल्समैन ने कीमत बड़बड़ा दी, क्योंकि उसने उस ग्राहक को दूसरे का कीमती समय बरबाद करनेवाला समझा। छड़ी की बदौलत चलते हुए वह ग्राहक फिर शोरूम गया। तीन मॉडलों को गौर से देखकर उनके टायरों को बारी-बारी से चैक किया और वापस सेल्समैन के पास लौटा। उससे बात करने में रुचि नहीं लेनेवाले सेल्समैन से ग्राहक ने कहा—"मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि ये वाली कार खरीदूँ, दूसरी वाली लूँ, तीसरी वाली लूँ या तीनों ही कार खरीद लूँ।"

सेल्समैन ने अखबार का अगला पन्ना पलटा और विद्रूप स्वर में कहा—"अवश्य"। छड़ीवाले ग्राहक ने सेल्समैन से कहा—"मैं समझता हूँ कि मैंने तय कर लिया, आप कन्वर्टिबल वाली की सेल्स स्लिप बना दें।"

उसके बाद सेल्समैन एलर्ट हो गया, वह अखबार रखकर बाहर निकल आया, तब तक ग्राहक अपनी चेकबुक से एक चेक काटकर सेल्समैन के हाथ में थमा चुका था। एक पर दस्तखत देखते ही सेल्समैन के चेहरे का रंग फीका पड़ गया और उसे तारे नजर आने लगे। चेक पर नाम वही था, जो फैंसी स्ट्रीट के नीचे स्थित म्यूजियम पर लिखा था।

काफी देर बाद सेल्समैन ने महसूस किया कि अगर उसने थोड़ा आगे बढ़कर पहल की होती, तो आसानी से हेरी पेन ह्विटनी को तीनों कारें बेची जा सकती थीं अच्छी सेवा अर्पित करने की कारोबारी तकनीक थोड़ी महँगी पड़ती है, जो प्रायः लोग देर से समझते हैं।

तकरीबन 40 वर्ष पहले एक अन्य युवा सेल्समैन ने एक हार्डवेयर स्टोर में अपने को उसी

स्थिति में पाया। एक मंदे दिन उसने देखा कि स्टोर में कई ऐसे सामान हैं, जिसकी माँग कम हो गई है, क्योंकि वे अब पुराने डिजाइन के हो चुके हैं।

ग्राहक के इंतजार में निठल्ला बैठे रहने के बजाय सेल्समैन ने एक तरकीब निकाल डाली। स्टोर के बीचोबीच उसने एक टेबल खींचा, उस पर वे सारे सामान सजा दिए जिनकी बिक्री मंदी चल रही थी और सब पर अदला-बदलीवाले मूल्य टैग लगा दिए। सेल्समैन और स्टोर मालिक दोनों को देखकर आश्चर्य हुआ कि सारे सामान हाथों-हाथ हॉट केक की तरह बिक गए।

पाँच और दस सेंट स्टोरवाला यह पूरी तरह अमेरिकी कंसेप्ट युवक फ्रैंक डब्ल्यू वूलवर्थ का तात्कालिक आविष्कार था, जिसकी चर्चा किंवदंती के रूप में होती है। जो कुछ वे कर रहे थे वही था, कुछ आगे बढ़कर कदम उठाना। इसी आइडिए ने उनका भाग्य पलटा और उन्होंने अमेरिकी कारोबार के इतिहास में अपना प्रमुख स्थान बनाया। उस आइडिए ने कई अन्य को भी धनी बनाया और उसने कई रूपों में अमेरिका की मुनाफा देनेवाली व्यापारिक व्यवस्था को प्रभावित किया।

वूलवर्थ को पहल करने के निजी अधिकार का इस्तेमाल करने के लिए किसी ने कहा नहीं था। उसके लिए किसी ने भुगतान भी नहीं किया, लेकिन वूलवर्थ को अपने प्रयासों को लगातार आगे ले जानेवाला रिटर्न मिला।

जिसके लिए पैसा मिलता है, उसके अलावा व्यक्तिगत स्तर पर कुछ पहल करने की आदत का रिटर्न मिलता है और ऐसा व्यक्ति सपने में भी उसी के बारे में सोचता रहता है। जब कोई काम करना शुरू करता है, तो इसका जादुई रिटर्न सुख के रूप में अलादीन के चिराग जैसा मिलता है मानो मदद के लिए जिनों की फौज सोना भरे थैले लेकर आई हो।

एक दिन एक अखबार का युवा रिपोर्टर एंड्रयू कार्नेगी से उद्योग जगत् की उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों पर स्टोरी करने उनसे मिलने पहुँचा। बातचीत के दौरान कार्नेगी ने रिपोर्टर को संकेत दिया कि अगर उसके अंदर 20 वर्षों तक बिना मुनाफे के काम करके कुछ आगे कर गुजरनेवाली सोच है, तो वह भी अपनी किस्मत इस महान् इस्पात मास्टर (कार्नेगी) जैसी बना सकता है। रिपोर्टर ने चुनौती स्वीकार कर ली और काम शुरू कर दिया।

बीस वर्षों के अपने बिना मुनाफावाले श्रम से युवक ने दुनिया को एंड्रयू कार्नेगीवाले धन कमाने के स्टाइल से शुद्ध मुनाफा दिया। इसके साथ ही उसने लगभग 500 ऐसे लोगों के भी तौर-तरीके सीखे, जिन्होंने कुछ आगे कर गुजरने की तकनीक से धन संग्रह में मदद पहुँचाई।

आज वह जानकारी पुस्तक रूप में दुनिया के प्रत्येक अंग्रेजी भाषा-भाषी देश में है और व्यक्तिगत पहल के प्रयोग से उपलब्धि का राज सीखने की इच्छा रखनेवाले लाखों लोगों की मददगार है।

अपने 20 वर्षों की लाभहीन मेहनत का मुआवजा इस पूर्व पत्रकार को आज इतना मिल रहा है, जो उसकी तमाम जरूरतों से ज्यादा है। उसमें सबसे बड़ा है मन की शांति, दुनिया भर में ऐसी दोस्ती जिसकी कीमत नहीं आँकी जा सकती और वैसी खुशी जो किसी को अपना पसंदीदा काम मिलने और उस काम में डूबे रहने में हासिल होती है।

आपको याद होगा कि चार्ल्स एम. शुआब ने शुरुआत एक श्रमिक के रूप में की और वे

आगे कुछ कर गुजरने से डरे नहीं। कुछ वर्षों बाद उनकी निजी रेलरोड कार उन्हें पेनसिलवेनिया में विशाल इस्पात कारखाने तक ले गई। एक सर्द सुबह को शुआब ज्यों ही कार से उतरे, एक व्यक्ति तेजी से उनकी ओर बढ़ा और उनसे कहा कि वह एक इस्पात कंपनी के कार्यालय में सहायक है। उसने कहा कि वो कार देखने और शुआब से मिलने आया है कि कहीं उन्हें मेमो संदेश या ऐसी किसी चीज की जरूरत हो।

शुआब ने पूछा—"आपको मुझसे मिलने के लिए किसने कहा?"

"किसी ने नहीं", युवक ने जवाब दिया, "मैंने आपके आने का नोटिस लगा देखा और मिलने चला आया कि कहीं आपको मेरी किसी सेवा की जरूरत हो।"

जरा सोचिए! वह युवक यह सोचकर मिलने आया कि कहीं वैसा कुछ करने का अवसर मिले, जिसके लिए उसे अलग से ज्यादा पैसे नहीं मिलते और उसने किसी के कहे बिना, स्वयं पहल की।

शुआब ने विचारशीलता के लिए विनम्रता से धन्यवाद देते हुए युवक से कहा कि अभी तो उन्हें किसी ऐसी सहायता की जरूरत नहीं है और उस युवक का नाम ठीक से लिखकर अपने काम पर लौटा दिया।

उसी रात शुआब की निजी रेलरोड कार जब न्यूयॉर्क शहर पहुँचनेवाली रात की गाड़ी के साथ पहुँची तो साथ में वह युवक भी था। शुआब के आग्रह पर उस युवक को न्यूयॉर्क में इस्पात बॉस के निजी सहायक का काम दिया गया। विलियम्स नामक वह युवक शुआब की सेवा में कई वर्षों तक रहा और इस दौरान उसे पदोन्नति के अवसर-पर-अवसर मिलते गए। यह थोड़ा अजीब सा लगता है कि कुछ आगे बढ़कर काम करनेवाले व्यवसायी को ऐसे अवसर कम और कैसे मिलेंगे, लेकिन वे हमेशा करें और निश्चयपूर्वक करें। आखिरकार विलियम्स को वैसा अवसर मिला, जिसे टालना उसके लिए असंभव था। वह अमेरिका की सबसे बड़ी दवा कंपनी का अध्यक्ष और सबसे बड़ा स्टॉक होल्डर बना। यह ऐसा काम था जिससे उसकी किस्मत कल्पना से परे चमकी और अपनी जरूरतों से कई गुना ज्यादा उसने हासिल किया।

यह घटना बताती है कि क्या हो सकता है और इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है कि अमेरिका की रोजमर्रा की जीवन-शैली में इतने वर्षों से क्या हो रहा है।

आपको याद दिलाने की ये उपयुक्त जगह है कि आगे कर गुजरने और जितने काम के पैसे मिलते हैं, उससे ज्यादा करने की आदत से क्या मिलता है।

यह एक विचित्र अनुभव है, जो करनेवाला ही महसूस करता है। इस आदत का सबसे बड़ा लाभ जिसको सेवा अर्पित की जाती है, उसे नहीं मिलता। इससे ज्यादा लाभान्वित सेवा अर्पित करनेवाले होते हैं। यह सोचने का अंदाज बदल देता है, अन्य लोगों पर उसका प्रभाव बढ़ जाता है, ज्यादा आत्म-निर्भरता आती है, नया उत्साह, नई दृष्टि मिलती है और लक्ष्य की निश्चितता बढ़ जाती है। ये सारे सफल उपलब्धि के गुण हैं।

"काम करेंगे तो अपने में ऊर्जा का अनुभव करेंगे।" एमर्सन का कहना है, "हाई पावर ऊर्जा—इसके बिना हम दुनिया में कर क्या सकते हैं, लेकिन यह पावर ऐसी होनी चाहिए जो लोगों को आकर्षित करे और लोग इससे चिढ़ें नहीं। यह पावर ऐसी होनी चाहिए जो उपयोगिता वृद्धि के नियम से गति प्राप्त करे और अपने कामों तथा कर्तव्य से इसे कार्यरूप

में पाएँ, जो बदले में कई गुना रिटर्न देती है।''

वेतनभोगी कर्मचारियों को बुआई और फसल पकने के इस व्यवसाय से ज्यादा सीखना चाहिए। आप समझेंगे कि अपर्याप्त सेवा का बीज बोकर ज्यादा पैसा देनेवाली खूब अच्छी तरह पकी फसल काटने की उम्मीद क्यों नहीं रखी जा सकती, फिर आप यह भी जानेंगे कि थोड़ा सा काम करके किसी तरह दिन गुजारकर पूरे दिन का वेतन लेने की आदत पर विराम लगना जरूरी है।

जो वेतन के लिए काम नहीं करते और जीवन में कुछ पाने की ख्वाहिश रखते हैं, उनसे मुझे कुछ कहना है। आप अपनी शुरुआत ज्यादा बुद्धिमान् के रूप में क्यों नहीं करते, जो आपकी चाहत पूरी करने का सरल और सटीक तरीका है। जी हाँ, इसका आसान और निश्चित रिटर्न देनेवाला तरीका यह है कि अपने आत्म को प्रोन्नत करके मन को वह राज हासिल करने की ओर लगाएँ, जो कुछ आगे कर गुजरने की आदतवालों को हासिल हुआ है। यह राज ढँका है और इस पर से परदा अलग से कुछ करने की दिशा में आगे बढ़कर ही उठाया जा सकता है।

'इंद्रधनुष' के नीचे रखा सोने का बरतन महज एक परी कथा नहीं है। कुछ आगे बढ़कर करने का अंत वैसी जगह पर होता है, जहाँ इंद्रधनुष का अंत होता है और वहीं पर सोने का बरतन छिपा है।

बहुत कम लोग 'इंद्रधनुष का अंत' अभी तक देख पाए हैं। जहाँ पहुँचकर हम सोचने लगते हैं कि अब इंद्रधनुष का अंत हुआ, तभी यह काफी दूर नजर आने लगता है। हममें से अधिकांश लोगों के साथ दिक्कत यह है कि हम जानते ही नहीं है कि इंद्रधनुष का पीछा कैसे किया जाए। जो इस राज को जानते हैं, उन्हें पता है कि इंद्रधनुष के अंतिम छोर तक अलग से कुछ आगे बढ़कर पहुँचा जा सकता है।

एक दिन तीसरे पहर जनरल मोटर्स के संस्थापक विलियम सी. डूरंट अपने बैंक में बैंक का समय समाप्त होने के बाद घुसे और उन्होंने ऐसे सहयोग की अपेक्षा की जिस पर सामान्यतः बैंक के काम के समय बैंककर्मी ध्यान देते हैं। जिस व्यक्ति ने विलियम को सहयोग दिया वह था लेसर अधिकारी केरोल डाउनेस। उसने न केवल पूरी कुशलता से विलियम का काम किया, बल्कि एक कदम आगे बढ़कर विलियम डूरंट के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की कि उन्होंने ऐसी सेवा अर्पित करने का अवसर दिया। उस बैंक अधिकारी ने डूरंट को एहसास करा दिया कि उनके लिए काम करके उसे आनंद की अनुभूति हुई। सुनने में यह कोई ज्यादा महत्त्व की घटना नहीं लगती, लेकिन बैंक अधिकारी को इसका रिर्टन मिला। केरोल डाउनेस जिसे वे जानते भी नहीं थी, उसने सामान्य से अलग हटकर जो सेवा अर्पित की, उसके दूरगामी परिणाम सामने आए, जो सोचकर उसने सेवा नहीं की थी।

अगले दिन डूरंट ने केरोल को अपने कार्यालय में मिलने बुलाया। वे मुलाकात ऐसे प्रस्ताव पर समाप्त हुई, जिसे केरोल ने स्वीकार कर लिया। जनरल मोटर्स में उन्हें एक डेस्क दिया गया, जहाँ कोई 100 के करीब लोग काम कर रहे थे। केरोल को काफी आकर्षक वेतन दिया गया। काम शुरू करने के पहले ही दिन जब काम समाप्त करने की घंटी बजी तो डाउनेस ने देखा कि सभी लोग जल्दी-जल्दी अपने हैट और कोट उठाकर दरवाजे की ओर भागे और वे अपनी सीट पर बैठे सबके जाने का इंतजार करते रहे। सबके चले जाने के बाद भी डाउनेस

अपनी डेस्क पर बैठे सोचते रहे कि हर किसी को ऑफिस का समय समाप्त होते ही सेकंडों में भागने की इतनी जल्दबाजी क्यों थी।

15 मिनट के बाद विलियम डूरंट ने अपने ऑफिस का दरवाजा खोला और डाउनेस को अपने डेस्क पर उस समय भी बैठा देखा। डूरंट ने पूछा कि क्या उन्होंने समझा नहीं कि 5:30 बजे काम बंद कर देने की सुविधा उन्हें प्राप्त है।

डाउनेस ने जवाब दिया—हाँ, क्यों नहीं, लेकिन मैं इस भीड़ में दौड़कर जाना नहीं चाहता था। फिर उसने डूरंट से पूछा कि उसके लायक कोई काम हो तो बताएँ। डूरंट ने डाउनेस से मोटर मैगनेट के लिए एक पेंसिल खोजने को कहा गया। डाउनेस ने पेंसिल उठाई, शार्पनर पर चलाई और डूरंट को दे दी। डूरंट ने उन्हें धन्यवाद दिया और 'गुड नाइट' कहा।

अगले दिन भी ऑफिस का टाइम खत्म होने के बाद भागनेवालों की भीड़ छँट जाने के बावजूद डाउनेस अपनी डेस्क पर बैठे रहे, लेकिन आज उनके बैठने के पीछे एक खास लक्ष्य था। कुछ ही मिनटों में डूरंट अपने निजी ऑफिस कमरे से निकले और फिर डाउनेस से पूछा कि क्या उन्होंने अभी तक नहीं समझा कि 5:30 बजे ऑफिस बंद होने का समय है।

"हाँ", डाउनेस मुसकराए—"मैं समझता हूँ कि यह अन्य लोगों के ऑफिस छोड़ने का वक्त है, लेकिन मैंने किसी के भी मुँह से नहीं सुना कि मुझे समय समाप्त होने के बाद ऑफिस छोड़ देना है, इसलिए मैंने डेस्क पर इस उम्मीद में बैठे रहना पसंद किया कि मैं आपके लिए कोई अलग से काम कर सकूँ।"

डूरंट ने कहा—"कैसी असामान्य उम्मीद! आपने यह आइडिया कहाँ से लिया?"

डाउनेस का जवाब था—"रोजाना ऑफिस बंद होने के समय जो दृश्य मैंने देखा है, उसी से यह आइडिया लिया।"

डूरंट अपने जवाब में कुछ धीमे स्वर में बोले, जो डाउनेस को ठीक से सुनाई नहीं दिया और वे अपने ऑफिस में वापस चले गए। उसके बाद रोज ही ऐसा हुआ कि ऑफिस बंद होने के बाद डूरंट के निकलने तक वे अपनी डेस्क पर बैठे रहते थे। उन्हें ओवरटाइम का पैसा नहीं मिलता था। किसी ने उन्हें वैसा करने को नहीं कहा था कि देर तक बैठे रहने के एवज में कुछ मिलेगा और कोई भी कैजुअल तरीके से जान सकता था कि वह अपना समय बरबाद कर रहा था।

महीनों बाद डाउनेस को अपने बॉस डूरंट के ऑफिस से बुलावा आया और सूचना दी गई कि हाल में खरीदे गए नए कारखाने में लगाई जानेवाली मशीनरी के सुपरवाइज और इंस्टॉलेशन का काम उन्हें सौंपा गया है। सोचिए, एक पूर्व बैंक अधिकारी चंद महीनों में ही मशीनरी एक्सपर्ट बन गया। बिना किसी हिचकिचाहट के डाउनेस ने जिम्मा स्वीकार कर लिया और अपने काम में जुट गए। उन्होंने एक बार भी नहीं कहा, "मि. डूरंट, मैं मशीनरी लगाने के बारे में कुछ नहीं जानता।" उन्होंने यह भी नहीं कहा, "यह मेरा काम नहीं है या मुझे मशीनरी इंस्टॉलेशन के लिए कोई भुगतान नहीं दिया गया है।"

डाउनेस सुखद अनुभूति लिये अपने नए दायित्व को सँभालने में लग गए। तीन महीने बाद काम पूरा हो गया। डाउनेस ने इतना बढ़िया अपना दायित्व पूरा किया कि डूरंट ने अपने ऑफिस में बुलाकर उनसे पूछा कि उन्होंने मशीनरी के बारे में कहाँ से जानकारी

हासिल की।

"ओहो!" डाउनेस ने यों बयाँ किया—"मैंने यह काम कभी नहीं सीखा मि. डूरंट, मैंने चारों तरफ नजर डाली, वैसे लोगों को खोजा जो मशीनरी लगाना जानते थे, उन्हें काम में लगाया और उन लोगों ने काम निबटाया।"

"शानदार!" मि. डूरंट ने शबाशी दी। दो प्रकार के लोग होते हैं, जो मूल्यवान होते हैं। एक वे होते हैं, जो काम के ज्यादा बोझ की शिकायत किए बिना कुछ करते हैं और अच्छा कर डालते हैं। दूसरे प्रकार के लोग वे होते हैं, जो अन्य लोगों से भी अच्छा काम करा सकते हैं और उन्हें कोई शिकायत नहीं होती। आप दोनों ही तरह के हुनर में लिपटे एक पैकेज हैं।

डाउनेस ने इस उद्गार के लिए मि. डूरंट का शुक्रिया किया और जाने को तैयार हुए।

"एक मिनट रुकिए।" डूरंट ने आग्रह किया, "मैं आपको यह बताना तो भूल ही गया कि आपने जो कारखाना स्थापित किया है, आप उसके नए मैनेजर होंगे और अभी जितना वेतन आपको मिल रहा है, उसके दोगुने वेतन से शुरू करेंगे।"

मि. डूरंट के साथ दस साल काम करते हुए केरोल डाउनेस ने 10 से 12 मिलियन डॉलर कमाए, जो उस समय के लिए बहुत बड़ी रकम थी। वे मोटर बादशाह के सबसे नजदीकी सलाहकार हो गए, जिसके परिणामस्वरूप धनकुबेर बन गए। हम में से बहुतों के साथ असली कठिनाई यह है कि हम पहुँचे हुए की ओर देखते हैं और उसी शान-शौकत के समय के हिसाब से उसके बारे में मूल्यांकन करते हैं, लेकिन यह सोचने का जोखिम नहीं उठाते कि क्यों और कैसे वह व्यक्ति उस मुकाम पर पहुँचा। केरोल डाउनेस की स्टोरी में कुछ भी नाटकीय नहीं है। जिन घटनाओं का जिक्र किया गया है, वे सब दिन भर के ऑफिस कामकाज का हिस्सा हैं और डाउनेस के साथ काम करनेवाले औसतन लोगों को पता तक नहीं चल पाया। हमें इस बात पर शक है कि डाउनेस के साथ काम करनेवालों को ईर्ष्या नहीं हुई होगी, क्योंकि वे मानकर चल रहे थे कि उस पर मि. डूरंट की विशेष कृपा है। इसे चाहे तकदीर कहिए या संयोग जो लोग सफल नहीं हो पाए, वे अपनी ही उन्नति में पिछड़ने का बहाना दे रहे हैं।

बेशक मि. डूरंट उस पर कृपालु थे, लेकिन यह कृपा पाने में मि. डाउनेस की स्वयं की पहल ज्यादा मायने रखती है।

मि. डाउनेस ने बहुत छोटी सी चीज के जरिए कुछ अलग और आगे बढ़कर काम करने की उत्सुकता दिखाई, पेंसिल अपने बॉस को देते समय वे शार्पनर से उसे नुकीला बनाना नहीं भूले। उनसे तो सिर्फ पेंसिल माँगी गई थी। मि. डाउनेस ने कुछ उम्मीद में अपने डेस्क पर बैठे रहकर ऐसी स्थिति बनाई कि 5:30 बजे शाम को भीड़ खत्म होने के बाद अपने बॉस का कोई काम वे कर सकें।

डाउनेस ने निजी पहल के अधिकार का इस्तेमाल करके वैसे लोग खोजे, जो मशीन इंस्टॉल करना जानते थे। मि. डूरंट से उन्होंने नहीं पूछा कि ऐसे लोग उन्हें कहाँ और कैसे मिलेंगे।

इस पूरे घटनाक्रम पर कदम-दर-कदम गौर करते चलें तो आप पाएँगे कि डाउनेस को सफलता पूरी तरह अपनी पहल से मिली। इस स्टोरी की शुरुआत एक छोटा सा काम सार्थक मनोवृत्ति के साथ अच्छी तरह पूरा करने से हुई है।

डूरंट की कंपनी में काम कर रहे तकरीबन 100 अन्य लोग भी थे, जो डाउनेस की तरह ही अच्छी तरह वह काम पूरा कर सकते थे, लेकिन उनके साथ दिक्कत यह थी कि वे 5:30 बजे की भीड़ में तेजी से ऑफिस से भागते हुए इंद्रधनुष का अंत खोज रहे थे।

वर्षों बाद केरोल डाउनेस के एक मित्र ने उनसे पूछा कि उन्हें डूरंट की कृपा पाने का अवसर कैसे मिला। डाउनेस ने बिलकुल सहज भाव से जवाब दिया—"ओहो, मैंने अपना काम इस तरह से किया, ताकि उनकी नजर में आऊँ और वे मुझे काम पर मुस्तैद देखें। डूरंट ने जब अपने चारों तरफ देखा, तो अकेला मैं ही था, जो उनका कोई छोटा सा काम भी करने को तत्पर था। फिर जब समय आया तो मि. डूरंट मुझे नियमित रूप से बुलाने लगे।"

डाउनेस की इस युक्ति पर ध्यान दें कि डूरंट उन्हें नियमित रूप से बुलाने लगे, उन्हें डाउनेस को बुलाने की आदत पड़ गई। उन्होंने देखा कि डाउनेस के पास कुछ आगे बढ़कर करने की लगन और वैसी जवाबदेही सँभालने का हुनर है।

इतनी दयनीय स्थिति है कि सारे अमेरिकी लोगों में बड़ी जवाबदेही लेने का वैसा उत्साह नहीं है। उतनी ही दयनीय स्थिति यह भी है कि हममें से ज्यादातर लोग उन सुविधाओं के बारे में ज्यादा नहीं बोलते जो अमेरिकी जीवन-शैली में उपलब्ध है, बल्कि उलटे अवसरों की कमी की बात ज्यादा करते हैं।

अमेरिका में रहनेवाला कोई व्यक्ति क्या गंभीरता से यह दावा कर सकता है कि डाउनेस को अगर कानूनन 5:30 बजे कार्यालय का काम खत्म होने के बाद भीड़ के साथ कार्यालय छोड़ने को मजबूर किया जाता, तो वे ज्यादा अच्छा कर सकते थे? अगर वे ऐसा करते तो वही सामान्य वेतन पर औसत काम निपटाकर दिन गुजार देनेवाला बने रह जाते। उन्हें उससे ज्यादा कुछ हासिल नहीं हो पाता। उन्हें ज्यादा आखिर क्यों मिला?

डाउनेस की किस्मत उनके अपने हाथों में थी। वह इस एकमात्र सुविधा में लिपटी थी, जो हर अमेरिकी नागरिक की सुविधा होनी चाहिए। निजी पहल के अपने अधिकार का इस्तेमाल करके उन्होंने हमेशा एक कदम आगे बढ़कर काम करने की आदत डाली। यही पूरी कहानी का सार है। डाउनेस की सफलता का दूसरा कोई राज नहीं है। वे इस बात को स्वीकारते हैं और गरीब से अमीर बनने की उनकी परिस्थितियों से परिचित हर कोई इस बात को जानता है।

एक ही चीज है, जो लगता है कोई नहीं जानता! ऐसा क्यों है कि केरोल डाउनेस सरीखे कुछ ही महिलाएँ और पुरुष हैं, जो अपने अंदर की इस शक्ति को खोजते हैं कि जितने काम का पैसा मिलता है, उससे ज्यादा करें। सारी बड़ी उपलब्धि का बीज इसमें छिपा है। यही उल्लेखनीय सफलता का राज है, लेकिन इसे इतना कम समझा गया है कि अधिकांश लोगों को इसमें कोई चालाकी नजर आती है, जिसके जरिए कंपनी मालिक अपने कर्मचारियों से ज्यादा काम लेने की कोशिश करते हैं।

एक कदम आगे बढ़कर काम करने की आदत पर उत्साह बड़े ही नाटकीय अंदाज में 'वाइजएकर' ने व्यक्त किया है, जिन्होंने हेनरी फोर्ड के पास कभी नौकरी के लिए आवेदन भेजा था। फोर्ड ने उनके अनुभव, आदतों तथा दैनिक कार्यकलापों के बारे में पूछा और उनके जवाबों से संतुष्ट हो गए।

उसके बाद हेनरी फोर्ड ने उनसे पूछा—अपनी सेवा के लिए आप कितने पैसे चाहते हैं?

वाइजएकर इस सवाल का जवाब देने से कतरा रहे थे। आखिरकार फोर्ड ने ही कहा सोचें कि अपना काम शुरू करने के बाद, जितना कर सकते थे किया और उतने काम के पैसे देकर हमने आपको विदा कर दिया। मि. वाइजएकर ने तब जवाब दिया—अभी मैं जहाँ काम कर रहा हूँ, वहाँ काम से ज्यादा पैसे मिल रहे हैं। और हमें इसमें संदेह नहीं कि उसने सच बोला।

इससे जाहिर हो जाता है कि क्यों कई लोग जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते हैं। वे जितने काम के लायक हैं, उससे ज्यादा पैसे पा रहे हैं। वे हैं कहाँ! अपने को ज्यादा काबिल बनाकर जीवन में आगे बढ़ने का हुनर वैसे लोग कभी नहीं सीखते।

मैककिनले ने स्पेन-अमेरिका युद्ध के दौरान एक युवा सैनिक रोवान को अमेरिकी सरकार का संदेश लेकर विद्रोही नेता गार्सिया के पास जाने को कहा, जिसका सही अता-पता कोई नहीं जानता था।

युवा सैनिक ने संदेश लिया और क्यूबा के जंगलों में भटकते-भटकते आखिर में गार्सिया का ठिकाना खोजा और राष्ट्रपति का संदेश उसके हाथ में सौंपा। इस कहानी का संदेश यही है कि एक निजी सैनिक ने भारी दिक्कतों के बावजूद वह काम पूरा किया, जो उसे सौंपा गया था और कोई बहाना लेकर काम अधूरा छोड़कर नहीं लौटा।

यह कहानी कल्पनाओं को भेदती दुनिया भर में फैली। एक युवक को जो काम सौंपा गया, उसे अच्छी तरह पूरा करना हर जगह खुशियों का समाचार बना। गार्सिया की यह संदेश-कहानी बुकलेट के रूप में छपी और उस समय के किसी भी प्रकाशन से ज्यादा अर्थात् 1 करोड़ से ज्यादा प्रतियाँ छपीं। यही एक कहानी लिखकर उसके लेखक ने नाम भी कमाया और पैसा भी।

यह कहानी इसलिए लोकप्रिय हुई, क्योंकि इसमें कुछ ऐसी जादुई शक्ति थी, जो विरले ही देखने को मिलती है।

पूरे विश्व को ऐसे विरले की तलाश है जिसने कुछ किया और अच्छी तरह किया। वे हर क्षेत्र में ऐसा चाहते हैं और उन्हें इसकी जरूरत है। अमेरिकी उद्योग वैसे लोगों को राजकुमार की तरह बिठाता है, जो इस तरह की जिम्मेदारी लें और एक कदम आगे चलने की मनोवृत्तिवाली सही सोच के साथ उसे निभाएँ।

एंड्रयू कार्नेगी ने ऐसे चालीस लोगों को उठाया, जिनमें चार्ल्स शुआब भी थे और उन्हें दिहाड़ी मजदूर से करोड़पति की कुरसी पर बिठा दिया। उन्होंने कुछ आगे बढ़कर काम करनेवालों की कीमत समझी। कार्नेगी को जहाँ कहीं भी ऐसे लोग नजर आए, उन्हें तुरंत अपनी खोजवाली फाइल की सूची में डाला, जो उनके व्यवसाय के अंदरूनी मामलों का एक हिस्सा थी। ऐसे व्यक्तियों को कार्नेगी ने वे अवसर दिए, ताकि उन्हें उनकी कीमत के मुताबिक रिटर्न मिले।

चार्ल्स शुआब ने कार्नेगी की कंपनी में दिहाड़ी मजदूरी पर ड्राइवर के रूप में काम शुरू किया था, लेकिन धीरे-धीरे वे ऊँचाई की सीढ़ियाँ चढ़ते गए और कार्नेगी के दाहिने हाथ बन गए। लोगों के कोई काम करने या उससे मुकरने के पीछे एक खास लक्ष्य काम कर रहा होता है। सबसे बेहतरीन लक्ष्य कुछ आगे बढ़कर काम करने की आदतवालों का होता है और इसकी उपज इतनी तरह के लाभांश के रूप में सामने आती हैं, जो ऐसी सोच

रखनेवाले ही समझ सकते हैं।

अभी तक ऐसे किसी व्यक्ति को मेरी जानकारी में स्थायी सफलता नहीं मिली है, जिसने ठीक पैसे के बराबर काम करने के बजाय कुछ आगे बढ़कर काम न किया हो। ऐसे अभ्यास के प्रत्यक्ष प्रमाण प्रकृति के नियम-कायदे हैं। एक कदम आगे चलने के अभ्यासियों का प्रकृति भी साथ देती है। यह सामान्य समझ और न्याय पर आधारित है। इस सिद्धांत की बेहतरीन परख का सबसे अच्छा उपाय यह है कि रोजमर्रा के काम से जोड़कर इसे दैनिक आदतों का एक हिस्सा बनाएँ।

इसके कुछ सत्य तो हम काम के अनुभव से सीख सकते हैं। कुछ लोग कहेंगे— जितने पैसे मिलते हैं, उससे ज्यादा काम मैं पहले से कर रहा हूँ, लेकिन मेरा मालिक इतना स्वार्थी और लालची है कि जो सेवा मैं अर्पित करता हूँ, उसका नोटिस ही नहीं लेता। हम सब जानते हैं कि ऐसे लालची लोग हैं, जो जितने काम के पैसे वे देते हैं, उससे ज्यादा काम चाहते हैं।

स्वार्थी मालिक वैसे ही हैं जैसे कुम्हार के हाथ में मिट्टी का लोंदा। उनके लालच के जरिए उन्हें इस स्थिति में लाया जा सकता है, ताकि वे वैसे लोगों को इनाम देने को विवश हों जो ज्यादा काम करते हैं। लालची मालिक कभी नहीं चाहते कि वेतन की परवाह किए बगैर कुछ आगे बढ़कर काम करने की आदतवाले नौकरी छोड़कर जाएँ। वैसे कर्मचारियों की कीमत वे जानते हैं और यही वह बिंदु है, जहाँ अपनी चतुराई और बुद्धिकौशल से लालची मालिकों को ढीला पड़ने को विवश किया जा सकता है।

चतुर कर्मचारी ऐसे मालिकों की सोच बदलने के लिए जान-बूझकर अन्य कर्मचारियों की अपेक्षा ज्यादा और बेहतर काम करेगा। लालची मालिक ऐसे कर्मचारियों को पकड़कर रखने के लिए वहाँ तक झुकने को तैयार हो जाएगा, ताकि वे काम छोड़कर न जाएँ। इस तरह मालिकों का लालच ही एक कदम आगे बढ़कर काम करनेवालों के लिए एक बड़ी संपत्ति हो जाएगा। इस तकनीक का असर हमने सैकड़ों बार देखा है, जिससे मालिकों को लालचवाली अपनी ही कमजोरी के आगे झुककर मानसिकता बदलनी पड़ी है। एक बार भी मैंने इस तकनीक को असफल होते नहीं देखा।

कभी-कभी ऐसा भी हुआ है कि लालची मालिक उम्मीद के अनुरूप जल्दी एक्शन में नहीं आते, लेकिन यह उन्हीं के लिए दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ, क्योंकि ऐसा करके वह मालिक अपने प्रतियोगी मालिक को वैसे काबिल कर्मचारियों को तोड़ने का न्योता देता है। कुछ आगे बढ़कर काम करने की आदतवालों को धोखा देने का कोई रास्ता नहीं है।

अगर एक सूत्र से उनके काम को मान्यता नहीं मिलती, तो दूसरे सूत्र से मिलती ही है और प्रायः उस रूप में जिसकी उम्मीद भी नहीं रहती। एक कदम आगे बढ़कर सही मानसिक वृत्ति से काम करनेवाले नौकरी खोजने में कभी समय नहीं गँवाते। वे नौकरी की तलाश में हाथ-पर-हाथ धरे बैठे नहीं रहते। निराशा आती है, जाती है, काम खराब हो या अच्छा, देश में शांति हो या युद्ध वे लोग वेतन से ज्यादा काम बेहतर प्रदर्शन के साथ करते रहते हैं, ताकि उनकी खपत हमेशा रहे, वे अपने लिए रोजगार सुनिश्चित कर लेते हैं।

ऊँचा वेतन और कभी खत्म न होनेवाला हुनर जुड़वाँ बहनें हैं। ये हमेशा साथ चलती हैं और साथ चलेंगी। कुछ आगे बढ़कर काम करने का परिणाम पूर्ण व्यावसायिक सोच के रूप में सामने आता है, जो व्यक्तिगत समृद्धि के साथ-साथ कारोबार में भी समृद्धि देता है।

एक कदम आगे बढ़कर काम करना अच्छी कारोबारी सोच

कई कंपनियों ने कुछ आगे बढ़कर काम करने की सोच को कंपनी का मिशन बनाया है। हमारी एक लोकप्रिय एयरलाइंस ऐसी ही एक कंपनी है। इस एयरलाइंस के संस्थापक ने सारा कुछ सही दिशा में किया जिसके चलते आज यह कंपनी उस रूप में जानी जाती है, जिसमें योगदान करने के इच्छुक आवेदकों की लंबी सूची रहती है। इस कंपनी की सफलता का सबसे प्रमुख लक्षण है, ग्राहकों को आकर्षित करनेवाला कर्मचारियों का व्यवहार।

खुद संस्थापक का कहना है—मैं समझता हूँ कि यह सरल जैसा लगता है, लेकिन हमेशा कहता हूँ कि सेवा के स्वर्णिम नियम का पालन करो। दूसरों की सेवा वैसे ही करो, जैसी सेवा की उम्मीद आप दूसरों से करते हो। मैं अपने लोगों से कहता हूँ, अगर आप किसी रेस्तराँ या डिपार्टमेंटल स्टोर में जाएँ और काउंटर पर खड़ा सेल्समैन कायदे से बात न करे, आपकी जरूरतों की परवाह न करे तो आपको कैसा लगेगा? हर कोई इस सवाल के जवाब में कहेगा नहीं हम इसे पसंद नहीं करेंगे। उसके बाद मैं कहता हूँ, चिड़चिड़ा मत बनो। अच्छी और ऐसी सेवा अर्पित करो, जैसी सेवा आप किसी से पाना चाहते हो।

कहानी एडवर्ड चोएट की

कुछ लोग स्मार्ट होते हैं, कुछ अन्य बुद्धिमान् होते हैं। ऐसे ही लोगों की खोज है, वित्तीय लाभ के लिए कुछ आगे बढ़कर काम करने का सिद्धांत जिसे अपनाकर धनकुबेर बना जा सकता है। इसमें जो वाकई बुद्धिमान् हैं, वे मानते हैं कि इस सिद्धांत का सबसे बड़ा फायदा दोस्ती के रूप में मिलता है, जो जीवन भर साथ चलता है। चाहे मानवीय संबंध में समरसता, प्रेम का निर्वहन, लोगों को जानने-समझने की क्षमता हो या आपस में दुआएँ बाँटने की इच्छा, इन तमाम बातों में एक कदम आगे बढ़कर काम करने की आदत का लाभ मिलता है और यह कुल मिलाकर धनकुबेर बनने के बारह उपाय की राह दिखाते हैं।

एडवर्ड चोएट वैसे व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने इस सत्य को पहचाना और सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी हासिल की। वे लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया में रहते थे और बीमा कंपनी के एजेंट थे।

अपने कॅरियर की शुरुआत एडवर्ड ने जीवन बीमा सेल्समैन के रूप में की और अपने प्रयासों से अच्छा जीवनयापन करने लगे, लेकिन उन्होंने उस क्षेत्र में कोई रिकॉर्ड नहीं बनाया। दुर्भाग्य से एडवर्ड अपनी सारी पूँजी से हाथ धो बैठे और सबसे निचले पायदान पर आ गए। हालत ये हो गई कि एडवर्ड को मजबूरन नए सिरे से जिंदगी शुरू करनी पड़ी, जो बिलकुल दुर्भाग्यपूर्ण व्यावसायिक शुरुआत साबित हुई। मैंने इसे एक दुर्भाग्यपूर्ण व्यावसायिक शुरुआत कहा, मगर दरअसल मुझे सौभाग्यशाली व्यावसायिक शुरुआत कहना चाहिए। नुकसान ने एडवर्ड को थोड़ा रुककर यह सोचने, सुनने, देखने और इस बात पर मन एकाग्र करने को विवश किया कि क्यों किस्मत कुछ को उपलब्धि के ऊँचे पायदान पर ले जाकर खड़ा कर देती है, पर अन्य को अस्थायी हार या स्थायी विफलता की हालत में ला देती है। चित्त और मन को एकाग्र करके वे व्यक्तिगत उपलब्धि दर्शन के छात्र बन गए, जिसमें एंड्रयू कार्नेगी ने मदद करके एडवर्ड को रँगारंग कॅरियर उपलब्ध कराया।

एडवर्ड जब कुछ आगे बढ़कर काम करने के पाठ तक पहुँचे तो दृढ़ लगनवाली

अंडरस्टैंडिंग की भावना ने उनकी चेतना जगाई, जिसका अनुभव उन्होंने पहले नहीं किया था। एडवर्ड ने महसूस किया कि भौतिक सुखों की क्षति उससे ज्यादा बड़े सुख की ओर ले जाती है, जिसमें आध्यात्मिक शक्ति की भी प्रमुख भूमिका होती है। इस खोज के बाद एडवर्ड ने धनकुबेर के बारह उपाय एक-एक करके आजमाने शुरू कर दिए। सार्थक मानसिक मनोवृत्ति के विकास से उन्होंने शुरुआत की।

कुछ समय के लिए एडवर्ड ने यह सोचना बंद कर दिया कि वे फिर से जीवन बीमा एजेंट का काम शुरू कर सकते हैं। इसके बजाय एडवर्ड ऐसे अवसरों की तलाश में जुट गए, जिसमें उन लोगों की सेवा की जाए, जो समस्याओं के बोझ से परेशान रहते हैं और उनका समाधान नहीं निकाल पाते।

ऐसी सेवा का पहला मौका एडवर्ड को कैलिफोर्निया के ही रेगिस्तान में मिला, जहाँ एक युवक खनन व्यवसाय में असफल होकर भुखमरी का शिकार था। एडवर्ड उस युवक को अपने घर ले गए, उसे खिलाया और हौसला बढ़ाया। उन्होंने युवक को तब तक अपने घर में रखा, जब तक वह अपने लिए बेहतर मानसिक स्थिति में नहीं आ गया।

एक अच्छे परोपकारी की भूमिका में आने के बाद एडवर्ड के दिमाग से वित्तीय मुनाफा कमाने की बात निकल गई। स्पष्ट था कि गरीब, हतोत्साहित युवक कहाँ से बीमा एजेंसी खरीद पाता।

उसके बाद एडवर्ड के सामने फूटी किस्मतवालों की किस्मत सँवारने के इतने अवसर धड़ाधड़ आने लगे कि उनका व्यक्तित्व एक युवक जैसा हो गया, जो कठिन समस्याओं से ग्रस्त लोगों को समाधान खोजने के लिए अपनी ओर आकर्षित करने लगा।

यह एडवर्ड की राह में धोखे जैसा था। क्योंकि वे अपने को ठगने लायक बनाने के प्रयोग में लगे थे कि देखें, दूसरों की मदद करने का लक्ष्य वे कितने मनोयोग से हासिल कर सकते हैं।

हम यह न भूलें कि एक कदम आगे बढ़कर काम करने के सिद्धांत पर चलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को किसी-न-किसी रूप में एक खास समय का अनुभव अवश्य होता है। उसके बाद दृश्य बदला और एडवर्ड चोएट की किस्मत ने ऐसा मोड़ लिया जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। उनके बीमा कंपनी व्यवसाय में दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ोतरी होने लगी। जीवन बीमा की बिक्री रातोरात चमक उठी। चमत्कार-पर-चमत्कार सामने आने लगे और एडवर्ड का कारोबार उनकी उम्मीद से कई गुना ज्यादा चमका। कमाल तो यह रहा कि उस समय तक की सबसे बड़ी बीमा पॉलिसी उस हतोत्साहित युवक के मालिक ने खरीदी, जिसकी उन्होंने परेशानी की हालत में मदद करके रेगिस्तानी निराशा से निजात दिलाई और दोस्ताना संबंध कायम किए थे। इसके लिए एडवर्ड को खुद कोई प्रयास नहीं करना पड़ा। अन्य पॉलिसी की बिक्री भी उसी तरह होने लगी और जिस काम के लिए पहले काफी दौड़ना पड़ता था, कठिन मेहनत करनी पड़ती थी, वे सब आसानी से होने लगे, फिर वे बीमा विशेषज्ञ के रूप में मशहूर हो गए। बड़ी-बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियाँ सँभालनेवाले और कॉरपोरेट सेक्टर के लोग अपनी जीवन बीमा समस्याओं के लिए एडवर्ड से परामर्श करने लगे।

जल्द ही एडवर्ड ने अपने समय के सभी जीवन बीमा एजेंटों को दौड़ में पीछे छोड़ दिया,

जिसके एवज में उन्हें मिलियन डॉलर राउंड टेबल की आजीवन सदस्यता प्राप्त हुई। ऐसा ओहदा सिर्फ ऐसे व्यक्तियों को हासिल होता है, जो लगातार तीन वर्ष तक सालाना दस लाख डॉलर के बीमा बेचने का रिकॉर्ड बना चुके हों। एडवर्ड से पहले उस समय तक यह उल्लेखनीय खिताब पानेवाले मात्र 57 लोग थे। इस तरह आध्यात्मिक सुख हासिल करने के बाद एडवर्ड ने भौतिक सुख भी पाया और इतनी प्रभुता से पाया, जो उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था।

छह साल तक परोपकारी की भूमिका निभाने के बाद एडवर्ड के भाग्य ने ऐसा पलटा खाया कि साल के पहले चार महीनों में ही उन्होंने बीस लाख डॉलर से ज्यादा की जीवन बीमा पॉलिसी बेचीं।

एडवर्ड की उपलब्धियों की कहानी पूरे देश में फैलने लगीं। उसके बाद एडवर्ड को जीवन बीमा सम्मेलनों में व्याख्यान देने के बुलावे आने लगे। सम्मेलनों में जुटनेवाले जीवन बीमा एजेंट यह जानने को उत्सुक थे कि कैसे एडवर्ड ने इस व्यवसाय के शिखर तक की सीढ़ियाँ तय कीं।

अन्य सफल लोगों के सामान्य तरीके के ठीक विपरीत एडवर्ड ने सम्मेलन में भाग लेनेवालों को शुद्ध और निर्मल मन की महत्ता बताई, जिससे वे उत्प्रेरित हुए। एडवर्ड ने स्पष्ट रूप में स्वीकारा कि उनकी उपलब्धि दूसरे के दर्शन अपनाने और सहयोग देने की भावना से काम करने का परिणाम है।

प्रायः सफल लोग अपनी सफलता की डींगें हाँककर श्रोताओं को यह समझाने की कोशिश करते हैं कि उन्होंने यह सारा कुछ अपनी स्मार्टनेस और बुद्धिकौशल से हासिल किया है। वे अपने गुरुजन तथा प्रेरणा देनेवालों को इसका श्रेय नहीं देते। मैं आप सभी के सामने स्पष्ट कर दूँ कि कोई भी व्यक्ति सफलता के ऊँचे शिखर तक अन्य लोगों के मैत्रीपूर्ण सहयोग के बगैर नहीं पहुँच पाया, न ही दूसरों की मदद किए बिना किसी को मन मुताबिक सफलता मिली।

एडवर्ड चोएट ने वांछित भौतिक सुख हासिल किए। आध्यात्मिक सुख में भी वे काफी आगे थे, जिसका बौद्धिक इस्तेमाल करके उन्होंने सही मायने में धनकुबेर के बारहों सोपान पूरे किए, जहाँ पैसा अंतिम और कम महत्त्ववाला बिंदु है।

❑

6

प्रेम: सही पथ प्रदर्शक

वक्ता ने एक पल रुककर श्रोताओं की ओर नजर दौड़ाई। सबके चेहरे पर उन्हें हलकी मुसकान और तन्मय होकर सुनने के भाव दिखे। श्रोतागण अपनी सीटों पर विराजमान थे और कोई-कोई एक-दूसरे की ओर कुछ पूछने-जानने की मुद्रा में देख रहे थे।

मैं समझ रहा हूँ कि यहाँ कुछ लोगों को अच्छा नहीं लगा होगा, लेकिन अब इस मोड़ से मैं आगे तब तक नहीं बढ़ सकता, जब तक आपको यह न समझा दूँ कि अब तक का सबसे बड़ा पाठ आपने जाना है, जो मैं महसूस कर रहा हूँ और संभवतः इसे ही जानना सर्वाधिक कठिन है। मैं अब आगे आपसे प्रेम के विषय में बात करूँगा। जो लोग यह सोचते हैं कि ऐसे व्यावसायिक सेमिनार में प्रेम की बात करने की कोई तुक नहीं होगी, उन्हें मैं आश्वस्त करना चाहता हूँ कि आप जल्द ही प्रेम से इसका संबंध जान जाएँगे।

वक्ता ने कहना जारी रखा—मानव होने के नाते प्रेम हमारा महानतम अनुभव है। यह किसी को भी शाश्वत विवेक से जोड़ता है।

सेक्स और रोमांस की भावनाओं के सम्मिश्रण से यही प्रेम सार्थक विजन के जरिए व्यक्तिगत उपलब्धि की ऊँचाई के शिखर तक ले जा सकता है।

प्रेम, सेक्स और रोमांस ये तीनों भावनाएँ उपलब्धि के शाश्वत त्रिभुज के तीन छोर हैं, जो जीनियस नाम से जाने जाते हैं। प्रकृति किसी दूसरे माध्यम से जीनियस पैदा नहीं करती। मानव के आध्यात्मिक स्वभाव की अतुलनीय अभिव्यक्ति है, प्रेम। सेक्स पूरी तरह शारीरिक है, पर यह सारे निर्माणकारी प्रयत्नों में एक्शन के साथ जुटनेवाली मानसिक स्थिति पैदा करता है।

प्रेम और सेक्स में रोमांस का जोश जुड़ जाने से सभी आनंदित, रोमांचित अनुभव करते हैं। दुनिया के बड़े-बड़े नेता अपने क्षेत्र के नायक और चिंतक इसके जरिए स्वस्थ मन व मस्तिष्क के साथ ज्यादा बेहतर काम करने की अनुभूति पाते हैं। प्रेम मानव को मानव से जोड़ता है। इससे स्वार्थलिप्सा, लालच, ईर्ष्या और द्वेष का सफाया हो जाता है। जहाँ प्रेम न हो, वहाँ सही अर्थों में महानता नहीं आ सकती।

जिस प्रेम की बात मैं कर रहा हूँ, उसे सेक्स समझने का भ्रम नहीं होना चाहिए। यह शाश्वत त्रिभुज के तीनों छोर में गुँथी सर्वोत्तम और पवित्रतम अभिव्यक्ति है। शाश्वत प्रेम इस त्रिभुज के बाकी दोनों अवयवों से ज्यादा महान् है। मेरी प्रेमचर्चा का आशय जीवन नेतृत्व बोध से और रोजमर्रा की जिंदगी को सरस तथा उत्साहपूर्ण बनाने से है। इससे सारे निर्माणकारी प्रयासों में मानव को पूर्णता और एक नई वर्किंग कल्चर का एहसास होता है। सेक्स की भावना सभी जीवों में है, मगर प्रेम ही ऐसा तत्त्व है, जो मानव को धरती के अन्य जीवों से अलग करता है। यही एक तत्त्व है जो यह तय करता है कि किसी के मन में दूसरे के लिए कितनी जगह है और दूसरों के दिल में वह कितनी जगह बना पाएगा।

सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी हासिल करने के बारह उपायों में पहला और सबसे

ठोस आधार है प्रेम। सकारात्मक मानसिक वृत्ति का निर्माण इससे किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति इसके बिना वास्तविक सुख हासिल नहीं कर सकता। धनकुबेर बनने के अन्य ग्यारह उपाय भी प्रेम के जरिए ज्यादा आसानी से हासिल किए जा सकते हैं। यही सारे सुखों का आधार है और काम की गुणवत्ता भी इसी से आती है। इसके अभाव से क्या होता है—यह उन लोगों के अनुभव से जाना जा सकता है, जिन्होंने भौतिक सुख के सारे साधन तो हासिल कर लिए, लेकिन प्रेम हासिल नहीं किया।

कुछ आगे बढ़कर काम करने की आदत से प्रेम की अनूठी अनुभूति होती है। प्रेम की अभिव्यक्ति खुद प्रेम से बढ़कर दूसरी नहीं हो सकती, जो दूसरों की निःस्वार्थ सेवा के जरिए प्रदर्शित होती है। एमर्सन के पास प्रेम की वह दृष्टि थी, जिसका उल्लेख उन्हीं के शब्दों में :

जिनके दिल में विनम्रता, न्याय, प्रेम, आकांक्षा के भाव हैं, वे उस मंच पर पहले से हैं, जिसके अधीन विज्ञान, कला, वाक् पटुता, कविता, एक्शन और गरिमा हैं और जो इस मरणशील सौंदर्य में रहते हैं, वे भलीभाँति वैसी विशेष शक्तियाँ हासिल कर लेते हैं, जो मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

इस शक्ति का स्रोत समझना आसान है कि जो किसी अजनबी के लिए अपना पैसा और समय देता है और आशय देकर निःस्वार्थ भाव से सिर्फ प्रेम के वशीभूत हो अपनी सेवा अर्पित करता है, वह ईश्वर को भी अपने प्रति कृतज्ञ बना लेता है और वही ब्रह्मांड का पूर्ण मुआवजा है। इस काम में कभी-कभी समय लगता है, निराशा भी हाथ लगती है, लेकिन इससे विचलित हुए बिना वे लोग प्रेम की शिखा प्रज्वलित किए मानव समुदाय के बीच निर्मल प्रेम धारा बहाते हुए अपने गुणों में वुद्धि करते रहते हैं।

हर समय और युग में बड़े-बड़े दिमागवाले लोग प्रेम को एक शाश्वत अटूट बंधन मानते हैं, जो मानव दिलों को बाँधकर एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदार बनाता है। इस देश के सबसे विद्वान् रॉबर्टग्रीन इंगेरसोल ने प्रेम के प्रति अपनी कालजयी भावना यों व्यक्त की है—

“जीवन के अँधेरे बादल का एकमात्र धनुष प्रेम है
यही सुबह का और शाम का तारा है।”

यह तलैया में चमकता है और इसकी किरण शांत गुंबद पर पड़ती है।
यह कला की जननी है; कवि, देशभक्त और दार्शनिक की प्रेरणा है।
यह प्रत्येक घर में हर हृदय निर्माता का वायु और प्रकाश है।
सबके दिल की कोमल दीप-शिखा है।
यही अमरत्व का पहला सपना है।
यह विश्व को मधुर संगीत से भर देता है, जो प्रेम की आवाज है।
प्रेम कौतुक है, जादूगर है, जिससे सारा कुछ आनंदमय हो जाता है।
यह राजा, धनी और फकीर में भी एक समान विद्यमान है। यह वो आश्चर्यजनक फूल है, जिसके हृदय में न होने पर ईश्वरीय पवित्र अनुभूति नहीं होती है और आदमी को पशु से अलग करती है।
प्रेम की बदौलत ही धरती स्वर्ग है और हम ईश्वर के अंश हैं।
प्रेम से कायाकल्प होता है, यही पवित्र करता है और गरिमा प्रदान करता है।
प्रेम एक यथार्थ है, दृष्टि का क्रम और आधार है।

प्रेम पर ही संसार का सौंदर्य और स्वर्ग की गरिमा टिकी है।
न्याय, आत्म अस्वीकार, दया, करुणा ये सब प्रेम की संतानें हैं। प्रेम के अभाव में गरिमा समाप्त हो जाती है, भलाई की भावना पैदा नहीं होती, कला मर जाती है, संगीत अर्थहीन हो जाता है और महज वायु तरंगों से ज्यादा कुछ नहीं लगता। गुणों का क्षय होने लगता है। अगर कोई वास्तव में महान् है तो वह अवश्य ही मानवता से प्रेम करेगा। वह अच्छे या बुरे का विचार किए बिना समस्त मानवता से प्रेम करेगा। अच्छों के साथ गर्व, प्रशंसा और आनंद के साथ प्रेम करेगा। बुरों के प्रति दया और सहानुभूति दिखाएगा। क्योंकि वास्तव में जो व्यक्ति महान् हैं, वे समझते हैं कि अच्छे या बुरे गुण परिस्थितियों के परिणाम हैं, जिन पर अपनी अज्ञानता के कारण उनका कोई वश नहीं चलता।''

महान् बनने के लिए मन में अनुकंपा, सहानुभूति की भावना और सहनशीलता होनी चाहिए। अगर किसी के प्रति न्याय करने की बाध्यता हो, तो व्यक्ति को बिलकुल कोमल और दया की भावना से काम करना चाहिए। हमेशा गरीब, कमजोर और असहाय का पक्ष लेकर खुद को उनका हमदर्द बनाना चाहिए।

इससे न केवल कुछ आगे बढ़कर काम करना सार्थक साबित होगा, बल्कि उसके ज्यादा बेहतर और प्रेरक परिणाम सामने आएँगे। अगर एक कदम पर्याप्त न लगे तो दूसरा और तीसरा कदम बढ़ाकर छलाँग इस उत्साह से लगानी चाहिए कि जरूरी हुआ तो ज्यादा-से-ज्यादा कदम बढ़ाने में हिचक न हो।

वक्ता का कथन अपने लक्ष्य पर खरा उतरा और श्रोता अभिभूत थे। वक्ता अपनी बातचीत समाप्त कर मंच से चले गए, लेकिन लोग अपनी सीटों पर ही बैठे वक्ता के दर्शन में गोते लगाते रहे। जब श्रोताओं ने धीरे-धीरे हॉल से निकलना शुरू किया, उस समय तक रात लगभग आधी गुजर चुकी थी।

❑

7

मास्टरमाइंड

अगले दिन प्रातः ही सम्मेलन में भाग लेनेवाले सेमिनार हॉल में पहुँच गए। वे आज खासतौर से ज्यादा उत्साहित थे, क्योंकि आज के पाठ के बारे में कहा गया था कि यह धनकुबेर चाबी का राज समझने के लिए काफी महत्त्वपूर्ण साबित होगा। कुछ श्रोता गत शाम के पाठों को हृदयंगम करने में जुटे थे और अपने-अपने कमरों में जाकर उस प्रेम-दर्शन में निहित अर्थ तथा अभिव्यक्ति को अपने जीवन से मिलाने में लगे हुए थे। कुछ अन्य लोग तय नहीं कर पा रहे थे कि गत शाम का व्याख्यान सुनने के बाद वे कैसा महसूस कर रहे हैं। वे इस उम्मीद में थे कि आज के व्याख्यान के वक्ता संभवतः पहले से कुछ अलग और ज्यादा व्यावहारिक कंसेप्ट की बात करें।

आज का पाठ इनकी थीम का ही विस्तारित रूप था। विशाल हॉल के श्रोताओं से भर जाने के बाद उनसे जोड़े में बैठने को कहा गया और निर्देश दिया गया कि वे अपनी-अपनी पसंद के मुताबिक जोड़ीदार चुन लें। इससे इनकार करनेवालों को यह कहकर हॉल छोड़ देने की हिदायत मिली कि वैसा नहीं करने से वे आज के व्याख्यान की गहराई में नहीं जा पाएँगे और उन्हें इसका भरपूर लाभ नहीं मिल पाएगा। वक्ता ने अपने तौर-तरीके इतने रहस्यमय बना दिए कि अधिकांश श्रोताओं ने जोड़ी बनानेवाले निर्देश का अनुसरण किया, श्रोताओं को लगा कि कल और उससे पहले जो जानकारी उन्होंने हासिल की है, उसी तरह आज मिलनेवाली जानकारी भी उनकी सफलता के रास्ते में मूल्यवान साबित होगी। सब लोगों के स्थान ग्रहण करने के दस मिनट बाद वक्ता मंच पर उपस्थित हुए, जबकि उनके साथ एक महिला भी मंच पर पहुँची। वह महिला तकरीबन उनकी हमउम्र ही थी, मगर यह कहना कठिन था कि वह वक्ता की पत्नी थी, सहकर्मी थी, दोस्त थी या उनके जीवन में अहमियत रखनेवाली कोई दूसरी महिला थी। सम्मेलन में शिरकत करनेवालों को लगा कि वे जल्द ही यह बात जान जाएँगे। वक्ता ने एक हाथ में माइक्रोफोन और दूसरे हाथ से अपनी अतिथि महिला का हाथ थामे साथ-साथ सीढ़ी चढ़ते हुए मंच का एक चक्कर लगाया। फिर दोनों साथ-साथ श्रोताओं की ओर मुखातिब हुए। वक्ता ने शुरू किया—मास्टरमाइंड सिद्धांत सारी महान् उपलब्धियों का आधार है मानव प्रगति चाहे वह व्यक्तिगत हो अथवा सामूहिक—जीवन की महत्त्वपूर्ण आधारशिला है। यह महान् व्यक्तिगत शक्ति हासिल करने की चाबी है। मास्टरमाइंड वह है, जिसमें समन्वय और एक निश्चित लक्ष्य हासिल करने के लिए आपस में सहयोग का उत्साह हो। इस शक्ति की चाबी समन्वय शब्द में मिल सकती है। इसके बिना सामूहिक प्रयत्न में सहयोग तो संभव है, लेकिन इसमें वह शक्ति नहीं आ पाएगी, जो आपस में समन्वय से मिलती है।

मास्टरमाइंड सिद्धांत से संबंधित प्रमुख महत्त्व के तत्त्व इस प्रकार हैं—

1. मास्टरमाइंड सिद्धांत के माध्यम से आप अनुभव, प्रशिक्षण, विशेष ज्ञान और अन्य लोगों की क्षमता का भी भरपूर लाभ उठा सकते हैं तथा इस तरह जान सकते हैं, मानो आप ही के

दिमाग से वे भी सोचते हों।
2. एक निश्चित लक्ष्य हासिल करने के लिए पूर्ण समन्वय के साथ दो या उससे अधिक दिमागों की संधि से हर एक व्यक्ति का दिमाग काफी उत्प्रेरित होता है और वैसी मानसिक स्थिति बनती है, जिसे विश्वास कहते हैं। इसकी शक्ति और क्षमता का थोड़ा एहसास गहरी दोस्ती और प्रेम के रिश्ते में होता है।
3. हर मानव मस्तिष्क विचार अभिव्यक्ति के विभिन्न बिंबों का प्रसारण और भंडारण केंद्र है। यह मास्टरमाइंड सिद्धांत से इस मायने में जुड़ा है कि इन बिंबों का सीधा प्रभाव विचार पर पड़ता है। इसे सामान्यतया टेलीपैथी कहा जाता है, जिसका संचालन छठी इंद्रिय द्वारा होता है। इस तरीके को अपनाकर कई व्यापारिक और व्यावसायिक गठजोड़ सही साबित हुए। शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा, जिसने मास्टरमाइंड सिद्धांत को अपनाए बिना कोई ऊँची जगह हासिल की हो। क्योंकि इस सिद्धांत से दूसरे के दिमागों का भी लाभ मिल जाता है।
मास्टरमाइंड सिद्धांत का महत्त्व बताने का यही तथ्य पर्याप्त प्रमाण है। यह ऐसा तथ्य है, जिसे आप दिमाग पर ज्यादा बोझ डालकर चिंता में घुले बिना इसकी वास्तविकता आजमा सकते हैं।
4. मास्टरमाइंड सिद्धांत को सक्रिय रूप से अपनाने पर इसके प्रभाव से एक व्यक्ति के दिमाग का अवचेतन हिस्सा अपने सहयोगियों के दिमाग के अवचेतन हिस्से से जुड़ता है। इससे कई चमत्कारिक परिणाम सामने आए हैं और सामाजिक संबंधों में भी ऐसे प्रयोग से जुड़े तथ्य हैं, जिसका मैं आगे जिक्र करूँगा।
5. मास्टरमाइंड सिद्धांत के अनुसरण से कुछ अन्य सामाजिक एवं मानवीय संबंध भी प्रभावित होते हैं, जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं—

विवाह, मजहब, व्यक्ति का कारोबार, व्यवसाय या बातचीत।

मास्टरमाइंड सिद्धांत ने ही थॉमस एडीसन को शिक्षा और विज्ञान का ज्ञान कम होने के बावजूद इतना बड़ा आविष्कारक बनाया। इसी सिद्धांत के चलते एडीसन के लिए ऐसी परिस्थिति पैदा हुई, जो अपर्याप्त या औपचारिक शिक्षा हासिल करनेवालों के लिए भी एक उम्मीद जगाती है कि अगर कोई चीज करने की ठान लें, तो सारी बाधाएँ अनुकूल हो जाती हैं।

मास्टरमाइंड सिद्धांत की बदौलत प्रशिक्षित केमिस्ट बने बिना कोई भी केमिस्ट्री का व्यावहारिक इस्तेमाल केमिस्ट्री के विशेषज्ञ और अनुभवी की तरह कर सकता है। वैज्ञानिकों, टेक्नीशियनों, भौतिकशास्त्रियों और व्यावहारिक मैकेनिकों की मदद से कोई भी सफल आविष्कारक बन सकता है, जैसे एडीसन ने इन तमाम क्षेत्रों का व्यक्तिगत प्रशिक्षण न होने के बावजूद कर दिखाया।

गठजोड़ों का महत्त्व—दो तरह के सामान्य मास्टरमाइंड गठजोड़ होते हैं।"
1. एक गठजोड़ पूरी तरह व्यक्तिगत और सामाजिक कारणों से रिश्तेदारों, मजहबी सलाहकारों और दोस्तों से होता है, जिसके पीछे पैसा या भौतिक सुखों की प्राप्ति अकसर नहीं होती। इस टाइप के गठजोड़ में सबसे महत्त्वपूर्ण पति-पत्नी के बीच का होता है।
2. व्यापारिक, व्यावसायिक और आर्थिक टाइप के व्यक्तिगत गठजोड़ों के पीछे मुख्य रूप से

आर्थिक पक्ष मजबूत करने का उद्देश्य काम करता है। अब हम उस महत्त्वपूर्ण शक्ति का उल्लेख करते हैं, जो मास्टरमाइंड सिद्धांत को अपनाने से हासिल होती है और काफी मायने रखती है। वैसे कुछ उदाहरणों में संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान के अंतर्गत लिखित अमेरिकी संविधान का सबसे पहले विश्लेषण किया जाना चाहिए, क्योंकि इस संविधान में अपने देश के प्रत्येक नागरिक को प्रभावित करनेवाले प्रावधान हैं और ये कई मायनों में पूरी दुनिया को भी प्रभावित करते हैं।

हमारा देश तीन महत्त्वपूर्ण तथ्यों के लिए जाना जाता है—

1. यह दुनिया का सबसे धनाढ्य देश है।
2. यह दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश है।
3. यह किसी भी अन्य देश की तुलना में अपने नागरिकों को ज्यादा व्यक्तिगत आजादी देता है। धन, आजादी, ताकत, सच्चाइयों का कितना शानदार और प्रेरक सम्मिश्रण है। इन लाभों के स्रोत तय करना कोई कठिन नहीं है। ये हमारे देश के संविधान और स्वतंत्र उद्यम के अमेरिकी सिस्टम के केंद्र में है। ये दोनों इस तरह आपस में गुँथे हैं, जिससे लोगों को एक ही साथ आर्थिक और आध्यात्मिक शक्ति मिली है जो इससे पहले दुनिया ने नहीं देखी।

हमारे देश की सरकारी व्यवस्था कमाल का मास्टरमाइंड गठजोड़ है, जो सभी लोगों के बीच आपसी समन्वय सिद्धांत पर टिकी है। यह व्यवस्था 50 अलग-अलग ग्रुपों में काम करती है, जो राज्य कहलाते हैं।

अमेरिकी मास्टरमाइंड के संचालन केंद्र को सरकार के विभिन्न अवयवों के बारीक अध्ययन से आसानी से समझा जा सकता है, जो बहुसंख्यक लोगों के सीधे नियंत्रण में है।

इन अवयवों को इस प्रकार अलग-अलग किया जा सकता है—

(1) हमारी सरकार की कार्यकारी शाखा (राष्ट्रपति की देखरेख में)।
(2) न्यायिक शाखा (सुप्रीम कोर्ट की देखरेख में)।
(3) विधायी शाखा (कांग्रेस के दोनों सदनों की देखरेख में)।

हमारा संविधान इतनी बुद्धिमानी से बनाया गया है कि सरकार के इन तीनों अंगों की वास्तविक शक्तियाँ जनता के पास सुरक्षित हैं। ये वो शक्तियाँ हैं, जिनसे जनता को वंचित नहीं किया जा सकता। लोग खुद ही इन शक्तियों के इस्तेमाल की अनदेखी करें, तो बात दूसरी है।

हमारी राजनीतिक शक्ति सरकार के माध्यम से और आर्थिक शक्ति स्वतंत्र सिस्टम की देखरेख में काम करती तथा अभिव्यक्त होती है। ये दोनों शक्तियाँ आपस में समन्वय का पर्याप्त अनुपात बनाए रखकर परस्पर सहयोग से काम करती हैं। इस प्रकार हासिल ये शक्तियाँ सभी लोगों की संपत्ति हैं।

इसी शक्ति ने अमेरिकी लोगों का जीवन स्तर इतना ऊँचा किया है, जो एक नई सभ्यता का उदय माना जा रहा है। ऐसी सभ्यता जिसने हमारे देश को सही अर्थ में दुनिया का सबसे अमीर, सबसे ज्यादा स्वतंत्र और सबसे ज्यादा शक्तिशाली देश बना दिया है।

हम इस शक्ति को जीवन का अमेरिकी ढंग कहते हैं। उद्योग के क्षेत्र में इस्तेमाल मास्टरमाइंड का उदाहरण परिवहन और संचार जैसी महान् अमेरिकी व्यवस्था में भी मिलता है। हमारे रेलरोड, एयरलाइंस, टेलीफोन और दूरसंचार व्यवस्था सँभालनेवालों ने

ऐसी बेमिसाल सेवा जनता को उपलब्ध कराई है, जिसकी टक्कर में कोई अन्य देश नहीं ठहरता। उनकी कार्यक्षमता और बेहतर परिणाम देने का हुनर मास्टरमाइंड सिद्धांत के इस्तेमाल पर पूरी तरह टिका है या समन्वयपूर्ण आपसी सहयोग द्वारा किए गए प्रयास का परिणाम है।

अपने देश की तीनों सेनाओं—थल सेना, नौ सेना और वायु सेना के संबंध से भी मास्टरमाइंड सिद्धांत के इस्तेमाल से हासिल शक्ति को समझा जा सकता है। इनके बीच समन्वय और सहयोग की बदौलत अमेरिका सबसे ताकतवर देश बना है। अमेरिकी कारोबारी व्यवस्था मास्टरमाइंड सिद्धांत का एक और उदाहरण है, जिससे अमेरिका आर्थिक रूप से भी शक्तिशाली बना है। मास्टरमाइंड सिद्धांत के जरिए प्रत्येक सफल उद्योग मास्टरमाइंड के इस्तेमाल का परिणाम है। स्वतंत्र उद्यम की अमेरिकी व्यवस्था पूरी तरह शानदार आर्थिक शक्ति की परिचायक है, जो मैत्रीपूर्ण और आपसी समन्वय के प्रयासों से पैदा हुई है।

एंड्रयू कार्नेगी ने साफ-साफ स्वीकारा है कि उनकी पूरी संपत्ति इसी सिद्धांत पर चलकर जमा हुई है, जिसके जरिए उन्होंने देश के अब तक के सबसे बड़े औद्योगिक संगठन को संगठित किया और हम इस बात को याद करते चलें कि उनका मास्टरमाइंड पूरे संगठन के सभी सहयोगी कर्मचारी हैं, जो सबसे ज्यादा विनम्र और महान् हैं। कार्नेगी ब्रांड मास्टरमाइंड के प्रमुख कामगार उनके प्रबंधकीय और सुपरवाइजरी स्टॉफ हैं, जिनकी नियुक्ति उनके ओहदे और पद के अनुरूप हुई है। वे मास्टरमाइंड सिद्धांत इतनी अच्छी तरह समझते हैं कि इससे प्रेरित प्रत्येक कामगार अपने काम के हर अवसर का लाभ ऊँचे पद पर जाने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर उठाता है।

कार्नेगी की सहायता से व्यक्तिगत उपलब्धि दर्शन संगठन का दायित्व सँभालनेवाले व्यक्ति को यह लाभ मिला कि मास्टरमाइंड गठजोड़ का सबसे बड़ा गठजोड़ घटक बना, जो इस तरह के संगठन में उससे पहले देखने को नहीं मिला था।

इसमें एंड्रयू कार्नेगी के कॅरियर के 500 से ज्यादा बड़े उद्योगपति शामिल हैं और यह गठजोड़ 20 वर्षों तक चला और उस दौरान गठजोड़ के प्रत्येक घटक ने अपने औद्योगिक अनुभव के संपूर्ण लाभ से इस दर्शन के लेखक को अवगत कराया। इस गठजोड़ ने दुनिया को एक ऐसे प्रभावी शक्ति प्रदर्शन की जानकारी दी, जो इस दर्शन के प्रथम तीन सिद्धांतों के जरिए प्राप्त की जा सकती है—(1) एक कदम आगे बढ़कर चलने की आदत। (2) लक्ष्य की निश्चितता और (3) मास्टरमाइंड।

इस काम के लिए प्रेरित करनेवाली लक्ष्य की निश्चितता भौतिक सुख हासिल करने में सफल लोगों के अनुभवों पर आधारित कार्यदर्शन से आती है। यह एक निःस्वार्थ लक्ष्य है, क्योंकि यह पूरी तरह अन्य लोगों के लाभ के लिए निर्देशित है। लक्ष्य को लेकर चलनेवाले अलबत्ता सफल हैं, लेकिन वे अपना ज्ञान शेयर करने के लाभ को मान्यता देते हैं और वैसी आर्थिक व्यवस्था के नुकसान को भी मान्यता देते हैं, जो बहुतों के मूल्य पर सिर्फ कुछ लोगों के लाभ के लिए हैं। उस गठजोड़ के प्रत्येक व्यक्ति ने एक कदम आगे बढ़कर काम करने के सिद्धांत की अंडरस्टैंडिंग का प्रदर्शन अपना समय व अनुभव देकर, बिना पैसे तथा बिना मूल्य के किया। इसका उद्देश्य अपने देश के लोगों को उस दर्शन से लाभान्वित करना था,

जो अमेरिकी जीवन-शैली की आधारशिला के रूप में जाना जाता है; एक आधार जिसने हमें दुनिया का अमीरतम और सबसे ज्यादा मुक्त बनाया।

इस विशेष मास्टरमाइंड गठजोड़ की शक्ति और उसके लाभ की व्यापक समझ आ जाने के बाद सोचिए कि यह कल्पना करके कैसा लगेगा कि आपको 500 अमेरिकी उद्योगपतियों को चुनने की सुविधा कहीं मिल जाए, जो 20 वर्षों तक बिना पैसे के दिशानिर्देश देने को सहमत हों। सफल उद्यमी नेताओं के विशाल समूह के सहयोग की बदौलत आप उनके ज्ञान और अनुभव का भरपूर लाभ उठा सकते हैं, जो स्वतंत्र उद्यम की अमेरिकी व्यवस्था के विकास की उपज है। अगर आप इस ज्ञान का बेहतर उपयोग करते हैं, तो आपकी सफलता अवश्यंभावी है। विनम्र व्यक्ति इस सिद्धांत के माध्यम से आपकी पसंद का सद्भावपूर्ण गठजोड़ किसी के साथ भी कर सकता है। इस सिद्धांत का सबसे उत्तम और लाभकारी उपयोग है शादी, जिसमें प्रेम यही गठजोड़ लाता है। यह न केवल पति-पत्नी के बीच दिमागी समन्वय स्थापित करता है, बल्कि इससे दो आत्माओं के बीच आध्यात्मिक गुणों का भी विकास होता है। इसका सबसे बड़ा लाभ है, जीवन के दोनों रिश्तों के बीच सुख और आनंद का आना। यह अगली पीढ़ी को भी प्रभावित करता है। बच्चे चरित्रवान और सफल जीवन के तौर-तरीके सीखते हैं।

मास्टरमाइंड सिद्धांत का ज्वलंत उदाहरण

अब हम लगभग आधी सदी पहले के समय के पिछले पन्ने उलटाएँ और जरा देखें कि कैसे एक परिवार के मास्टरमाइंड संबंध ने एक विशाल औद्योगिक साम्राज्य स्थापित किया, जिससे आज लाखों लोगों को लाभप्रद रोजगार मिला हुआ है।

इस कहानी की शुरुआत उनके घर की रसोई से होती है। पति ने जैसे-तैसे बने गैसोलिन इंजन का एक मॉडल स्थापित किया। पत्नी उस वक्त आँख में दवा डालनेवाले ड्रॉपर की सहायता से एक ड्रॉप गैसोलिन इंजन में डालती थी। पति ने स्पॉर्क प्लग सँभाल रखा था, जिससे गैस स्टार्ट होता था। हफ्तों के अथक प्रयास के बाद, क्योंकि आपसी प्रेम का संबल था, आखिरकार गैस स्टार्ट हुआ और क्रूड इंजन की फ्लाईव्हील घूमने लगी।

इस प्रयोग के पीछे पैसा नहीं था। एक निश्चित लक्ष्य को पूरा करने के लिए दो व्यक्तियों के मास्टरमाइंड एलायंस के सिवाय और कुछ नहीं था। इस प्रयोग के पीछे तात्कालिक या प्रत्यक्ष मुआवजे का कोई वायदा भी नहीं था। यह काम एक कदम आगे बढ़कर कुछ कर गुजरने के सिद्धांत को अमल में लाकर पूरा किया गया।

इस प्रयास का परिणाम यह निकला कि वह मॉडल परफेक्ट साबित हुआ और अमेरिका का पहला स्वनिर्मित व्यावहारिक व्हिकल सच बनकर सामने आया।

उसके बाद यह मास्टरमाइंड गठजोड़ विस्तारित हुआ, जिसमें कुशल मैकेनिक कुछ मित्र और परिचित शामिल किए गए। इन सभी ने मिलकर ऑटोमोबाइल उत्पादन के लिए थोड़ी पूँजी लगाई।

आज ऑटोमोबाइल का उत्पादन इस अनुपात में हो रहा है, जिसकी तुलना उस शुरुआत में नहीं की जा सकती, जो सिर्फ दो यूनिट मास्टरमाइंड हिस्सेदारी तक सिमटी थी।

उस उत्पादन में दिमाग लगानेवाले उन 500 बड़े उद्योगपतियों में से एक थे, जिनके

अनुभवों के आधार पर व्यक्तिगत उपलब्धि का सिद्धांत तैयार हुआ है और यह याद दिलाने की जरूरत नहीं है कि उस व्यक्ति का नाम हेनरी फोर्ड है। फोर्ड उत्पादन बढ़ने के साथ ही फोर्ड मास्टरमाइंड भी बढ़ता गया और मैकेनिक, इंजीनियर, केमिस्ट, शोधकर्ता, वित्तीय विशेषज्ञ और बिक्री व्यवस्थापकों तथा कई अन्य प्रकार के कुशल श्रमिकों की विशाल फौज तैयार की गई, जो इतने बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए आवश्यक थी।

मास्टरमाइंड गठजोड़ के जरिए हेनरी फोर्ड ने अपने दिमाग को कई हजार गुना बहुआयामी बनाया। इस गठजोड़ के बिना वे इतनी विशाल औद्योगिक गतिविधियाँ नहीं चला सकते थे। यह और भी फलेगा-फूलेगा, क्योंकि इससे जुड़े सभी लोगों को लाभ पहुँचानेवाली शक्ति इसमें शामिल है। कोई भी मास्टरमाइंड गठजोड़ तभी कामयाब हो सकता है, जब इससे प्रभावित सभी लोग समान रूप से लाभान्वित हों। शुरू करने से पहले मास्टरमाइंड गठजोड़ के लक्ष्य पर खूब गौर करें, मानवीय प्रयत्न के सहयोग की शक्ति नजर आ जाएगी। अगर आपके पास दृढ़ इच्छाशक्ति है तो निश्चय ही वह उस साध्य में लगेगी जिससे प्रभावितों को लाभ पहुँचेगा।

शक्ति खतरनाक और सिर्फ कुछ ही लोगों को महिमामंडित करनेवाली हो सकती है, जो उसके इस्तेमाल के तरीके पर निर्भर है। मास्टरमाइंड महान् शक्ति पाने का रास्ता है और पावर के अन्य रूपों की तरह इसका भी सकारात्मक या नकारात्मक उपयोग हो सकता है।

यह स्पष्ट यथार्थ से संबंधित महज एक बयान नहीं है। हमारे महान् पूर्वजों के कामों के रिकॉर्ड इस सत्य के गवाह हैं। प्लेटों, अरस्तु, सुकरात से लेकर उनके काफी बाद की पीढ़ी के विलियम जेम्स और राल्फ वाल्डो एमर्सन ने इसे माना है तथा इस पर ध्यान भी दिया है।

बिजली से हमारा काम चलता है, हम अपने को इसके इस्तेमाल के तौर-तरीके के अनुकूल ढालते हैं, लेकिन यह जान भी ले सकती है—अगर उस हिसाब से इसका इस्तेमाल किया जाए। अगर कल्पना नकारात्मक सोचवाली हो तो उसके अच्छे परिणाम सामने नहीं आ सकते। भोजन जीवन के लिए आवश्यक है, मगर यह तभी हितकारी है जब हिसाब से खाया जाए। भोजन का गलत इस्तेमाल या बहुत ज्यादा खाना इतना नुकसानदेह हो सकता है, जितना कि जहर।

मास्टरमाइंड जवाबदेही के इस्तेमाल का महत्त्व

आप अच्छी तरह समझ चुके हैं कि किस प्रकार मास्टरमाइंड मनुष्य की व्यक्तिगत शक्ति का महान् स्रोत है। अब इसका सही इस्तेमाल आपकी जवाबदेही है। आप इसका वैसे ही इस्तेमाल करें, जैसे हेनरी फोर्ड ने किया। आपको भी वही स्थान मिलेगा, जो महान् स्थान दुनिया में फोर्ड ने हासिल किया। मैत्रीपूर्ण सहयोग पर आधारित इस स्थान का आकलन भूगोल और मानवीय संबंध दोनों में ही किया जा सकता है। यह एक माना हुआ तथ्य है कि अपने साथी व्यावसायिकों के दिलों में जो मैत्रीपूर्ण जगह हेनरी फोर्ड ने बनाई वह कोई अन्य उद्योगपति नहीं बना पाया।

फोर्ड के मास्टरमाइंड में सिर्फ उनके साथी कर्मचारी और तकनीकी स्टॉफ ही शामिल नहीं था, उनके इस गठजोड़ का दायरा इतना विस्तृत था कि अमेरिका का अवाम भी इसमें शामिल था। वे लोग जो हेनरी फोर्ड के साथ थे और उन्हें आगे बढ़ते देख रहे थे। अच्छा

कारोबार और व्यक्तिगत दर्शन को मान्यता देनेवाले हम और आप इसके इस्तेमाल का सम्मान करते हैं।

फोर्ड के मास्टरमाइंड इस्तेमाल पर हम इसलिए ज्यादा जोर देते हैं, क्योंकि अमेरिकी औद्योगिक इतिहास में उनसे बेहतर व्यक्तिगत उपलब्धि का दूसरा कोई उदाहरण नहीं मिलता, जो अमेरिकी जीवन-शैली पर आधारित हो। फोर्ड के प्रभाव का असर जिस किसी के भी जीवन पर पड़ा, वह उनसे लाभान्वित हुआ। इसमें संदेह है कि फोर्ड ने अमेरिकी जीवन-शैली पर अपने प्रभाव के अवसर और महत्त्व को स्वयं मान्यता दी हो।

हेनरी फोर्ड के नियंत्रणवाली मास्टरमाइंड शक्ति अभिशाप या खतरा नहीं, एक वरदान है। इसके इस्तेमाल से वैसे व्यक्तियों की बुद्धि खुलती है और नई सोच मिलती है, जो सामान्य दिमागवाले हैं। यह सारा फोर्ड का निजी अध्ययन है और उन लोगों को प्रेरित करने के लिए है, जो अमेरिकी जीवन-शैली के अंतर्गत व्यक्तिगत विकास चाहते हैं। हेनरी फोर्ड और विशाल कारोबारवाले 50 अन्य प्रमुख उद्योगपतियों की उपलब्धियों के इस दर्शन के 17 सिद्धांतों पर आधारित विश्लेषण की गणना में फोर्ड काफी आगे चल रहे हैं। प्रथम तीन सिद्धांतों—एक कदम आगे बढ़कर काम करना, लक्ष्य का निश्चित होना और मास्टरमाइंड में फोर्ड का दरजा 100 प्रतिशत प्लस रखा गया है। प्लस का मतलब यह है कि फोर्ड ने इन तीनों सिद्धांतों का असाधारण इस्तेमाल किया। उनकी उपलब्धियों और पूरी दुनिया में उनके प्रभाव का बारीकी से अध्ययन व विश्लेषण के बाद यह स्थापित हुआ है।

हम एक बार फिर याद करते चलें कि फोर्ड के मास्टरमाइंड सिद्धांत गठजोड़ की पहली सदस्य उनकी पत्नी थी, जो जीवनपर्यंत उनके गठजोड़ में पहले स्थान पर रही।

फोर्ड पर उनकी पत्नी का ऐसा प्रभाव था कि यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अगर श्रीमती फोर्ड जैसी सहयोगिनी नहीं होती तो आज दुनिया के सामने इतना बड़ा फोर्ड औद्योगिक साम्राज्य खड़ा नहीं होता, हेनरी फोर्ड ने गलतियाँ कीं। उनमें कुछ निर्णय लेने की भूलों का परिणाम था, कुछ अन्य उन कारणों से—जो उनके काबू से बाहर थीं। फोर्ड के सक्रिय जीवन से संबंधित सभी तथ्यों को जाननेवाले आपको बताएँगे कि उन्होंने सिर्फ दो महत्त्वपूर्ण गलतियाँ कीं, लेकिन ज्यों ही फोर्ड को इनका पता चला तो उन्होंने अपने ही स्टाइल और व्यक्तिगत हुनर से उन्हें तत्काल सुधारा।

क्या रिकॉर्ड है!

आप इसकी नकल करें और आप अमेरिकी जीवन-शैली में स्थायी और कभी न मिटनेवाला योगदान कर पाएँगे। आपका मुआवजा आपके हर काम के मिश्रित सूद पर मिश्रित सूद के आधार पर तय होगा।

वक्ता थोड़ी देर के लिए मंच पर चुप्पी लगा गए। श्रोताओं के बीच से एक व्यक्ति ने थोड़ा सकुचाते हुए हाथ उठाया। पूरे दिन का वह पहला सवाल था।

"मुझे माफ करना।" श्रोता ने पूछना चाहा।

श्रोता की ओर मुखातिब वक्ता ने कहा—"हाँ-हाँ पूछिए।"

श्रोता ने पूछा—"मैं सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ कि आज सवेरे हम यहाँ जोड़ी बनाकर क्यों बैठे?"

वक्ता ने भवें ऊपर कीं और इस प्रश्न की महत्ता स्वीकारते हुए कहा—"मैं तो अमूमन भूल ही गया, धन्यवाद!" वक्ता ने आगे कहा—"मैंने आप लोगों को जोड़ी बनाकर इसलिए बैठने को कहा, ताकि श्रोता आपस में एक-दूसरे को अच्छी तरह जान सकें, यह सीख सकें कि कैसे आप एक-दूसरे के काम आ सकते हैं, अगर आप सही मास्टरमाइंड गठजोड़ चाहते हैं तो। विवाह एक अंतिम गठजोड़ हो सकता है, लेकिन यह पाठ का सिर्फ एक ही इस्तेमाल है।"

वक्ता ने अपने जवाब में कहा—"जितने व्यक्तियों से आप मिले, उनमें हर किसी के पास अपने लक्ष्य तक पहुँचने में आपकी सहायता करने की क्षमता है। अगर आप कुछ मिनटों के लिए भी अपने पड़ोसी से बात करते हैं, तो आपको लगेगा कि आप दोनों के ही पास एक-दूसरे को देने के लिए कुछ है। कल के पाठ में मास्टरमाइंड सिद्धांत अपनाने के मैं कुछ और उपाय बताऊँगा, ठीक वैसे ही चश्मे से जैसे इस दर्शन के बुद्धिमान् शिक्षक एंड्रयू कार्नेगी ने देखे।"

इस बीच मैं आप सबको निश्चित प्रमुख लक्ष्य को महसूस कराने के लिए आमंत्रित करता हूँ और इसकी शुरुआत आप अभी इसी वक्त करें। अपने सहयोगी के साथ कुछ मिनट आज के प्रमुख लक्ष्य शेयर करें। आप अपने लक्ष्य को बेहतर आकार देने में उन्हें सहयोग का मौका दें, ताकि इसका आपको उत्तम लाभ मिले। याद रहे, अपना लक्ष्य निर्धारित करते समय बड़ी महत्त्वाकांक्षा रखने से डरें नहीं। आप अवसरों के देश में रह रहे हैं, जहाँ किसी के लिए भी गुणवत्ता, परिणाम या धन हासिल करने की प्रकृति सीमित नहीं है और कोई भी अपनी इच्छानुकूल लागत का पर्याप्त रिटर्न पा सकता है।

अपना लक्ष्य निर्धारित करने से पहले जे.सी.बी. रिटेनहाउस रचित 'मेरी मजदूरी' कविता की ये पंक्तियाँ याद करें, जो उनकी प्रसिद्ध किताब 'दि डोर ऑफ ड्रीम्स' से उद्धृत हैं और इनसे प्रेरित होकर वैसा ही मन बनाएँ—

"एक पैसे के लिए मैंने जीवन से सौदा किया
और जीवन ने मुझे कुछ नहीं दिया।
खैर मैंने शाम को हाथ फैलाए,
जब मैंने अपना खाली खजाना गिना।
यही जीवन नियोक्ता निकला।
जो चाहो आपको देता है,
लेकिन जब एक बार आपने मजदूरी तय कर ली;
फिर आप उस चुनौती को क्यों झेलेंगे?
मैंने भाड़े के मजदूर का काम किया।
सिर्फ सीखने के लिए, निराशा हाथ लगी।
जीवन से जो कुछ भी मजदूरी मैंने चाही,
जीवन ने मुझे मरजी के मुताबिक दी।"

सफल लोग गरीबी के लिए जीवन से सौदेबाजी नहीं करते। वे जानते हैं कि एक शक्ति है, जिसके जरिए जीवन को वैसे ढर्रे पर ढाला जा सकता है, ताकि अपने मन के मुताबिक रिटर्न मिले। वे जानते हैं कि सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी हासिल करनेवाले प्रत्येक

व्यक्ति इस शक्ति से परिचित हैं। वे इस शक्ति के स्वरूप और इसके असीमित अवसर को भी जानते हैं। अंग्रेजी के एक महान् शब्द के नाम से वे इस शक्ति को जानते हैं। यह शब्द तो सभी जानते हैं, मगर इस शक्ति के पीछे छिपे राज को कुछ ही लोगों ने समझा है।

❑

8

मास्टरमाइंड सिद्धांत का एंड्रयू कार्नेगी द्वारा विश्लेषण

विशिष्ट वक्ता ने इसका जिक्र यों शुरू किया—जब मैंने इन पाठों की चर्चा का निर्णय लिया, मैं जानता था कि इसके लिए ज्यादातर अनमोल शब्द मुझे एंड्रयू कार्नेगी के ही इस्तेमाल करने होंगे, जिस व्यक्ति ने सफलता की चाबी और इसकी परिभाषा तैयार करने में इतनी बड़ी भूमिका निभाई। एक बार मुझे कार्नेगी के साथ कुछ घंटे गुजारने का अवसर मिला, ताकि मैं उनसे पूछ सकूँ कि मास्टरमाइंड सिद्धांत का आखिर मतलब क्या है और किस प्रकार कोई व्यक्ति निश्चित प्रमुख लक्ष्य हासिल करने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकता है।

अगर आप चाहें तो बताएँ—मैंने पूछा कि औसत क्षमतावाले व्यक्ति किस-किस तरीके से इस सिद्धांत का इस्तेमाल करके रोजमर्रा के प्रयत्नों से अपने देश में उपलब्ध अवसरों का लाभ उठा सकते हैं?

एंड्रयू कार्नेगी का जवाब इस प्रकार है—

अमेरिकियों को जो सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वे महान् शक्ति के स्रोत हैं, लेकिन सुविधाएँ मशरूम की तरह अपने आप हाथ-पैर हिलाए बिना नहीं उगतीं। ये पैदा की जाती हैं और शक्ति का इस्तेमाल करके इन्हें सँभाला जाता है।

हमारी अमेरिकी टाइप सरकार के संस्थापकों ने अपनी दूर-दृष्टि और विवेक से आजादी, संपत्ति, मुक्ति समेत हमारे सभी अमेरिकी आधार स्थापित किए, लेकिन उन सभी ने सिर्फ आधार स्थापित किया। इस आधार का इस्तेमाल करना और इसे अपनाना हममें से उस प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है, जो इस आजादी तथा संपत्ति के एक हिस्से का भी दावा करता है।

अब मैं मास्टरमाइंड सिद्धांत के कुछ व्यक्तिगत इस्तेमाल का उल्लेख करता हूँ। इसका उपयोग विभिन्न मानवीय संबंधों के विकास में किया जा सकता है, जिससे निश्चित प्रमुख लक्ष्य हासिल करने में भी मदद मिलनी संभव है। सबसे पहले मैं यह तथ्य बता दूँ कि किसी का निश्चित प्रमुख लक्ष्य हासिल करना कई तरह के सिलसिलेवार कदमों पर निर्भर करता है। जो भी वह सोचता है, जिस भी काम में लगा है, अन्य व्यक्तियों के साथ संबंध में जो भी योजना बनाता है, जो भी गलतियाँ करता है—इन सभी बातों का असर अपनी पसंद का लक्ष्य हासिल करने की क्षमता पर पड़ता है।

एक निश्चित प्रमुख लक्ष्य सिर्फ सोच लेने, साफ-साफ भाषा में लिख लेने और दिमाग में पूरी तरह फिक्स कर लेने से ही प्राप्त करना सुनिश्चित नहीं हो पाएगा। प्रमुख लक्ष्य हासिल करने की इच्छा को लगातार प्रयासों का समर्थन मिलना बहुत जरूरी है और उससे भी ज्यादा जरूरी है, अन्य लोगों के साथ रिश्ता। इस सत्य को दिमाग में अच्छी तरह स्थापित कर लेने के बाद यह समझना कठिन नहीं है कि सहयोगियों का चुनाव करने में सावधानी बरतना कितना जरूरी है, खासकर उन लोगों के साथ जिससे व्यक्ति अपने व्यवसाय के

सिलसिले में नजदीकी व्यक्तिगत संबंध बनाता है।

यहाँ मानवीय संबंध के कुछ सूत्र दिए जा रहे हैं, जो निश्चित प्रमुख लक्ष्य तक पहुँचने के रास्ते में इस्तेमाल कर सकते हैं।

व्यवसाय, विवाह या पार्टनरशिपवाले संबंध को छोड़कर (जो मास्टरमाइंड संबंधों में सबसे महत्त्वपूर्ण है।) दूसरा कोई संबंध उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जो किसी व्यवसाय में मजदूर और मालिक के साथ होता है।

हर व्यक्ति के अंदर आचार-व्यवहार, आस्था, मानसिक वृत्ति, राजनीतिक और आर्थिक विचारधारा की प्रवृत्ति होती है। उनमें कुछ लोग बड़बोले भी होते हैं। रोजाना काम के घंटों के दौरान विभिन्न मानसिकतावाले सहकर्मियों से सामना होता है।

इसका दुखद पहलू यह है कि गंभीर सोचवाले प्रायः सहयोगकर्मियों के बीच ज्यादा नहीं बोलते। वैसी महिलाओं, व्यक्तियों को प्रायः शिकायत रहती है और वे अपने सहकर्मियों के बीच शिकायतों की चर्चा करके मजे लेते हैं।

इस तरह के ज्यादातर बड़बोले व्यक्ति होते हैं, जिनके पास अपना कोई निश्चित प्रमुख लक्ष्य नहीं होता। इसलिए ऐसे व्यक्ति इस तरह के लक्ष्य को लेकर चलनेवालों की औकात तौलने में ज्यादा समय गुजारते हैं। चरित्रवान व्यक्ति, जो अच्छी तरह अपनी इच्छा जानते हैं, उनके पास इतनी बुद्धि होती है कि लक्ष्य के प्रति सजग रहें और उनके पास दूसरों को हतोत्साहित करने का समय नहीं होता। वे अपने लक्ष्य प्राप्ति के काम में इतने व्यस्त रहते हैं कि ऐसे कामों में समय बरबाद नहीं करते, जिसका उनके काम से कोई ताल्लुक नहीं होता।

लक्ष्य के प्रति जागरूक व्यक्ति हर ग्रुप में ऐसे कुछ लोगों को खोज लेते हैं, जो किसी-न-किसी रूप में उनके लिए मददगार साबित हो सकते हैं और निश्चित प्रमुख लक्ष्य की दोस्ती उनसे भी कायम कर लेते हैं। कूटनीतिक तरीके से बाकी को वे अपने रास्ते में नहीं आने देते।

ऐसा व्यक्ति स्वाभाविक रूप से वैसे लोगों से नजदीकी स्थापित करना चाहेगा, जो मदद लेने लायक चरित्र, ज्ञान और व्यक्तित्ववाले हों। जिनके साथ भेदभाव बरता जाता है, वे ऊँची कुरसी पर बैठे लोगों को देखकर कभी यह नहीं सोचते कि वैसी जगह पर वे नहीं पहुँच सकते, बल्कि उस पर नजर रखकर उसी दिशा में प्रयत्नशील रहते हैं। इस संबंध में अब्राहम लिंकन की यह पंक्ति उद्धृत करना उपयुक्त होगा—'मैं अध्ययन करूँगा और खुद को तैयार करूँगा, एक दिन मेरी बारी आएगी।'

सार्थक निश्चित प्रमुख लक्ष्यदवाले कभी भी अपने से ऊँचे पद पर बैठे व्यक्ति से ईर्ष्या नहीं करते, बल्कि उलटे उनके तरीकों का अध्ययन करते हैं और उनका ज्ञान हासिल करने की कोशिश में लग जाते हैं। आप इस बात को गाँठ बाँध लें कि अपने से ऊँची कुरसी पर बैठे व्यक्तियों का दोष ढूँढ़ने में समय गुजारनेवाले कभी भी जीवन में अपनी बदौलत कोई बड़ी सफलता हासिल नहीं कर पाएँगे।

महान् सैनिक वे हैं, जो अपने कमांडर के आदेश का पालन करके दी गई जिम्मेदारी निभाते हैं। जो ऐसा नहीं करेंगे या नहीं कर सकते, वे सेना में ऊँचा पद पाने में सफल नहीं हो सकते। जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी किसी व्यक्ति के लिए यही नियम सही है। अगर कोई अपने बॉस के हिसाब से काम करते हुए अच्छा माहौल बनाए रखकर अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर पाता, तो फिर वे उस लाभ से वंचित रह जाएगा, जो उसे बॉस के भरोसे में

रहने से मिलेगा।

इसके लिए सिरदर्द मोल लेने की जरूरत नहीं है कि मेरे अपने संगठन में 100 लोग तरक्की पाकर ऊँचे पद पर चले गए और वे जरूरत से ज्यादा पैसेवाले हो गए। वे काम के खराब रिकॉर्ड के कारण ऊँचे पदों पर गए, ऐसा नहीं माना जा सकता। अपने से ऊपर या नीचेवालों के दोष ढूँढ़ने की उनकी आदत नहीं थी। उनकी तरक्की का कारण यह था कि उन लोगों ने सभी के अनुभव का व्यावहारिक उपयोग करके और सहकर्मियों से अच्छा रिश्ता कायम करके कंपनी को बेहतर काम का लाभ पहुँचाया।

निश्चित प्रमुख लक्ष्यवाले व्यक्ति को संपर्क में आए हर एक व्यक्ति को सावधानीपूर्वक खोजपरक के नजरिए से देखना चाहिए कि कहीं कोई ऐसा ज्ञानवाला मिल जाए, ऐसा अनुभववाला मिल जाए, जिससे कुछ सीखा जा सके या जिससे आगे बढ़ने का कोई मंत्र मिल सके। अपने काम की जगह चारों ओर नजर दौड़ाने पर आपको दिहाड़ी मजदूरी की वह जगह एक स्कूल जैसी लगेगी, जहाँ से प्राप्त अनुभवों और पर्यवेक्षणों में सभी महान् शिक्षाओं का सार है।

हमेशा छात्र बने रहें

कोई पूछेगा इस स्कूली शिक्षा का अधिकाधिक लाभ कैसे उठाया जा सकता है? नौ बुनियादी इरादों के अध्ययन से इस सवाल का जवाब खोजा जा सकता है, जो लोगों को वोलंटरी एक्शन की ओर ले जाएँगे। हम प्रायः अपने अनुभव, ज्ञान और सहयोग आपस में बाँटते हैं, क्योंकि उसके पीछे पर्याप्त इरादा होता है। काम की जगह पर साथ काम करनेवालों की मानसिकता से लोग अच्छी तरह परिचित रहते हैं, इसलिए उनसे सामंजस्य स्थापित करके कुछ सीखना आसान होता है। घमंडी, चिड़चिड़े और अपने से कम जानकार या स्तर के प्रति उपेक्षापूर्ण या अभद्र बरताव करनेवालों से सीखना मुश्किल है। ऐसे लक्षण सभी सभ्य लोगों के स्वभाव में पाए जाते हैं।

एक पुरानी कहावत है कि आप नमक के बजाय शहद से ज्यादा उड़ान भर सकते हैं। यह उन लोगों को याद रखना चाहिए, जो अपने से ज्यादा वस्तुस्थिति को जानने-समझनेवालों से सीखना चाहते हैं और जिनके सहयोग की उन्हें जरूरत है।

शैक्षिक—किसी की भी शिक्षा कभी पूरी नहीं होती निश्चित प्रमुख लक्ष्य को लेकर चलनेवालों को हमेशा छात्र बने रहना होगा और हर संभव साधन से कुछ-न-कुछ सीखने को तत्पर रहना होगा। वे विशेषकर वैसे साधनों के प्रति सजग रहें, जहाँ से अपने प्रमुख लक्ष्य को पूरा करने की दिशा से संबंधित ज्ञान और अनुभव हासिल हो सकता हो। पब्लिक लाइब्रेरी सबके लिए है, जो किसी भी विषय पर जितना चाहे संगठित ज्ञान प्राप्त करने का महान् स्रोत है।

इस जगह पर हर, भाषा में और हर विषय पर मानवीय ज्ञान उपलब्ध है। निश्चित प्रमुख लक्ष्यवाले सफल व्यक्ति अपने लक्ष्य से संबंधित किताबें, पत्रिकाएँ पढ़ना अपना व्यावसायिक दायित्व मानते हैं। इससे उन्हें इस क्षेत्र में पहले आगे बढ़े मँजे हुए व्यक्तियों के अनुभवों से सीखने का अवसर मिल जाता है। पढ़ने की आदत दैनिक भोजन की तरह डालें। शरीर के साथ-साथ दिमाग को भी भोजन चाहिए, जो ज्ञान से मिलता है।

जो व्यक्ति फुरसत का सारा वक्त सिर्फ अखबार पढ़ने में गुजार देता है वह कोई महान् उपलब्धि हासिल नहीं कर पाता। यही बात वैसे व्यक्तियों के साथ भी लागू होती है, जो अध्ययन को अपने रोजमर्रा के काम में शामिल नहीं करते, जिससे प्राप्त ज्ञान प्रमुख लक्ष्य हासिल करने में सहायक साबित हो सकता है। कभी-कभार पढ़ लेना सुखद लग सकता है, मगर इससे अपने व्यवसाय में भी कभी-कभार ही कुछ मदद मिल पाती है।

शिक्षा का स्रोत सिर्फ पढ़ना ही नहीं है। अपने साथियों में से अच्छे जानकारों का चयन कर उनसे नजदीकी बढ़ाकर भी हम अपना जीवन सुखी बना सकते हैं। असाधारण व्यक्तित्ववाले लोगों से सामान्य बातचीत के जरिए भी काफी कुछ सीखा जा सकता है।

व्यावसायिक क्लबों में शैक्षिक लाभ प्राप्त करने के अवसर मिल जाते हैं। इसमें व्यक्ति को दिमाग में एक निश्चित लक्ष्य लेकर उसी हिसाब से व्यक्ति का चुनाव कर उनसे दोस्ती बढ़ानी होगी। ऐसे संबंध स्थापित करके कई लोगों ने अपना व्यावसायिक और सामाजिक संपर्क मजबूत किया जिससे उन्हें प्रमुख लक्ष्य हासिल करने के प्रयत्नों में सहूलियत हुई, दोस्त बनाए बिना कोई भी सफल जीवन नहीं बिता सकता। 'संपर्क' शब्द सामान्य तौर पर व्यक्तिगत संबंध स्थापित करने के मामले में इस्तेमाल होता है, मगर यह शब्द है बहुत महत्त्वपूर्ण। अगर कोई व्यक्ति निजी संपर्क सूची बढ़ाने की आदत रोजमर्रा के काम की तरह जान ले तो इस आदत के इतने बड़े-बड़े फायदे मिलेंगे, जिनकी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। एक समय आएगा, जब वह व्यक्ति अगर अपने काम में अच्छा साबित होता है, तो वही लोग उस व्यक्ति की मदद को तैयार रहेंगे। लोगों से मिलने और संपर्क बढ़ाने के लिए चर्च, मंदिर, गुरुद्वारे आदि सबसे उपयुक्त माध्यम है, क्योंकि यहाँ उस तरह का माहौल रहता है, जहाँ लोगों को भाईचारा बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है।

हर व्यक्ति को ऐसे माध्यम की जरूरत होती है, जिसके जरिए अपने जैसे पड़ोसियों से विचारों के आदान-प्रदान का माहौल बनता है, जिनसे दोस्ती और आपसी सामंजस्य स्थापित हो सके। ऐसे संबंधों में कोई आर्थिक लाभ प्राप्ति की बात नहीं होती। जो अपने को एक कमरे में बंद रखते हैं, वे सिर्फ अपनी दुनिया में लीन हो जाते हैं और जल्द ही स्वार्थी तथा संकीर्ण सोचवाले हो जाते हैं।

नागरिक अपना कर्तव्य पूरा करें

राजनीतिक गठजोड़—यह प्रत्येक अमेरिकी नागरिक का कर्तव्य है कि वह राजनीति में रुचि ले और सार्वजनिक पदों पर सही व्यक्ति को लाने के लिए वोट डाले। किसी राजनीतिक दल से जुड़े रहने से ज्यादा महत्त्व की बात वोट डालने के अधिकार का इस्तेमाल करना है। बेईमान लोगों के चलते अगर राजनीति प्रदूषित हो जाए, तो इसके लिए जनता दोषी है, जिसने वैसे लोगों को ऊँचे पदों पर बिठाए रखा है। वोट के अधिकार का इस्तेमाल करके ही बेईमान और अक्षम लोगों को अपदस्थ किया जा सकता है।

वोट की सुविधा और इससे जुड़े कर्तव्य के अलावा राजनीति में सक्रिय रुचि के लाभों की भी अनदेखी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इसका फायदा ऐसे व्यक्तियों से संपर्क तथा गठजोड़ बढ़ाने में मिल सकता है, जो निश्चित प्रमुख लक्ष्य हासिल करने में सहायता पहुँचा सकते हैं। कई कारोबारों और व्यवसायों में राजनीतिक प्रभाव व्यावसायिक हितों को

प्रोन्नत करने में एक निश्चित तथा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यावसायिकों और कारोबारियों को सक्रिय राजनीतिक गठजोड़ के जरिए अपने व्यावसायिक हित साधने की संभावना को नकारना नहीं चाहिए। हर संभव मैत्रीपूर्ण गठजोड़ों की जरूरत को समझनेवाले सजग व्यक्ति वोटिंग सुविधा का भरपूर इस्तेमाल करके जीवन का प्रमुख उद्देश्य प्राप्त करने में वैसे व्यक्तियों से फायदा लेने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते। हर अमेरिकी को राजनीति में सक्रिय रुचि लेने के लिए मैं इसलिए कह रहा हूँ और अन्य पहलू से इस पर जोर भी ज्यादा दे रहा हूँ, क्योंकि अगर अच्छे नागरिक अपने वोट के अधिकार का इस्तेमाल नहीं करते हैं तो राजनीति छिन्न-भिन्न हो जाएगी और एक बुराई का रूप ले लेगी, जो देश को बरबाद कर देगी।

इस देश का निर्माण करनेवालों ने अपना जीवन और धन-संपत्ति दाँव पर लगा दी, ताकि सब लोगों को अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य तय करने की आजादी और छूट हो। इन सुविधाओं में सबसे प्रमुख है मत (वोट) के जरिए सरकार को एक व्यवस्था के रूप में कायम रखें, जिसकी स्थापना राष्ट्र निर्माताओं ने इन्हीं सुविधाओं की रक्षा के लिए की। अगर कोई चीज मूल्यवान है तो उसकी एक निश्चित कीमत होगी। आप व्यक्तिगत आजादी चाहते हैं और निजी मामले में पूरी स्वतंत्रता चाहते हैं, बहुत अच्छा! अन्य देशभक्त और ईमानदार अमेरिकियों के साथ मास्टरमाइंड गठजोड़ करके आप अपने इस अधिकार की रक्षा कर सकते हैं। साथ में सार्वजनिक पदों पर ईमानदार व्यक्तियों को बिठाना भी अपने व्यवसाय का एक हिस्सा बनाएँ। यह कोई बढ़ा-चढ़ाकर कहनेवाली बात नहीं है, बल्कि ऐसा करना वास्तव में किसी भी अमेरिकी का सबसे महत्त्वपूर्ण मास्टरमाइंड गठजोड़ होगा।

हमारे पूर्वजों ने अपने वोट से हमारे लिए व्यक्तिगत आजादी सुनिश्चित कर दी। हमें भी अपने बाद की पीढ़ियों के लिए उनसे कम नहीं करना चाहिए। प्रत्येक ईमानदार अमेरिकी नागरिक अपने पड़ोसियों और सहकर्मियों पर इतना प्रभाव रखते हैं, ताकि वे कम-से-कम पाँच अन्य लोगों को मताधिकार के उपयोग के लिए प्रेरित कर सकें।

अगर वह नागरिक अपने प्रभाव का इस्तेमाल नहीं कर पाता है, तो वह ईमानदार नागरिक तो बना रह सकता है, मगर उसे वास्तव में देशभक्त नागरिक नहीं कहा जा सकता। देशभक्ति की कीमत के साथ कुछ दायित्व जुड़े होते हैं, जो निभाने पड़ते हैं। सामाजिक गठजोड़ असीम उपजाऊ जमीन है, जहाँ से मैत्रीपूर्ण संपर्क उपजते हैं। इसकी उपलब्धता दंपतियों को ज्यादा है, जो सामाजिक गतिविधियों के जरिए दोस्त बनाने की कला बखूबी समझते हैं।

ऐसे जोड़े अपने घर और सामाजिक गतिविधियों को दोनों ही दंपति के लिए एक अनमोल धरोहर के रूप में तबदील कर सकते हैं, बशर्ते कि दोनों या उनमें से कोई एक भी अपने दोस्तों की संख्या बढ़ाना अपनी पेशेगत जरूरत के रूप में ले। जिन लोगों के व्यावसायिक आचार में सीधे ही विज्ञापन देना या अपने आपको प्रोन्नत करने की कला है, वे लोग सामाजिक सुविधाओं का प्रभावी इस्तेमाल कर सकते हैं, जो सामाजिक गतिविधियों में ज्यादा रुचि लेनेवाले पार्टनर बनाकर संभव है।

एक वकील के पति ने अपना सामाजिक संपर्क इतना लंबा-चौड़ा किया कि बड़े-बड़े पैसेवाले कारोबारी उनकी पत्नी के मुवक्किल बन गए। मध्य पश्चिमी प्रांत की उन वकील

महोदया की प्रैक्टिस उनके पति ने सामाजिक सरोकार के आसान तरीके से चमका दी। इस क्षेत्र में संभावनाओं का कोई अंत नहीं है। विभिन्न प्रकार के लोगों से मैत्रीपूर्ण गठजोड़ों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि ऐसे संपर्कों से ज्यादा-से-ज्यादा लोगों से हर मुद्दे पर चर्चा के अवसर मिलते हैं और व्यक्ति नई-नई बातों की जानकारी हासिल करता है, जिससे प्रमुख निश्चित लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

अगर किसी व्यक्ति के परिचय का दायरा विशाल है और हर तरह के लोगों से है, तो उससे भाँति-भाँति की विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी मिल सकती है। इससे बौद्धिक क्षमता का विकास होता है, जो जीवन के कई क्षेत्रों में जरूरी लचीलापन और बहुआयामी व्यक्तित्व विकसित करने में सहायक होती है। जब व्यावसायिकों का ग्रुप गोलमेज चर्चा में किसी विषय पर बहस करता है, तो इस तरह के विचार-विनिमय से बहस में भाग लेनेवालों के दिमाग खुलते हैं, क्योंकि इसमें बहुत सारी नई बातें सामने आती हैं। हमें स्वयं अपने विचारों को एक आकार देने और नए विचार सीखने की जरूरत है। यह उन्हीं लोगों के साथ गंभीर और बेबाक चर्चा करके सीखा जा सकता है, जिनके शिक्षा और अनुभव हमसे अलग हैं।

बड़े लेखक और उनके अनुयायी सफलता के शिखर पर पहुँचने के बावजूद दूसरों के विचारों को आत्मसात करके अनवरत अपना ज्ञान भंडार बढ़ाते रहते हैं। इसके लिए वे पढ़ते हैं और व्यक्तिगत संपर्क बढ़ाते हैं। किसी भी सजग, तेज और लचीले दिमाग को अन्य दिमागों के भंडार की खुराक लगातार मिलनी जरूरी है। इस पुनर्नवीकरण की उपेक्षा से दिमाग कुंद हो जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे अगर किसी हाथ का उपयोग न हो, तो वह कुछ दिन बाद काम के लायक नहीं रह जाएगा। यह बिलकुल प्राकृतिक नियमों के अनुकूल है। प्रकृति की योजना और कार्यकलापों के अध्ययन से आप जानेंगे कि मानव जैसी जटिल मशीनरी से लेकर एक छोटे कीड़े समेत प्रत्येक जीवधारी के अवयवों की वृद्धि तब होती है और तभी वह स्वस्थ रहता है, जब उसका लगातार इस्तेमाल हो। गोलमेज चर्चाओं से लाभदायक ज्ञान भंडार बढ़ने के साथ-साथ दिमागी ताकत का विस्तार और विकास भी होता है। अगर कोई व्यक्ति स्कूली शिक्षा समाप्ति के समय ही पढ़ना बंद कर देता है, तो वह कभी भी शिक्षित व्यक्ति नहीं बन सकता और यह बात कहीं चर्चा में नहीं आती कि उसने कितना कक्षीय ज्ञान हासिल किया है।

जीवन अपने आप में एक महान् स्कूल है और विचारों को प्रेरित करनेवाली सब कुछ शिक्षा है। ज्ञानी लोग इस बात को जानते हैं और वे अन्य दिमागों से संपर्क बढ़ाते हैं, जिनका उद्देश्य विचारों के आदान-प्रदान से अपना दिमाग विकसित करना है।

उपयोगी विचारों की लाभकारी अदला-बदली

इस प्रकार हम देखते हैं कि मास्टरमाइंड सिद्धांत के असीमित व्यावहारिक उपयोग हैं। यह ऐसा माध्यम है, जिसके जरिए कोई व्यक्ति अपनी दिमागी ताकत के सप्लीमेंट अन्य दिमागों से जोड़कर उनके ज्ञान, अनुभव और मानसिक वृत्ति से काफी कुछ सीख सकता है।

इसी विचार को किसी ने इस तरह व्यक्त किया है—अगर मैं आपके एक डॉलर के बदले में आपको भी एक डॉलर दूँ, तो इससे कुछ मिलने का नहीं, लेकिन अगर आपसे प्राप्त एक

विचार के बदले मैं भी एक विचार दूँ, तो इस समय निवेश का शत-प्रतिशत लाभांश हम दोनों को मिलेगा।

मानवीय संबंध का कोई रूप विचारों के आदान-प्रदान से ज्यादा लाभदायक नहीं है। यह आश्चर्य की, मगर सच बात है कि विनम्र और सज्जन व्यक्ति के दिमाग से बेहद महत्त्व के विचार सीखे जा सकते हैं।

इसे और स्पष्ट करने के लिए मैं एक कहानी सुनाना चाहूँगा। एक चर्च के पादरी को उसके अनपढ़ माली से सीखे ज्ञान से किस तरह निश्चित प्रमुख लक्ष्य पूरा करने में मदद मिली।

पादरी का नाम रसेल कोन्वेल था और उसका प्रमुख उद्देश्य था एक कॉलेज की स्थापना करना। उसके लिए आवश्यक पैसे ही जरूरत थी अर्थात् दस लाख डॉलर से ज्यादा चाहिए था। उस समय इतना पैसा बहुत होता था।

पादरी रसेल कोन्वेल की माली से उस समय मुलाकात हो गई, जब वह चर्च लॉन की घास की कटाई में मशगूल था। बातचीत के क्रम में पादरी ने यों ही माली से कहा कि चर्च के अहाते की हरियाली उसके अपने लॉन से ज्यादा हरी-भरी है, सुनकर बुजुर्ग माली को अच्छा लगा। उसने जवाब दिया—आप ठीक कहते हैं सर, वह घास हरी नजर आती है, लेकिन उसकी वजह यह है कि हम झाड़ी के इस तरफ की घास हमेशा देखते हैं और दूसरी ओर प्रायः हम नहीं जाते।

इस टिप्पणी में दिमागी तेजी जैसा कुछ नहीं था। इसमें माली का आलस्य या काम में ढिलाई से ज्यादा कोई बात नहीं थी, लेकिन इसने कोन्वेल के दिमाग में एक विचार के बीज बो दिए, जो बाद में उसकी मुख्य समस्या के निदान साबित हुए।

उस टिप्पणी से उत्पन्न विचार की बदौलत कोन्वेल ने एक व्याख्यान तैयार किया, जिसे उन्होंने 4,000 से ज्यादा जगह पढ़ा और दुहराया। इसका शीर्षक रसेल कोन्वेल ने 'हीरे के एकड़' दिया। व्याख्यान के केंद्र में यह विचार था—किसी को भी दूर से कोई अवसर तलाशने की जरूरत नहीं है, बल्कि जहाँ खड़े हैं, वहीं खोजा जा सकता है, इस तथ्य को समझकर कि झाड़ी के दूसरे हिस्से की घास वैसी हरी-भरी नहीं है, जहाँ हम खड़े हैं।

इस व्याख्यान से रसेल कोन्वेल ने साठ लाख डॉलर से ज्यादा की आय अर्जित की। यह लंबा व्याख्यान बुकलेट के रूप में छपा और कई वर्षों तक पूरे देश में बेस्ट सेलर रहा। आज भी यह बुकलेट हासिल की जा सकती है। इससे हुई कमाई के पैसे कोन्वेल ने पैनसिलवेनिया के फिलाडेल्फिया में टेंपल यूनिवर्सिटी की स्थापना और रख-रखाव में लगाए, जो देश के महान् शिक्षण संस्थानों में से एक है।

उस व्याख्यान की जड़ से निहित विचार ने यूनिवर्सिटी स्थापना के अलावा भी काफी कुछ किया। इसने लाखों लोगों के दिमाग पर असर डाला और इस विचार के प्रभाव से लोगों ने वहीं अवसर खोजना सीखा, जहाँ खड़े हैं। इस व्याख्यान में निहित दर्शन आज भी उतना ही सही है, जितना उस समय था, जब एक अनपढ़ माली के दिमाग से यह पहली बार निकला।

याद रखें, हर सक्रिय दिमाग प्रेरणा का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है, जहाँ से वह कोई विचार ग्रहण कर सकता है अथवा उस विचार का सूत्र पा सकता है। निजी समस्याओं के समाधान में इसकी कोई कीमत नहीं आँकी जा सकती, जो जीवन में मुख्य लक्ष्य हासिल करने में भी

मददगार साबित होता है। कभी-कभी महान् विचार मामूली विनम्र दिमागों से उपजते हैं, लेकिन प्रायः ऐसे विचार वैसे दिमागवाले से निकलते हैं, जो व्यक्ति के काफी नजदीक होते हैं और जहाँ से मास्टरमाइंड संबंध स्थापित और संचालित होते हैं।

कार्नेगी के मास्टमाइंड अनुभव

वक्ता ने फिर कहा कि यह पूरी कहानी उन्हें सुनाने के बाद कार्नेगी ने उनके चेहरे पर एक गहरी नजर डाली और लगा कि वे दूर कुछ खोज रहे हैं, मानो कुछ खास बात याद कर रहे हों। विश्व प्रसिद्ध उद्योगपति के देखने के अंदाज से ही वक्ता को लग गया कि एंड्रयू कार्नेगी शायद अब अपनी ही मास्टरमाइंड कहानी सुनाने जा रहे हैं।

मेरे कॅरियर का सबसे लाभप्रद विचार एक दोपहर को उस वक्त आया, जब मैं और चार्ली शुआब गोल्फ कोर्स में टहल रहे थे। तेरहवीं बॉल पर अपने शॉट खत्म करने के बाद चार्ली ने मेरी तरफ गौर से देखकर थोड़ा गंभीर स्वर में कहा—इस बॉल पर मैं आपसे तीन स्ट्रोक ऊपर हूँ बॉस, लेकिन अभी मेरे मन में एक विचार आया, जिससे आपको गोल्फ खेलने के लिए काफी समय मिल सकता है।

मैं जानने को उत्सुक हो उठा कि देखें, यह विचार कौन सा है। उसने मुझे एक ही संक्षिप्त वाक्य में सबकुछ बता दिया, जिस वाक्य का हर एक शब्द, एक-एक मिलियन डॉलर का है। अपने सारे स्टील प्लांट को मिलाकर एक बड़ा कॉर्पोरेशन बना दें और वॉल स्ट्रीट बैंकर्स को बेच दें। खेलने के समय चार्ली ने इससे ज्यादा कुछ नहीं कहा, मगर उस शाम मेरे दिमाग में वही विचार घूमता रहा और मैं उसकी सलाह के बारे में सोचता रहा। सोने से पहले इस विचार के अंकुर को मैंने निश्चित प्रमुख लक्ष्य में बदल दिया। उसके अगले सप्ताह मैंने चार्ली शुआब को वॉल स्ट्रीट बैंकर्स के एक ग्रुप को संबोधित करने न्यूयॉर्क सिटी भेजा, जिसमें जे. पियरपोंट मोरगन भी शामिल थे।

वक्तव्य का निचोड़ एक यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कॉर्पोरेशन ऑर्गेनाइजेशन बनाने की योजना पर केंद्रित था, जिसके जरिए मैंने अपने सारे स्टील प्लांट एक जगह एकीकृत कर दिए और सक्रिय कारोबार से जरूरत से ज्यादा पैसे लेकर रिटायर हो गया।

अब मैं एक बिंदु पर जोर देना चाहता हूँ—अगर मैंने अपने हर सहयोगी को नई पहल करने और नए-नए विचार देने के लिए प्रोत्साहित करना अपने व्यवसाय का एक हिस्सा नहीं बनाया होता तो चार्ली शुआब के दिमाग में ऐसे विचार कभी नहीं पनपते और मैं इससे कभी लाभान्वित नहीं हो पाता। अपने व्यावसायिक संगठन के सदस्यों के नजदीकी मास्टरमाइंड गठजोड़ ने मुझे प्रोत्साहित करने की प्रेरणा दी। चार्ली शुआब उन्हीं सदस्यों में से एक थे। मैं पुनः कहता हूँ कि 'संपर्क' एक महत्त्वपूर्ण शब्द है और इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, अगर इसमें 'समन्वय' शब्द जोड़ दें। अन्य लोगों के साथ दिमागी समन्वय स्थापित करके हम उनकी विचार-निर्माण क्षमता का भरपूर उपयोग कर सकते हैं। जो इस महान् तथ्य की अनदेखी करते हैं, वे खुद अपने आपको परेशानी में डालते हैं।

कोई व्यक्ति इतना स्मार्ट नहीं होता, जो अन्य लोगों से मैत्रीपूर्ण सहयोग लिये बगैर दुनिया में दूर-दूर तक अपना प्रभाव फैला सके। इस विचार कर जैसे भी चाहे मंथन कर लें, आप पाएँगे कि दूसरों को साथ लिये बिना व्यक्तिगत उपलब्धि की ऊँचाई पर पहुँचने के

दरवाजे खुलने कठिन हैं। बहुत सारे लोग काफी दूर से सफलता के सपने देखते हैं, जहाँ वे हैं, उससे बहुत दूर से देखते हैं। इसके साथ ही वे इस तरह की उलझी हुई योजनाओं के जरिए इसकी तलाश करते हैं, जो विश्वास और किस्मत पर आधारित होती है कि कहीं कोई चमत्कार हो जाए। कहीं किस्मत साथ दे दे। जैसा कि रसेल कोन्वेल ने प्रभावी ढंग से कहा है कि कुछ लोग यह सोचते हैं कि जहाँ वे खड़े हैं, उस झाड़ी के दूसरी तरफ की घास हरी है और विचारों तथा अवसरों के रूप में वे हीरे के एकड़ को पीछे छोड़ देंगे और रोजमर्रा के काम के साथियों से मिल जाएँगे।

मैंने अपना हीरे का एकड़ नहीं पाया, जहाँ मैं खड़ा था और उस वक्त लोहा गला रही तप्त भट्ठी की लौ की ओर मैं देख रहा था। मुझे अच्छी तरह अपना वह पहला दिन याद है, जब किसी अन्य व्यक्ति के हीरे के एकड़ में हेल्पर बने रहने के बजाय मैंने विशाल स्टील उद्योग का नेता बनने के विचार पर खुद को बेचना शुरू किया।

शुरू में ही वह विचार बहुत निश्चित था। निश्चित लक्ष्य से ज्यादा वह महज इच्छा थी, लेकिन मैंने इस विचार को अपने दिमाग में सेट करना शुरू कर दिया और इतना प्रोत्साहित किया कि मैं इस विचार के वश में हो जाऊँ। आखिरकार वह दिन आया, जब मेरी जगह मेरे विचार ने ले ली जिससे मैं संचालित होने लगा।

उस दिन मैं अपने हीरे के एकड़ पर बेसब्री से काम करने लगा और मुझे यह जानकर ताज्जुब हुआ कि कितनी जल्दी निश्चित प्रमुख लक्ष्य वह रास्ता दिखाता है, जिसे व्यक्ति अपने शारीरिक समानुपात में बदल लेता है।

असली महत्त्व की बात यह जानने की है कि कोई वास्तव में चाहता क्या है। दूसरे महत्त्व की बात वहीं से हीरे की खुदाई शुरू करने की है, जहाँ व्यक्ति खड़ा है और हाथ में जो भी औजार हो, उसी का इस्तेमाल करे, चाहे वह औजार विचारों का ही क्यों न हो। अपने हाथ के औजारों पर भरोसा रखकर अगर कोई व्यक्ति अपने प्रयास में जुट जाए तो अन्य और उससे बेहतर औजार उसके हाथ में आते चले जाएँगे।

जो मास्टरमाइंड सिद्धांत समझते हैं और इसका इस्तेमाल करने को प्रतिबद्ध हैं, उनको जरूरी औजार वैसे लोगों की अपेक्षा ज्यादा जल्दी मिल जाते हैं, जो इस सिद्धांत के बारे में कुछ नहीं जानते।

हर दिमाग को अन्य दिमागों से मैत्रीपूर्ण संपर्क की जरूरत है, क्योंकि यह विकास और विस्तार की खुराक है। दिमागों के चयन में भी सावधानी की आवश्यकता है। जो लोग इसकी बारीकियाँ समझे बिना निश्चित प्रमुख लक्ष्य को पूरा करने के लिए दिमागी गठजोड़ करते हैं और किसी से भी यह मानकर अंतरंगता बढ़ा लेते हैं कि जिससे भी गठजोड़ किया, उससे कुछ-न-कुछ हासिल हो ही जाएगा, उससे बाद में उन्हें निराशा हाथ लगती है।

मैं उनके लिए कुछ नहीं कर सकता, जो ज्यादा जानकार से संबंध बढ़ाने को गंभीरता से नहीं लेते। लोगों का अपने से ऊँचे ओहदे पर बैठे व्यक्तियों के समकक्ष या अपने से नीचे स्तर के व्यक्तियों की श्रेणी में आ जाना इस पर निर्भर करता है कि उनके सहयोगी किस किस्म के हैं।

अंत में, एक विचार और जिसे उन तमाम व्यावसायिकों को अपनाना चाहिए, जो मजदूरी या वेतन के लिए काम करते हैं। नौकरी वास्तव में जीवन में आगे बढ़ने के लिए

स्कूल है और उसे इसी रूप में लिया जाना चाहिए, जिसके लिए नौकरीपेशा लोगों को दो तरह की प्राप्तियाँ होती हैं। पहला तो वेतन है, जो वे सीधे पाते हैं और दूसरा है काम का अनुभव। अकसर यही सही निकला है कि सबसे बड़ा वेतन पेस्लिप नहीं, बल्कि वह अनुभव है, जो काम से हासिल होता है। कार्य अनुभव से प्राप्त इस ओवरप्लस की कीमत काफी कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि जिन व्यक्तियों के साथ आप काम करते हैं, उनकी मानसिकता किस तरह की है। इसमें आपसे ऊँचे से लेकर नीचे स्तर के सहकर्मी दोनों ही शामिल हैं। अगर उनका रवैया सार्थक और सहयोगात्मक है तथा वे कुछ आगे बढ़कर काम करने की आदत से लाचार है, तो उसका लाभ निश्चित और जल्द मिलना ही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जो जीवन में काफी आगे बढ़ना चाहते हैं, वे मास्टरमाइंड सिद्धांत का व्यावहारिक इस्तेमाल तो करते ही हैं, साथ ही एक कदम आगे बढ़कर काम निश्चित प्रमुख लक्ष्य हासिल करने का रखकर करते हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता से ये तीनों सिद्धांत परस्पर गुँथे रूप में जुड़े हैं।

प्रतिबद्ध संबंध के पुरस्कार

किसी के भी पूरे जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण गठजोड़ प्रतिबद्ध संबंध हैं, जो वह कायम करता है। इस संबंध का एक ही साथ वित्तीय, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक महत्त्व है, क्योंकि कोई भी रिश्ता इन्हीं सारे तत्त्वों से जुड़ा है। अधिकांश मास्टरमाइंड गठजोड़ों की शुरुआत घर से ही होनी चाहिए और अगर किसी व्यक्ति ने अपने साथी का चयन बुद्धिमानी से किया है, खासकर आर्थिक दृष्टि से तो वह व्यक्तिगत मास्टरमाइंड ग्रुप का पहला सदस्य बनाया जा सकता है।

घर के गठजोड़ में प्रतिबद्ध दंपती के साथ-साथ परिवार के वैसे सदस्यों, विशेषकर बच्चों को भी शामिल करना चाहिए, अगर वे एक ही घर में रहते हों। मास्टरमाइंड सिद्धांत वैसे व्यक्तियों की आध्यात्मिक शक्ति को भी एक्शन में ला देता है, जो एक निश्चित उद्देश्य और आध्यात्मिक शक्ति से संबद्ध हैं। यही सबसे बड़ी शक्ति है। पूर्ण सद्भाव, समझदारी, सहानुभूति एक ही लक्ष्य पर आधारित अपने संबंधों के प्रति समर्पित व्यक्ति के ये सारे गुण अनमोल संपत्ति हैं, जो उसे निजी उपलब्धि की महान् ऊँचाई तक ले जा सकते हैं।

दपंती में मतभेद क्षमायोग्य नहीं है, चाहे इसका कारण जो भी हो। यह इसलिए क्षमायोग्य नहीं है, क्योंकि इससे सफलता की उम्मीद हाथ से जा सकती है, भले ही वे इसके लिए आवश्यक अर्हताएँ पूरी क्यों न करते हों।

यहाँ मैं दोनों जीवनसाथियों को एक सलाह देना चाहूँगा। अगर इस पर विचार करें और इसका अनुसरण करें तो सलाह यह हो सकती है कि आप जिंदगी भर की गरीबी-विपन्नता तथा जिंदगी भर की संपन्नता व प्रभुता में फर्क करें। दोनों का एक-दूसरे पर किसी अन्य व्यक्ति से ज्यादा प्रभाव पड़ेगा। अगर दंपती अन्य लोगों की अपेक्षा एक-दूसरे के प्रति ज्यादा समर्पित हों, तो इससे आपसी प्रेम और विश्वास बढ़ता है।

जीवन के नौ बुनियादी इरादों में से प्रेम का पहला स्थान है, जिससे लोगों के सारे स्वैच्छिक कार्य प्रेरित होते हैं। प्रेम ऐसी भावना है जो व्यक्त करके दो ऐसे व्यक्ति पूरे उत्साह के साथ काम कर सकते हैं, जिन्हें पता है कि इससे संचालित समन्वय असफल हो ही नहीं

सकता। याद रहे कि एक-दूसरे को नीचा दिखाना, ईर्ष्या, एक-दूसरे की गलतियाँ ढूँढ़ने जैसी आदतों से कटुता पैदा होती है, जिनसे प्रेम-गंगा का प्रवाह रुक जाता है और इसका स्रोत सूख जाता है। बुद्धिमान् दंपति रोजाना एकाध घंटे का नियमित मास्टरमाइंड सत्र चलाएँगे। उस दौरान वे प्रेमभाव और समझदारी से काम लेते हुए मतभेद के साथ-साथ आपसी हित के मुद्दे पर भी विस्तार से चर्चा करेंगे। मास्टरमाइंड बातचीत के लिए सुबह के नाश्ते और रात को सोने से पहले का समय सबसे ज्यादा उपयुक्त है।

हर भोजन के समय दंपति आपस में एक-दूसरे के ऊपर कीचड़ उछालने के बजाय प्रेमालाप कर सकते हैं। इस समय का उपयोग एक प्रकार से पारिवारिक पूजा की तरह किया जाना चाहिए। उस दौरान सिर्फ मन को गुदगुदानेवाली अच्छी बातें करें। ज्यादातर पारिवारिक संबंधों में बिखराव की शुरुआत किसी अन्य अवसरों के बजाय भोजन के समय ज्यादा होती है, क्योंकि प्रायः उसी समय पारिवारिक मतभेद निपटाने और बच्चों को अनुशासित करने की चर्चा हावी रहती है। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे के व्यवसाय के बारे में गहरी रुचि होनी चाहिए और उसके हर पहलू से परिचित होना चाहिए। जब शादी होती है तो व्यक्ति एक सूत्र में बँध जाते हैं। आपस में एक-दूसरे को निवेशित करते हैं। अगर दंपती अपने को मास्टरमाइंड फॉर्मूले को अपनाकर जोड़ें तो उस भंडार का महत्त्व और मूल्य बढ़ता जाएगा, जिसमें दोनों ने निवेश किया है।

यह ऐसी संस्था है जिसमें बुद्धिमान् हिस्सेदार सावधानीपूर्वक तैयार किए गए बजट के आधार पर कारोबार चलाते हैं और इस बात का खयाल रखते हैं कि आमदनी से ज्यादा खर्च न हो। ज्यादातर वैवाहिक संबंध पैसे के अभाव में टूटते हैं। यह सिर्फ कहने की बात नहीं है कि जब गरीबी दरवाजे के सामने से दस्तक देती है तो प्रेम का पहिया पिछले दरवाजे की ओर सरपट घूमने लगता है। प्रेम एक खूबसूरत तसवीर है जिसे एक अच्छे और उपयुक्त फ्रेम में मढ़कर रखने की जरूरत है, ताकि उसमें से ज्योति निकलती रहे। इसे भी शरीर की तरह आबाद रखने और खुराक की आवश्यकता है। अंतर्विरोध, वैमनस्य, एक-दूसरे की निंदा और दोष ढूँढ़ते रहने के वातावरण में प्रेम नहीं पलता। प्रेम वहाँ टिकता है, जहाँ दंपती इसे ही एकमात्र उद्देश्य मानकर उसी हिसाब से आपस में व्यवहार रखते हैं। जो साथी इस बात को याद रखते हैं, वे अपने दूसरे साथी के लिए जीवनपर्यंत प्रभावशाली व्यक्ति बने रहते हैं। इसकी अनदेखी करनेवालों को वह दिन देखना पड़ सकता है, जब अन्य लोग उस अवसर की ओर देखना शुरू कर देते हैं कि एक नए मॉडल का प्रयोग क्यों न आजमाएँ। दोनों या एक हिस्सेदार की यह जवाबदेही तो है कि वे जीविकोपार्जन करें, लेकिन साथ-साथ उन्हें एक-दूसरे के प्रति मधुर और नरम रवैया रखने का दायित्व भी निभाना है। उन्हें परिवार के साथ-साथ सामाजिक दायित्व का भी निर्वाह करना है, क्योंकि परिवार से ही समाज बनता है और बेहतर नियोजन से वे अपने कॅरियर के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का भी खयाल रख सकते हैं।

आपस में सही अर्थों में प्रेम करके दंपती अपने परिवार को वह प्रचुरता प्रदान कर सकते हैं जिसके लिए बस प्रेम ही पर्याप्त है और वही सुखी साथी अपने बच्चों को भी उसमें समेटे रख सकते हैं। प्रेमभाव सबके प्रति समभाव से होना चाहिए।

पारिवारिक मास्टरमाइंड संबंध का आधार जब प्रेम होगा तो वैसे परिवारों में अशांति

और कलह का माहौल बनने की संभावना कम हो जाएगी। प्रेम के अंदर सभी समस्याओं, कठिनाइयों का हल है। पारिवारिक समस्याएँ पैदा होती हैं और कोई परिवार इससे अछूता नहीं है, लेकिन प्रेम सबका समाधान कर देता है। इसलिए प्रेम की ज्योति हमेशा प्रज्वलित रखें, इसमें बाधा डालनेवाली शक्तियाँ अपने आप अलग-थलग पड़ जाएँगी। मैंने अपने पारिवारिक जीवन में अनुभव करके इस वास्तविकता को जाना है और मैं पूरी निष्ठा के साथ कह सकता हूँ कि मेरी सफलता का श्रेय प्रेम को ही जाता है।

(लेखक का नोट—कार्नेगी की स्वीकारोक्ति प्रभावी रही, जब लोगों ने जाना कि उन्होंने 50 करोड़ डॉलर से ज्यादा की संपत्ति अर्जित की। उससे भी ज्यादा लोग इस बात से प्रभावित हुए कि यह सब पत्नी से बेहतर संबंध के कारण संभव हो सका अर्थात् वह श्रीमती कार्नेगी की देन है, जिनकी बदौलत वे दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बने।)

मास्टरमाइंड संबंध की सफलता के कुछ अन्य उदाहरण

पारिवारिक मास्टरमाइंड संबंध की ओर एक बार फिर लौटते हैं, जिस मोड़ पर एंड्रयू कार्नेगी ने हमें छोड़ा। यह बहुत ही ध्यान देनेवाला मुद्दा है; जिसका अनुभव कार्नेगी ने किया और हम इसे ज्यादा तवज्जो नहीं देते। हेनरी फोर्ड और उनकी पत्नी के निजी दोस्तों के बीच यह कोई छुपी हुई बात नहीं है कि महान् फोर्ड साम्राज्य स्थापित करने में मास्टरमाइंड पारिवारिक रिश्ते की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, क्योंकि हेनरी फोर्ड की उपलब्धियों के पीछे उनकी पत्नी का उल्लेखनीय योगदान था। लोगों ने श्रीमती फोर्ड के बारे में ज्यादा नहीं सुना, मगर यह तथ्य सभी जानते हैं कि हेनरी फोर्ड के जीवन पर विवाह के शुरुआती दिनों से लेकर अभी तक उनकी पत्नी ने काफी प्रभाव डाला।

थॉमस अल्वा एडीसन ने खुलेआम स्वीकारा कि उनकी प्रेरणास्रोत उनकी पत्नी रहीं। दोनों दंपती रोजाना मास्टरमाइंड बैठकें करते थे और ज्यादातर बातचीत एडीसन के दिन भर का काम खत्म करने के समय हुआ करती थी। उसमें श्रीमती एडीसन अपने पति के काम में कभी कोई दखलंदाजी नहीं करती थीं, लेकिन एडीसन के हर प्रयोगात्मक काम में गहरी रुचि लेने का असर श्रीमती एडीसन अच्छी तरह महसूस करती थीं। थॉमस एडीसन प्रायः रात को देर तक काम करते थे, लेकिन काम खत्म करके जब घर आते थे तो अपनी पत्नी को यह जानने की उत्सुकता के इंतजार में पाते थे कि दिन भर में कितनी सफलता-असफलता मिली।

श्रीमती एडीसन अपने पति के हर प्रयोग से वाकिफ थीं और उनके काम में गहरी रुचि लेती थीं।

श्रीमती एडीसन ने अपने पति के लिए एक प्रकार से 'साउंडिंग बोर्ड' का काम किया, जिसके जरिए वे एक किनारे होकर थॉमस एडीसन के हर काम पर गहरी निगाह रखती थीं। कहा जाता है कि थॉमस एडीसन को अपनी कई जटिल गुत्थियाँ सुलझाने में अपनी पत्नी से मदद मिली।

यहाँ तक माना जाता है कि थॉमस एडीसन के साथ-साथ हेनरी फोर्ड, हार्वे फायरस्टोन और प्रकृतिशास्त्री जॉन बरो के भी पारिवारिक मास्टरमाइंड संबंधों का आधार श्रीमती एडीसन द्वारा स्थापित अनुभव था। उनकी दांपत्य बैठकों की चर्चा समय-समय पर

अखबारों में भी होती रही है। जब ऐसी महान् उपलब्धियोंवाले व्यक्तियों के जीवन पर मास्टरमाइंड संबंध ने प्रभाव डाला है, तो यह मानकर चलना चाहिए कि जो दुनिया में इन लोगों की तरह अपना स्थान बनाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, उनके जीवन में इसका असर जरूर पड़ेगा।

विश्व के महान् विजेताओं, सम्राटों, नेताओं और रचनाकारों के जीवन में प्रेम और रोमांस की राजकुमारियों ने असर डाला है। रॉबर्ट और एलिजाबेथ बैरेट ब्राउनिंग दोनों महान् कवियों ने स्वीकारा है कि उनके बीच के अंतरंग संबंध ने साहित्य सृजन में प्रेरणास्रोत का काम किया। इतिहास साक्षी है कि नेपोलियन बोनापार्ट को सैनिक उत्कर्ष तक पहुँचाने में उनकी पत्नी जॉस्फिन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इतिहास इस बात का भी गवाह है कि नेपोलियन का पतन उसी समय से शुरू हो गया, जब उसने सत्ता के मद में जॉस्फिन को दरकिनार कर दिया। उसके बाद नेपोलियन की जबरदस्त हार हुई और सैंट हेलेना में बंदी बनकर मृत्युपर्यंत अकेला रहना पड़ा। यह बात आज के जमाने में वैसे कारोबारियों के साथ भी लागू हुई है, जो व्यापारिक जगत् के 'नेपोलियन' माने जाते हैं। उन लोगों को उन्हीं कारणों से वैसी ही हार का सामना करना पड़ा है। कार्नेगी के मुताबिक, तलाक की बढ़ती घटनाओं के पीछे वही वर्ग ज्यादा दोषी है, जिसका उसके बाद तनाव और निराशा में पतन शुरू हो जाता है। उत्थान और शीर्ष पर पहुँचने के समय तो उनका मास्टरमाइंड पारिवारिक रिश्ता कायम रहता है। पैसा और शोहरत हासिल करने के बाद से वे नए मॉडलों को आजमाने लगते हैं।

चार्ल्स एम. शुआब की कहानी जरा अलग किस्म की है। उन्होंने भी एंड्रयू कार्नेगी की तरह मास्टरमाइंड संबंध बरकरार रखकर पैसा और शोहरत हासिल किए, जबकि शुआब के वैवाहिक जीवन में ज्यादा समय तक उनकी पत्नी शरीर से लाचार रहीं, लेकिन शुआब ने अपनी पत्नी को तलाक नहीं दिया और मृत्यु तक उनका साथ नहीं छोड़ा। वे मानते थे कि अच्छे चरित्र की पहली पहचान वफादारी है।

हम यहाँ जानकारी की बात कर रहे हैं, इसलिए यह वास्तविकता अनदेखी करनेवाली नहीं है कि व्यावसायिक मास्टरमाइंड संबंधों में भी जानकारी की कमी का असर हुआ है और व्यवसायों के डूबने के पीछे ज्यादातर यही कारण रहे हैं। जब व्यावहारिक पार्टनर एक-दूसरे पर भरोसा करके काम करते हैं तो उससे घाटे और विफलता की ओर ले जानेवाली खाइयाँ मिलकर पाटने में आसानी होती है।

कहा जाता है कि एंड्रयू कार्नेगी के हमेशा युवा व्यावसायिकों को तलाशनेवाले स्वभाव के पीछे असली कारण यही था कि उन पर भरोसा करके उनका हौसला बढ़ाया जाए, ताकि वे अपना समझकर पूरे मन से काम करें। उसी हिसाब से कार्नेगी ने उन युवकों को ऊँचे ओहदे और ऊँचे वेतन भी दिए। वे प्रायः कहते थे कि अगर किसी कामगार के अंदर वफादारी जैसा गुण न हो, तो बाकी मामलों में भी उसकी वफादारी की नींव मजबूत नहीं हो सकती। कर्मचारियों की वफादारी की परीक्षा लेने का उनका अपना नायाब और बहुआयामी फॉर्मूला था। प्रोन्नति देने के समय और उसके बाद वे वफादारी की परीक्षा लेना शुरू करते थे और वह सिलसिला तब तक जारी रहता था, जब तक उन्हें पूरा इत्मीनान न हो जाए। यह कार्नेगी की गहरी अंतर्दृष्टि का ही परिणाम था कि उन्हें शायद ही कभी किसी कर्मचारी

की वफादारी की जाँच में चूक का सामना करना पड़ा हो।

अपने मास्टरमाइंड गठजोड़ के उद्देश्य का जिक्र किसी ऐसे व्यक्ति/व्यक्तियों से न करें, जो इस गठजोड़ से बाहर हैं। अपने गठजोड़ के अन्य सदस्यों को भी इससे परहेज करने को कहें। ऐसा करने से आपसे ईर्ष्या करनेवाले अकर्मण्य लोग ऐसे अवसरों की ताक में जुट जाएँगे कि कैसे उनके बीच फूट का बीज बोया जाए और एक-दूसरे के खिलाफ भड़काकर उन्हें निरुत्साहित किया जाए। अपनी सारी योजनाएँ अपने तक ही सीमित रखें और इसकी चर्चा सिर्फ वैसे ही लोगों के बीच करें, जो आपकी उपलब्धियों से खुश हैं तथा इस बाबत कुछ जानना चाहते हैं। ऐसी मानसिक स्थिति में मास्टरमाइंड गठजोड़ बैठकें न करें, जब आपके दिमाग में नकारात्मक विचार घूम रहे हों। याद रहें, अगर आप अपने मास्टरमाइंड गठजोड़ के नेता हैं तो यह आपकी जिम्मेदारी है कि अपनी टीम के सभी सदस्यों का उत्साह बढ़ाते रहें और ऐसा माहौल बनाए रखें, ताकि सबकी उसके प्रति गहरी रुचि बनी रहे। नकारात्मक सोच से यह काम नहीं हो सकता। इसके साथ ही बाकी लोग भी वैसे नेता के साथ उत्साहपूर्वक सहयोग नहीं करेंगे, जो संदेह और अनिर्णय की स्थिति में हो और एक निश्चित प्रमुख लक्ष्य के प्रति उसका भरोसा न हो। अपने मास्टरमाइंड गठजोड़ सदस्यों की हमेशा चाबी घुमाए रखें और यह तभी संभव होगा जब आप स्वयं की भी चाबी घुमाए रहें।

इस बात की कभी उपेक्षा न करें कि आपके मास्टरमाइंड गठजोड़ का समान महत्त्व है और सबके सब आपकी सफलता में योगदान करने के अपने-अपने अनुपात के आधार पर किसी-न-किसी रूप में मुआवजे के हकदार हैं। यह भी न भूलें कि कोई भी पूरे जोश और उत्साह से तभी काम कर सकता है, जब उसका लाभ मिले। पहले के पृष्ठों में बताए गए नौ बुनियादी इरादों को आत्मसात् कर लें, जो सभी स्वैच्छिक कार्यों को प्रेरित करते हैं, फिर आप देखेंगे कि मास्टरमाइंड गठजोड़ के सभी साथी उत्साह और वफादारी के साथ आपसे जुड़े रहेंगे और आप पर पूरा भरोसा भी करेंगे।

मास्टरमाइंड गठजोड़ साथियों के साथ अगर आपका संबंध वित्तीय लाभ के लिए है, तो निश्चय है कि आपको ज्यादा देना पड़ेगा और मिलेगा कम। एक कदम आगे बढ़कर चलने के सिद्धांत से आप ज्यादा पा सकते हैं, बशर्ते कि इसे अपनी आदतों में शुमार करें। जो आपसे प्रतिस्पर्धा रखते हैं, उन्हें अपने मास्टरमाइंड गठजोड़ में शामिल न करें। रोटरी क्लब की नीति अपनाकर वैसे व्यक्तियों से घिरें जिनके मन में आपके प्रति कोई दुर्भावना न हो और जो बिना किसी प्रतिस्पर्धा के मैत्रीपूर्ण भावना से काम करें।

मास्टरमाइंड ग्रुप में कभी भी भय या दबंगता दिखाकर जबरन हावी होने की कोशिश न करें, बल्कि उसकी जगह कूटनीतिक नेतृत्व की नीति अपनाएँ, जो भरोसे और सहयोग पर आधारित हो।

जबरन नेतृत्व थोपने के दिन लद गए। उसे लाने का प्रयास न करें, क्योंकि आज के सभ्य समाज में इसका कोई स्थान नहीं है।

अपने मास्टरमाइंड सदस्यों के बीच साक्षीवाला उत्साह बनाने और कायम रखने का कोई अवसर हाथ से जाने न दें। मैत्रीपूर्ण टीमवर्कवाली काम करने की शक्ति हासिल करने का यही एकमात्र उपाय है।

विश्व इतिहास का सबसे शक्तिशाली मास्टरमाइंड गठजोड़ दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के

बाद बना, जो संयुक्त राष्ट्र संगठन के नाम से मशहूर है। वह गठजोड़ कायम करनेवाले नेताओं ने पूरी दुनिया को बताया कि उनका निश्चित प्रमुख लक्ष्य मानव की आजादी और समानता के सिद्धांत पर आधारित है, जो विजेता तथा पराजित देशों पर समान रूप से लागू होता है।

वह घोषणा युद्ध के मैदान की हजार जीतों से ज्यादा मूल्यवान थी, क्योंकि इससे उन लोगों के मन में विश्वास की भावना जगी, जो युद्ध का खामियाजा भुगत चुके थे। बिना विश्वास के मास्टरमाइंड गठजोड़ कायम नहीं हो सकता, चाहे वह सैनिक कार्रवाई का मामला हो या सिविलियन।

सारे सामाजिक समन्वय संबंधों का आधार विश्वास ही तो है। अगर आप चाहते हैं कि मास्टरमाइंड गठजोड़ सफल हो और आपके उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो तो कायम करते समय विश्वासवाला सूत्र न भूलें।

इस प्रकार मैंने आपको सभी लोगों के बीच व्यक्तिगत ताकत के सबसे बड़े स्रोत (मास्टरमाइंड) के कार्यकारी सिद्धांत के बारे में बताया।

इस दर्शन के चार प्रथम सिद्धांतों—कुछ आगे बढ़कर काम करने की आदत, लक्ष्य की निश्चितता, मास्टरमाइंड और एक उसके अनुसरण को अपनाकर कोई भी उस शक्ति का रहस्य जान सकता है, जिससे धनकुबेर बनने की मास्टर चाबी हासिल की जा सकती है। इसलिए अगले सेमिनार में इसी से जुड़े कुछ ऐसे बिंदुओं की चर्चा करूँगा, जो आपके जीवन में महत्त्वपूर्ण मोड़ ला सकते हैं और यह विश्लेषण भी अब तक की बातों से अलग नहीं होगा।

अब हम उस विषय को उठाने जा रहे हैं, जिससे आप उस व्यक्ति को खूब अच्छी तरह समझ सकते हैं और जिसका विश्लेषण पूरा विज्ञान जगत् करता है। मुझे उम्मीद है कि मैं वह फॉर्मूला आपको बता सकूँगा, जिसके जरिए आप जीवन का प्रमुख निश्चित लक्ष्य हासिल करने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं।

❑

9

भरोसा

सम्मेलन में भाग लेनेवाले जो काफी हद तक एक-दूसरे के नजदीक आ गए थे, वक्ता की अंतिम घोषणा की उधेड़बुन में लगे थे। उनकी आपसी बातचीत का यही प्रमुख मुद्दा था—ये किस व्यक्ति की बात कर रहे हैं। कुछ श्रोताओं ने रात के भोजन के समय अनुमान लगाया उनके कहने का अर्थ सूर्य की शक्ति से है? कुछ अन्य ने सोचा शायद ये वैसी नई प्रकार की अद्‌भुत शक्ति का जिक्र करें, जिसके बारे में दुनिया को अभी तक जानकारी नहीं है, परंतु वह चाहे कैसी भी शक्ति हो, भाग लेनेवालों को भरोसा था कि वक्ता का अगला एक-एक शब्द पहले की तरह गौर करने लायक होगा।

वह सम्मेलन का सातवाँ दिन था अर्थात् अंतिम से एक दिन पूर्व। सुबह की कॉफी लेते हुए सेमिनार हॉल में जुट रहे लोगों के साथ-साथ वातावरण में गंभीरता मालूम पड़ती थी। विशिष्ट व्यक्ति अपने स्थान पर पहुँच चुके थे और अपने नोट्स में डूबे थे। वे बहुत गंभीर मुद्रा में गहरे विचारों में खोए थे। कुछ मिनटों तक उन्होंने अपनी आँखें बंद रखीं और जब खोलीं तो बिलकुल तरोताजा तथा उत्साहित लग रहे थे।

'भरोसा शाही आगंतुक है', जो तभी प्रवेश करता है, जब दिमाग पूरी तरह उसके लिए तैयार हो—वैसा दिमाग, जो आत्म अनुशासन के हिसाब से सेट हो। इस तरह वक्ता ने अपना वक्तव्य शुरू किया। कहने की जरूरत नहीं कि सभी श्रोताओं का ध्यान उन्होंने अपनी ओर खींचा। सभी शाही फैशनों में भरोसा सबसे अच्छे कक्ष को कमांड करता है-नहीं-सबसे सुंदर कमरा-दिमाग के अंदर का सबसे उत्तम निवास स्थल। इसे सेवकों के क्वार्टरों में नहीं रखा जा सकता और इसकी ईर्ष्या, लालच, लोभ, अंधविश्वास, घृणा, प्रतिशोध, शक, चिंता या भय से कभी दोस्ती नहीं हो सकती। ऐसी भावनाओं के साथ भरोसा नहीं चलता।

इस सत्य की तह में जाएँ और इसे गंभीरता से जानने के बाद आप रहस्यमय शक्ति को समझ पाएँगे कि किस प्रकार यह शक्ति युगों से वैज्ञानिकों के दिमाग को मथती आ रही है। उसके बाद आपको आत्म-अनुशासन के जरिए अपने दिमाग की कंडीशनिंग की जरूरत महसूस होगी। आस्था/विश्वास को अपना स्थायी अतिथि बनाने से पहले ऐसा करना जरूरी है।

कॉनकोर्ड के संत राल्फ वाल्डो एमर्सन के शब्दों में, "हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ ऐसा है, जो मैं उससे सीख सकता हूँ और वहाँ मैं उस आदमी का शिष्य हूँ।" अब मैं एक व्यक्ति से परिचय करता हूँ, जो मानव कल्याण के लिए समर्पित है, ताकि आप जान सकें कि कैसे कोई व्यक्ति आस्था को बसाने लायक दिमाग की कंडीशनिंग कर सकता है। उसके साथ ही विशिष्ट वक्ता ने भूरे चमड़े की जिल्दवाली एक किताब खोली और चिह्नित किए हिस्से के पन्ने पलटने के बाद कहा, उन्हें अपनी कहानी स्वयं कहने दें और वक्ता ने पन्ने पढ़ने शुरू किए—1929 की भीषण मंदी के समय मैंने सर्वोत्तम शिक्षण संस्थान हार्ड नोक्स

यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर डिग्री ली। उसके बाद मैंने पाया कि मेरे पास एक छिपा धन है, लेकिन मैं उसका इस्तेमाल नहीं कर रहा हूँ। यह रहस्य मैंने एक दिन सुबह को जाना, जब एक नोटिस आया कि मेरा बैंक बंद हो गया है और शायद फिर कभी नहीं खुलेगा।

उसी के बाद मैंने अपनी वैसी संपत्ति की खोज शुरू कर दी, जिसका इस्तेमाल नहीं हुआ था। मेरे साथ आएँ और देखें कि कैसे मैं उस संपत्ति की खोज का वर्णन करता हूँ।

सबसे पहले मैं उस सूची का सबसे महत्त्वपूर्ण घटक—आस्था का ब्योरा देता हूँ जिसका इस्तेमाल नहीं हुआ था। जब मैंने अपने दिल के अंदर गहराई में झाँका, तो पाया कि वित्तीय घाटे के बावजूद मेरे पास भरोसे का प्रचुर धन है, जो मेरे शाश्वत विवेक में और दूसरों पर विश्वास में छिपा है। उसी के साथ एक और रहस्य उजागर हुआ, जो उससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण था कि आस्था या भरोसे से वे सारे अरमान पूरे हो सकते हैं, जो दुनिया की सारी दौलत मिल जाने से भी पूरे नहीं होते।

जब मुझे जरूरत के मुताबिक पैसे हाथ लगे तो मैंने एक गंभीर भूल यह मानकर कर डाली कि पैसा ही शक्ति का स्थायी स्रोत है। मुझे आज यह सोचकर ताज्जुब होता है कि भरोसे के बिना पैसे का कोई महत्त्व नहीं है और सिर्फ पैसा अपने आप में कोई शक्ति नहीं है।

जीवन में पहली बार मैंने भरोसे की ताकत को जाना और अपने अंदर की शक्ति का गंभीर विश्लेषण करके लगा कि इस तरह का धन मेरे पास कितना है। वह विश्लेषण आश्चर्यजनक और गरिमापूर्ण था।

मैंने जंगलों में घूमते हुए विश्लेषण शुरू किया। मेरे मन में भीड़, कोलाहल भरे शहर से दूर जाने की इच्छा जगी। दूसरों से डरने और सभ्यता के उपद्रवों से दूर चले जाने की भावना प्रबल हुई, ताकि मैं पूर्ण शांति में ध्यान कर सकूँ। आह! इस शांति शब्द को उच्चारित करना कितना सुकून देनेवाला है।

यात्रा के क्रम में मैंने एक नवांकुर उठाया और उसे अपनी हथेली पर रखा। जिस विशाल पीपल की जड़ों से वह गिरा था, उसके नीचे खड़े होकर उसकी उम्र के विषय में सोचने लगा कि जब जॉर्ज वाशिंगटन बच्चे रहे होंगे, तब यह पेड़ भी अच्छे आकार में रहा होगा। उस पेड़ को देखते हुए, नवांकुर हाथ में रखे और मैं देर तक सोचता रहा कि इसी छोटे अंकुर से बढ़कर यह पेड़ इतना विशाल हुआ। मैंने महसूस किया कि इस ग्रह पर जितने लोग मौजूद हैं, कोई भी इस तरह का पेड़ नहीं बना सकते। मैं इस तथ्य के प्रति सचेत था कि किसी शाश्वत विवेक ने यह अंकुर बनाया, जिससे यह पेड़ बढ़ा। उसी की बदौलत बीज से बीजांकुर निकला और मिट्टी के संपर्क से इतना ऊँचा तथा विशाल बना।

मैंने महसूस किया कि ये अविनाशी शाश्वत शक्तियाँ ही सबसे महान् शक्ति हैं। बैंक बैलेंस और भौतिक सुखों में निहित ताकत इसके सामने तुच्छ है।

मैंने दोनों हाथों में भरकर काली मिट्टी उठाई और अंकुरित बीज को उसमें लपेटा। मैंने उसके बाहर नजर आनेवाले हिस्से को सँभालकर अपने हाथ में लिया, जहाँ से निकलकर यह पेड़ बढ़ा।

पीपल की जड़ से मैंने एक और लता उठाई, जिसके पत्ते बड़े सुंदर थे। इतनी सुंदर डिजाइनवाली रचना भी उसी अविनाशी की थी, जिसने पीपल बनाया। मैं तब तक जंगल

में घूमता रहा, जब तक कि थककर चूर एक झरने के पास बैठने की नौबत नहीं आ गई। थकान के चलते मैं वहीं आराम करने के लिए बैठा और झरने के गिरते जल का लयपूर्ण संगीत सुनने लगा। इस अनुभव ने युवा उम्र की यादें ताजा कर दीं। मुझे इसी तरह के झरने में खेलने की याद आ गई। जलतरंगों के मधुर संगीत में तन्मय होते ही मेरे अंदर का विवेक जागकर जल की चमत्कारिक कहानी सुनाने लगा—पवित्र जल! प्रच्छावित तरंगों में हिलोरें लेता जल। इसकी निःस्वार्थ कल्याणकारी सेवाएँ जिसने इस पृथ्वी पर शीतलता प्रदान करके तमाम जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों को अपने अंक में आश्रय दे रखा है।

आह! जल प्रकृति की अद्‌भुत अविनाशी जीवनी शक्ति है। क्या कहानी तुम सुना सकते हो और क्या मैं सुन पाऊँगा, अगर तुम मेरे अंदर से मेरी ही आवाज में सुनाओ। तुमने करोड़ों जीवों की सदियों से प्यास बुझाई, फूलों को खिलाया, मशीनरी चलाई, धरती के जीवन-चक्र को गतिशील रखने के साथ-साथ घर-द्वार, मल-मूत्र सब धोया। प्राणियों को मिल रही तुम्हारी सेवाएँ अनंत हैं। सारा कूड़ा-कचरा, कल-कारखानों की गंदगी धोने के बावजूद तुम पवित्र ही रहे। बहाव का अविरल स्रोत न कभी रुका, न रुकेगा। बहते हुए समुद्र में मिलने और फिर पवित्र होकर मानवता की सेवा करके वापस आने का सिलसिला अनवरत चलता रहा।

'ओ मेरे जल, जब तुम्हारी यात्रा आरंभ होती है तो उसका लक्ष्य और गंतव्य एक ही होता है—सागर, जहाँ से तुम निकले हो। तुम्हारा आना-जाना किसी रुकावट से बाधित नहीं होता। यह सिलसिला चलता रहता है और तुम हमेशा अपने श्रम से आनंदित अनुभव करते हो।

स्वच्छ, पवित्र जल! प्रकृति की आश्चर्यजनक देन। कितना भी गंदा, कचरा बहाने से तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, तुम अपने श्रम की समाप्ति उसे धोकर करते हो। न तुम्हारा सृजन हो सकता है, न ही विनाश, क्योंकि तुम्हीं तो जीवनीशक्ति हो, जिस पर धरती का अस्तित्व टिका है। तुम्हारी कृपा के बिना तो सृष्टि ही नहीं हो सकती।'

झरने का जल हँसा, मचला तथा फिर वापस सागर की ओर चल पड़ा। जल की कहानी समाप्त तो हो गई, लेकिन मैंने एक महान् संत का उपदेश सुना। मैंने स्वयं को महानतम विवेक के सभी रूपों के निकट अनुभव किया।

मैंने उस कुशागत विवेक का प्रत्यक्ष प्रमाण महसूस किया, जिसने एक अंकुरित बीज को विशाल पीपल के पेड़ में परिणत कर दिया, जिसने लता के सुंदर पत्ते बनाए वैसी कलाकृति किसी मानव के वश की नहीं है।

जैसे-जैसे दिन ढलता जा रहा है, पेड़ की छाया और घनी तथा लंबी होती जा रही है।

'पश्चिमी क्षितिज से अस्ताचल की ओर जाते सूरज की मुझे महान् उपदेश देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, ऐसा मैंने अनुभव किया।

सूरज की कृपा के बिना वह अंकुरित बीज विशाल पीपल का रूप नहीं ले सकता था। सूरज की मदद के बिना झरने की झंकार करती जल-धारा सागर में ही कैद रहती और पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व ही नहीं होता।'

मन को झंकृत करनेवाले ऐसे विचारों ने मुझे उस चमत्कारिक उपदेश के सुंदरतम क्लाइमेक्स पर पहुँचा दिया। सूरज और जल के रोमांस और उस पर टिका पृथ्वी की गोद

में पल रहा जीवन का अस्तित्व—ऐसी कल्पनाओं से मेरा दिलो-दिमाग रोमांचित हो उठे। उसके सामने बाकी सारे सांसारिक रोमांच अनावश्यक और अर्थहीन लगे।

झरने के जल से स्वच्छ धुला एक सफेद पत्थर मैंने हाथ में उठा लिया और लगा कि उस पत्थर के अंदर से भी एक प्रभावशाली उपदेश मुझमें प्रवेश कर रहा है। पत्थर ने मेरे अंदर विवेक का संचार इन शब्दों में किया—'हे मरणशील प्राणी, तुमने जो चीज हाथ में ले रखी है, उसमें चमत्कारिक शक्ति है।'

मैं महज एक पत्थर का छोटा सा टुकड़ा हूँ और यही वास्तविकता है—एक छोटा सा ब्रह्मांड, जिसके अंदर सब कुछ लघु तथा विशाल रूप में समाया अनुभव किया जा सकता है। उसका बाहरी परिवेश आप नक्षत्रों की ओर निहारकर महसूस करते हैं।

मैं मृतक जैसा गतिहीन होने लगा, लेकिन तत्क्षण लगा कि वैसी अनुभूति मिथ्या थी। मैं तो अणुओं से बना हूँ। मेरे अंदर असंख्य परमाणु कण मौजूद हैं और एक-एक कण में एक छोटा ब्रह्मांड समाया है। इन परमाणु कणों के अंदर असंख्य इलेक्ट्रोन समाए हैं, जो अनियंत्रित गति से चलते हैं।

मैं एक निर्जीव पत्थर नहीं हूँ, बल्कि अक्षय ऊर्जा यूनिटों का एक संगठित समूह हूँ, इलेक्ट्रोन एक-दूसरे से समग्र से ज्यादा दूरी बनाते हुए अलग हो गए। सावधानीपूर्वक मेरा अध्ययन करो, धरती की तरह विनम्र बनो और याद करो उस अविनाशी ब्रह्मांड की शक्तियों को, जीवन के मूल्यों को जो बैंक बैलेंस से नहीं जोड़े जा सकते।

उस क्लाइमेक्स से उत्पन्न विचारों ने मेरे अंदर जादुई असर डाला और मैंने माना कि मेरे हाथ में जो कुछ है, वह उस अक्षय ऊर्जा का एक हिस्सा है, जिसने सूर्य, नक्षत्र, पृथ्वी—जहाँ हम थोड़े समय के लिए रहते हैं आदि सभी को आपस में एक-दूसरे से जोड़ रखा है।

योग-ध्यान के माध्यम से मैंने इस सौंदयपूर्ण यथार्थ को जाना कि कानून व व्यवस्था नाम की कोई चीज है और उस छोटे से पत्थर के टुकड़े में भी है। मैंने पहचाना कि उस छोटे पत्थर के समग्र के अंदर भी प्रकृति का रोमांच और सच्चाई समाई है।

प्राकृतिक कानून व व्यवस्था और उसके उद्देश्य के प्रत्यक्ष प्रमाण का अनुभव उससे पहले मैंने कभी नहीं किया था, जो सारा कुछ मानव मन-मस्तिष्क के अंदर है, अंतर्दृष्टि से महसूस किया जा सकता है। शाश्वत, अविनाशी विवेक में अपनी आस्था के स्रोत के उतने करीब मैंने अपने आपको उससे पहले कभी महसूस नहीं किया था।

यह एक सुंदर अनुभूति थी—प्रकृति की निकटता झरना, पेड़, सूर्य व जल रूपी पारिवारिक सदस्यों से घिरी मनोरम शांति के बीच आत्मा को तृप्ति प्रदान करना, ताकि शाश्वत विवेक में अपने को समाते देखें, जिसने मुझे इस सच्चाई से अवगत कराया।

उससे पहले जीवन में कभी मैंने अपनी चेतना को वैसी जाग्रत् अवस्था में नहीं देखा था, जिसमें अपने विश्वास/आस्था के स्रोत, शाश्वत विवेक का वास्तविक प्रमाण दिखाई पड़े।

मैं उस स्वर्गिक आनंद में तारे निकलने तक डूबा रहा और उसके बाद वापस शहर की ओर फिर से उन लोगों के बीच लौटा, जो गुलामों की तरह भौतिक वस्तुओं की चाहत के पीछे भागते फिरते हैं। सभ्यता के प्राकृतिक नियमों के अंदर पागलों की तरह भौतिक सुखों के पीछे भागने की जरूरत नहीं है।

अब मैं वापस अपने अध्ययन कक्ष में हूँ। पुस्तकों के बीच और टाइपराइटर पर अपने

अनुभव की कहानी रिकॉर्ड कर रहा हूँ, लेकिन अपने साथी झरने के आश्चर्य से अलग होने के बाद मैं बिलकुल अकेला पड़ गया हूँ। उस झरने के पास कुछ घंटे पहले मेरी आत्मा ने शाश्वत विवेक के साथ तृप्तिपूर्ण स्नान किया और यथार्थ से परिचित हुआ। वहाँ से हटने पर एकाकीपन खल रहा है। मैं जानता हूँ कि शाश्वत विवेक के प्रति मेरी आस्था वास्तविक है और यह अंधविश्वास नहीं है, क्योंकि यह उस अक्षय स्रोत की निकट से जाँच-परखकर लेने के बाद हासिल हुई है, जो ब्रह्मांड की प्रक्रिया में व्यक्त है।

पहले मैं गलत रास्ते पर चलते हुए अपनी आस्था का स्रोत ढूँढ़ रहा था। मैं इसे मानवीय कार्यकलापों, सांसारिक संबंधों, बैंक बैलेंस और भौतिक सुख की वस्तुओं में खोज रहा था।

मैंने इसे कहाँ पाया—लघु अंकुरित बीज में, विशाल पीपल के पेड़ में, एक छोटे से पत्थर में, पीपल से लिपटी लता के पत्तों में, मिट्टी में और अपने मित्र सूर्य में जो पृथ्वी को गरमी प्रदान करके जल को गति देता है, तारों में और निराकार शांति तथा निस्तब्धता में।

उसके बाद मेरी यह धारणा बनी कि लोगों के व्यर्थ के झगड़ों, उलझनों और भौतिक सुख के सामान जुटाने के पीछे पागल होने से ज्यादा आसानी से शाश्वत विवेक की अनुभूति खामोश रहकर इसमें लिप्त न होने से मिलती है।

मेरा बैंक खाता समाप्त हो गया, मेरा बैंक बैठ गया, लेकिन मैं कई करोड़पतियों से ज्यादा धनी था, क्योंकि मैंने अपनी आस्था/विश्वास तक सीधे पहुँच पा ली थी। इस शक्ति की बदौलत मैं अपनी जरूरत के मुताबिक दूसरे बैंक बैलेंस बना सकता हूँ।

अन्य करोड़पतियों के मुकाबले मैं इसलिए ज्यादा धनी हूँ, क्योंकि मैंने उस शक्ति के स्रोत पर भरोसा किया, जिसकी प्रेरणा मेरे ही अंदर से जगी। जबकि करोड़पति बैंक बैलेंस बढ़ाने और अकूत धन जमा करके ही अपने को शक्तिशाली समझते हैं। मेरी शक्ति का स्रोत प्राणवायु की तरह मुक्त और असीमित है। एकमात्र इस वायुसदृश आस्था की बदौलत मैं जो चाहूँ प्रभुता से मिल सकता है।

इस प्रकार मैंने फिर से इस सत्य को जाना कि हर प्रतिकूलता के अंदर समान रूप से लाभ के बीज मौजूद हैं। मेरी प्रतिकूलता बैंक बैलेंस की कीमत पर थी, लेकिन इसके बदले में सबकुछ हासिल किया।

वक्ता ने पवित्र ग्रंथ पढ़ना बंद कर दिया और श्रोताओं की ओर एक गहरी भावपूर्ण दृष्टि डाली। उनके अपने ही शब्दों में व्यक्त है—विशिष्ट वक्ता ने कहा, आपने उस व्यक्ति की कहानी उन्हीं की जुबानी सुनी जिसने दिमाग की कंडीशनिंग इस तरह से करने का तरीका खोजा, ताकि विश्वास व्यक्त किया जा सके।

वाह! क्या नाटकीय कहानी है यह, क्योंकि इसमें सरलता है।

यह उस व्यक्ति की कहानी है जिसने आस्था/विश्वास का ठोस आधार बैंक बैलेंस और भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि पीपल के पेड़ में, लता के पत्तों में, एक छोटे पत्थर में और बहते झरने में पाया, जो हर कोई समझ सकता है और जिसकी तारीफ कर सकता है, लेकिन इन सरल वस्तुओं से प्राप्त अनुभव के जरिए इस व्यक्ति ने हमें समझाया है कि सबसे महानतम शक्तियाँ वे अविनाशी शक्तियाँ हैं, जो हमारे आसपास की साधारण सी वस्तुओं में विद्यमान हैं, सिर्फ देखने-समझने की बात है। मैं इस व्यक्ति की कहानी को जोड़कर यह बताना चाहता हूँ कि इसके माध्यम से कोई भी भारी कठिनाइयों और उथल-पुथल के

माहौल में जीते हुए भी अपने दिमाग को विश्वास व्यक्त करने लायक साफ तथा खुला बना सकता है। सबसे महत्त्वपूर्ण सीख जो यह कहानी हमें देती है वो यह है कि जब दिमाग से नकारात्मक सोच बाहर निकल जाती है, तब आस्था और विश्वास की शक्ति अंदर जाती है और अपना आधिपत्य स्थापित करती है।

निश्चय ही इस दर्शन के किसी भी छात्र के साथ वैसा दुर्भाग्य नहीं होगा कि वे इस महत्त्वपूर्ण अनुभव को जानने से वंचित हों।

विश्वास का विश्लेषण

अब हम विश्वास के विश्लेषण की ओर बढ़ते हैं, लेकिन इससे पहले यह मानकर चलें कि विश्वास या आस्था ऐसी शक्ति है, जिसके विश्लेषण की उलझन से पूरे विज्ञान जगत् को भी निजात नहीं मिल पाई है।

इस दर्शन में भरोसे का चौथा स्थान है, क्योंकि यह चौथे चरण के प्रतिनिधित्व से जुड़ा है, लेकिन यहाँ इसका संबंध व्यक्तिगत उपलब्धि से है।

आस्था वैसी दिमागी अवस्था का नाम है जिसे आत्मा का 'मेनस्प्रिंग' कहा जा सकता है। इसके माध्यम से किसी के लक्ष्य, इच्छाएँ और कुछ पाने का लक्ष्य शारीरिक या वित्तीय क्षमता में रूपांतरित होकर तदनुरूप परिणाम देता है।

इससे पहले हमने देखा है कि महान् शक्ति इन तीन फॉर्मूलों को अपनाकर हासिल की जा सकती है—

1. एक कदम आगे बढ़कर चलने की आदत।
2. लक्ष्य की निश्चितता।
3. मास्टरमाइंड।

लेकिन वह शक्ति उसके आगे फीकी है जो इन तीनों फॉर्मूलों को भरोसे में एक साथ पिरोकर अपनाने के बाद हासिल होती है।

हमने यह भी देखा है कि विश्वास की क्षमता धनकुबेर बनने के बारह फॉर्मूलों में से एक है। अब हम उस साधन को पहचानें, जिसके जरिए यह क्षमता उस विचित्र शक्ति के साथ जोड़ी जा सकती है, जो सभ्यता की असली कड़ी है—मानव की संपूर्ण प्रगति का मूल कारण है और सभी सृजनशील मानव प्रयत्नों की प्रेरणास्रोत है।

इस विश्लेषण के क्रम में हम यह भी याद रखें कि विश्वास दिमाग की वह अवस्था है, जो सिर्फ वही लोग हासिल कर सकते हैं, जिन्होंने दिमाग को पूरी तरह नियंत्रण में रखने की कला सीख ली है। यही एकमात्र विशेषाधिकार है, जिस पर व्यक्ति को पूर्ण नियंत्रण प्राप्त है। आस्था सिर्फ उसी दिमाग से व्यक्त होती है, जो इसके लिए तैयार किया गया है।

भरोसे के भौतिक सिद्धांत इस प्रकार हैं—

1. निजी पहल या कार्य-समर्पित लक्ष्य की निश्चितता।
2. सभी मानवीय संबंधों में कुछ आगे कर गुजरने की आदत।
3. एक या उससे अधिक व्यक्तियों के साथ मास्टरमाइंड गठजोड़, जिसमें सब एक-दूसरे पर भरोसा करें और आध्यात्मिक तथा मानसिक रूप से एक ही लक्ष्य को हासिल करने के लिए फिट हों।

4. सार्थक खोजवाला दिमाग जो भय, लालच, ईर्ष्या, स्वार्थ, घृणा और अंधविश्वास जैसी नकारात्मक धारणाओं से मुक्त हो। (एक सार्थक मानसिक स्थिति धनकुबेर के बारह फॉर्मूलों में सबसे महत्त्वपूर्ण है।)
5. इस सत्य की अवधारणा कि हर प्रतिकूलता अपने में समान लाभ का बीज लिये रहती है। इसलिए अस्थायी हार को विफलता मानकर निराश न होना और दोगुने उत्साह से आगे कदम बढ़ाना।
6. अपने लक्ष्य को हासिल करने का संकल्प हमेशा याद रखने की आदत और कम-से-कम एक बार योग-ध्यान के समय इसे अवश्य दुहराया जाए।
7. शाश्वत विवेक की शक्ति के अस्तित्व को दिल से स्वीकारना, जो संपूर्ण ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है और सब-के-सब किसी-न-किसी रूप में इसी विवेक की अभिव्यक्ति हैं। इसलिए किसी की दिमागी सोच की उड़ान असीमित है, जिसमें ब्रह्मांड में समाने के विचार भी उत्पन्न होते हैं।
8. पूर्व की विफलताओं और प्रतिकूलताओं का बारीकी से अवलोकन, जिससे यह सत्य सामने आएगा कि उसी में सफलता और अनुकूलता के वैसे ही बीज छिपे हैं।
9. समन्वयपूर्ण आत्म-सम्मान, जो अपनी ही अंतर्चेतना से जाग्रत् हो।
10. मानव समुदाय की एकरूपता को मान्यता।

ये भौतिक सिद्धांत काफी महत्त्व रखते हैं, क्योंकि इन्हीं के जरिए दिमाग आस्था के लायक तैयार होता है। इसमें कोई ओहदे या पद की वरीयता की बात जुड़ी नहीं है। यह प्रयोग विवेक, सत्य तथा न्याय की व्यग्रता से ही आजमाया जा सकता है। विश्वास उन्हीं दिमागों में भाईचारा कायम करता है, जो सार्थक सोचवाले हैं। यह ऐसी अंतर्चेतना है, जो सार्थक दिमाग को शक्ति, प्रेरणा और एक्शन में आने की क्षमता प्रदान करता है। यह वो शक्ति है जो दिमाग को इलेक्ट्रोमैगनेट की तरह काम करने लायक बनाती है। इसके जरिए उत्पन्न विचार शारीरिक क्षमता की वास्तविक ऊर्जा को उद्वेलित करते हैं।

विश्वास दिमाग को संसाधनपूर्ण बनाता है और अपनी चक्की में सबको पीसकर एक में मिला देने की स्थिति में लाता है। यह किसी भी परिस्थिति में अनुकूल अवसरों को पहचानना सिखाता है, ताकि कोई भी व्यक्ति विश्वास के रास्ते को अपनाकर वे साधन हासिल कर ले, जहाँ हार या विफलता भी सफलता में तबदील होती नजर आने लगे।

आस्था व्यक्ति को प्रकृति के रहस्यों की गहराई का ज्ञान देती है। इससे प्राकृतिक नियमों में व्यक्त प्रकृति की भाषा समझी जा सकती है। इस रहस्योद्घाटन से यह समझ में आ जाता है कि मानवता की सेवा-भावना से हुए तमाम महान् आविष्कारों के पीछे कौन सी शक्ति, प्रेरणा काम कर रही थी। इससे सभी मानवीय संबंधों के समन्वय और उसमें समाहित मानवीय आजादी की भावना की भी बेहतर जानकारी मिलती है, जो अमेरिकी संविधान में उल्लिखित है।

जो कुछ व्यक्ति मन में सोचता है और पाना चाहता है, वह आस्था से हासिल करना संभव हो जाता है। अगर आपको विश्वास है तो अपने दिमाग को वहीं टिकाएँ, जो आपकी चाहत है। याद रखें कि विश्वास निश्चित लक्ष्य का बाहरी प्रदर्शन है, जहाँ कमजोर विश्वास जैसे मिथ्यापूर्ण घटक वास्तविक रूप नहीं ले पाते।

आस्था का पथ प्रदर्शक अपनी अंतर्चेतना है, जो शाश्वत विवेक से संचालित होती है और वही निश्चित लक्ष्य का रास्ता दिखाती है। यह इच्छा पैदा नहीं करता, बल्कि इच्छा पूरी करने के लिए सही निर्देश देता है।

आस्था का प्रदर्शन कैसे करें

1. आप जो चाहते हैं, उसे जानें और यह सुनिश्चित करें कि उसके बदले में आपको क्या देना है।
2. जब आप प्रार्थना के माध्यम से अपनी कामनाओं का ध्यान करें, तो अपनी कल्पना को यह देखने के लिए प्रेरित करें कि जो आप चाहते हैं, वह पहले से ही आपको हासिल है और यह मानकर आगे का काम करें कि आप उसे हासिल करने की शारीरिक क्षमता रखते हैं। (याद रहे, किसी चीज के हासिल होने की बात पहले अपने मन में बिठा लें।)
3. अंतर्चेतना से मिलनेवाले दिशनिर्देशों को ग्रहण करने के लिए अपना दिमाग हमेशा खुला रखें। जब भी आपको अपनी योजना में सुधार लाने या किसी नई योजना की ओर बढ़ने की प्रेरणा का झटका महसूस हो, बिना किसी संदेह या हिचकिचाहट के उस पर अमल करें।
4. जब अस्थायी हार की चपेट में आएँ, जो आप पहले भी आए होंगे, तो यह न भूलें कि व्यक्ति के विश्वास की परीक्षा कई रूपों में होती है और आपकी हार या असफलता शायद एकमात्र वही परीक्षा की घड़ी हो। इसलिए हार को उससे ज्यादा जोरदार प्रयत्न की प्रेरणा समझकर स्वीकारें और इस विश्वास के साथ आगे बढ़ें कि सफलता आपकी राह देख रही है।
5. कोई भी नकारात्मक मानसिक स्थिति विश्वास की क्षमता को नष्ट कर देगी और ऐसे नकारात्मक क्लाइमेक्स पर पहुँचा देगी, जहाँ सकारात्मक सोच को आसानी से जगह नहीं मिल पाती। आपके दिमाग में सबकुछ मौजूद है। इसलिए पहले दिमाग को अपने काबू में लें, ताकि विश्वास कमजोर करनेवाली अनचाही बातें जगह नहीं बना सकें। दिमाग को साफ और खुला रखें, इस प्रयास की जो भी कीमत चुकानी पड़े, उसकी चिंता न करें।
6. अपने विश्वास की शक्ति को लिखकर व्यक्त करने का अभ्यास करें और योग-ध्यान के क्रम में प्रतिदिन इसे एक बार दुहराएँ, जिसमें आपके जीवन के निश्चित प्रमुख लक्ष्य का स्पष्ट विवरण हो।
7. ऊपर वर्णित नौ बुनियादी इरादों से जहाँ तक संभव हो, अपने निश्चित प्रमुख लक्ष्य को जोड़ें।
8. उन लाभों और फायदों की सूची बना लें, जो आप निश्चित प्रमुख लक्ष्य हासिल करने के बाद पाने की उम्मीद करते हैं और दिन भर में कई बार मन में इसे याद करते रहें, ताकि आपका दिमाग पूरी तरह सफलता के प्रति सचेत रहें। (इसे सामान्यतया स्वतःस्फूर्त सलाह कहा जाता है।)
9. यथासंभव उन लोगों से दोस्ती बढ़ाएँ, जो आपके निश्चित प्रमुख लक्ष्य से हमदर्दी रखते हैं और उनसे ऐसा समन्वय स्थापित करें, ताकि वे हमेशा आपका हौसला बढ़ाते रहें।
10. एक भी दिन ऐसा न जाने दें, जो अपना निश्चित प्रमुख लक्ष्य हासिल करने की दिशा में एक ठोस कदम उठाए बगैर गुजरे। याद रखें बिना काम के विश्वास मृतक समान है।
11. ऐसे कुछ आत्मनिर्भर और बुलंद हौसलेवाले संपन्न व्यक्तियों को चुनें, जो आपके लिए

'पेसमेकर' की तरह हों तथा दिमाग को ऐसे साँचे में ढालें, ताकि उनसे आगे निकल जाने की भावना प्रबल हो। यह काम बिलकुल चुपचाप करें, किसी से भी अपनी इस योजना का जिक्र न करें। (डींगे हाँकना आपकी सफलता में बाधक है, क्योंकि विश्वास का आत्म-प्रेम या ऐसी बातों से कोई लेना-देना नहीं है।)

12. विश्वास मजबूत करनेवाली आत्मनिर्भरता का संदेश देनेवाली किताबों, मित्रों और दीवारों पर चिपकाए जानेवाले नीतिगत वाक्यों से अपने को घिरा रखें, जैसा अन्य लोग करते हैं—ताकि आपके अंदर तथा बाहर संपन्नता व उपलब्धियों का माहौल बना रहे। इस तरह की आदत के शानदार परिणाम सामने आएँगे।

13. अप्रिय परिस्थितियों का सामना करने से कभी न भागने/टालने की नीति अपनाएँ। धैर्य व साहस के साथ उनका मुकाबला करें और वैसी परिस्थितियों की काट तैयार करने में ठीक उसी समय से जुट जाएँ, जब वे आपका पीछा करें, फिर आप जानेंगे कि परिणाम की परवाह किए बगैर वैसी परिस्थिति का सामना करने के दौरान उन पर विजय पाने का आँकड़ा नौ-दस के अंतरवाले युद्ध जैसा है।

14. यह जानकर चलें कि जो कुछ भी महत्त्व का है, उसकी एक निश्चित कीमत है। विश्वास का मूल्य अन्य कीमती वस्तुओं से अलग है, क्योंकि यह इन साधारण निर्देशों पर अमल करने लायक शाश्वत जागरूकता पैदा करता है। आपका वाचवर्ड 'प्रयत्न और अमल' होना चाहिए।

सार्थक मानसिक सोच के विकास और उसे कायम रखने के लिए ये सब उपाय सुझाए गए हैं, जो सिर्फ विश्वास के अंदर छिपे हैं। इन उपायों को अपनाकर मानसिक और आर्थिक सुख हासिल किया जा सकता है। आप अपने दिमाग को इसी तरह से मानसिक खुराक दें।

इन कदमों पर चलकर दिमाग को आत्मा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति तक पहुँचाया जा सकता है।

"प्रत्येक व्यक्ति के दिमाग की चाबी क्या है," एमर्सन ने कहा, "उसका विचार है।"

यह कहना बिलकुल सही है। आज हर व्यक्ति कल के विचारों का परिणाम है। व्यावसायिक किस्से को स्वाहा करनेवाले शिकागो के विनाशकारी अगलगी कांड की सुबह मार्शल फील्ड वहाँ पहुँचे, जब एक दिन पहले उनका रिटर्न स्टोर अव्यवस्थित था। उसके आसपास स्थित बाकी सौदागरों का भी स्टोर स्वाहा हो गया था और वे आपस में सारी उम्मीदें छोड़ और पश्चिम की तरफ जाने की बातें कर रहे थे।

फील्ड ने अपने पास खड़े एक व्यापारी गुट को बुलाकर कहा—"भाइयो! आप लोगों को जो अच्छा लगे वही करें, लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मैं यहीं रहूँगा, कहीं अन्यत्र नहीं जाऊँगा। मेरे स्टोर के जलने का धुआँ आप जहाँ तक देख रहे हैं, वहाँ तक मेरा नया स्टोर बनेगा और वह दुनिया का सबसे बड़ा रिटेल स्टोर होगा।"

मि. फील्ड का विश्वास रंग लाया और उनका रिटेल स्टोर शिकागो में उसी जगह स्थापित हुआ, जो उनके विश्वास के अनुकूल दुनिया का सबसे बड़ा रिटेल स्टोर माना गया।

मानव प्रगति किसी दुर्घटना या किस्मत की बात नहीं है, बल्कि यह नियोजित विश्वास का परिणाम है, जो इस दर्शन के सत्रह सिद्धांतों के जरिए कंडीशनिंग किए गए दिमागों की विश्वास के प्रति अभिव्यक्ति का प्रतिरूप है।

अमेरिका एक ऐसा राष्ट्र है, जो विश्वास द्वारा स्थापित है और विश्वास पर टिका है। इसमें विश्वास को उत्प्रेरित करनेवाली सारी आवश्यक बातें समाहित हैं, ताकि विनम्र नागरिक अपने दिल और आत्मा की ऊँची-से-ऊँची महत्त्वाकांक्षाएँ पूरी कर सकें। इसलिए हमारा देश 'अवसर के देश' के रूप में जाना जाता है—दुनिया का सबसे धनाढ्य और स्वतंत्र देश!

आस्था ऐसी शक्ति है, जिसका विश्लेषण करने में वैज्ञानिक भी मात खा चुके हैं। लेकिन इसे अपनाने की विधि बड़ी आसान है और कोई भी साधारण सा व्यक्ति विनम्रतापूर्वक समझ सकता है। यह एक प्रकार से साझा संपत्ति है। इस प्रक्रिया से गुजरने के बारे में अभी तक उपलब्ध जानकारी सरल तरीके से बताई गई है और उसमें से एक भी ऐसीनहीं है, जो सामान्य-से-सामान्य व्यक्ति की समझ से परे हो।

सार्थक मानसिक वृत्ति का महत्त्व

विश्वास की शुरुआत लक्ष्य की निश्चितता से होती है, जिसके इर्द-गिर्द दिमाग घूमता रहता है, जो सार्थक मानसिक सोच के विकास द्वारा इसी के लिए तैयार किया गया है। निश्चित लक्ष्य को पूरा करने के लिए हाथ-पैर मारने का निर्देश देने की इसके अंदर जबरदस्त ताकत है। सारे शारीरिक एक्शन नौ बुनियादी इरादों में से एक या उससे अधिक द्वारा प्रेरित होते हैं। किसी के लिए भी अपनी कामना पूरी करने के क्रम में आस्था को विकसित कराना और उसका मन में स्थान बनाना कठिन नहीं है। किसी प्रेम करनेवाले पर गौर करें और देखें कि विश्वास से जोड़ने पर कितनी जल्द इस भावना को पंख लग जाते हैं। प्रेमी को अपनी मंजिल पाने की दिशा में किए गए प्रयत्नों में तीव्रता नजर आने लगती है। यही एक्शन प्रेम का श्रम बन जाता है, जो धनकुबेर बनने के बारह उपायों में से एक है। किसी को भौतिक सुखों के सामान जुटाने की ओर अपना दिल-दिमाग लगाने दें और देखें कि हर प्रयास कैसे प्रेम का श्रम बन जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए दिन के घंटे लंबे नहीं होते। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लंबे समय तक किया गया कठिन श्रम आत्म-अभिव्यक्ति के आनंद से उसे आसान लगने लगता है और पता ही नहीं चलता कि दिन कैसे गुजर गया, यह बारह धनकुबेर फॉर्मूलों में दूसरा है।

इस तरह आस्था द्वारा संचालित आत्म-अभिव्यक्ति से तैयार किए गए दिमागवाले व्यक्ति के लिए जीवन में 'कुछ नहीं' जैसी रुकावटों के बादल छँटते जाते हैं और सफलता अवश्यंभावी दिखाई देने लगती है। हर प्रयत्न को आनंद ताज पहनाता है। घृणा की ओर उन्मुख होने की बात दिमाग में नहीं आती। सारे मानवीय संबंधों में स्वाभाविक रूप से समरसता आ जाती है। उपलब्धि की आशा ऊँची उड़ान भरते हुए अपना प्रयत्न जारी रखती है, क्योंकि वह पहले से ही निश्चित लक्ष्य पर केंद्रित है और उसमें आत्म-अनुशासन ऐसे स्वाभाविक हो जाता है जैसे भोजन ग्रहण करना। खुले दिमाग के कारण कुछ भी असह्य नहीं लगता।

वह व्यक्ति लोगों को समझ लेता है, क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है। इसी प्रेम के बदले उसे लोगों की दुआएँ मिलती हैं। वह व्यक्ति डर नाम की कोई चीज नहीं जानता, क्योंकि उसके सारे भय विश्वास से उड़ जाते हैं। इससे बारह धनकुबेर फॉर्मूले व्यक्ति के अपने हो जाते हैं।

आस्था अपने सृष्टिकर्ता से मानवीय संबंध के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की अभिव्यक्ति है। भय यह दरशाता है कि बुराइयों का हम पर प्रभाव है, जो सृष्टिकर्ता के प्रति विश्वास के प्रभाव को कम कर देता है।

जीवन का सबसे बड़ा धन उन चार सिद्धांतों की समझ है, जिसका उल्लेख हमने किया है। ये चार महान् सिद्धांत के नाम से जाने जाते हैं, क्योंकि इसी पर आत्मा के अंदर मौजूद गुप्त खजाने और विचार शक्ति की मास्टर चाबी की आधारशिला टिकी है। इस चाबी को बुद्धिमानी से घुमाएँ और अपने आपको मुक्त महसूस करें।

वैसे कुछ लोग जिन्हें यह मास्टर चाबी घुमाने का रहस्य हाथ लगा—अपने अंदर से आनेवाली शक्ति को आखिर कोई कैसे पहचानेगा? यह सवाल किसी के मन में उठ सकता है, जहाँ ये शक्ति मौजूद है। देखें कि कैसे कुछ लोगों ने इसे जाना और उस कल्पवृक्ष का फल भी खाया। फ्रेंक मनसोलस नामक एक युवा पादरी के मन में काफी समय से एक नए टाइप का कॉलेज स्थापित करने की बड़ी इच्छा थी। वह अच्छी तरह जानता था कि चाहता क्या है, लेकिन उसमें रुकावट यह आ रही थी कि उसके लिए जरूरी दस लाख डॉलर नकद उसके पास नहीं थे। उसने अपने मस्तिष्क को इसके लिए तैयार करना शुरू किया कि दस लाख डॉलर की रकम कैसे जुटानी है। निश्चित प्रमुख लक्ष्य पर आधारित अपने ठोस निर्णय के तहत उस पादरी ने अपनी योजना को अमल में लाने की दिशा में पहला एजेंडा तैयार किया।

उसने एक उपदेशात्मक खबरनुमा सामग्री तैयार की, जिसका फड़कता हुआ शीर्षक दिया —'दस लाख डॉलर का मैं क्या करूँगा।' फिर अखबारों के जरिए ऐलान किया कि इस उपदेश पर वे अगले रविवार की सुबह संवाददाता सम्मेलन करेंगे। सम्मेलन समाप्त होने के बाद एक अजनबी उस युवा पादरी के पास आया, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। अजनबी ने युवा पादरी से कहा—मुझे तुम्हारा उपदेश अच्छा लगा, कल सवेरे मेरे कार्यालय आ जाओ, मैं तुम्हें दस लाख डॉलर दूँगा।

वे अजनबी थे, पैकिंग हाउस आर्मर एंड कंपनी के संस्थापक फिलिप डी. आर्मर, उनके उस तोहफे से देश की महान् संस्थाओं में से एक आर्मर स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी की शुरुआत हुई।

उस युवा पादरी के दिमाग में आखिर कौन सी बात थी, जिसने उसे अपने अंदर की गुप्त शक्ति से संपर्क करने को प्रेरित किया, जो हर मनुष्य के अंदर मौजूद है। कुछ तो बात अवश्य है और वह ऐसी है, जिसे पहचानना और उससे प्राप्त निर्देशों पर अमल करने की प्रेरणा दृढ़ विश्वास के जरिए ही संभव है। जन्म के थोड़े दिनों बाद ही हेलेन केलर ऐसी असाध्य बीमारी की शिकार हुईं कि वे नेत्रहीन, मूक और बधिर हो गईं। जीवन जीने के लिए जरूरी पाँच शारीरिक अवयवों में से दो के बिलकुल समाप्त हो जाने के बाद हेलेन केलर ने ऐसी कठिनाइयों का सामना किया, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। शारीरिक विकलांगता ने उन्हें इस हालत में ला दिया कि पूरी जिंदगी उनके बारे में लोग कुछ नहीं जान पाते। एक दयालु महिला की मदद से हेलेन केलर ने उस आत्मिक शक्ति से संपर्क शुरू किया और उसका इस्तेमाल किया। उसी महिला ने अंतर्चेतना की गुप्त शक्ति को पहचाना। हेलेन के मुताबिक, उस दयालु महिला ने कतिपय शर्तों का संकेत दिया, जिससे

उस शक्ति को जगाया जा सकता है।

"विश्वास!" सुश्री केलर ने कहा—"मैंने इसे अच्छी तरह समझा। यह बिलकुल सक्रिय है, निष्क्रिय नहीं। निष्क्रिय विश्वास कोई शक्ति नहीं है, ठीक बाध्य आँखों की तरह जो अंदर की चीज न देख सकती हैं, न खोज सकती हैं। सक्रिय विश्वास सच्ची आस्था है जिसमें इस कुतर्क के लिए कोई स्थान नहीं है कि ईश्वर ने अपनी संतानों के साथ छल करके उन्हें अँधेरे में रखा हुआ है। यह शक्ति निराशा को नकारती है और इसकी बदौलत कमजोर-से-कमजोर मरणशील व्यक्ति किसी जबरदस्त हादसे पर विजय पा सकता है।"

विश्वास के संबल ने सुश्री हेलेन केलर को एक्शन में ला दिया और अपनी जो जिंदगी उन्हें अकारथ लग रही थी, उसकी जगह नया उत्साहपूर्ण तथा उपयोगी जीवन उन्होंने शुरू किया।

मजबूत विश्वास ने उनकी लुप्त वाणी लौटाने की आशा जगाई और वे बोलना सीखने लगीं। अटूट विश्वास की बदौलत सुश्री केलर को यह महसूस हुआ कि अब जल्द ही उनकी आँखों की रोशनी लौट आएगी और वे सुन भी सकती हैं। इस तरह केलर ने साबित कर दिया कि कितनी भी बड़ी विकलांगता क्यों न हो, मन से ठान लेने पर उससे निजात पाने तथा उससे होनेवाली दिक्कतें कम करने के उपाय सामने आ जाते हैं।

यह उपाय अपने मन-मस्तिष्क के अंदर मौजूद गुप्त शक्ति सुझाती है और उस शक्ति की खोज हमें स्वयं करनी है और अकेले ही करनी पड़ेगी। इतिहास के पन्ने उलटने पर देखेंगे कि सभ्यता के विकास की कहानी में उल्लेखनीय मोड़ लानेवाले वैसे पुरुष और महिलाएँ हैं, जिन्होंने आस्था व विश्वास की मास्टर चाबी से अपने अंतरतम में छिपे इस गुप्त खजाने का दरवाजा खोला। उन पन्नों में आप यह भी देखेंगे कि बड़ी-बड़ी महान् उपलब्धियाँ हासिल करनेवाले महान् व्यक्तियों ने मन में दृढ़ विश्वास रखकर कैसी कठिन समस्याओं को आसान किया, जिनसे लड़ते हुए उन्हें लगता था कि अब इन संकटों से मोरचा लेने से कुछ नहीं मिलनेवाला है।

विश्वास से बँध जाने के बाद मन को एक बिंदु पर एकाग्र करना सरल हो जाता है। वही दिमाग का दरवाजा है, जिसके अंदर अपनी गुप्त शक्ति है। जो उस छिपे खजाने के अंदर घुसते हैं और उस शक्ति में अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का हल ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं, उन्हें कभी-कभी दिवास्वप्न देखनेवाला कह दिया जाता है, लेकिन साथ ही यह भी गौर करने लायक है कि वही लोग एक्शन में आकर अपने सपनों को साकार करके हेलेन केलर के विश्वास से ओत-प्रोत इस पंक्ति को जीवंत रखते हैं—'विश्वास, जिसे भलीभाँति समझा, सक्रिय है, निष्क्रिय नहीं।'

विश्वास का अंतरराष्ट्रीय प्रतीक

भलीभाँति समझी हुई आस्था की एक अन्य विशेषता है कि यह किसी आपात् स्थिति में प्रकट होती है, जो मनुष्य को अपनी विकट समस्या का निदान सामान्य वैचारिक शक्ति से उत्तर ढूँढ़ने को विवश करती है।

वैसी विपदा की स्थिति में ही हमारा ध्यान अपने अंदर की गुप्त शक्ति की ओर जाता है, जिसके सामने कोई प्रतिरोध टिक नहीं पाता। हमारे सामने इसका असाधारण उदाहरण है

म्यांमार (पुराना नाम बर्मा)में जनतंत्र बहाली आंदोलन की नेता औंग सान सू की, जो उसी आत्मिक शक्ति से प्रेरित होकर देश की राजनीति में उतरीं। उनके पिता औंग सान आधुनिक बर्मा के राष्ट्रपिता माने जाते हैं, जिनकी देश के आजाद होने के थोड़े ही दिनों बाद एक सैनिक तख्तापलट में हत्या कर दी गई। उस वक्त औंग सान सू की सिर्फ दो साल की थी। कुछ दिन बाद वे विदेश पढ़ने चली गईं। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ाई पूरी करके एक अंग्रेज विद्वान से सूकी ने विवाह किया और लंदन में ही बस गईं। दो बच्चों की माँ बनने के बाद जब वे स्वदेश लौटीं तो पूरे देश को निरकुंश सैनिक तानाशाही के कारण अराजक स्थिति में पाया। उन्होंने लोकतंत्र बहाली के लिए आवाज उठाई जिसे राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन मिला और देश की जनता उनके साथ हो गई।

सू की के जुझारू संघर्ष की दृढ़ता के चलते बढ़ती उनकी लोकप्रियता से सैनिक सरकार को अपनी कुरसी पर खतरा मँडराता महसूस हुआ। सत्ता परिवर्तन के वायदे पर चुनाव में सू की के राजनीतिक दल की भारी जीत के जवाब में सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया, फिर अपने घर में नजरबंद करके परिजन और मित्रों, परिचितों से मिलने-जुलने पर रोक लगा दी। इससे सू की न तो डरीं और न ही उनका मनोबल कमजोर पड़ा। अपनी अंदरूनी ताकत के प्रति आस्था की बदौलत वे अडिग रहीं और शांति व अहिंसा पर आधारित बुलंद हौसले का सम्मान नोबेल एकेडमी ने उन्हें शांति का नोबेल पुरस्कार देकर किया। सैनिक सरकार ने उन्हें नोबेल पुरस्कार लेने के लिए भी जेल से रिहा नहीं किया। जेल में रहते हुए सू की के अदम्य साहस का पूरी दुनिया ने लोहा माना।

संघर्ष के 18-19 साल सू की ने या तो जेल में अथवा अपने घर में नजरबंद रहकर गुजारे हैं। उस अवधि में उनके पति व बच्चों से मिलने के साथ-साथ टेलीफोन पर बात करने और पत्राचार तक पर रोक लगा दी गई थी।

सैनिक सरकार को आखिरकार झुकना पड़ा और वे जेल से रिहा होकर संसद् सदस्य भी बनीं, लेकिन लोकतंत्र बहाली की लड़ाई सू की ने छोड़ी नहीं है।

सू की ने भी जोखिम उठाया, उनकी जान पर खतरा हमेशा बना रहा, लेकिन आस्था व विश्वास ने उन्हें पराजित नहीं होने दिया और निहत्थी, अकेली महिला का सैनिक सरकार कुछ बिगाड़ नहीं पाई।

कुछ अन्य महान् नेताओं के भी रिकॉर्ड की चर्चा करते चलते हैं। उन लोगों ने भी अपने अंदर मौजूद गुप्त शक्ति की खोज करके उस ओर ध्यान लगाया और उसे अपनाकर खुद दर-किनार करने की कोशिशों का जवाब लोकतंत्र की हवा बहाकर दिया।

भय की जगह आस्था-पथ का चुनाव

इन महान् नेताओं की उपलब्धियों से हम परिचित हैं, हम उनके नेतृत्व के नियम-कायदे भी जानते हैं। वैसे नेताओं ने अपने देश के लिए जो परिश्रम किया और जिन परिस्थितियों में किया, उस योगदान के प्रति लोग उनके कायल हैं। एंड्रयू कार्नेगी की दूरदर्शी सोच के लिए भी हम उनके प्रति आभारी हैं, जिनके सौजन्य से लोगों ने व्यक्तिगत उपलब्धि का दर्शन जाना। इस दर्शन के माध्यम से इन नेताओं ने अमेरिका को दुनिया का सबसे धनी और मुक्त देश बनने में मदद पहुँचाई, लेकिन दुर्भाग्यवश हम में से सब इस बात को मान्यता

नहीं देते कि कैसी विकट परिस्थितियों में उन लोगों ने काम किया, किस तरह की कठिनाइयाँ उन लोगों ने झेलीं और कैसा था उनकी सक्रिय आस्था का जोश, जिसकी बदौलत उन्होंने अपना दायित्व पूरा किया। इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जो उपलब्धियाँ उन लोगों ने हासिल कीं, उसी अनुपात में वैसी आपात् स्थितियाँ उनके सामने आई होंगी। उनके संघर्ष से जिन्हें ज्यादा लाभ मिलता, उन्हीं लोगों ने उनका विरोध किया होगा। सक्रिय आस्था की कमी के कारण ऐसा सोचनेवाले हमेशा कुछ भी नया या पहले से अलग देखने पर उसके बारे में संदेह करते और उससे पीछे हटने की बात करने लगते हैं।

जीवन की आपात्स्थितियाँ प्रायः लोगों को सड़क पर ला देती हैं, जहाँ उन्हें मजबूरन अपना रास्ता चुनना होता है। एक सड़क पर आस्था और दूसरी सड़क पर भय चिह्नित किया हुआ रहता है। वह क्या चीज है, जो ज्यादातर लोगों को भय-मार्ग की ओर ले जाती है? इसका चुनाव व्यक्ति की मानसिक मनोवृत्ति पर निर्भर है।

आस्था का मार्ग पकड़नेवाले व्यक्ति का दिमाग भरोसे से भरा रहता है और वह थोड़े ही समय में खुद को अवसर के अनुकूल ढाल लेता है। रोजमर्रा के अनुभव के आधार पर वह तत्काल साहसिक निर्णय लेता है। भय-मार्ग की ओर कदम बढ़ानेवाले लोग दिमाग को इस तरह कंडीशन करने की ओर ध्यान नहीं देते, ताकि सार्थकता ज्यादा बलवती हो।

वाशिंगटन में एक व्यक्ति पहिए वाली कुरसी पर बैठकर हाथों में एक टिन कप और पेंसिलों का गुच्छा लिये भीख माँग रहा था, ताकि किसी तरह जीवनयापन हो सके। भिक्षाटन के एवज में तर्क यह देता था कि उसके पैर बेकार हो चुके हैं। उस भिखारी के दिमाग पर कोई असर नहीं पड़ा था और वह बाकी मामलों में मजबूत तथा स्वस्थ था, लेकिन उसके चुनाव ने उसे भय-मार्ग की ओर खींच लिया, जब वह एक भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गया और उसके दिमाग में यह बात बैठ गई कि वह अब कोई काम करने योग्य नहीं रहा।

उसी शहर के दूसरे हिस्से में पैरों से लाचार एक अन्य विकलांग के सोचने का ढंग कुछ और था। वह जब सड़क पर खड़ा हुआ और चुनाव करने की मजबूरी सामने आई तो उसने आस्था का मार्ग चुना। वह रास्ता उस विकलांग को सीधे ह्वाइट हाउस ले गया और अमेरिका के लोगों ने उसे देश के सर्वोच्च पद पर बिठाया। मैं मशहूर राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट की बात कर रहा हूँ। लँगड़ेपन की लाचारी से शारीरिक क्षमता की जिस भावना ने उनके मन में थोड़ी देर के लिए कमजोरी पैदा की, उसे दिमागी मजबूती ने दृढ़ आत्मविश्वास से निकाल बाहर कर दिया। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड है कि अपने दिमाग का इस्तेमाल करके उन्होंने मजबूत इच्छाशक्ति हासिल की, जिसने विकलांगता को उनके रास्ते का रोड़ा नहीं बनने दिया। रूजवेल्ट का नाम अमेरिका के सबसे सक्रिय राष्ट्रपतियों की सूची में शामिल है।

इन दो व्यक्तियों के गंतव्य स्थानों में बहुत बड़ा फर्क है, लेकिन इस फर्क के कारणों के चक्कर में न पड़ें, क्योंकि यह पूरी तरह मानसिक मनोवृत्ति का अंतर है। एक व्यक्ति ने भय को अपना पथ प्रदर्शक बनाया, दूसरे ने आस्था और विश्वास को चुना।

आप जब उन परिस्थितियों का विश्लेषण करेंगे, जो किसी को ऊँचाई तक ले गईं और

किसी को गरीबी की ओर ढकेल दिया, तो पाएँगे कि लगभग चुनाव का ही खेल है, जिसका दारोमदार उनके सोचने का ढंग है। ऊँचाईवाले स्टेशन पर पहुँचनेवालों ने आस्था का—आकाश की ओर ले जानेवाला मार्ग चुना। अन्य लोगों ने गर्त में ले जानेवाला निचला भय-मार्ग पसंद किया। उन्होंने अपनी शिक्षा, व्यक्तिगत हुनर को ज्यादा तवज्जो नहीं दी और न ही इस संबंध में गंभीरता से सोचा।

थॉमस अल्वा एडीसन के शिक्षक ने मात्र तीन ही महीने बाद उन्हें अपने माँ-पिताजी के पास यह नोट लगाकर भेज दिया कि यह कुंद दिमाग का है और इसे पढ़ाया नहीं जा सकता। एडीसन के बारे में यह धारणा बनाने के लिए इतना काफी था कि यह जीवन में कुछ नहीं कर पाएगा और काम या नौकरी करने लायक बनना इसके वश का नहीं। यह सिलसिला कुछ दिनों तक चला भी, जो सबके लिए निराशाजनक रहा। एडीसन को जीवनयापन के लिए वैसी ही नौकरी करनी पड़ी। उन्होंने अखबार बेचे, केमिकल्स की दुकानों में भी काम किया और वे निर्माण कार्य भी करते थे। उनके बारे में प्रचार हो गया कि यह हरफनमौला है, लेकिन दक्षता किसी भी क्षेत्र में नहीं है। उसके बाद एडीसन के दिमाग में कुछ ऐसी बात उपजी, जिसने उन्हें दुनिया में अमर बना दिया। कुछ विचित्र प्रक्रिया के जरिए एडीसन ने अपने अंदर की गुप्त शक्ति खोजी और उस पर प्रभुत्व स्थापित करके संगठित किया। एडीसन ने यह बात कभी विस्तार से नहीं बताई कि वह विचित्र प्रक्रिया क्या थी और कैसी थी, जो उन्होंने गुप्त शक्ति को जगाने के लिए अपनाई। अचानक वह कुंद दिमागवाला व्यक्ति हर समय, हर युग का असाधारण बौद्धिक क्षमतावाला बन गया।

आज हम जहाँ कहीं भी बिजली की रोशनी जलते देखते हैं, संगीत के रिकॉर्ड सुनते हैं या कोई फिल्म देखते हैं, इस बात को हमें याद करना चाहिए कि हम उसी अंदर की गुप्त शक्ति की करामात का लाभ उठा रहे हैं, जो एडीसन के माध्यम से उपलब्ध हो सकी। हमें इस बात के लिए शर्मिंदा भी होना चाहिए कि उपेक्षा या अरुचि के कारण हम इस महान् शक्ति का उचित उपयोग नहीं कर रहे हैं।

इस गुप्त शक्ति की एक अजीबोगरीब खासियत यह भी है कि जो कुछ हासिल करने की बात मन में बार-बार उठती है, उसे पाने में इससे मदद मिलती है। यों कहें कि इस अंदर की शक्ति से दिलो-दिमाग में कोलाहल मचानेवाले विचार वास्तविकता में बदल जाते हैं।

चाहे कोई किसी भी व्यवसाय या नौकरी में क्यों न हो, सब पर यह दर्शन एक साथ लागू होता है। लगभग हर क्षेत्र में ऐसे फर्क देखने को मिलते हैं कि वे आस्थावान लोग ही ज्यादा ऊँचाई तक पहुँच पाते हैं और उनके चारों तरफ के भयग्रस्त अन्य लोग जस-के-तस ही रह जाते हैं।

सफल लोगों को आमतौर पर भाग्यशाली कहा जाता है। हाँ, निश्चय ही वे भाग्यशाली हैं, किस्मतवाले हैं, लेकिन आप उनसे संबंधित तथ्यों पर गौर करेंगे तो पता चलेगा कि उनकी किस्मत तो अपने अंदर मौजूद गुप्त शक्ति है, जिसे सार्थक मानसिक मनोवृत्ति के जरिए उन्होंने जगाया। मन में ठान लिया कि भय और आत्म-सीमितता का मार्ग छोड़कर आस्थावाले मार्ग पर चलना है। अंदर से आनेवाली शक्ति तक पहुँचने में कोई रुकावट स्थायी नहीं होती।

यह शक्ति हार या असफलता को बड़ी चुनौती में बदल देती है। भय और संदेहवाली

स्वयंपोषित भावना को समाप्त कर देती है। उससे भी बड़ी बात याद रखनेवाली यह है कि यह शक्ति किसी के रिकॉर्ड में ऐसा कोई काला धब्बा नहीं रहने देती, जो मिटाया नहीं जा सकता हो। आस्था व विश्वास के जरिए पहचानी जानेवाली यह अंदर की ताकत रोज व्यक्तिगत उपलब्धि का एक नया अवसर लेकर आती है और बीते कल की किसी असफलता की चिंता दूर कर देती है।

इस रास्ते में बाजी या लालच के लिए कोई स्थान नहीं है और यह मन की इस धारणा को तरजीह नहीं मिलने देती कि कोई इसलिए हमेशा गरीब रहेगा, क्योंकि वह गरीबी में पैदा हुआ है।

अंदर की शक्ति के माध्यम से लाचार बनानेवाली आदतें लगातार अपने आप नकारात्मक से सकारात्मक में परिणत होती रहती हैं। आस्था यह नहीं देखती कि पहले क्या हुआ, किसी कड़े और थोपे गए कानून का भी अनुसरण नहीं करती, सिर्फ व्यक्ति को उस शानदार हाईवे पर ले जाती है, जहाँ व्यक्ति की आजादी तथा मुक्ति है।

प्रसिद्ध कवि आर.एल. शार्पे ने इसी से प्रेरित होकर जो कविता 'औजारों का थैला' लिखी, उसकी कुछ पंक्तियों पर गौर कीजिए—

"क्या यह अजीब नहीं है कि राजकुमार और सम्राट्
उनके दरबारी अँगूठियों से भरी उँगलियाँ
पिरोए रहते हैं, जहाँ धूल है ही नहीं।
और हमारे-आपके जैसे साधारण मजदूर
इस सारे शाश्वत जगत् के निर्माता हैं।
इनमें से प्रत्येक को एक नियमावली दी जाए—
पत्थर का टुकड़ा और औजारों का थैला
और हर कोई उसे समय के अनुकूल आकार दे—
एक बड़ा टुकड़ा या चिकना किया हुआ पत्थर।"

तलाश तब तक जारी रहे, जब तक अपने अंदर की शक्ति की झलक न दिखाई दे जाए। जब लोग खोज लेंगे तो वही वास्तविक आत्म होगा, जो अन्य आत्मों को जीवन के प्रत्येक अनुभवों के लिए उपयोगी बनाता है। उसके बाद चाहे आप चूहेदानी बनाएँ, किताब लिखें, उपदेशक बनें या कुछ भी करें, लोग आपके दरवाजे पर दस्तक देने आएँगे। आपके काम का लोहा मानेंगे और उसका उचित पारितोषिक भी देंगे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं और आपकी पहले की असफलताएँ किस तरह की और क्या थीं।

पिछली असफलताओं का क्या करें?

वही करें, जो अमेरिकी जीवन-शैली को एक नई दिशा देनेवाले एडीसन, हेनरी फोर्ड, राइट ब्रदर्स और एंड्रयू कार्नेगी जैसे महान् अमेरिकी नेताओं ने किया। उनके सामने एक के बाद एक असफलताएँ आईं, लेकिन उन्हें उन लोगों ने असफलता की जगह 'क्षणिक हार' के नाम से पुकारा। कठिन परिस्थिति सामने आने पर कोई व्यक्ति पीछे हट सकता है।

अस्थायी हार की स्थिति में कोई भी व्यक्ति अपने आप पर झुँझलाकर अपने ही आत्म के प्रति खेद महसूस कर सकता है, लेकिन आत्मग्लानि वैसे व्यक्तियों के स्वभाव का हिस्सा

नहीं है, जिसे दुनिया ने महान् माना है।

अंदर की शक्ति तक पहुँच पाना अपने ऊपर दया दिखाकर संभव नहीं है। यह भय और कायरता से हासिल नहीं की जा सकती। यह ईर्ष्या और नफरत से प्राप्त नहीं की जा सकती। यह लोभ लालच से भी हासिल नहीं हो सकती। न ही आपके अन्य आत्म से ऐसी नकारात्मक सोचों से निजात पाने में कोई मदद मिल सकती है। इससे छुटकारा पाने के लिए वैसा खुला और साफ दिमाग चाहिए, जिसमें नकारात्मक सोच का प्रवेश ही न हो। वैसी दिमागी स्थिति सिर्फ आस्था के माध्यम से ही हासिल की जा सकती है। यह कोई नया उपलब्धि दर्शन नहीं है, जिसकी दुनिया को जरूरत है, बल्कि यह पुराने और आजमाए हुए सिद्धांतों के प्रति समर्पण है, जो अंदर की शक्ति पथ के राही को डिगने नहीं देता। ये वो शक्ति है, जो पहाड़ को हिलाने की हिम्मत देती है।

महान् नेताओं का जीवन के हर क्षेत्र में साथ देनेवाली और हर पीढ़ी को संचालित करनेवाली वह शक्ति आज भी उपलब्ध है। दृष्टि और आस्थावाले लोगों ने अज्ञानता, अंधविश्वास और डर जैसी हावी होनेवाली बाधाओं को पीछे ढकेलकर दुनिया को वह सारा कुछ दिया, जिसे हम सभ्यता के नाम से जानते हैं।

यह शक्ति न तो कोई रहस्य है, न चमत्कार; यह हमारे रोजमर्रा के कामकाज के माध्यम से ही अपना काम करती है। इसकी अनुभूति वैसी हर सेवा से होती है, जो मानव कल्याण के लिए अर्पित की गई हो।

इस शक्ति को कई नामों से पुकारा जाता है, पर इसकी प्रकृति कभी नहीं बदलती। नाम कोई भी हो, उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। इसके काम करने का एक ही माध्यम है और वह है दिमाग। इसके लक्षण—विचार, भावनाएँ, योजनाएँ और जीवन के लक्ष्य व्यक्त करते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात इसके विषय में यह कही जा सकती है कि यह वैसी ही मुक्त है, जैसी हमारी साँसों में जानेवाली वायु और इसमें संपूर्ण ब्रह्मांड की तरह अवसरों तथा आयामों की प्रभुता है।

❑

10

कॉस्मिक हैबिटफोर्स के नियम

"हैबिट या आदत—एक तार है, जिसके धागे हम रोज बुनते हैं और अंत में इसे तोड़ नहीं सकते।"

—होरेस मान

सम्मेलन के अंतिम दिन उसमें भाग लेनेवालों से थोड़ा सवेरे ही जुटने को कहा गया। विशिष्ट भद्र व्यक्ति (जिनका काम भागीदारों के बीच चर्चा में नहीं आता था।) ने श्रोताओं से वायदा किया कि आज का व्याख्यान, अभी तक जो कुछ भी वे बोल चुके हैं, उससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। कई लोगों को इस बात का पूरा यकीन नहीं हुआ और वे अब तक सुनी बातों और उससे संबंधित नोट्स के आधार पर पहले की तरह अनुमान लगाने लगे कि आज के विषय में नया तथा ज्यादा महत्त्वपूर्ण क्या होगा।

बहुत से भागीदारों ने सोच लिया कि आज के दिन वक्ता अपनी उस रहस्यमय मास्टर चाबी को परत-दर-परत उजागर करेंगे, जिसके बारे में पूरे हफ्ते चर्चा चली है। सब-के-सब धीरे-धीरे अपनी सीटों की ओर बढ़े, क्योंकि सुबह के समय, उतने प्रातः ज्यादा उत्साहित होने का मूड भाइयों का नहीं बन रहा था। सीटों पर बैठते ही सभी ने देखा कि वक्ता के माइक के पास एक रंगीन तख्ती विशाल बोर्ड के साथ लटकाकर रखी गई है। वह ब्रह्मांड की तसवीर थी और कई लोगों ने सोचा कि आज का पाठ विज्ञान पर केंद्रित होगा, लेकिन जब विशिष्ट वक्ता ने सामने खड़े होकर बोलना शुरू किया, तो श्रोताओं के मन में उठनेवाले सारे सवाल उड़ गए।

'अब मैं प्रकृति के सबसे बड़े नियम—कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम के विश्लेषण पर आता हूँ!'

संक्षेप में इसे यों परिभाषित किया जा सकता है कि कॉस्मिक हैबिटफोर्स का नियम वह तरीका है, जो हमारी सारी आदतों को ऐसे नियत करता है, जो गति में आने के बाद स्वचालित ढंग से काम करने लगते हैं। मानवीय आदतें ब्रह्मांड की आदतों से मिलती-जुलती हैं।

सारे लोग जो भी हैं और जहाँ कहीं भी हैं, उसका मूल कारण उनके विचारों तथा कार्यकलापों की स्थापित आदतें हैं। इस पूरे दर्शन का उद्देश्य व्यक्ति की आदतों को ऐसा बनाना है, जो उन्हें यह बताएँ कि वे कहाँ हैं और जीवन में क्या करने की इच्छा रखते हैं।

हर वैज्ञानिक और कई साधारण व्यक्ति भी जानते हैं कि पूरे ब्रह्मांड में तत्त्व तथा ऊर्जा के बीच प्रकृति सही संतुलन बनाकर रखती है। पूरा ब्रह्मांड एक निर्धारित नियम-कायदों और आदतों से संचालित होता है, जिसे किसी भी मानवीय प्रयत्न से बदला नहीं जा सकता, न ही इसकी गति में कोई व्यवधान आता है।

ब्रह्मांड के पाँच जाने-माने ध्रुव सत्य हैं—

1. समय

2. अंतरिक्ष
3. ऊर्जा
4. पदार्थ और
5. विवेक।

ये सब एक साथ मिलकर अन्य सच्चाइयों को निश्चित आदतों पर आधारित व्यवस्था के अनुकूल निर्धारित नियम-कायदों से संभावित आकार प्रदान करते हैं।

ये सारे प्रकृति के भवन ब्लॉक हैं, जिनके जरिए प्रकृति बालू के एक कण के साथ-साथ अंतरिक्ष में चमकनेवाले छोटे-बड़े तारे भी बनाती है और अन्य चीजें भी बनाती है, जो मनुष्य जानता है और जो बातें मनुष्य के दिमाग में आ सकती हैं। ये सारी जानी हुई वास्तविकताएँ हैं, लेकिन हर किसी के पास न तो इतना समय है और न यह जानने में दिलचस्पी है कि कॉस्मिक हैबिटफोर्स ऊर्जा का विशेष इस्तेमाल है, जिसके जरिए प्रकृति परमाणु तथा पदार्थ के बीच संबंध कायम रखती है। तारों और नक्षत्रों को गति इसी से मिलती है। कोई नहीं जानता कि ये तैरते हुए कहाँ से आते हैं और कहाँ चले जाते हैं। पूरे वर्ष के मौसम, दिन और रात, स्वास्थ्य और बीमारी, जीवन और मृत्यु सब प्रकृति की देन हैं। कॉस्मिक हैबिटफोर्स वह माध्यम है, जिसके जरिए सारी आदतें और सारे मानवीय संबंध विभिन्नताएँ लिये हुए एक स्थायी गति से चलते हैं। इसी के माध्यम से विचार कार्यरूप में परिणत होकर व्यक्ति की इच्छाओं और लक्ष्यों को पूर्णता प्रदान करता है।

ये सारे यथार्थ पूरी तरह प्रमाणित हैं। कोई भी उस क्षण को पवित्र मान सकता है, जब इस सत्य को खोज लेता है कि मानव सिर्फ एक उपकरण है, जिसके जरिए बड़ी शक्तियाँ खुद को प्रस्तुत करती हैं। यह पूरा दर्शन किसी को भी इस महत्त्वपूर्ण खोज की ओर ले जाता है।

इससे प्राप्त ज्ञान का उपयोग कोई भी ब्रह्मांड की अदृश्य शक्तियों के साथ तालमेल करके, स्वयं को बीच में रखकर कर सकता है। यह उपाय उसे निश्चित सफलता की ओर ले जाएगा। इस खोज का क्षण किसी भी व्यक्ति को आसानी से सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी प्रदान कर सकता है।

कॉस्मिक हैबिटफोर्स प्रकृति का नियंत्रक है, जिसके माध्यम से प्रकृति के सारे नियमों में सामंजस्य बना रहता है। इसी से संगठित और एक लीक पर व्यवस्था चलती है, इसीलिए यह सारे प्राकृतिक नियमों से बड़ा है। हम देखते हैं कि ग्रह और नक्षत्र इस तरह से घूमते हैं, ताकि खगोल विज्ञानी उनकी दशा-दिशा तथा आपसी संबंध के बारे में आज के साथ-साथ अगले कई वर्षों तक की निश्चित भविष्यवाणी कर सकें।

हम देखते हैं कि घड़ी की तरह नियमित रूप से ऋतुएँ आती-जाती हैं। हम जानते हैं कि पीपल का पेड़ एक अंकुर से निकलता है। अपने पूर्वज के बीज से अनानास का ही पेड़ उगता है। अनन्नास के बीज से पीपल का पेड़ नहीं निकलता। हम जानते हैं कि ऐसा कुछ भी नहीं उपज सकता, जिसका पहले से कोई उसी से मिलता-जुलता बीज न बोया गया हो। ठीक वैसे ही विचारों की प्रकृति है। दिमाग में उत्पन्न होनेवाले विचारों के परिणाम उसी तरह से सामने आएँगे, जैसी उनकी प्रकृति होगी। यह बिलकुल निश्चित है, जैसे आग से ही तो धुआँ निकलता है।

कॉस्मिक हैबिटफोर्स ऐसा माध्यम है, जिसके जरिए प्रत्येक जीवधारी को हर हाल में उस पर्यावरणीय प्रभाव में आना ही है, जिसमें वह साँस लेता है और गतिशील होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सफलता और ज्यादा सफलता को तथा विफलता और ज्यादा विफलता को आकर्षित करती है, यह लंबे समय से जाना हुआ सत्य है, लेकिन इस अजीबोगरीब वास्तविकता का कारण कम ही लोग समझ पाए हैं। यह जानी हुई बात है कि असफल व्यक्ति वैसे लोगों के साथ नजदीकी स्थापित करके सफलता हासिल कर सकते हैं, जो सिर्फ सफलता को लक्ष्य बनाकर ही कोई चीज सोचते हैं और करते हैं।

हर कोई यह नहीं जानता कि यह बात इसलिए सही है, क्योंकि कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम की सफलता से संबद्ध संचेतना सफल व्यक्ति के दिमाग से निकलकर उस असफल व्यक्ति के दिमाग में प्रवेश कर जाती है, जो सफल व्यक्ति के रोजमर्रा के कार्यकलापों से निकटता स्थापित कर लेता है।

जब दो दिमाग एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, तो उनके बीच एक तीसरा दिमाग उसी संपर्क से पैदा होता है, जो उन दोनों के दिमागों से ज्यादा तेज और शक्तिशाली बनकर उभरता है। अधिकांश सफल व्यक्तियों ने इस सच्चाई को खुलकर स्वीकारा है कि जिनकी सार्थक मानसिक मनोवृत्ति को उन्होंने चेतन या अवचेतन अवस्था में अपनाया।

कॉस्मिक हैबिटफोर्स न तो दिखाई देता है, न ही उसमें कोई आवाज है, जिसका अनुभव पाँच शारीरिक चेतनाओं के जरिए किया जा सकता हो, इसलिए इसे व्यापक रूप से मान्यता नहीं मिली है। ज्यादातर लोगों ने प्रकृति की अव्यक्त शाश्वत शक्तियों को समझने की कोशिश नहीं की, न ही सापेक्ष सिद्धांतों में ही कोई दिलचस्पी दिखाई, जबकि ये शाश्वत और सापेक्ष सिद्धांत ब्रह्मांड की वास्तविक शक्तियाँ हैं। यही हर चीज का वास्तविक और ठोस आधार है। कॉस्मिक हैबिटफोर्स के कार्यकारी सिद्धांतों को समझ लेने के बाद आपको रॉल्फ वाल्डो एमर्सन के 'मुआवजे' पर लिखे गए लेख का विश्लेषण करने में कोई दिक्कत नहीं होगी, जिसे लिखने के दौरान वे कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम के वशीभूत होकर अपनी कुहनी खुजला रहे थे।

सर इसाक न्यूटन ने इस नियम की गहराई को जाना, जब उन्होंने शाश्वत गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत प्रतिपादित किया। अपनी खोज पूरी करने के बाद न्यूटन ने इस नियम के जरिए दुनिया को बताया कि पृथ्वी, अंतरिक्ष और सारे ग्रह नक्षत्र किस तरह कायदे से आपस में जुड़े हैं। इसी नियम ने मानव समुदाय को एक-दूसरे से विचारों की आदत के माध्यम से जोड़ रखा है।

हैबिटफोर्स का विवरण

'हैबिटफोर्स' शब्द आत्म-व्याख्यात्मक है। यह ताकत द्वारा स्थापित आदतों के जरिए काम करता है। हर व्यक्ति स्वयं इसे पैदा करता है और धरती से जुड़ा अपना मिशन उसी कॉस्मिक हैबिटफोर्स के सीधे प्रभाव से पूरा करता है, जिसे अंदर की 'चेतना' कहा जाता है।

तमाम जीव-जंतुओं में एक मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जिसे आदतों के मामले में अपने हिसाब से चुनाव की सुविधा है और वह इसे अपने विचारों के अनुरूप फिक्स कर सकता है। यह एकमात्र ऐसी सुविधा है, जिस पर हर मनुष्य को पूर्ण नियंत्रण का अधिकार प्राप्त

है।

मानव अपने ही द्वारा थोपी गई भय, संदेह, ईर्ष्या, लालच और गरीबी जैसी नकारात्मक सोचों के संदर्भ में सोच सकता है। कॉस्मिक हैबिटफोर्स उसे ठीक उसी अनुपात में सकारात्मक ढाँचे में ढाल देता है। अगर कोई व्यक्ति धनवान् बनने और प्रभुता की बात सोचता है, तो यह हैबिटफोर्स उसी के अनुरूप हाथ-पैर हिलाने की वैचारिक स्थिति में ला देता है। इस तरह कोई भी व्यक्ति विचारों को सार्थक स्वरूप देकर किस्मत को अपने हिसाब से बदल सकता है।

एक बार जब ये सारे विचार एक निश्चित आकार ग्रहण कर लेते हैं, तो वह कॉस्मिक हैबिटफोर्स अपने अधीन आ जाता है और वैसी आदतें जीवन का स्थायी हिस्सा बन जाती हैं, फिर वे तब तक नहीं बदलतीं, जब तक कि उससे मजबूत और अलग किस्म की आदतें उसकी जगह न ले लें। अब हम तमाम वास्तविकताओं में से सबसे अलग और महत्त्वपूर्ण सत्य पर विचार कर रहे हैं। यह ऐसा तथ्य है, जिसकी ओर सफल व्यक्तियों का ध्यान कभी-कभार ही जाता है। प्रायः वे तब तक इस विषय पर नहीं सोचते, जब तक उनके साथ कोई दुखद घटना न हो जाए और किसी आपातस्थिति का सामना न करना पड़ जाए। ये वो स्थिति होती है, जब सफल व्यक्तियों को अपनी आत्मा के अंदर झाँकना पड़ता है और उन्हें अपने सामने वैसी परिस्थिति नजर आने लगती है, जिसे हम 'असफलता' कहते हैं। इस विचित्र ऊहापोह का कारण वे लोग तुरंत जान जाते हैं, जो कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम समझते हैं। विपदाएँ और दुखद घटनाएँ रोजमर्रा की जिंदगी की स्थापित आदतों को छिन्न-भिन्न कर देती हैं, जो कमोबेश विफलता के लिए जिम्मेदार होती हैं, फिर कॉस्मिक हैबिटफोर्स की पकड़ कमजोर पड़ जाती है और 'विफलताएँ' नई तथा अच्छी आदतें अपनाने को प्रेरित करती हैं।

युद्ध के परिणामों में यही नजारा देखने को मिलता है। जब देश और बड़ी संख्या में युद्ध के लिए एकजुट लोग इस तरह आपस में जुड़ते हैं, जिसका प्रकृति की नैसर्गिक योजना के साथ तारतम्य नहीं होता, तो उन्हें मजबूरन अपनी आदतें छोड़नी पड़ती हैं, चाहे वह युद्ध के माध्यम से हो अथवा उसी के समान उपद्रव मचानेवाली अन्य परिस्थितियाँ हों। व्यवसाय का चौपट होना या महामारी का फैलना भी हो सकता है, ताकि प्रकृति की अनवरत, शाश्वत प्रक्रिया के अनुकूल नई योजना की शुरुआत हो।

इसका सारांश युद्ध को उचित ठहराना नहीं है, बल्कि मानव समुदाय को उस कानून की अनभिज्ञता का आरोपी साबित करना है, जो अगर समग्र रूप से समझा जाए और उसका सम्मान किया जाए, तो युद्ध अनावश्यक तथा असंभव हो सकता है।

मानवीय संबंधों में तालमेल नहीं हो पाने के कारण ही युद्ध की नौबत आती है। नकारात्मक विचारों के कारण तालमेल नहीं होता और यह तब तक बढ़ता जाता है, जब तक समग्र रूप से नहीं सोचा जाता। किसी भी देश का जोश और उत्साह लोगों की वैचारिक आदतों का मिलाजुला संगम है। वही बात व्यक्ति विशेष पर भी लागू होती है। यहाँ भी व्यक्ति की सोच उस पर हावी वैचारिक आदतें तय करती हैं। अधिकांश व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में जीवन भर लड़ते ही रहते हैं। उनके युद्धरत रहने का कारण उनकी अपनी परस्पर विरोधी विचार और भावनाएँ हैं। वे अपने पारिवारिक संबंधों के कारण

लड़ते हैं और व्यावसायिक तथा सामाजिक सरोकार भी लड़ने के कारण होते हैं। इस सत्य को स्वीकारें और आप वास्तविकता समझ जाएँगे, जो स्वर्णिम नियम के मुताबिक जिंदगी जीनेवालों के लिए उपलब्ध हैं। यह महान् नियम आपको व्यक्तिगत लड़ाई की नौबत लानेवाली परस्पर विरोधी भावनाओं से मुक्त रखेगा।

इसे स्वीकारने के बाद आप निश्चित प्रमुख लक्ष्य के असली उद्देश्य और लाभ भी समझ जाएँगे। एक बार अगर वह उद्देश्य किसी की वैचारिक आदतों की चेतना में फिक्स हो जाए, तो उसे कॉस्मिक हैबिटफोर्स अपने कब्जे में ले लेगा और एक ठोस निष्कर्ष पर पहुँचा देगा। यह काम आपके पास मौजूद साधनों के जरिए ही हो जाएगा।

कॉस्मिक हैबिटफोर्स यह नहीं देखता कि आपकी चाहत क्या है और किसी की वैचारिक आदतें सकारात्मक हैं या नकारात्मक, लेकिन यह व्यक्ति की वैचारिक आदतों पर ही काम करता है और अनिर्णय या किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति को ऐसे स्थायी ढाँचे में ढाल देता है, जो उसे अपनी शारीरिक क्षमता के अनुकूल एक्शन में आने को प्रेरित करे।

अवाम की वैचारिक ताकत

हैबिटफोर्स व्यक्तियों के साथ-साथ समूहों और अवाम की भी वैचारिक आदतें फिक्स करता है। व्यक्तियों पर हावी विचारों की प्रवृत्ति के आधार पर यह तय होता है। उदाहरण के तौर पर देखिए कि प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होने के तुरंत बाद पूरी दुनिया अगले युद्ध की बात करने लगी और तब तक यह विचार लोगों के दिलो-दिमाग पर हावी रहा, जब तक दूसरा विश्वयुद्ध शुरू नहीं हो गया।

उसी तरीके से बीमारी की महामारी विचारों में पनपती और फैलती है। अतीत में एक नगर के स्वास्थ्य विभाग ने लाल पत्रवाला खास संकेत भेजकर लोगों को विभिन्न बीमारियों की चेतावनी देनी शुरू कर दी। वह खास महामारी इस तरह के विचार की अगली परिणति थी। इसका पालन निश्चित था। यहाँ भी वही नियम उस व्यक्ति के साथ लागू होता है, जो बीमारी के बारे में सोचता और बात करता है। पहले यह व्यक्ति काल्पनिक बीमारी का शिकार माना जाता है, लेकिन जब वह आदत बन जाती है तो बीमारी उसे करीब से जकड़ लेती है और सामान्यतः प्रत्यक्ष रूप से सामने आ जाती है।

इसका कारण है कॉस्मिक हैबिटफोर्स। यह सही है कि कोई विचार जब बार-बार दिमाग में आता है तो तत्काल वह मनुष्य को तदनुरूप शारीरिक एक्शन की ओर प्रेरित करने लगता है, चाहे जो भी उपलब्ध व्यावहारिक साधन हों।

लोगों के विवेक पर यह एक दुखद टिप्पणी है कि हमारी तरह के महान् देश के अनुसार सारे लाभ उठानेवाले तीन-चौथाई लोगों को गरीबी और अपनी जरूरतें जुटाने में ही उम्र गुजार देनी चाहिए, लेकिन इसका कारण समझना कठिन नहीं है, अगर कोई कॉस्मिक हैबिटफोर्स को कायदे से जान ले।

गरीबी सीधा परिणाम है, गरीबी जैसी मानसिकता का। जिसकी चेतना में ऐसी सोच घुमड़ती रहती है, वह गरीबी के ही विषय में सोचता है, गरीबी से डरा हुआ रहता है और सिर्फ गरीबी की बात करता है। सफल व्यक्तियों की कल्पना में वह बातें आती ही नहीं, जो वे नहीं चाहते यानी कि गरीबी। शिक्षा और क्षमता का उनकी सफलता में कोई खास

योगदान नहीं होता। कुछ ऐसे भी सफल व्यक्ति हुए हैं, जो जिंदगी भर गरीबी में जीने को मजबूर लाखों लोगों के बीच से निकलकर सफलता के शिखर तक पहुँचे और उनमें से कुछ ने तो पैसा और शोहरत कमाने के बाद कॉलेज की डिग्रियाँ लीं।

कैंसर को जानलेवा और असाध्य बीमारी मानने की बात दुनिया भर के लोगों की सोच में लंबे समय से ऐसे जड़ पकड़ चुकी है कि कॉस्मिक हैबिटफोर्स ने यह विचार प्रवृत्ति में स्थायी रूप से फिक्स कर दिया है, जिसे तोड़ना कठिन है। वह समय करीब है, जब अच्छी और पूरी जानकारी से लैस कुछ गुट ऐसे विचार पैटर्न स्थापित करने जा रहे हैं, जो इस बीमारी से जुड़ी मानसिक मनोवृत्ति की काट प्रस्तुत करेगा।

इस तरह की व्यापक सोच से कैंसर जैसी मानसिक रूप से रोगी बनानेवाली बीमारियाँ भुखमरी का शिकार हो जाएँगी, क्योंकि लोग उस विषय में सोचना और बात करना बंद कर देंगे।

अच्छा स्वास्थ्य सावधानीपूर्वक तैयार की गई स्वास्थ्य चेतना का परिणाम है, जो लगातार अच्छे स्वास्थ्य पर केंद्रित विचारों से निर्मित किया जाता है। वही कॉस्मिक हैबिटफोर्स द्वारा वैचारिक आदत में स्थायी रूप से फिक्स हो जाता है। अगर आप अच्छा स्वास्थ्य चाहते हैं तो अपने अवचेतन मस्तिष्क को ऐसा विचार पैदा करने का आदेश दें और कॉस्मिक हैबिटफोर्स उस आदेश का पालन करेगा।

अगर आपकी संपन्न बनने की इच्छा है, तो अपने दिमाग की अवचेतन अवस्था को वैसा ही विचार उत्पन्न करने का आदेश दें, जिससे चेतना संपन्नता विकसित करे और फिर देखें कि कैसे आपकी आर्थिक स्थिति सुधरने लगती है।

जो कुछ आपकी चाहत है, उसका पहला कदम वैसी चेतना है, फिर मानसिक रूप से उसके लिए तैयार होने और फिर उस दिशा में हाथ-पैर हिलाने की प्रक्रिया शुरू होती है। चेतना आपकी जवाबदेही है, जो रोजमर्रा के विचारों से तैयार करनी होगी। अगर आप योग-ध्यान के जरिए अपनी कामनाओं को कार्यरूप में परिणत देखना चाहें, तो वह भी संभव है, लेकिन इसका चुनाव आप ही को करना है। इस तरीके से आप सृष्टिकर्ता की अनुभूतिवाली शक्ति की भी अमूर्त झलक पा सकते हैं।

मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ, जैसा कि एक महान् दार्शनिक का कहना है—गरीबी और खराब स्वास्थ्य को स्वीकारना खुलकर यह मान लेना है कि आस्था की कमी है।

आस्था के बारे में हमने काफी बातें की हैं, लेकिन हमारा काम ही शब्दों को आकार देता है। आस्था दिमाग की एक अवस्था है, जो कार्यों से ही स्थायी रूप से कायम रह सकती है। विश्वास ही सिर्फ पर्याप्त नहीं है। महान् दार्शनिक ने कहा है कि बिना काम किए आस्था मृत है।

कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम प्रकृति की देन है। यह एक सार्वभौम सिद्धांत है, जिसके माध्यम से आदेश और सामंजस्य ब्रह्मांड के सभी कार्यकलापों में साथ चलते हैं—चाहे वह ब्रह्मांड का सबसे विशाल ग्रह या पदार्थ का सबसे लघु कण क्यों न हो।

यह वह शक्ति है, जो मजबूत और कमजोर के लिए समान रूप से उपलब्ध है। उस शक्ति के लिए गरीब व अमीर, बीमार और स्वस्थ एक समान हैं। उसके पास सभी मानवीय समस्याओं का हल है।

इस दर्शन के सत्रह सिद्धांतों का प्रमुख लक्ष्य स्वअनुशासन के जरिए कॉस्मिक हैबिटफोर्स की शक्ति के अनुकूल अपने को ढालने में लोगों की मदद करना है खासकर वैसी स्थिति में जब व्यक्ति विचार की आदतें डालनेवाले बिंदु पर आता है।

कॉस्मिक हैबिटफोर्स में सत्रह सिद्धांतों की सहायता कैसे लें, पहले हम इन सिद्धांतों की थोड़ी समीक्षा कर लें, ताकि हमें यह समझने में आसानी हो कि इनका कॉस्मिक हैबिटफोर्स से क्या संबंध है—इसके साथ ही हम यह भी देखें कि ये सारे सिद्धांत आपस में कैसे गुँथकर मास्टर चाबी बनाते हैं, जो सभी समस्याओं के हल का दरवाजा खोलती है। विश्लेषण की शुरुआत इस दर्शन के पहले सिद्धांत से करते हैं—

1. एक कदम आगे चलने की आदत—इस सिद्धांत को पहले नंबर पर इसलिए रखा गया है, क्योंकि यह दिमाग को लाभकारी सेवा की ओर ले जाने में सहायक होता है। इस हिसाब से दिमाग की कंडीशनिंग से ही दूसरे सिद्धांत का रास्ता बनता है।

2. लक्ष्य की निश्चितता—इस सिद्धांत की मदद से व्यक्ति बिलकुल नियोजित तरीके से कुछ आगे बढ़कर काम करने के लक्ष्य की ओर बढ़ता है और यह सुनिश्चित करता है कि प्रमुख लक्ष्य हासिल करने के सारे प्रयत्न एक जगह केंद्रित हों। यही दोनों सिद्धांत किसी व्यक्ति को उपलब्धि की ऊँची सीढ़ियों तक ले जाने के लिए पर्याप्त हैं, लेकिन जिन लोगों की महत्त्वाकांक्षा ज्यादा हैं, उन्हें इन दोनों सिद्धांतों को अपनाने के बाद तीसरे सिद्धांत की ओर कदम बढ़ाने होंगे।

3. मास्टरमाइंड—इस सिद्धांत पर आने के बाद व्यक्ति को एक नई और महान् शक्ति की अनुभूति होने लगती है, जो हर किसी के दिमाग को उपलब्ध नहीं हो पाती। यह शक्ति व्यक्ति की कमियों और उपलब्धि हासिल करने के प्रयत्नों के बीच की खाई पाट देती है। इससे वैसे मिलेजुले मानव ज्ञान का कुछ हिस्सा जरूर प्राप्त हो जाता है, मगर इस नई शक्ति की अनुभूति तब तक अधूरी है, जब तक कि इसे चौथे सिद्धांत में वर्णित निर्देश लेने की कला से न जोड़ा जाए।

4. दृढ़ विश्वास और आस्था—ये वो पथ हैं, जिन पर चलकर व्यक्ति शाश्वत विवेक की शक्ति का अपने अंदर संचार शुरू करता है। यह लाभ सिर्फ उन्हीं लोगों को मिलता है, जो अपने दिमाग की इसे पाने लायक कंडीशनिंग करते हैं। यहाँ से व्यक्ति अपने दिमाग पर पूरा काबू पाने के लिए इसे सभी प्रकार के भय, चिंता और आशंकाओं से मुक्त करके सारी शक्तियों के एक ही स्रोत को अपने अंदर प्रतिष्ठापित करता है।

इन चारों सिद्धांतों को इस मायने में महान् कहा गया है, क्योंकि ये उससे ज्यादा शक्ति प्रदान करने में सक्षम हैं, जितनी औसतन व्यक्ति को निजी उपलब्धि की ऊँचाई तक पहुँचने के लिए चाहिए, लेकिन ये उन्हीं व्यक्तियों के लिए पर्याप्त हैं, जो सफलता के अन्य गुणों से लैस हैं—जैसा कि पाँचवाँ सिद्धांत कहता है।

5. प्रसन्न करनेवाला व्यक्तित्व—प्रसन्न करने लायक व्यक्तित्ववालों को अपने को झुकाने और अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने में आसानी होती है। यह उन तमाम व्यक्तियों के लिए आवश्यक है, जो मास्टरमाइंड गठजोड़ द्वारा निर्देशित करने का प्रभाव रखते हैं, लेकिन जरा सावधानीपूर्वक इस बात पर गौर करें कि चार सिद्धांत किस प्रकार पक्के तौर पर प्रसन्न करने लायक व्यक्तित्व प्रदान कर सकते हैं। ये पाँच सिद्धांत बेमिसाल व्यक्तिगत शक्ति

प्रदान करने में सक्षम हैं, लेकिन इतना भी नहीं कि व्यक्ति की हार पर जीत सुनिश्चित कर दे। हार ऐसी परिस्थिति है, जिसका सामना हर किसी को जीवन भर करना पड़ता है, इसलिए छठे सिद्धांत को अमल में लाने की जरूरत है।

6. हार से सीखने की आदत—ध्यान दें कि इस सिद्धांत की शुरुआत आदत से होती है यानी कि इस तरह अपनाया जाए, ताकि वह बिलकुल आदत बन जाए और हार की किसी भी परिस्थिति में छूटने न पाए। इस सिद्धांत पर अमल करके कोई व्यक्ति उस समय एक नई आशा की किरण जगा सकता है, जब लगे कि अपनी योजना कामयाब नहीं हो पा रही है, चाहे नाकामयाबी एक के बाद एक क्यों न आए। यह बात भी गौर करने लायक है कि इन छह सिद्धांतों पर चलकर व्यक्तिगत शक्ति कैसे बढ़ाई जा सकती है।

इन सिद्धांतों को जिन लोगों ने अपनाया, उन्होंने जाना कि वे जीवन में कहाँ जा रहे हैं और किस प्रकार उन्हें वैसे सभी लोगों का मैत्रीपूर्ण सहयोग मिला, जो उनके लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आवश्यक था। उन्होंने उन लोगों के शाश्वत विवेक का स्रोत जानने की कला सीखी और नियोजित आस्था व दृढ़ विश्वास के साथ प्रसन्न व्यक्तित्व पाकर अन्य लोगों के सहयोग का सिलसिला बंद नहीं होने दिया। इसी का सबसे बड़ा लाभ उन्हें यह मिला कि हारवाली परिस्थितियों के रोड़े में अच्छी, नई राह और आशा नजर आई। इन तमाम फायदों के बावजूद व्यक्तिगत उपलब्धि की ऊँचाइयों पर केंद्रित प्रमुख लक्ष्यवाले अपने कॅरियर में कई बार ऐसे मोड़ देखेंगे, जहाँ उन्हें सातवें सिद्धांत की जरूरत पड़ेगी।

7. सार्थक सोच—यह सिद्धांत व्यक्ति को अपने भविष्य के बारे में सोचने और अतीत के आधार पर तुलनात्मक दृष्टि से आकलन करने को प्रेरित करता है। इससे कल्पना की कार्यशाला में नई और बेहतर उम्मीदोंवाली योजनाएँ बनाना आसान हो जाता है और शायद पहली बार व्यक्ति अपनी छठी इंद्रीय तक पहुँचने की स्थिति में आकर उस ज्ञान को हासिल करने की प्रक्रिया शुरू कर देता है, जो मानव ज्ञान के अन्य स्रोतों से प्राप्त सम्मिलित ज्ञान भंडार से ऊपर है। इस ज्ञान का वास्तविक व्यावहारिक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए छठे सिद्धांत को अपनाने की जरूरत है।

8. व्यक्तिगत पहल—इस सिद्धांत की शुरुआत ही एक्शन से होती है, जो व्यक्ति को निश्चित साध्य की राह में गतिशील रखता है। यह सिद्धांत उद्यमी को आलस, सुस्ती और टालनेवाली निराशाजनक आदतों से दूर रखता है। इस सिद्धांत को सही रूप में समझने और अमल में लाने के लिए यह मानकर चलें कि यह ऊपर वर्णित सात सिद्धांतों के मद्देनजर आदत उत्पादक का काम करता है, क्योंकि व्यक्तिगत पहल के बगैर उनमें से कोई भी सिद्धांत आदत नहीं बन सकता। इस सिद्धांत का महत्त्व समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि यही एकमात्र जरिया है, जिसे अपनाकर सृष्टिकर्ता की देन पर मन केंद्रित हो सकता है। तात्पर्य यह कि व्यक्तिगत पहल के बिना दिलो-दिमाग में उभरनेवाली किसी सार्थक सोच पर पूरा नियंत्रण संभव नहीं है, जिससे कि उसे व्यावहारिक रूप दिया जाए।

विचार सिर्फ पैदा होते हैं, ये अपने आप संगठित और निर्देशित नहीं होते। इन्हें क्रिएटिव बनाने के लिए व्यक्तिगत पहल द्वारा निर्देशित और उत्प्रेरित करना जरूरी होता है।

व्यक्तिगत पहल कभी-कभी गलत दिशा भी पकड़ लेती है। इसके लिए पूरक का काम करता है सही मार्गदर्शन, जो नौवें सिद्धांत में उपलब्ध है।

9. बिलकुल सही सोच—बिलकुल सही सोच अपनाकर व्यक्ति एक ओर जहाँ व्यक्तिगत पहल में भटकने से बच जाता है, वहीं दूसरी ओर निर्णय लेने में, आकलन करने में और समय पूर्व निर्णय लेने की गलतियों से भी छुटकारा पा जाता है। ऐसी सोच व्यक्ति को अपनी ही ऐसी भावनाओं के प्रभाव में आने से बचाती है, जो भरोसेमंद नहीं हैं, क्योंकि तर्कशक्ति उनमें सुधार कर देती है।

10. स्व-अनुशासन—स्व-अनुशासन ऐसी चीज है, जो न तो जल्द हासिल की जा सकती है और न ही किसी के मुँह से सुनकर। इसे हासिल करने का एक ही तरीका है और वह ये कि बहुत ही सावधानीपूर्वक एक समयबद्ध दिनचर्या से जीवन के हर क्षेत्र में अपनी आदतों को नियंत्रित करके वर्षों तक उसे कायम रखा जाए। यह पूरी तरह अपनी इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है कि किस प्रकार आप खुद को कर्तव्य की तरह इच्छाओं और स्वभाव को नियम की तरह अनुशासित रख सकते हैं। असंख्य लोग इस 10वें सिद्धांत को दैनिक जीवन में अपनाकर ऊँचाइयों तक पहुँचे और यह संदेश दिया कि पराजय का कारण स्व-अनुशासन की कमी है।

इस सिद्धांत को अपनाकर और इस पर मास्टरी करके व्यक्ति अपने सबसे बड़े शत्रु, अपने आत्म पर पूर्ण नियंत्रण पा सकता है। स्व-अनुशासन 11वें सिद्धांत के साथ शुरू होना चाहिए।

11. प्रयत्न पर केंद्रित होना—खुद को और अपने लक्ष्य को एक बिंदु पर केंद्रित करना भी इच्छाशक्ति की ही उपज है। स्व-अनुशासन से यह इतनी निकटता से जुड़ा है कि इन तीनों को इस दर्शन के तीन जुड़वाँ भाई कहा जा सकता है। केंद्रीकरण से व्यक्ति की ऊर्जा व्यर्थ नहीं जाती और दिमाग को एक निश्चित प्रमुख लक्ष्य पर टिकाए रखने में तब तक इससे मदद मिलती रहती है, जब तक कि यह अवचेतन मस्तिष्क में समा न जाए और उद्यमी की शारीरिक क्षमता के अनुपात पर आधारित व्यावहारिकता में कॉस्मिक हैबिटफोर्स के माध्यम से तबदील न हो जाए। यह कल्पना का कैमरा है, जिसमें व्यक्ति के लक्ष्य और उद्देश्य का पूरा विवरण कैद होकर दिमाग के अवचेतन हिस्से में रिकॉर्ड हो जाता है, जो कभी नष्ट नहीं होता। अब एक बार फिर देखें और सोचें कि सात सिद्धांतों को अपनाने से व्यक्ति की निजी शक्ति कितनी तेजी से बढ़ती है, लेकिन जीवन की हर परिस्थिति का सामना करने के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। ऐसे भी मौके आते हैं, जब व्यक्ति को अन्य लोगों का भी मैत्रीपूर्ण सहयोग लेना पड़ता है, जैसे कारोबार और व्यवसाय में ग्राहक या क्लाइंट चाहिए। चुनाव लड़कर सार्वजनिक जीवन में आनेवाले को वोट चाहिए। यह सारा कुछ बारहवें सिद्धांत को अपनाकर अमल में लाया जा सकता है।

12. सहयोग—सहयोग मास्टरमाइंड सिद्धांत से थोड़ा अलग है। क्योंकि यह मानवीय सरोकार है, जो जरूरत पड़ने पर सहयोग लेने में काम आता है और इसके लिए किसी से कोई निश्चित गठजोड़ करना जरूरी नहीं। मास्टरमाइंड सिद्धांत के तहत निश्चित प्रमुख लक्ष्य हासिल करने के लिए इसे दिमाग में बैठाना भी एक शर्त है। दूसरों से सहयोग लिए बगैर कोई भी व्यक्तिगत उपलब्धि के रास्ते में सफलता की ऊँची सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकता। सहयोग एक ऐसा महत्त्वपूर्ण माध्यम है, जिससे दूसरों के दिल-दिमाग में जगह बनाई जा सकती है, जिसे कभी-कभी सद्भावना कहा जाता है। मैत्रीपूर्ण सहयोग से किसी स्टोर के

ग्राहक नियमित खरीदारी करनेवाले ग्राहक बन जाते हैं। यह सिद्धांत किसी कारोबारी की सफलता से आवश्यक रूप से जुड़ा रहता है और सफल व्यक्ति का दर्शन माना जाता है, चाहे वह कोई भी व्यवसाय अपनाए।

तेरहवें सिद्धांत को प्रयोग में लाने पर सहयोग लेना ज्यादा आसान हो जाता है।

13. उत्साह—उत्साह वैसी स्थिति है, जो व्यक्ति को दूसरों का सहयोग लेने में मदद तो करती ही है, साथ ही व्यक्ति को अपनी कल्पनाशक्ति की ओर खींचने और उसके इस्तेमाल को भी उत्प्रेरित करती है। उत्साह से व्यक्तिगत पहल की अभिव्यक्ति को भी प्रेरणा मिलती है जो प्रयत्न पर केंद्रित करने की आदत डालने की ओर भी प्रवृत्त करता है।

यह प्रसन्न करनेवाले व्यक्तित्व के विकास का एक महत्त्वपूर्ण गुण है। इससे एक कदम आगे बढ़कर चलनेवाला सिद्धांत अपनाना भी आसान हो जाता है। इस सबके अलावा उत्साहपूर्वक मुँह से निकली बात के अनुकूल काम करने का बल मिलता है। उत्साह की उत्पत्ति इरादे से होती है, लेकिन चौदहवें सिद्धांत की मदद के बिना इसे कायम रखना कठिन है।

14. स्वास्थ्य की आदत—अच्छी सेहत से दिमाग को कहीं भी केंद्रित करने में सहूलियत होती है। यह सफलता के लिए भी आवश्यक है और यह मानकर चलें कि सफलता शब्द का मतलब ही है—प्रसन्नता की सभी जरूरतें पूरी होना। यहाँ भी आदत शब्द प्रमुखता रखता है। अच्छा स्वास्थ्य जागरूकता से आरंभ होता है और यह स्व-अनुशासन से नियंत्रित रोजमर्रा की अच्छी आदतों से विकसित किया जा सकता है। अच्छी सेहत उत्साह का आधार है और उत्साह ही अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रोत्साहित करता है। इन दोनों का संबंध मुरगी और अंडे की तरह है। यह तो कोई नहीं कह सकता कि दोनों में कौन पहले आता है, लेकिन हर कोई जानता है कि एक-दूसरे के उत्पादन के लिए दोनों ही आवश्यक हैं। अब फिर एक बार विश्लेषक के नजरिए से इस बात पर गौर करें कि इन चौदह सिद्धांतों की शक्तियों से व्यक्ति ने कितनी जानकारी हासिल की। यह उस छोर तक तो पहुँच ही चुका है, जहाँ कल्पना को एक निश्चित दिशा पर ठहराव दिया जा सकता है, पर यह उतना पर्याप्त नहीं है कि विफलता की नौबत न आने दे, इसलिए पंद्रहवाँ सिद्धांत जोड़ने की जरूरत है।

15. समय और पैसे का बजट—समय और पैसा बचाने की बात थोड़ी सिर खुजानेवाली है। हर कोई समय और पैसा खुलकर खर्च करना चाहता है, मगर उसे बचाएँ। मानव की सबसे बड़ी इच्छा रहती है, शरीर और दिमाग की आजादी। लेकिन इसका सही लाभ स्व-अनुशासन तथा कड़ी बजट व्यवस्था के बिना नहीं मिल सकता।

व्यक्तिगत उपलब्धि दर्शन का यह एक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। अब हम व्यक्तिगत शक्ति के असली मुकाम तक पहुँचनेवाले हैं। हमने शक्ति से स्रोतों के साथ-साथ यह भी जाना है कि इसे वांछित साध्य की दिशा में कैसे मोड़ा जा सकता है। यह इतनी बड़ी शक्ति है जिसके रास्ते में दुनिया की कोई शक्ति बाधक नहीं बन सकती। अगर बाधक बनेगा तो व्यक्ति खुद बनेगा, अगर इसका इस्तेमाल बुद्धिमानी से न किया जाए, तो यह स्वयं के और दूसरों के विनाश का कारण बन सकती है। इस शक्ति के सही इस्तेमाल के लिए इसमें 16वें सिद्धांत को जोड़ना आवश्यक है।

16. स्वर्णिम नियम पर अमल—अमल शब्द पर जोर देकर इसका पर्यवेक्षण करें। स्वर्णिम

नियम में आस्था ही पर्याप्त है। सही लाभ पाने के लिए और व्यक्तिगत शक्ति के इस्तेमाल को अपना सुरक्षित मार्गदर्शक बनाने के लिए, इसे भी सभी मानवीय रिश्तों में आदत की तरह अपनाना पड़ेगा।

यह सुनने में एक अधिग्रहण की तरह लग सकता है, मगर मानवीय संबंध के इस महत्त्वपूर्ण नियम को आदत के रूप में ढालना बहुत जरूरी है। इस नियम को अपनाए बिना जिंदगी जीने के नुकसान इतने हैं कि उँगलियों पर गिनाए जा सकते हैं। अब हम व्यक्तिगत शक्ति के अंतिम छोर तक पहुँच चुके हैं और इसके दुरुपयोग के आवश्यक बीमे से खुद को लैस कर लिया है। अब यहाँ हमें वह साधन हासिल करने हैं, जो आजीवन हमारे साथ स्थायी रूप से जुड़े रहें। इस दर्शन का अंतिम चरण तब पूरा होगा, जब हम 17वें और अंतिम सिद्धांत को भी जोड़ें, जो इसका वांछित साध्य है।

17. कॉस्मिक हैबिटफोर्स—कॉस्मिक हैबिटफोर्स सिद्धांत के जरिए सारी आदतों को फिक्स करके भिन्न-भिन्न परिभाषा में स्थायी बनाया जा सकता है। यह संपूर्ण दर्शन को नियंत्रण में रखने का सिद्धांत है, जिसका एक अंग है 16वां सिद्धांत। यह प्रकृति के सारे नियमों को नियंत्रित करने का भी सिद्धांत है। इस सिद्धांत के माध्यम से आदतें इस दर्शन के सिद्धांतों की अमल प्रक्रिया के अनुरूप फिक्स हो जाती हैं। इस तरह यह व्यक्ति के दिमाग में संपन्नता के प्रति जागरूकता विकसित करने में और उस हिसाब से कंडीशनिंग करने में नियंत्रक तत्त्व का काम करता है, जो व्यक्तिगत सफलता हासिल करने के लिए आवश्यक है।

सिर्फ सोलह सिद्धांतों को समझ लेने से व्यक्तिगत शक्ति हासिल करने की ख्वाहिश पूरी नहीं होगी। इन सिद्धांतों को ऐसे समझने और अमल में लाने की जरूरत है, ताकि ये आदत बन जाएँ, जो कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम की सारतत्त्व हैं।

कॉस्मिक हैबिटफोर्स विशाल जीवन सरिता का पर्याय है, जिसके बारे में पहले भी विभिन्न प्रकार की धारणाएँ, मान्यताएँ व्यक्त की गई हैं। इसमें ऊर्जा की सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही अवस्थाएँ शामिल हैं।

नकारात्मक सोच 'हिप्नोटिक रिद्म' कहलाती हैं, क्योंकि इनके संपर्क में आनेवाली हर चीज पर हिप्नोटिक प्रभाव पड़ता है। हर व्यक्ति पर इसका प्रभाव हम एक या उसके अधिक रूप में देख सकते हैं। यह एकमात्र जरिया है, जिसके द्वारा गरीबी की चेतना आदत के रूप में फिक्स हो जाती है।

भय, ईर्ष्या, लालच, प्रतिशोध जैसी आदतों और कुछ भी नहीं के लिए कुछ जैसी आदतों का यही निर्माता है। निराशावादी और टालनेवाली आदतें यही फिक्स करता है।

सिर्फ कपोलकल्पित बातों की दुनिया में विचरण करनेवाली आदतें भी यही फिक्स करता है। कल्पनालोक की इस बीमारी से लाखों लोग जीवन भर ग्रसित रहते हैं। यही सोच दिमाग को विफलता की ओर ले जाती है और लोगों के अंदर फिक्स करती है, चाहे उसकी प्रकृति और प्रभाव कैसा भी क्यों न हो। इस तरह विशाल जीवन सरिता का यह विफलतावाला किनारा है।

इस नदी का सफलतावाला और सकारात्मक किनारा सार्थक तथा निर्माण की ओर ले जानेवाली आदतें फिक्स करता है। लक्ष्य की निश्चितता की आदतें— एक कदम आगे बढ़कर काम करने की आदतें, मानवीय सरोकारों में स्वर्णिम नियम अपनाने की आदतें—वैसी ही

आदतों में आती हैं, जो सकारात्मक सोच फिक्स करती हैं। साथ-साथ वो सारी आदतें भी फिक्स होती हैं जिनमें व्यक्ति का दिमाग इस दर्शन के सोलह सिद्धांतों का लाभ उठानेवाले बिंदु पर टिका रहता है।

आदतों की परीक्षा

अब हम जरा इस शब्द आदत की जाँच-परख करें। वेबस्टर डिक्शनरी में इसकी परिभाषाएँ दी गई हैं। उन परिभाषाओं में से एक है—व्यवहार की एक प्रवृत्ति जो बार-बार दुहराए जाने पर एक नियमित प्रक्रिया बन जाती है, जिसका मनोवैज्ञानिक असर पड़ता है और व्यक्ति की सुविधा और कार्यकुशलता को भी प्रभावति करता है। वेबस्टर डिक्शनरी की परिभाषा में कुछ विचारणीय विवरण दिए गए हैं, लेकिन इसमें कहीं भी उस नियम का जिक्र नहीं है, जो सारी आदतें फिक्स करता है। यह कमी बेशक बताती है कि कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम का पूरा मतलब डिक्शनरी के संपादक उजागर नहीं कर पाए हैं, लेकिन वेबस्टर की परिभाषा में बार-बार दुहाराना शब्द महत्त्वपूर्ण और ध्यान देने योग्य है। यह इस मायने में गौर करने लायक है, क्योंकि इसमें आदत (हैबिट) होने का जरिया बताया गया है। मसलन लक्ष्य की निश्चितता की आदत में तभी सुधार हो सकता है, जब उस लक्ष्य के विचार को बार-बार दुहराया जाए, ताकि वही विचार बार-बार दिमाग में आए, कल्पना में भी उसी लक्ष्य की बात उभरे, जिसमें उसे पूरा करने की बलवती इच्छा हो—जब तक कि वह कल्पना व्यावहारिक बनकर साकार योजना का रूप न ले ले।

अपनी आकांक्षा को ध्यान में रखकर आस्था की आदत को बार-बार पूरी तीव्रता से इस्तेमाल करने पर आप महसूस करेंगे कि हासिल करने की प्रक्रिया चल रही है। स्वैच्छिक सकारात्मक आदतों का ढाँचा स्व-अनुशासन, इच्छाशक्ति, तीव्रता और आस्था की बदौलत तैयार करके आप पाएँगे कि इस दर्शन के सोलह सिद्धांतों में बताए गए फॉर्मूले असरदार साबित हो रहे हैं। स्वैच्छिक आदत निर्माण स्व-अनुशासन का सर्वोत्तम उपाय है। सारी स्वैच्छिक आदतें निश्चित लक्ष्य पर केंद्रित इच्छाशक्ति की उपज हैं। ये व्यक्तिगत रूप से अस्तित्व में आती हैं, इनका कॉस्मिक हैबिटफोर्स से कोई संबंध नहीं। ये बातें हम तब तक दिमाग में घुमाते रहें, जब तक कि ये विचारों और कार्यकलापों में घुल-मिलकर कॉस्मिक हैबिटफोर्स के जरिए फिक्स होने की स्थिति में न आ जाएँ। उसके बाद ये अपने आप काम करने लगती हैं। इस दर्शन के सिलसिले में आदत एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। यह किसी भी व्यक्ति के आर्थिक, सामाजिक, व्यावसायिक और आध्यात्मिक जीवन की वास्तविक स्थिति का परिचायक है। इससे पता चलता है कि फिक्स आदतों के चलते हम कहाँ पर हैं। जो कुछ हम पाना चाहते हैं वह सिर्फ स्वैच्छिक आदतों के विकास तथा उसे कायम रखने से ही हासिल कर सकते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि यह पूरा दर्शन कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम को समझने और उसे दैनिक जीवन में अपनाने पर निर्भर करता है।

इस दर्शन के सोलह सिद्धांतों में से प्रत्येक का असली उद्देश्य व्यक्ति को एक खास किस्म की आदत डालने की प्रवृत्ति की ओर ले जाना है, जो उसके अपने ही दिमाग पर काबू पाने के लिए जरूरी है, ताकि ये भी आदत बन जाए। दिमागी ताकत जीवन नदी के एक या दूसरे

किनारे में हमेशा सक्रिय रहती है। इस दर्शन का उद्देश्य व्यक्ति के विचार और कार्यकलापों को ऐसी आदतों के रूप में दिमाग में फिक्स करना है, ताकि नदी के सफलतावाले किनारे से ही दिमाग लगा रहे। यही इस दर्शन का असली बोध है। प्रत्येक अन्य वांछित वस्तुओं की तरह इस दर्शन पर मास्टरी और इसे पूरी तरह अमली जामा पहनाने की एक निश्चित कीमत चुकानी पड़ती है, उसके बाद ही इसके लाभ का आनंद उठाया जा सकता है। अन्य बातों के अलावा इसकी कीमत है—शाश्वत जागरूकता, दृढ़ निश्चय और इच्छाशक्ति की ऐसी तीव्रता, ताकि जीवन अपनी शर्तों पर चले तथा गरीबी, किल्लत और विभ्रमित करनेवाली परिस्थितियाँ पास न फटकने पाएँ।

व्यक्ति के आत्म को जीवन से जोड़ने के दो उपाय हैं। पहला है घुड़सवारी, जिसमें जीवन ही घोड़े पर सवार रहता है। दूसरे उपाय में खुद सवार बनकर जीवन को घोड़े की तरह दौड़ाना है। आप घुड़सवार बनते हैं या घोड़ा, यह तो आप पर निर्भर करता है, लेकिन एक बात निश्चित है कि अगर कोई व्यक्ति जीवन की घुड़सवारी पसंद नहीं करता है, तो उसका मजबूरन घोड़ा बनना निश्चित है। जीवन या तो घुड़सवारी करने की चीज है या घोड़ा बनने की। यह कभी सुस्त नहीं बैठा रहता।

ईगो और कॉस्मिक हैबिटफोर्स के बीच का संबंध

इस दर्शन के छात्र होने के नाते आपकी संभवतः उस तरीके को जानने में दिलचस्पी होगी कि किस प्रकार विचारशक्ति को शारीरिक अनुपात के अनुकूल ढाला जाए। आप शायद यह भी जानना चाहेंगे कि अन्य लोगों से सद्भावपूर्ण संबंध कैसे स्थापित किया जाए।

दुर्भाग्यवश हमारा पब्लिक स्कूल इन दोनों महत्त्वपूर्ण जरूरतों के मुद्दों पर चुप है। जैसा कि मनोवैज्ञानिक डॉ. हेनरी सी. लिंक का कहना है—"हमारी शिक्षा व्यवस्था ने मानसिक विकार पर तो बल दिया है, लेकिन यह समझाने में विफल रही है कि किस प्रकार भावनात्मक और व्यक्तित्व से जुड़ी आदतें विकसित हों और सुधारी जाएँ।" उनके दोषारोपण का आधार कमजोर नहीं है। हेनरी लिंक के मुताबिक, पब्लिक स्कूल की शिक्षा व्यवस्था अपने दायित्वों का निर्वाह करने में विफल रही है, क्योंकि कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम का आविर्भाव हाल ही में हुआ है। अभी तक शिक्षकों ने इसे बड़े पैमाने पर नहीं अपनाया है।

हम सभी जानते हैं कि टहलना शुरू करने से लेकर जो भी काम हम करते हैं, वह हमारी आदतों का परिणाम है। टहलना और बतियाना आदतें हैं। हमारा खाने-पीने का तरीका भी आदतें हैं। सेक्स से जुड़ी सारी गतिविधियाँ भी आदतों का परिणाम हैं। अन्य लोगों से हमारे संबंध भी चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, आदतों का परिणाम हैं, लेकिन बहुत कम लोग समझ पाते हैं कि आदतें क्यों और कैसे बनती हैं।

आदतें मानवीय ईगो से इस तरह जुड़ी हैं, जो कभी अलग नहीं हो सकतीं। इसलिए हम पहले इस ईगो का विश्लेषण करें, जिसे भलीभाँति समझा नहीं गया है। इसके लिए सर्वप्रथम यह मानकर चलें कि ईगो के ही माध्यम से आस्था और अन्य दिमागी अवस्थाएँ काम करती हैं।

इस पूरे दर्शन में सक्रिय और निष्क्रिय आस्था में फर्क पर काफी बल दिया गया है। ईगो

सभी कार्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसलिए हमें थोड़ा बहुत यह जानना जरूरी है कि इसकी प्रकृति और सँभावनाएँ क्या हैं, ताकि इसका बेहतर उपयोग कर सकें। हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि ईगो को एक्शन की ओर कैसे लाएँ और निश्चित लक्ष्य हासिल करने के लिए इसे नियंत्रित तथा निर्देशित कैसे करें। उससे भी बड़ी बात दिमाग से इस प्रचलित भूल को निकालना है कि ईगो सिर्फ घमंड की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

ईगो मूल रूप से एक लैटिन शब्द है, जिसका मतलब है मैं अर्थात् अहम, लेकिन साथ-साथ यह एक ऐसी शक्ति भी है जिसे संगठित तरीके से एक्शन के जरिए आकांक्षा को आस्था में तबदील करने का माध्यम बनाया जा सकता है।

ईगो की गलत समझी गई शक्ति

ईगो शब्द में किसी के व्यक्तित्व के सारे पहलू जुड़े हैं। इसलिए ईगो को स्वैच्छिक आदतों के जरिए नियंत्रित करके विकास और निर्देश पर केंद्रित किया जा सकता है, ऐसी आदतें जो एक खास उद्देश्य से विकसित की जाएँ। मानव शरीर और दिमाग के अध्ययन में अपना पूरा जीवन लगा देनेवाले एक महान् दार्शनिक ने ईगो को समझने का व्यावहारिक आधार प्रस्तुत किया है। देखें, उन्हीं के शब्दों में, आपका शरीर और दिमाग चाहे वह जीवित हो या मृत, लाखों ऐसी लघु ऊर्जाओं का संग्रह है, जो कभी मर ही नहीं सकतीं।

ये ऊर्जाएँ अलग अस्तित्व रखती हैं, लेकिन समय पड़ने पर ये सब मिलकर सद्भावपूर्ण तरीके से काम करती हैं।

मानव शरीर जीवन का एक मैकेनिज्म है, जो सक्षम तो है, मगर अपने अंदर के बलों को नियंत्रित करने का आदी नहीं है। यह मशीनरी आदत, इच्छा आबाद या विशेष उत्तेजना (भावनात्मक) जैसी शक्तियों को कुछ महत्त्वपूर्ण साध्य पूरी करने के बिंदु तक ले जाती है।

इन इच्छाओं की शक्ति के कई प्रयोगों से हम संतुष्ट रहते हैं, जिनमें इन ऊर्जाओं का इस्तेमाल होता है। ये किसी भी व्यक्ति के अंदर ऊँचे पैमाने पर आबाद की जा सकती हैं।

हवा, धूप, भोजन, जल जो हम ग्रहण करते हैं, वे सब उस आंतरिक बल के एजेंट हैं, जो जमीन और आकाश से आते हैं। हम परिस्थितियों के सुस्त प्रवाह में बहते हुए रोजमर्रा की जिंदगी जीते रहते हैं और कुछ बेहतर करने के अवसर हाथ से निकल जाते हैं, जो हमारे बूते के बाहर हैं।

मानवता समय-समय पर कई तरह के प्रभावों के उहापोह से गुजरती रही है, लेकिन अपनी धड़कनों और मन-मस्तिष्क के अंदर आनेवाले उतार-चढ़ावों पर काबू पाने के सही अर्थों में उपाय नहीं दिए गए, उसे विश्व में बिलकुल ढीला छोड़ दिया गया है। अभी भी ये आंतरिक भावनाएँ बड़ी आसानी से व्यक्ति को अपने हिसाब से जैसे चाहें मोड़ सकती हैं। सफलता और विफलता को अलग करनेवाली रेखा उसी जगह पाई जाती है, जहाँ बिना पतवार की नाव रुकती है (जहाँ लक्ष्य की निश्चितता शुरू होती है।)

हम सब भावनाओं, संवेदनाओं, परिस्थितियों और दुर्घटनाओं की देन हैं। दिमाग क्या है, मन क्या है, शरीर क्या है। जीवन को एक निश्चित दिशा देनेवाली ये सारी समस्याएँ तभी हल हो सकती हैं, जब इनमें से किसी पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाए।

अगर आप निशंचित होकर बैठें और थोड़ी देर सोचें, आपको स्वयं जानकर ताज्जुब होगा

कि आपका जीवन कितने अंतर्विरोधों से भरा है।

किसी नियोजित जीवन की ओर देखें और गौर करें कि अपने को व्यक्त करने के लिए उसने क्या प्रयास किए। पेड़ अपनी डालियाँ सूर्य की ओर ले जाता है, अपने पत्तों के जरिए साँस लेने के लिए संघर्ष करता है। यहाँ तक कि अपनी जड़ों को भी जल और खनिज की तलाश में जमीन के नीचे भेजता है, ताकि भोजन मिले। इसे आप प्रकृति के जीवन जीने के तौर-तरीके कह सकते हैं। यह एक बल का प्रतिनिधित्व करता है, जो कुछ स्रोत से आता है और कुछ उद्देश्य से संचालित भी होता है।

दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं है, जहाँ ऊर्जा न हो। वायुमंडल इतनी ऊर्जा से लदा है कि सर्द उत्तर में भी आकाश चमकता रहता है, जहाँ का न्यूनतम तापमान भी गरमी देता है। बिजली की हालत लोगों को अलार्म देती है। जल गैसों का एक तरल मिश्रण है और विद्युत, मैकेनिकल तथा रासायनिक ऊर्जा से चार्ज किया हुआ है। उनमें से कोई बहुत बड़ा कल्याणकारी भी है और विनाशकारी भी।

यहाँ तक कि बर्फ में इसके बेहद ठंडा होने की स्थिति में भी ऊर्जा है। यह कभी नष्ट नहीं होती और कभी शिथिल नहीं पड़ती। बर्फ के बल ने पहाड़ की चट्टानों को टुकड़ों में बाँटा है। एक भी रासायनिक अणु ऊर्जा से मुक्त नहीं है, एक भी परमाणु का इसके बिना कोई अस्तित्व नहीं। हम सब व्यक्तिगत ऊर्जाओं के मिले-जुले संगम हैं।

मानव के अंदर दो बल काम करते हैं—एक तो खुली आँखों से नजर आनेवाला है, क्योंकि शारीरिक है और अंदर मौजूद अरबों स्रोतों को ऊर्जा और विवेक देता है। दूसरा मस्तिष्क है जो अंदर की आँखों से नजर आता है। उसी का एक रूप है ईगो—शरीर का संगठित तानाशाह जो विचारों और कार्यकलापों को नियंत्रित करता है।

विज्ञान ने हमें सिखाया है कि मानव का 160 पौंड वजनवाला दृश्य हिस्सा लगभग सत्रह रासायनिक तत्त्वों से बना है, जो सभी जानते हैं और वह इस प्रकार है—

9 पौंड ऑक्सीजन
38 पौंड कार्बन
15 पौंड हाइड्रोजन
4 पौंड नाइट्रोजन
4.5 पौंड कैल्शियम
6 औंस क्लोरीन
4 औंस सल्फर
3.5 औंस पोटेशियम
3 औंस सोडियम
0.25 औंस आयरन
2.5 औंस फ्लोरीन
2 औंस मैग्नीशियम
1.5 औंस सिलिकन

आर्सेनिक, आयोडीन और एलुमीनियम के थोड़े कतरे। मानव के इन दृश्य अवयवों की व्यावसायिक कीमत लगभग 80 सेंट है, जो किसी भी आधुनिक केमिकल प्लांट से खरीदे

जा सकते हैं। इन रासायनिक तत्त्वों में एक सुसंगठित और अच्छी तरह विकसित नियंत्रित ईगो जोड़ दें, जिसकी कीमत कुछ भी तय करके संचालक उसे वहाँ फिक्स कर सकता है। ईगो ऐसी शक्ति है, जो कितनी भी कीमत देकर नहीं खरीदी जा सकती, लेकिन इसे किसी भी वांछित पटरी के आकार में डिजाइन या विकसित किया जा सकता है। यह विकास संगठित आदतों से होता है, जो कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम द्वारा स्थायी बनाया जा सकता है। यही विचारों की प्रवृत्ति तय करता है और जिसे व्यक्ति नियंत्रित विचार से विकसित करता है।

हमारे महान् निर्माता, आविष्कारक, कलाकार और व्यावसायिक नेता खास उद्देश्य को ध्यान में रखकर अपने-अपने क्षेत्र में ईगो को निर्देशित तथा नियंत्रित करके आगे बढ़े। इसके परिणामस्वरूप वे सभी जिन्होंने प्रगति के रास्ते में उल्लेखनीय योगदान किया, विश्व को एक अच्छी तरह विकसित और नियंत्रित ईगो की शक्ति हासिल होने की भी जानकारी दी।

जिन लोगों ने मानवता के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान किया और जो दुनिया में एक जगह बनाकर रह गए, उनके बीच असली फर्क ईगो का है। ईगो सभी तरह के मानवीय कार्य को संचालित करनेवाला बल है।

शरीर और दिमाग की मुक्ति तथा आजादी—सभी लोगों की ये दो प्रमुख इच्छाएँ ईगो के विकास तथा इस्तेमाल में सही अनुपात के अनुसार उपलब्ध हैं। अपने ईगो से सही तरीके से जुड़ा व्यक्ति जितनी मात्रा में चाहे, आजादी और मुक्ति पा जाता है।

ईगो वैसा व्यवहार तय करता है, जिससे व्यक्ति अपने आत्म को अन्य लोगों से जोड़ता है। उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि ईगो ही वैसी नीति निर्धारित करता है, जिसके तहत व्यक्ति अपने शरीर और मस्तिष्क को जोड़ता है। इससे लक्ष्य, आशा और लक्ष्य को एक बिंदु पर टिकाना आसान हो जाता है, जिससे व्यक्ति के जीवन का भाग्य फिक्स होता है।

ईगो एक महान् संपदा भी है और महान् दायित्व भी जो इस पर निर्भर करता है कि व्यक्ति किस तरीके से इसे अपने आत्म से जोड़ता है। ईगो व्यक्ति की वैचारिक आदतों का कुल रोकड़ है, जो कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम के जरिए अपने आप निर्धारित पटरी पर चलता है।

सफलता की जागरूकता कैसे विकसित करें

प्रत्येक बेहद सफल व्यक्ति को एक भलीभाँति विकसित और पूर्ण अनुशासित ईगो हासिल होता है, लेकिन एक तीसरा फैक्टर भी है, जो इसके अच्छे और बुरे का पैमाना तय करता है। अपनी शक्ति को किसी भी आकांक्षा में तबदील करने के लिए आत्म-नियंत्रण जरूरी है। सभी व्यक्तिगत उपलब्धियों का आरंभिक बिंदु एक योजना है, जिनसे उसका ईगो सफलता, जागरूकता की ओर प्रेरित होता है। सफल व्यक्ति को अपना ईगो सही तरीके से विकसित करके वैसा करना ही पड़ेगा। ईगो को अपनी आकांक्षा से प्रभावित करके और सभी प्रकार की सीमाओं, भय और संदेह से मुक्त करें—जो ईगो पावर को निराशा और हताशा की ओर खींचता है।

खुद को सलाह देने या आत्म-हिप्नोसिस एक ऐसा जरिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपना ईगो किन्हीं भी इच्छित तरंगों की तरफ मोड़ सकता है और कोई भी वांछित उद्देश्य हासिल

करने के हिसाब से चार्ज कर सकता है।

आत्म सुझाव के सिद्धांत को पूरी तरह अगर नहीं पकड़ पाएँ तो इस विश्लेषण का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा गँवा देंगे। ईगो पावर मुख्य रूप से आत्म सुझाव को प्रयोग में लाने से फिक्स होता है। जब यह आत्म सुझाव आस्था का दरजा पा लेता है तो ईगो को असीमित शक्ति हासिल हो जाती है।

ईगो जीवित और सक्रिय रहता है, इसे नियमित खुराक से शक्ति प्रदान करने की जरूरत है। ठीक शरीर की तरह ईगो को भी बिना भोजन के जीवित और सक्रिय नहीं रखा जा सकता।

इसे लक्ष्य की निश्चितता का भोजन देना पड़ेगा।

इसे व्यक्तिगत पहल का भोजन देना पड़ेगा।

इसे अच्छी तरह संगठित योजनाओं और लगातार एक्शन का भोजन चाहिए।

इसे जोश और उत्साह का समर्थन चाहिए।

निश्चित साध्य पर केंद्रित, नियंत्रित सावधानी की खुराक इसे मिलनी चाहिए। इसे स्व-अनुशासन से निर्देशित और नियंत्रित रखा जाना चाहिए और इसे बिलकुल सही विचार का समर्थन मिलना चाहिए। अपने ईगो पर मास्टरी किए बिना कोई भी किसी चीज का मास्टर नहीं बन सकता।

कोई भी व्यक्ति अपने आत्म को प्रभुता की अभिव्यक्ति नहीं प्रदान कर सकता। क्योंकि व्यक्ति की अधिकांश विचारशक्ति गरीबीवाली चेतना सँभालने में ही उलझी रह जाती है। कुल मिलाकर इस तथ्य को हमेशा याद रखना चाहिए कि ज्यादातर अकूत संपत्ति की शुरुआत गरीबी से हुई। इसके साथ ही यह भी नहीं भूलना चाहिए कि गरीबी और इस सरीखी अन्य आशंकाओं पर ईगो के हस्तक्षेप से काबू पाकर उन्हें निर्मूल किया जा सकता है।

एक शब्द ईगो में इस दर्शन में वर्णित व्यक्तिगत उपलब्धि के सारे सिद्धांतों के कंपोजिट प्रभाव देखे जा सकते हैं। इसे सिर्फ एक ही यूनिट शक्ति के साथ समन्वित करके और किसी भी वांछित लक्ष्य पर केंद्रित करके व्यक्ति अपने ईगो का पूर्ण मास्टर बन सकता है।

मैं आपको अपने अंदर की उस शक्ति को स्वीकार करने की स्थिति में लाना चाहता हूँ, जो यह निर्धारित करती है कि आप अपनी महत्त्वाकांक्षा पूरी करने में सफल होंगे या असफल —इस शक्ति का प्रतिनिधित्व आपका अपना ईगो करता है। मैं आपको इसके लिए भी तैयार करना चाहता हूँ कि ईगो से जुड़े अतिशय प्रेम, घमंड, भोंड़ापन जैसी बातें दिमाग से निकाल दें और इस सत्य को स्वीकारें कि ईगो 8 सेंट मूल्य के केमिकल्स के अंदर है, जिससे मानव शरीर बना है।

सेक्स मानव का सबसे बड़ा रचनात्मक बल है। यह किसी के भी ईगो का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और उससे निश्चित तौर पर जुड़ा है। सेक्स और ईगो दोनों की इस बात के कारण अच्छी प्रतिष्ठा नहीं है कि दोनों के इस्तेमाल के विनाशकारी के साथ ही निर्माणात्मक पहलू भी हैं। इतिहास की शुरुआत से ही अज्ञानियों द्वारा दोनों के गलत इस्तेमाल के दृष्टांत मिलते हैं। ईगो को वश में रखने में असमर्थ आक्रामक तेवरवाले वे लोग हैं, जो यह खोज नहीं पाए कि अपने ईगो को किस प्रकार अपनी उस मानसिक अवस्था से जोड़ें, ताकि

इसका सार्थक परिणाम सामने आए। ईगो का सृजनात्मक इस्तेमाल अपनी आशा, इच्छा, लक्ष्य, महत्त्वाकांक्षा और योजनाओं की अभिव्यक्ति से होता है, न कि डींग हाँकने तथा अत्यधिक आत्म प्रेम से।

अपने ईगो को काबू में रखनेवालों का लक्ष्य उनका काम है, बातें नहीं। आकांक्षा बड़ी हो, साथ ही व्यक्तिगत शक्ति से समर्थित स्वस्थ आकांक्षा का होना उचित है। मगर अपने कार्यकलापों और अपनी महानता का स्वयं बखान इस बात का संकेत है कि उस व्यक्ति का अपने ईगो पर काबू नहीं है। इससे यह भी पता चल जाता है कि व्यक्ति के ऊपर उसका अहम (ईगो) हावी है, क्योंकि अपनी महानता का अपने मुँह से बखान का निश्चित मतलब है कि वह व्यक्ति हीन भावना को छिपाने के लिए ये तरीके अपना रहा है।

ईगो और मानसिक अवस्था के बीच का संबंध

ईगो के वास्तविक स्वभाव को समझने के बाद आप मास्टरमाइंड सिद्धांत के वास्तविक अर्थ को समझ पाएँगे। आप अपनी महान् सेवा के लिए पहचान बना लेंगे, लेकिन आपके मास्टरमाइंड गठजोड़ के सभी सदस्यों की आपके लक्ष्यों, आशाओं और उद्देश्यों के प्रति पूरी सहानुभूति होनी चाहिए, उनकी किसी भी रूप में आपसे कोई प्रतिस्पर्धा न हो। उनकी भावना खुद को आपसे कम करके आँकने की होनी चाहिए और आपके जीवन के मुख्य उद्देश्य को पूरा करने के लिए वे चाहतों समेत अपने व्यक्तित्व को भी गौण कर दें। उनका आप पर और आपकी क्षमता पर भरोसा हो तथा वे आपका सम्मान करें। वे आपके गुणों को स्वीकारें और आपके दोषों को भी भत्ते के रूप में लें। वे आपको अपनी तरह की और हमेशा अपने स्टाइल से जिंदगी जीने की इजाजत दें। उन्हें आपसे भी वैसे लाभ मिलने चाहिए जो लाभ आप स्वयं उनसे गठजोड़ करके उठा रहे हैं।

अंतिम वर्णित जरूरत का भलीभाँति निरीक्षण न करने से आपके मास्टरमाइंड गठजोड़ की शक्ति जाती रहेगी। लोगों का आपस में जुड़ना आपसी क्षमताओं और उन लक्ष्यों पर निर्भर करता है, जिन्हें मिलकर पूरा करने के लिए उनका गठजोड़ होता है।

अनिश्चित, अस्पष्ट लक्ष्य और कोई लक्ष्य न होने पर आधारित कोई मानवीय संबंध स्थायी नहीं हो सकता। इस सत्य को पहचानने में विफल साबित होनेवाले कइयों को उसकी कीमत गरीबी और पैसे के उहापोह के रूप में चुकानी पड़ी है।

ईगो को अपने अधीन लेकर विचारों के भौतिक अवयवों से सज्जित करनेवाली यह शक्ति कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम है। यह नियम ईगो को कोई गुण या मात्रा नहीं देता, जो मिलता है उसी को अपने अधीन करके इसे शारीरिक समानुपात में बदल देता है।

महान् उपलब्धि हासिल करनेवाले व्यक्तियों ने अपने ईगो को अपेक्षित खुराक दी और उसे नियंत्रित करके अपने हिसाब से आकार दिया। अपने लक्ष्य के किसी भी हिस्से को किस्मत के भरोसे नहीं छोड़ा और जीवन की विपरीत परिस्थितियों को राह का रोड़ा नहीं बनने दिया।

प्रत्येक व्यक्ति ईगो को अपने हिसाब से नियंत्रित या रूपांतरित कर सकता है। उस बिंदु से आगे करने के लिए उसके पास कुछ नहीं रह जाता, ठीक वैसे ही जैसे खेत में बुआई करने के बाद किसान नहीं जानता कि अब आगे क्या होगा। कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम सबको

अपने हिसाब से आकार देता है और व्यक्ति को इच्छानुरूप शारीरिक अनुपात में तबदील करता है। ठीक वैसे ही जैसे अंकुर से पीपल का निकलना निश्चित है। इसके लिए सिर्फ वक्त आने का इंतजार छोड़ बाकी कोई बाहरी मदद की जरूरत नहीं है।

इन वक्तव्यों से स्पष्ट है कि हम ईगो के विकास और नियंत्रण के साथ-साथ यह चेतावनी भी दे रहे हैं कि कोई व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में ईगो पर काबू पाए बिना सफल नहीं हो सकता।

उचित तरीके के विकसित ईगो की परिभाषा

उचित तरीके से विकसित ईगो का मतलब समझने में कोई गलतफहमी न हो, इसलिए मैं वैसे फैक्टरों का संक्षेप में वर्णन करूँगा, जो इसके विकास में सहायक होते हैं।

सर्वप्रथम व्यक्ति अपने आत्म को एक या उससे अधिक वैसे लोगों के साथ जोड़ें, जो उस व्यक्ति से सद्भावपूर्ण दिमागी समन्वय निश्चित प्रमुख लक्ष्य को ध्यान में रखकर करें। वह गठजोड़ लगातार जारी और निश्चित रूप से सक्रिय रहे।

गठजोड़ में सिर्फ वैसे ही लोग शामिल हों, जिनकी मानसिक और आध्यात्मिक शिक्षा, सेक्स, उम्र सब गठजोड़ के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक बनने लायक हों। उदाहरण के लिए एंड्रयू कार्नेगी का मास्टरमाइंड गठजोड़ 20 से ज्यादा लोगों का था। उस गठजोड़ के हर सदस्य के पास लक्ष्य की प्राप्ति पर केंद्रित अपना अलग-अलग दिमाग, शिक्षा, अनुभव और ज्ञान था और एक का दूसरे से मिलना-जुलना नहीं था।

दूसरा, अपने आत्म को सही सहयोगियों के प्रभाव में रखकर व्यक्ति गठजोड़ का उद्देश्य हासिल करने के लिए एक निश्चित योजना बनाए और उसे अपनी जान-पहचान की दिशा में आगे बढ़ाता जाए। वह कंपोजिट योजना मास्टरमाइंड गठजोड़ के सभी सदस्यों के संयुक्त प्रयासों से तैयार की गई हो।

अगर एक योजना अधूरी या अपर्याप्त साबित हो तो सदस्यों के सहयोग से इसे ऐसा पुख्ता रूप दिया जाए, जो कारगर हो, लेकिन गठजोड़ के उद्देश्य में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

तीसरा, व्यक्ति अपने आत्म को इतना कमजोर न होने दे कि गाहे-बगाहे किसी भी व्यक्ति या परिस्थिति के प्रभाव में आ जाए, जिससे उसे अपने अंदर हीन भावना महसूस हो या अपना लक्ष्य हासिल करने में अपने को असमर्थ मानने जैसी कोई बात दिमाग में आए। सार्थक ईगो नकारात्मक वातावरण में पैदा नहीं होते।

इस बिंदु पर समझौते के लिए कोई स्थान नहीं है और इसे समझने में विफल होने पर सफलता की उम्मीदों पर पानी फिर सकता है। व्यक्ति और उस पर नकारात्मक प्रभाव डालने की कोशिश करनेवाले लोगों के बीच एक स्पष्ट रेखा खींची जानी चाहिए, ताकि ऐसे किसी भी नकारात्मक प्रभाव के लिए अंदर आने का दरवाजा मजबूती से बंद रहे। यहाँ उद्यमी को इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि उसकी पहले की दोस्ती, मेहरबानी या रक्त संबंध कैसे रहे हैं।

चौथा, अतीत के वैसे अनुभवों, परिस्थितियोंवाले वैसे विचारों के प्रवेश का दरवाजा मजबूती से बंद करें, जिन्होंने कभी हीन भावना पैदा की हो या दुःखी किया हो। मजबूत

और ठोस ईगो का दुःखी करनेवाले पहले के विचारोंवाले घर में प्रवेश हो ही नहीं सकता। विचार वैसे मकानों के खंड हैं, जो मानव ईगो बनाते हैं। कॉस्मिक हैबिटफोर्स इन खंडों को ठोस और मजबूत बनाने के लिए सीमेंट का काम करते हैं, जिनका प्लास्टर फिक्स आदतों के जरिए होता है।

पाँचवाँ, व्यक्ति अपने को हर संभव शारीरिक साधनों से घिरा रखे, जो दिमाग को ईगो विकसित करने के स्वभाव और उद्देश्य के हिसाब से प्रभावित करे। मसलन लेखक को एक कक्ष वर्कशॉप बनाना चाहिए, जो वैसी तसवीरों और वैसे लेखकों की कृतियों से सुसज्जित हो, जिनसे वह प्रभावित है। लेखक के बुकशेल्फ उसकी अपनी रचनाओं और किताबों से भरे हों। वह व्यक्ति वैसी हर चीजों से घिरा रहे, जो ईगो के सामने उसके आत्म की सही तसवीर पेश करे, जैसा लेखक व्यक्त करना चाहता है। उस तसवीर के पैटर्न पर कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम गति पकड़ेगा और इसे शारीरिक समानुपात में तबदील करेगा।

छठा, अच्छी तरह, उचित तरीके से विकसित ईगो हमेशा व्यक्ति के काबू में रहता है। ईगो को इतना विकसित नहीं होने देना चाहिए, जो ईगोमैनिया की बीमारी के लक्षण पैदा करके व्यक्ति को खुद बरबाद कर दे।

ईगो के विकास में व्यक्ति का लक्ष्य यह होना चाहिए कि बहुत ज्यादा नहीं, बहुत थोड़ा भी नहीं, चाहे वह कुछ भी हो। जब व्यक्ति दूसरों के नियंत्रण पर ज्यादा जोर डालना शुरू करता है या इतना अकूत पैसा जमा करने में लग जाता है, जिसका वो सृजनात्मक उपयोग नहीं कर सकता, तो इसका मतलब है वह खतरनाक रास्ते पर चल रहा है। इस तरह का स्वभाव उसके अपने ही समझौते से पैदा होता है और जल्द ही नियंत्रण से बाहर हो जाता है।

प्रकृति ने लोगों को एक सुरक्षा कवच दे रखा है जिसके जरिए ईगो पर असर पड़ता है। जब व्यक्ति अपने ईगो के विकास की निश्चित सीमा से आगे जाता है तो प्रकृति ही उसके प्रभाव से छुटकारा दिलाती है। एमर्सन ने इसे मुआवजे का नियम बताया, मगर ये जो भी हो अडिग निश्चितता द्वारा ही संचालित होता है। सैंट हेलेना द्वीप में उतरने के दिन से ही नेपोलियन बोनापार्ट की मौत ईगो के कुचले जाने के कारण शुरू हुई। सक्रिय और व्यस्त जीवन जीने के बाद जो व्यक्ति काम छोड़कर सारे क्रियाकलापों से रिटायर होता है, वह मानसिक रूप से कुंद होकर जल्द मर जाता है। अगर वह जीता भी है तो, प्रायः दुखी और दयनीय जिंदगी गुजारता है।

सातवाँ, ईगो में हमेशा परिवर्तन होता रहता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा— वैचारिक आदतों की प्रकृति के कारण ऐसा होता है। इस परिवर्तन पर दो तत्त्वों का दबाव काम करता है, जिनमें एक है समय और दूसरा है कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम। मैं आपका ध्यान समय की ओर खींचना चाहता हूँ, जो कॉस्मिक हैबिटफोर्स के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ठीक वैसे ही, जैसे जमीन में बोया गए बीज को अंकुरित होने में समय लगता है और वह जरूरत के मुताबिक निश्चित समय से ही पौधा बनकर बाहर निकलेगा। अंकुर की तरह ही विकास और वृद्धिवाला सिद्धांत—विचार, सोच और इच्छाओं पर लागू होता है। ये पहले दिमाग में रोपे जाते हैं, फिर एक निश्चित समय के अंदर कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम इनमें जान डालता है और एक्शन में लाता है। कितने समय में कोई

इच्छा अपने शरीर के समानुपात में परिवर्तित हो जाएगी, इसकी कोई निश्चित समय सीमा, पूर्व निर्धारण या उसके वर्णन का उचित साधन नहीं है।

आस्था और विश्वास के नाम से जानी जानेवाली दिमागी स्थिति इच्छा को शारीरिक समानुपात में परिवर्तित करने में इतनी सहायक होती है कि ऐसा माना जाता है मानो यह परिवर्तन अपने आप होता है, बशर्ते कि दिमाग उसी दिशा में काम करता रहे।

मनुष्यों में लगभग 20 वर्षों में शारीरिक रूप से गंभीरता और वैचारिक रूप से प्रौढ़ता आ जाती है, मगर मानसिक प्रौढ़ता जिसका मतलब ईगो है, आने के लिए 35 से 60 वर्ष की उम्र तक पहुँचने की जरूरत होती है। इससे यह भी पता चलता है कि बहुतों में विरले ही ऐसे होते हैं कि 50 तक पहुँचने से पहले वे अकूत संपत्ति जमा कर लेते हैं या अन्य क्षेत्रों में भी उपलब्धियों के उल्लेखनीय रिकॉर्ड कायम कर लेते हैं।

ईगो लोगों को भरपूर भौतिक सुख-साधन जुटाने और उन्हें बरकरार रखने को प्रेरित कर सकता है, लेकिन इसके लिए स्व-अनुशासन की जरूरत पड़ती है। स्व-अनुशासन के जरिए ही व्यक्ति आत्मविश्वास, लक्ष्य की निश्चितता, व्यक्तिगत पहल, कल्पना, सही निर्णय की क्षमता और अन्य गुण हासिल करता है। इनके बिना कोई केवल ईगो की प्रभुता से ही धन न तो जमा कर सकता है, न ही धनकुबेर बना रह सकता है।

ये सारे गुण समय के सही उपयोग से हासिल होते हैं। सोचें कि हम यह नहीं कहते कि ये सब समय गुजर जाने के बाद आते हैं। कॉस्मिक हैबिटफोर्स के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति की वैचारिक आदतें, चाहे वो सकारात्मक हों या नकारात्मक, संपन्नतावाली हों या निर्धनतावाली—ये सब व्यक्ति के ईगो पैटर्न में गुँथी होती हैं।

उसी जगह पर आकर ये सारी मानसिक अवस्थाएँ स्थायी आकार ग्रहण करती हैं, जो व्यक्ति की शारीरिक और आध्यात्मिक स्थिति तय करती है।

जब एक पत्नी ने अपने पति का ईगो मैनेज किया

सन् 1929 की भीषण आर्थिक मंदी की शुरुआत के समय एक छोटे से ब्यूटी सैलून की मालकिन ने अपनी दुकान के पीछे का एक कमरा एक बुजुर्ग को दे दिया, जिसे सोने की जगह चाहिए थी। उस व्यक्ति के पास पैसा तो नहीं था, लेकिन वह बुजुर्ग कॉस्मेटिक्स के मिश्रण के तरीके जानता था। सैलून मालकिन ने उस व्यक्ति को सोने की जगह दे दी और अपने व्यवसाय में काम आनेवाले कॉस्मेटिक्स मिलाने का काम देकर उसे यह अवसर दिया, ताकि वह कमरे का किराया चुका सके।

जल्द ही दोनों के बीच मास्टरमाइंड गठजोड़ हो गया, जिससे उनकी आर्थिक आजादी के रास्ते खुले। पहले वे व्यावसायिक पार्टनर बने, जिसमें उनका मुख्य काम था, साथ मिलकर कॉस्मेटिक्स मिलाना और घर-घर जाकर बेचना। सैलून मालकिन ने कच्चे माल के लिए पैसा जुटाया और बुजुर्ग व्यक्ति ने बेचने का काम किया। कुछ वर्षों बाद दोनों के बीच मास्टरमाइंड गठजोड़ इतना फायदेमंद साबित हुआ कि उन दोनों ने इसे विवाह के जरिए स्थायी बनाने का निर्णय किया, जबकि दोनों की उम्र में 25 वर्ष से ज्यादा का फर्क था।

उस बुजुर्ग ने अपनी युवावस्था का ज्यादा समय कॉस्मेटिक व्यवसाय में गुजारा, मगर सफलता नहीं मिली; उस युवती ने उसे अपने ब्यूटी सैलून में सिर्फ सोने की जगह दे दी। उन

दोनों के प्रसन्न गठजोड़ ने उन्हें वैसी शक्ति दे दी जिसे दोनों में से कोई गठजोड़ से पहले नहीं जानता था और गठजोड़ ने उन्हें वित्तीय सफलता प्रदान की।

मंदी शुरू होने के समय दोनों एक छोटे से कमरे में कॉस्मेटिक्स मिलाते थे और स्वयं घर-घर जाकर अपना माल बेचते थे। मंदी समाप्त होने के समय, करीब आठ वर्ष बाद वे एक विशाल कॉस्मेटिक्स कारखाने के मालिक बन गए। 100 से ज्यादा कर्मचारी उनके अधीन दिन-रात काम करते थे और उनके पास देश भर में 4,000 से ज्यादा सेलिंग एजेंट थे। इस अवधि में उन्होंने 20 लाख डॉलर की संपत्ति अर्जित की, जबकि उनका काम मंदी के दिनों में भी चल रहा था, जब कॉस्मेटिक्स जैसी विलासिता की चीजें बेचना कठिन था।

उन्होंने अपने बाद की पीढ़ी की पैसों की जरूरतों का भी इंतजाम कर लिया। दोनों ने उसी ज्ञान और अनुभव के आधार पर यह आर्थिक उपलब्धि हासिल की, जबकि मास्टरमाइंड गठजोड़ से पहले वे गरीबी में जी रहे थे।

इन दो व्यक्तियों का नाम मैं बताना चाहता हूँ, लेकिन उनकी गठजोड़ परिस्थितियाँ और उसके विश्लेषण की प्रकृति, जो मैं अब बताने जा रहा हूँ, इसे अव्यावहारिक बना देंगी। मैं यह बताने के लिए स्वतंत्र हूँ कि उस दंपती की उल्लेखनीय सफलता को मैं किस रूप में देखता हूँ। उनके मास्टरमाइंड संबंध की हर परिस्थिति का मैंने एक निष्पक्ष विश्लेषक के रूप में अध्ययन किया है, ताकि उनसे संबंधित तथ्यों की सही तसवीर सामने आए। उन दोनों के मास्टरमाइंड गठजोड़ के पीछे निश्चित रूप से आर्थिक लक्ष्य काम कर रहा था।

महिला की उससे पहले शादी हुई थी, लेकिन पति कमाता नहीं था और उलटे उस समय उसे छोड़कर चला गया, जब महिला की गोद में बच्चा था। उस बुजुर्ग की भी पहले शादी हो चुकी थी।

दोनों की दूसरी शादी के पीछे किंचित मात्र भी प्रेम की भावना काम नहीं कर रही थी। एकमात्र आर्थिक आजादी की आपसी इच्छा उद्देश्य थी। कारोबार से लेकर घर तक, जिसमें वे दंपती रहते थे, देखना-सँभालना पूरी तरह बुजुर्ग का काम था। पति मानते थे कि दोनों काम उन्हीं की जिम्मेदारी है। कारखाने से बिक्री के लिए जानेवाले हर पैकेज पर व्यापारिक काम बुजुर्ग व्यक्ति का होता था। पति का नाम डिलीवरी ले जानेवाले हर ट्रक पर बड़े-बड़े अक्षरों में छपा होता था और हर विज्ञापन तथा बिक्री कागजात में उन्हीं का नाम होता था। पत्नी का नाम किसी भी व्यापारिक कामकाज में नहीं था।

उस व्यक्ति को भरोसा था कि उसी ने वह कारोबार खड़ा किया, चला रहा है और वह उसके बगैर चल नहीं सकता। जबकि सच्चाई इसके विपरीत थी। उस व्यक्ति के ईगो ने वह व्यवसाय खड़ा किया, चलाया और उसे आगे बढ़ाया, लेकिन उस व्यक्ति के न होने पर भी वह कारोबार चल सकता था, क्योंकि इसका श्रेय महिला को जाता है, जिसने उसे सोने की जगह दी और बाद में उसकी पत्नी बनी। पत्नी ने उस हिसाब से ईगो विकसित किया और वह महिला किसी के भी ईगो को वैसा रूप दे सकती थी, जो उसी परिस्थिति में सहयोगी बन जाता।

धैर्य और विवेक से पत्नी ने अपने पति के ईगो को वह खुराक दी और दिमाग से वैसी बातें निकालीं जिन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में असफलता के कारण उसे हीन भावना का शिकार बना दिया था।

महिला ने अपने पति को ऐसे मानसिक ढाँचे में ढाला, ताकि वह खुद को एक बड़ा कारोबारी माने।

एक चतुर महिला के प्रभाव में आने के बाद उस व्यक्ति के अंदर पहले से जैसा भी ईगो रहा होगा, वो विलुप्त होता चला गया। पत्नी ने अपने पति के ईगो को नया जीवन प्रदान किया, उसका पालन-पोषण किया और एक व्यावसायिक उत्साहपूर्ण शक्ति से ओतप्रोत किया, जिसकी क्षमता पति में नहीं थी। ये सच है कि प्रत्येक व्यावसायिक नीति और उस दिशा में उठाया गया हर कदम पत्नी के विचारों का परिणाम था, जो उसने अपने पति के दिमाग में चतुराई से भर दिया।

वास्तव में व्यवसाय के पीछे महिला का ही दिमाग था, पति तो सिर्फ खिड़की सजावट का काम जानता था, लेकिन उनका गठजोड़ अपराजेय था जिसका सबूत था उनकी उल्लेखनीय आर्थिक सफलताएँ। जिस तरीके से उस महिला ने अपने को प्रोजेक्ट किया, वह उसके पूर्ण आत्म-नियंत्रण का भी सबूत है और बुद्धिमानी का भी। संभवतः वह समझ रही थी कि वैसी उपलब्धियाँ वह अकेले नहीं पा सकती थी और जो उपाय उसने आजमाए, उन्हें छोड़ अन्य तरीकों से ऐसा अच्छा परिणाम नहीं मिलता। उस महिला ने मामूली शिक्षा पाई थी और इस संबंध में मैं कुछ नहीं जानता कि कैसे और कहाँ से उसने मानव मस्तिष्क को संचालित करने का हुनर सीखा, जिसकी बदौलत महिला ने अपनी पूरी क्षमता पति के दिमाग को सार्थक सोच पर केंद्रित करने में लगाने के क्रम में अपना संपूर्ण व्यक्तित्व पति में विलय कर दिया। इसकी वजह शायद वह प्राकृतिक सोच रही होगी, जो हर महिला में होती है, जिसके चलते उसकी प्रक्रिया सफल साबित हुई। जो भी हो, उस महिला ने कायदे और तरीके से अपना काम किया और आर्थिक सुरक्षा हासिल की।

यहाँ हर बात का सबूत है कि गरीबी और अमीरी में प्रमुख अंतर ईगो का फर्क है, जिसमें एक हीन भावना से, तो दूसरा अपने को जरा ऊपर समझने की भावना से सफर करता है।

अगर वह बुजुर्ग उस महिला से नहीं मिला होता, जिसने उसके दिमाग को इस तरह संचालित करके ईगो को अपनी चतुराईपूर्ण हुनर से प्रभुता हासिल करने की क्षमता दृढ़ करनेवाले विचार—आत्मविश्वास से भर दिया कि वह अपने पुराने दिन भूल गया, वरना एक बेघर, बेसहारा रहकर मर जाता।

यह एक ऐसा नतीजा है, जहाँ से कोई पलायन नहीं है। यह मामला वैसे कइयों में से एक उदाहरण है, जो अगर जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल होना चाहते हैं, तो उनके ईगो को उचित निर्देश, संगठन और खुराक मिलनी चाहिए।

हेनरी फोर्ड का आश्चर्यजनक ईगो

हेनरी फोर्ड का ईगो, इसलिए मशहूर है, क्योंकि अधिकांश लोग इसके विषय में ज्यादा नहीं जानते। यह फोर्ड का अपना और पत्नी के ईगो का गठजोड़ था। एकमात्र निश्चित लक्ष्य, आत्म-निर्भरता, आत्म-नियंत्रण और लक्ष्य पर खुद को केंद्रित करने की प्रबल आकांक्षा, ये सब हेनरी फोर्ड के ईगो के महत्त्वपूर्ण हिस्से हैं, जो श्रीमती फोर्ड के प्रभाव में विस्तार से जाने जा सकते हैं। फोर्ड ईगो उस कॉस्मेटिक व्यवसायी से जरा अलग किस्म का है या जिसने बिना किसी ग्लैमर और तामझाम के काम किया। यह सिर्फ दंपती के हृदय की

विनम्रता और उत्साह पर टिका ईगो था।

हेनरी फोर्ड के जीवनकाल में उनकी कोई बड़ी तसवीर उनके कार्यालय में लगी नजर नहीं आई, लेकिन इससे भुलावे में न आएँ, क्योंकि फोर्ड का प्रभाव वैसे हर व्यक्ति पर था, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर उनके विशाल औद्योगिक साम्राज्य से जुड़ा था। आज भी फोर्ड कारखाने से निकले हर ऑटोमोबाइल में किसी-न-किसी रूप में फोर्ड मौजूद रहते हैं।

फोर्ड ने अपना ईगो जिन साधनों से व्यक्त किया, उनमें प्रमुख हैं मैकेनिकल पूर्णता, भरोसेमंद परिवहन सेवा जो लोगों को रोजगार देने के संतोष के कारण लोकप्रिय कीमत में उपलब्ध थी और जिसके माध्यम से लाखों लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उससे जुड़े थे।

हेनरी फोर्ड प्रशंसा के एक शब्द से परे नहीं थे, लेकिन उन्होंने इसे पाने के लिए अपने रास्ते से अलग हटकर कोई काम नहीं किया। उनके ईगो को लगातार पंपिंग की जरूरत नहीं थी, जैसा कॉस्मेटिक महिला ने अपने पति के साथ किया।

अन्य लोगों के अनुभव और ज्ञान का लाभ उठाने का फोर्ड का तरीका एंड्रयू कार्नेगी तथा अन्य व्यावसायिक महारथियों से अलग था।

हेनरी फोर्ड का ईगो इतना संयमित और शालीन था कि न तो कभी उन्होंने अपने काम पर अनुकूल टिप्पणी की चाहत रखी, न ही अपने काम के प्रति मिलनेवाली शुभकामनाओं के प्रति अलग हटकर कोई उद्गार व्यक्त किए।

हेनरी फोर्ड सही मायने में दुनिया के महान् दिमागवालों में से एक थे। फोर्ड इसलिए महान् दिमागवाले थे, क्योंकि उन्होंने प्रकृति के नियमों को पहचानना और उन्हें अपने जीवन में इस तरह उतारना सीखा, ताकि उनके लिए लाभकारी हो। बहुत लोग मानते हैं कि फोर्ड की महानता का ज्यादा श्रेय उनकी पत्नी और थॉमस एडीसन, लूथर बरबैंक, जॉन बरो और हार्बे फायरस्टोन जैसे दिमागों को जाता है, जिनके साथ लंबे समय तक उनका मास्टरमाइंड गठजोड़ रहा।

कई वर्षों तक इन पाँच महान् व्यक्तियों ने अपना कारोबार छोड़कर एक शांत जगह चुनी, जहाँ अपने विचारों का आदान-प्रदान किया और अपने-अपने ईगो को वह खुराक दी, जिसकी प्रत्येक को जरूरत थी।

इन पाँच व्यक्तियों के प्रभाव में आकर हेनरी फोर्ड के व्यक्तित्व, उनकी कारोबार नीति और यहाँ तक कि शारीरिक क्षमता में भी बरस-दर-बरस प्रगति होने लगी। फोर्ड पर उनका प्रभाव बहुत गहरा, निश्चित और उत्साहवर्धक था।

हेनरी फोर्ड का ईगो पूरी तरह उनके नियंत्रण में था। महान् उपलब्धि हासिल करनेवालों की कहानी बताती है कि जो स्थान उन्होंने दुनिया में हासिल किया, वह काफी कुछ इस पर निर्भर करता था कि किस अनुपात में उनका अपने ईगो पर नियंत्रण है।

उस कॉस्मेटिक विशेषज्ञ को सिर्फ उतनी ही जगह मिली, जो उसके घरेलू और व्यावसायिक कामों से घिरी थी। वो इन बँधी सीमाओं से बाहर नहीं निकला और कभी निकल भी नहीं सकता था। उसकी अपनी ही मानसिक प्रवृत्ति ने ये सीमाएँ फिक्स कीं और कॉस्मिक हैबिटफोर्स ने इसे स्थायी रूप से फिक्स कर दिया।

हेनरी फोर्ड ने एक या दूसरे तरीके से दुनिया के सभी स्थानों पर व्यावहारिक रूप में कब्जा जमाया और कई रूपों में सभ्यता की प्रवृत्ति को प्रभावित किया। वे अपने ईगो के

मास्टर थे, फोर्ड अपने मन में ठानी हुई कोई भी भौतिक वस्तु हासिल करने में सक्षम थे।

कॉस्मेटिक व्यवसायी ने अपने ईगो की अभिव्यक्ति को अपने स्वार्थ और संकुचित दुनिया तक सीमित रखा। उसका प्रभाव सिर्फ कुछ लाख डॉलर कमाने तक ही अटका रहा और कुछ हजार लोगों के आधिपत्य (बिना उनकी इजाजत के) में कैद रहा, जिसमें उसका घर तथा उसके कर्मचारी भी शामिल थे।

हेनरी फोर्ड ने अपने ईगो का दायरा विस्तृत और लगातार प्रगति की ओर बढ़ानेवाला बनाया, जो मानव कल्याण पर केंद्रित था। बिना अत्यधिक प्रयास के उन्होंने खुद को दुनिया के एक प्रभावी व्यक्तित्व के रूप में पाया। यह एक अग्रणी विचार है और इससे यह सुझाव भी मिलता है कि किस तरह का विकासोन्मुख ईगो व्यक्ति को विकसित करना चाहिए।

हेनरी फोर्ड ने ऐसा ईगो विकसित किया, जिसने पूरी धरती पर प्रभाव जमानेवाली योजनाएँ बनाकर दीं। उन्होंने ऑटोमोबाइल के निर्माण और वितरण को ध्यान में रखकर सोचा। उनकी सोच में कंपनी के लिए काम कर रहे दसियों हजार पुरुषों, महिलाओं का हित था। उन्होंने अपनी लाखों डॉलर की कार्यरत पूँजी के बारे में सोचा। उनकी योजना में अपने व्यवसाय का संचालन इस तरह करना था, ताकि उनकी अपनी ही बनाई हुई नीतियों पर जमा कार्यरत पूँजी उन्हीं के नियंत्रण में रहे। फोर्ड ने अपनी अर्थव्यवस्था के विषय में उन हजारों कर्मचारियों के प्रयत्नों को ध्यान में रखकर सोचा, जो उनके लिए काम कर रहे थे और इसीलिए वेतन तथा काम की अवस्थाओं में भी उनके हित का खयाल करके ऐसा ढाँचा तैयार किया, जो वे माँग सकते थे। फोर्ड ने व्यावसायिक सहयोगियों के साथ अपने समन्वयपूर्ण रिश्ते को ध्यान में रखकर सोचा और वैसे हर व्यक्ति को हटाने के विचार को अमली जामा पहनाया, जो उनसे आँख-में-आँख मिलाकर बात नहीं कर सकते थे।

यही गुण और स्वभाव थे, जिनसे फोर्ड ईगो की परवरिश हुई, उसे खुराक मिली तथा वह कायम रहा। इन गुणों में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे समझना कठिन हो। ये वैसे गुण हैं, जो कोई भी आसानी से अपना सकता है और उनका इस्तेमाल कर सकता है।

अब जरा उन लोगों पर रोशनी डालें, जिन्होंने फोर्ड के बाद ऑटोमोबाइल बनाना शुरू किया। एक-एक का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें और आप जल्द ही जान जाएँगे कि सिर्फ एक ही व्यक्ति को क्यों याद किया जाता है या वैसे कुछ ही लोग हैं, जिन्होंने थोड़े से ब्रांड बनाए।

आप जानेंगे कि रास्ते में पिछड़नेवाले—फोर्ड से प्रतिस्पर्धा करने के प्रयास में उन लोगों ने अपने ईगो पर स्वपोषित पाबंदी लगा रखी थी। आपको यह भी पता चल जाएगा कि इन भूले-भटके आविष्कारकों में से प्रत्येक हेनरी फोर्ड से ज्यादा तेज-तर्रार था। ज्यादातर फोर्ड से ज्यादा शिक्षित थे और ज्यादा डायनेमिक व्यक्तित्ववाले थे।

हेनरी फोर्ड और उनके प्रतियोगियों के बीच मुख्य अंतर यह था—फोर्ड ने अपना ईगो इस तरह विकसित किया, जिसका दायरा उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों से ज्यादा विस्तृत था। अन्य लोगों ने अपने ईगो को इतना सीमित कर दिया कि जल्द ही उसकी गिरफ्त में आ गए और उनकी योजना उस चट्टान से टकराकर लौट गई, जो उनके ईगो को उन्हें कुछ आगे कर गुजरने लायक लचीला बनाती। अच्छी तरह ठोक-बजाकर तैयार ईगो पर प्रशंसा या निंदा

का कोई गंभीर प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसे ईगोवाले व्यक्ति की नाव निश्चित प्रमुख लक्ष्यवाली पतवार की बदौलत बिलकुल सही दिशा में चलती है।

वह व्यक्ति अपने लक्ष्य के लिए व्यक्तिगत पहल करता है और दाएँ-बाएँ देखे बिना सीधा आगे बढ़ता जाता है, वैसा व्यक्ति हार और जीत दोनों को जीवन के स्वाभाविक पहलू मानता है। इसके चलते वह अपनी भावी योजनाओं में कोई परिवर्तन नहीं लाता।

इस दर्शन को सीखने के लिए जुटे आप लोग भी उसी तरीके से उस साम्राज्य तक पहुँच सकते हैं। इस दर्शन के सत्रह सिद्धांतों में आपने जाना है कि मास्टर चाबी हासिल करने के लिए इन सबकी जरूरत है। अब आपके सामने वह सारा व्यावहारिक ज्ञान मौजूद है, जिसका इस्तेमाल सभ्यता की शुरुआत से लेकर अभी तक सफल लोगों ने किया है। यह जीवन का संपूर्ण दर्शन है, जो हर मानवीय जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त है। सभी मानवीय समस्याओं के समाधान का खजाना इसी में है और यह इस रूप में प्रस्तुत किया गया है, ताकि हर व्यक्ति समझ सके।

आप बहुत बड़े कॉरपोरेट मालिक, सरकारी अधिकारी या अन्य क्षेत्र में स्टार बनने की आकांक्षा भले ही न करें, लेकिन जो आपको करना चाहिए और कर भी सकते हैं कि अपने को इतना उपयोगी बनाएँ, ताकि आपके ईगो को दुनिया में ज्यादा-से-ज्यादा जगह मिले। हर कोई अंत में घूमकर वहीं आता है कि कैसे अपने ईगो पर मजबूत इंप्रेशन बनाया जाए।

हम सब अनुकरण की पैदाइश हैं और इसलिए स्वाभाविक रूप से हम अपनी पसंद के हीरो का अनुकरण करके वैसा ही बनने का प्रयत्न करते हैं। यह एक स्वाभाविक और स्वस्थ प्रवृत्ति है। वे लोग भाग्यशाली हैं, जिनकी प्रेरणा के हीरो महान् आस्थावाले हैं, क्योंकि हीरो की पूजा में वैसा कुछ रहता है, जो सपनों के हीरो के स्वभाव से थोड़ा मिलता-जुलता है।

दिमाग का उर्वरक फुलवारी स्पॉट

निष्कर्ष के तौर पर अब हम उन तमाम बातों का सार संक्षेपण कर रहे हैं, जो ईगो के संबंध में आगे कही गई हैं। इसका उद्देश्य इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना है कि ईगो दिमाग के उर्वरक फुलवारी स्पॉट का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ सक्रिय आस्था जगानेवाली बुद्धि विकसित होती है और व्यक्ति वैसे काम की उपेक्षा करने की स्थिति में जाता है जो भय, संदेह और अनिर्णय जैसी विफलता की ओर ले जानेवाली नकारात्मक फसल उगाते हैं।

दुनिया में आप अपने लिए कितना और कैसा स्थान बनाते हैं, यह आपको चुनाव करना है। धनकुबेर बनने की मास्टर चाबी आपके हाथ में है। आप अंतिम दरवाजे पर खड़े हैं, यह दरवाजा बिना आपकी माँग के नहीं खुलेगा, यदि आप वो करेंगे। इस दर्शन के सत्रह सिद्धांतों को अपना बनाने के लिए आप मास्टर चाबी का इस्तेमाल अवश्य करें। अब आपके कमांड में जीवन का संपूर्ण दर्शन है जो हर व्यक्ति की समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त है।

यह सिद्धांतों का दर्शन है और इसका कुछ मिश्रण प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी व्यवसाय या क्षेत्र में सफलता प्रदान कर सकता है। यह अलग बात है कि कई लोगों ने इस कथन का

सफलतापूर्वक इस्तेमाल उन 17 नामों को पुकारे बिना किया है, जो हमने इन सिद्धांतों को दिए हैं। सफल उपलब्धि का कोई भी आवश्यक तत्त्व पूरा नहीं है। इस दर्शन में सब समाहित है और ऐसी मुसकानों तथा शब्दों में वर्णित है, जो अधिकांश लोगों की समझ में आने लायक है।

यह वैसा दर्शन है, जिसमें ठोस आधार बताए गए हैं, जिसमें एक भी छोड़ने की नौबत शायद न आने पाए। यह शैक्षणिक संदर्भों और मुहावरों से मुक्त है, जो प्रायः औसत व्यक्तियों को दिग्भ्रमित करता है।

इस दर्शन का कुल मिलाकर उद्देश्य व्यक्ति को यह बताता है कि वह कहाँ है और आर्थिक तथा आध्यात्मिक रूप से कहाँ पहुँचना चाहता है। इस तरह यह दर्शन व्यक्ति को संपन्न जीवन का सिद्धांत उपलब्ध कराता है, जो सृष्टिकर्ता ने आनंद उठाने के लिए दिया है। यह दर्शन धनकुबेर शब्द का विस्तृत और पूर्ण अर्थ समझने की ओर ले जाता है, जिसमें धनकुबेर बनने के सारे बारह महत्त्वपूर्ण फॉर्मूले शामिल हैं।

यह जगत् प्लेटो, सुकरात, कॉपरनिकस, अरस्तू सरीखे पुरातन दार्शनिकों से लेकर रॉल्फ वाल्डो एमर्सन और विलियम जेम्स जैसे आधुनिक विद्वानों के सापेक्ष महान् विचारों से परिपूर्ण है, जिन्होंने अपने पूर्ववर्तियों के दर्शन का अनुसरण किया।

आज दुनिया के सामने पहला संपूर्ण और ठोस व्यक्तिगत उपलब्धि दर्शन मौजूद है। यह व्यक्ति को वैसे व्यावहारिक साधन उपलब्ध कराता है, जिसके जरिए वे अपने ही दिमाग पर पूरा काबू पा सकते हैं और इसे दिमागी शांति, मानवीय संबंधों में समन्वय, आर्थिक सुरक्षा और पूर्ण सुखी जीवन की ओर लगा सकते हैं।

यह क्षमायाचना नहीं व्याख्या है कि मैंने आपका ध्यान इस तथ्य की ओर 17 सिद्धांतों के विश्लेषण के दौरान बार-बार उनके महत्त्वपूर्ण बिंदुओं की ओर खींचा और उसके संदर्भ कई बार दुहराए। यह पुनरावृत्ति अचानक ही नियोजित थी। यह इसलिए जरूरी था, क्योंकि मानव स्वभाव की प्रवृत्ति नए विचारों से या पुराने सत्यों की नए ढंग से व्याख्या से प्रभावित न होने की होती है। बार-बार दुहराना इसलिए भी जरूरी था क्योंकि ये सत्रह सिद्धांत आपस में इस तरह कड़ी जैसे एक-दूसरे से जुड़े हैं कि उनमें से प्रत्येक सिद्धांत का एक हिस्सा है, जो दूसरे को आगे ले जाता है। अंत में, पुनरावृत्ति को मैं इसलिए भी उचित ठहराना चाहता हूँ क्योंकि यह प्रभावी शिक्षण का एक बुनियादी सिद्धांत है और असरदार विज्ञापन का भी केंद्रीय बिंदु है, इसलिए यह उचित होने के साथ-साथ मानव प्रगति का निश्चित रूप से एक जरूरी साधन है।

इस दर्शन को आत्मसात् कर लेने के बाद हम उन अधिकांश लोगों की तुलना में बेहतर शिक्षा पा लेंगे, जो एम.ए. की डिग्री हासिल करके निकलते हैं। आप और भी उपयोगी ज्ञान हासिल करने की स्थिति में होंगे, जो इस देश में पैदा हुए अधिकांश सफल व्यक्तियों के अनुभवों से संगठित किया हुआ है। यह अनुभव आपके पास इस रूप में है, जिसे आप समझ सकते हैं और अपना सकते हैं।

याद रहे कि इस ज्ञान के उचित इस्तेमाल की जिम्मेदारी आपकी है। केवल ज्ञान हासिल करने से कुछ नहीं मिलनेवाला, जब तक कि इसका उपयोग न करें।

❑

11

आत्म-अनुशासन

"अपने दिमाग को पूरी तरह कब्जे में रखने की क्षमता हासिल करनेवाला व्यक्ति वह सारा कुछ पा सकता है, जिसका वह उचित हकदार है।"

—एंड्रयू कार्नेगी

कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम पर सवेरे की चर्चा से सम्मेलन में भाग लेनेवाले उत्साहित थे। अपनी आदतें बदलने की बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह उन लोगों को अच्छी लगी, जो सफलता हासिल करना चाहते थे।

भोजन के कमरे में जुटने के समय सभी ने आपसी बातचीत में महसूस किया कि यह एक-दूसरे के साथ बैठने का शायद अंतिम अवसर होगा। इस सप्ताह ने कइयों को नजदीकी दोस्त बनाया और वे मास्टरमाइंड गठजोड़ के विषय में बात करने लगे, ताकि जीवन का लक्ष्य हासिल करने में एक-दूसरे की मदद कर सकें। कुछ लोगों के बीच चर्चा का विषय यह था कि सम्मेलन तो समाप्त हो जाएगा, लेकिन अभी तक इस भद्र व्यक्ति का परिचय गुप्त ही बना हुआ है। उसी समय एक युवक कागज की एक शीट लिये कमरे में घुसा।

"मेरे पास जानकारी है", वह युवक चीखा, "मैं इस विशिष्ट वक्ता को जानता हूँ और इस भद्र व्यक्ति का परिचय कल से अखबार में छपवाने जा रहा हूँ।"

कई श्रोताओं ने जाना कि यह युवक किसी अखबार का रिपोर्टर है, जिसने आज अपना पहला बड़ा स्कूप पा लिया है। उनमें बहुतों ने युवक को घेर लिया और गुप्त पहचान उजागर करने का आग्रह करने लगे। लेकिन वह युवक अडिग रहा, "मैं अपना स्कूप किसी भी तरह लीक नहीं करूँगा।" यह कहकर भोजन कक्ष की ओर बढ़ गया।

भोजन कक्ष का शोरगुल कम होने के बाद विशिष्ट वक्ता उस कमरे में घुसा, जो सम्मेलन के पहले दिन उसे श्रोताओं के सामने मंच पर लाया था। उसने बोलना शुरू किया, "बहनो और भाइयो! यह वो जानने का वक्त है, जिसका हमने सम्मेलन शुरू होने के दिन आपसे वायदा किया था। मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि जल्दी से भोजन समाप्त करके सम्मेलन कक्ष में पहुँचें, जहाँ आपको अंतिम सत्य से परिचित कराया जाएगा, जिसका आप सब इंतजार कर रहे हैं। वह अंतिम कदम है जो आपको धनकुबेर मास्टर चाबी हासिल करने में मदद करेगा।"

"कितना जोशीला है।" एक महिला ने कहा और अपनी सीट की ओर बढ़ गई, कुछ सम्मेलन कक्ष की ओर अन्यमनस्क सा भाव चेहरे पर लिये बढ़े, मानो उन्हें इस बात पर संदेह हो कि वक्ता ऐसा शक्तिशाली कुछ कह पाएँगे, जो उनके जीवन की दिशा बदल देगा।

विशिष्ट वक्ता पहले से ही मंच पर ठीक सामने गंभीर मुद्रा लिये विराजमान थे, बोलना शुरू करने से पहले उन्होंने बार-बार गला साफ किया, अब मैं वे तरीके बताना पसंद करूँगा, जिनसे कोई भी अपने दिमाग पर काबू पा सकता है। एक ऐसे व्यक्ति के कथन के साथ मैं शुरू करता हूँ, जिसने अपनी उपलब्धियों से अपना कहा हुआ सत्य में बदल दिया।

कार्नेगी ने, न केवल जरूरत से ज्यादा भौतिक सुख-साधन हासिल किए, बल्कि उन्होंने अन्य धनकुबेर फॉर्मूले भी हासिल किए और सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण बारहवाँ फार्मूला भी उसमें शामिल था।

जो लोग उन्हें अच्छी तरह जानते थे और जिन लोगों ने उनके निकट संपर्क में रहकर साथ काम किया, उनका कहना है कि एंड्रयू कार्नेगी के स्वभाव का सबसे उल्लेखनीय पहलू यह था कि उन्होंने कम उम्र में ही अपने दिमाग को स्थिर कर लिया था और उस पर ऐसा अधिकार स्थापित किया था कि किसी एक विचार में बार-बार परिवर्तन लाने की नौबत नहीं आती थी। वह स्थिति कितनी बड़ी उपलब्धि और वरदानस्वरूप होगी; जब हर कोई यह कह सके कि मैं अपने भाग्य का मालिक हूँ, मैं अपनी आत्मा का कप्तान हूँ। सृष्टिकर्ता भी संभवतः ऐसा ही चाहता है। अगर वह कुछ और चाहता, तो मनुष्य सिर्फ एक शक्ति पर नियंत्रण के अधिकार तक खुद को सीमित नहीं पाता, अर्थात् अपनी विचारशक्ति पर। हम जिंदगी भर शरीर और दिमाग को मुक्त करने की कोशिश में लगे रहते हैं, मगर ज्यादातर लोग वह आजादी नहीं खोज पाते, क्यों? सृष्टिकर्ता ने हमें वे साधन प्रदान किए हैं, जिनसे मनुष्य मुक्त हो सकता है, हर किसी को इन साधनों तक पहुँचने का उपाय बता सकता है और हर एक को दृढ़ इच्छा के साथ यह आजादी हासिल करने को प्रेरित कर सकता है।

फिर क्यों हम अपनी ही बनाई हुई जेल में जीवन भर कैद रहें, जब दरवाजे की चाबी आसानी से हमें मिल सकती है? गरीबी की जेल, खराब स्वास्थ्य की जेल, भय की जेल और अज्ञानता की जेल।

शरीर और दिमाग की आजादी सब चाहते हैं, लेकिन कुछ ही लोग हासिल कर पाते हैं। ज्यादातर लोग इसकी खोज में इधर-उधर भटकते रहते हैं, लेकिन वहाँ नहीं झाँकते, जो उसे पाने का एकमात्र स्रोत है—अपने दिमाग के अंदर।

धनकुबेर बनने की चाहत भी सार्वभौमिक है, लेकिन अधिकांश लोग जीवन की वास्तविक धनकुबेर साइट तक कभी नहीं पहुँचते और यह नहीं समझ पाते कि धनकुबेर बनने के सारे रास्ते उनके अपने दिमाग से खुलते हैं। दिमाग की यांत्रिकी संगठित शक्ति की बेमिसाल व्यवस्था है, जो एक ही साधन से रिलीज हो सकती है और वह है कड़ा आत्म-अनुशासन।

सही तरीके से अनुशासित और निश्चित साध्य पर केंद्रित दिमाग ऐसी प्रभावशाली शक्ति है, जहाँ स्थायी हार जैसी कोई जगह नहीं है। यह हार को संगठित करके जीत में बदल देती है, सारे अवरोधकों को हटाकर लक्ष्य की गाड़ी को आगे बढ़ाते हुए प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करने का रास्ता बना देती है। आत्म-अनुशासन से अपने दिमाग को वश में करनेवाला व्यक्ति किसी अन्य के दिमाग के अधीन काम नहीं करता। आत्म-अनुशासन बारह धनकुबेर फॉर्मूलों में से एक के अलावा भी काफी कुछ है। यह सारे सुख-साधन हासिल करने की पहली शर्त है। शरीर और दिमाग की आजादी, नाम, शक्ति और धन प्राप्त करने का भी यही उपाय है। निश्चित प्रमुख लक्ष्य पर दिमाग को केंद्रित करने का भी यही एकमात्र जरिया है, जब तक कि कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम उस लक्ष्य के पैटर्न को अपने अधीन करके उसके भौतिक समानुपात में तबदीली न कर दे।

हृदय की भावनाओं और अदम्य शक्ति की यही चाबी है। इसी के माध्यम से इन दोनों को

वश में और दायरे में रखा जा सकता है—एक-दूसरे के खिलाफ जो सही सोच तथा निश्चित साध्य पर केंद्रित हो।

यह निश्चित प्रमुख लक्ष्य के रख-रखाव में निर्देशन बल का काम करता है। यही उस आकुलता का साधन है जो अपनी योजनाओं और उद्देश्यों पर डटे रहने की आदत विकसित करता है। यही वह शक्ति है, जिसके जरिए सारी वैचारिक आदतें मूर्त रूप ग्रहण करती हैं, जब तक कि इसे कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम अपने अधीन न ले ले और इसे एक तार्किक क्लाइमेक्स तक न पहुँचा दे। यही वह शक्ति है, जिसके जरिए व्यक्ति अपने दिमाग को पूरी तरह वश में करके इसे अपनी मरजी के मुताबिक साध्य की ओर ले जा सकता है। यह सभी नेतृत्व में अविनाशी है। ये वह शक्ति है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी सोच को षड्यंत्रकारी के बजाय सहयोगी बना सकता है।

यह वैसा पुलिसकर्मी है, जो आस्था की अभिव्यक्ति के लिए दिमाग को साफ करने के इरादे से सभी प्रकार के डरों का सफाया करता है। यह कल्पना और सृजनात्मक दृष्टि की अभिव्यक्ति के लिए भी दिमाग को साफ करता है, ताकि अनिर्णय और संदेह जैसे मैल जमने न पाएँ।

यह व्यक्ति को समृद्धि की चेतना जाग्रत् करने में मदद करता है, जो भौतिक सुख-साधन के लिए आवश्यक है और साथ ही स्वास्थ्य चेतना भी जगाता है, जो अच्छी सेहत बरकरार रखने के लिए जरूरी है। यह पूरी तरह दिमाग के काम करने की व्यवस्था के जरिए काम करता है। अब जरा हम इस व्यवस्था की जाँच करें, ताकि यह समझ में आए कि इसमें कौन-कौन से तत्त्व शामिल हैं।

विचार मैकेनिज्म के दस तत्त्व

दिमाग दस तत्त्वों के आधार पर काम करता है। उनमें से कुछ अपने आप संचालित होते हैं, जबकि अन्य को एच्छिक प्रयत्न से निर्देशित करना पड़ता है। इस निर्देश का सबसे बड़ा माध्यम है—आत्म-अनुशासन।

ये दस तत्त्व इस प्रकार हैं—

1. शाश्वत विवेक—यह वैचारिक शक्ति का स्रोत है, जो अपने आप काम करता है, लेकिन इसे लक्ष्य की निश्चितता के माध्यम से संगठित और दिशा-निर्देशित किया जा सकता है। शाश्वत विवेक एक विशाल सरोवर की तरह है, जिसका जल हमेशा उफनता रहता है और इसमें से निकलकर छोटे-छोटे दरिया कई दिशाओं में बहते रहते हैं, जो सभी पेड़-पौधों तथा जीव-जंतुओं को जीवन देते हैं। उस दरिया जल का मानव को जीवन देनेवाला हिस्सा हमें वैचारिक शक्ति भी प्रदान करता है। दिमाग को एक झरना कहा जा सकता है, जिससे गिरनेवाला जल शाश्वत विवेक का प्रतिनिधित्व करता है। वैचारिक शक्ति दिमाग से नहीं पैदा होती है। यह सिद्ध शाश्वत विवेक से वह शक्ति हासिल करता है और उसे व्यक्ति के वांछित साध्य की ओर केंद्रित करता है। स्मरण रहे कि विचार का नियंत्रण और निर्देशन एकमात्र विशेषाधिकार है, जिस पर व्यक्ति को पूर्ण नियंत्रण प्राप्त है। इसका उपयोग निर्माण के लिए भी हो सकता है और विनाश के लिए भी। व्यक्ति चाहे, तो इसे निश्चित लक्ष्य की ओर निर्देशित भी कर सकता है और चाहे तो उपेक्षा भी कर सकता है, यह अपनी

मरजी पर निर्भर है। इस विशेष सुविधा का उपयोग पूरी तरह आत्म-अनुशासन से ही होता है।

2. चेतन मस्तिष्क—व्यक्ति का दिमाग दो विभागों के जरिए काम करता है। एक को मस्तिष्क की चेतन अवस्था कहते हैं और दूसरा अवचेतन शाखा कहलाता है। यह मनोवैज्ञानिकों की राय है कि ये दोनों शाखाएँ हिमशैल की तरह हैं। जल की सतह से ऊपर दिखाई देनेवाला हिस्सा जाग्रत् विभाग है और जल की सतह से नीचे का अदृश्य हिस्सा अवचेतन शाखा का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए यह स्पष्ट है कि दिमाग का चेतन हिस्सा जिसे हम जाग्रत् रूप में वैचारिक शक्ति की ओर लगाते हैं, वह संपूर्ण का एक छोटा सा हिस्सा है। इसमें दिमागी शक्ति का मात्र पाँचवाँ हिस्सा निहित है। दिमाग का अवचेतन हिस्सा स्वचालित है। इसमें शारीरिक क्षमता के निर्माण और रख-रखाव से संबंधित सारे कार्य शामिल हैं। यह रक्त-संचार जारी रखने के लिए हृदय की धड़कनें गतिशील रखता है, रसायन-शास्त्र की अवस्था के तहत खाना पचाता है और पूरे शरीर को तरल रूप में खाना पहुँचाता है, खराब रसों को हटाकर नए रसों का निर्माण करता है, सेहत के लिए नुकसानदेह बैक्टीरिया को हटाता है। प्रोटोप्लास्म के सेलों से नए शारीरिक जीवों का निर्माण करता है। पुरुषों और महिलाओं के योगदान से नई संतति को अस्तित्व में लाता है।

इसके अलावा अन्य कई काम दिमाग का अवचेतन प्रकोष्ठ निपटाता है। उनमें चेतन मस्तिष्क और शाश्वत विवेक के बीच तंतुओं को जोड़ना भी शामिल है। इसे चेतन मस्तिष्क का सोता कहा जा सकता है, जो आत्म-अनुशासन से नियंत्रित होकर वैचारिक शक्ति प्रवाहित करता है। यह एक परिपूर्ण फुलवारी स्पॉट जैसा भी है, जहाँ किसी भी विचार के बीज बोए और अंकुरित किए जा सकते हैं। दिमाग के अवचेतन प्रकोष्ठ का महत्त्व इसी तथ्य में समझा जा सकता है कि शाश्वत विवेक तक आत्मस्फूर्त पहुँच का एकमात्र यही साधन है। इसलिए इसी माध्यम से सभी प्रार्थनाएँ अपके इष्टदेवता तक पहुँचती हैं और उनका जवाब भी प्राप्त होता है।

यही माध्यम है, जिसके जरिए व्यक्ति का निश्चित प्रमुख लक्ष्य अपने भौतिक समानुपात में तबदील होता है। यह ऐसी प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के पूरी तरह अपने ही निर्देश से चलती है और इसके लिए आवश्यक है कि अपनी इच्छा के असली बिंदु तक पहुँचने के स्वाभाविक साधन का समुचित उपयोग किया जाए।

दिमाग का अवचेतन प्रकोष्ठ विचारों के उतार-चढ़ाव पर काम करता है, सभी विचारों को एक तार्किक निष्कर्ष तक पहुँचाता है, जो निश्चित रूप से चेतन मस्तिष्क द्वारा रूपबद्ध होते हैं, लेकिन यह भावनात्मक अनुभूति से उपजे विचारों को ज्यादा तवज्जो देता है। ऐसे विचार भय या आस्था की भावनाओं से पैदा होते हैं। अवचेतन मस्तिष्क को सिर्फ अपनी आकांक्षा पूरी करनेवाले विचारों से परिपूर्ण करने के लिए आत्म-अनुशासन जैसे माध्यम की जरूरत है।

अवचेतन मस्तिष्कवाला प्रकोष्ठ वैसे असरदार विचारों को तवज्जो देता है, जो इच्छाओं/आकांक्षाओं और सोचों में बार-बार दुहराए जाने से पैदा होते हैं। यह तथ्य एक निश्चित प्रमुख लक्ष्य अपनाने के महत्त्व के साथ-साथ उस लक्ष्य को आत्म-अनुशासन के माध्यम से दिमाग की असरदार विचार शृंखला में फिक्स करने की जरूरत भी बताता है।

3. इच्छाशक्ति की फैकल्टी—इच्छाशक्ति दिमाग के सभी प्रकोष्ठों की बॉस है। सभी वैचारिक आदतों में सुधार, परिवर्तन और संतुलन रखने की शक्ति इसी के पास है। इसके निर्णय अंतिम और अपरिवर्तनीय होते हैं, जब तक कि इनमें स्वयं कोई तबदीली न लाए। इच्छाशक्ति की बदौलत दिल की भावनाएँ काबू में रहती हैं और यह एकमात्र आत्म-अनुशासन से नियंत्रित होती हैं। इसकी तुलना बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के चेयरमैन से की जा सकती है, जिसका निर्णय अंतिम होता है। यह चेतना मस्तिष्क से आदेश ग्रहण करती है, लेकिन यह किसी अन्य को मान्यता नहीं देती।

4. तर्क की फैकल्टी—यह चेतन मस्तिष्क का पीठासीन जज है, जो सभी विचारों, योजनाओं और इच्छाओं पर अपना फैसला सुना सकता है तथा आत्म-अनुशासन से निर्देश मिलने के बाद वैसा करता है। इसके निर्णय उस समय इच्छाशक्ति द्वारा अमान्य कर दिए जाते हैं या भावनाओं की शक्ति द्वारा सुधार दिए जाते हैं, जब इच्छा उनमें हस्तक्षेप नहीं करती। यहाँ एक बात पर ध्यान देने की जरूरत होती है कि बिलकुल सही सोच के लिए तर्क की फैकल्टी के सहयोग की जरूरत है। यह ऐसी जरूरत है, जिसका प्रत्येक 10,000 में से एक से ज्यादा व्यक्ति सम्मान नहीं करता। इससे जाहिर है कि बिलकुल सही सोचवाले कम क्यों हैं।

ज्यादातर तथाकथित सोच भावनाओं की देन है। इसका आत्म-अनुशासन के निर्देश, प्रभाव, इच्छाशक्ति या तर्क की फैकल्टी से तालमेल नहीं होता।

5. भावनाओं की फैकल्टी—अधिकांश दिमागी हरकतों का स्रोत यही है और दिमाग के चेतन प्रकोष्ठ से जारी होनेवाले अधिकांश विचारों की भी यही जगह है। भावनाएँ चालबाज होती हैं और भरोसेमंद नहीं होतीं तथा इच्छा की फैकल्टी के निर्देशन में अगर इसमें सुधार न किया गया, तो यह खतरनाक हो सकता है।

भरोसेमंद नहीं होने के कारण भावनाओं की फैकल्टी की निंदा नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि सारे जोश, उत्साह, कल्पना और सृजनात्मक दृष्टि का यही स्रोत है। इसे आत्म-अनुशासन के जरिए निर्देशित करके व्यक्तिगत उपलब्धि के इन आवश्यक तत्त्वों के विकास में लगाया जा सकता है। भावनाओं को इच्छा और तर्क के माध्यम से सुधारकर यह निर्देश दिया जा सकता है।

भावनाओं पर पूरी मास्टरी किए बगैर सही सोच संभव नहीं है। भावनाओं को इच्छा के नियंत्रण में लाकर यह मास्टरी हासिल की जा सकती है। इसके जरिए भावनाओं को इच्छा की शर्तों पर आधारित साध्य की दिशा में ले जाया जा सकता है। तर्क की फैकल्टी के माध्यम से उसमें आवश्यक सुधार करना संभव है।

सही सोचवाले किसी विचार या निर्णय पर नहीं पहुँच सकते, जब तक कि इसे इच्छा और तर्क की फैकल्टी को सौंपकर उनके द्वारा पास न कराया जाए।

व्यक्ति भावनाओं का इस्तेमाल करके कल्पना के जरिए विचारों को उत्प्रेरित करता है, लेकिन अंतिम रूप से उसे स्वीकार करने से पहले इच्छा और तर्क के माध्यम से शोधित करता है।

यह अव्वल दरजे का आत्म-अनुशासन है। यह प्रक्रिया तो सरल है, मगर अमल करना आसान नहीं है और इसे सिर्फ सही सोचवाले अपना पाते हैं, जो अपनी व्यक्तिगत पहल के

अनुसार काम करते हैं।

धनकुबेर बनने के बारह फॉर्मूलों में से जो ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं—

1. सार्थक मानसिक वृत्ति।
2. मानवीय संबंध में समन्वय।
3. भय से मुक्ति।
4. उपलब्धि की आशा।
5. आस्था की क्षमता।
6. सभी विषयों पर खुला दिमाग।
7. अच्छी सेहत।

ये सब सारी भावनाओं को कड़े नियंत्रण तथा निर्देशन में रखकर ही हासिल किए जा सकते हैं—मगर वे नियंत्रित और निश्चित लक्ष्य की ओर अवश्य निर्देशित हों। भावनाएँ एक प्रकार से बॉयलर में स्टीम (वाष्प)की तरह हैं, जिनका निर्देशन और जारी होना इंजन की मैकेनिज्म में समाहित है। अनियंत्रित स्टीम की कोई ताकत नहीं है, लेकिन नियंत्रण में आने के बाद यह एक गवर्नर द्वारा संचालित होता है। यह एक मैकेनिकल डिवाइस है, जो आत्म-अनुशासन पर आधारित है और इसका संबंध भावनात्मक शक्ति के नियंत्रण तथा निःसृत होने से है। ज्यादा महत्त्वपूर्ण और खतरनाक भावनाएँ हैं—

1. सेक्स की भावना।
2. प्रेम की भावना।
3. डर की भावना।

सभी मानवीय कार्यकलापों के प्रमुख हिस्सों का निर्माण करनेवाली यही भावनाएँ हैं। प्रेम और सेक्स की भावनाएँ सृजनात्मक हैं। नियंत्रित और निर्देशित होने के बाद विशाल अनुपात में कल्पना तथा सृजनात्मक दृष्टि ये भावनाएँ उत्प्रेरित करती हैं, लेकिन नियंत्रण और निर्देशन न होने पर ये व्यक्ति को विनाशात्मक मूर्खताओं में उलझा सकती हैं।

6. कल्पना की फैकल्टी—यह वर्कशॉप है, जिसमें सारी इच्छाओं, विचारों योजनाओं और उद्देश्यों के आकार व डिजाइन तैयार होते हैं, जिनमें उन्हें हासिल करने के सम्मिलित साधन भी शामिल हैं। संगठित इस्तेमाल और आत्म-अनुशासन के जरिए कल्पना को विकसित करके सृजनात्मक दृष्टि का दरजा दिया जा सकता है, लेकिन भावनाओं की फैकल्टी की तरह कल्पना की फैकल्टी भी चालबाज और अविश्वसनीय है, अगर इसे आत्म-अनुशासन द्वारा नियंत्रित तथा निर्देशित न किया जाए। नियंत्रण नहीं होने से यह वैचारिक शक्ति को फालतू, अव्यावहारिक और विध्वंसकारी गतिविधियों में भटका देती है, जिसके विस्तार में जाने की यहाँ जरूरत नहीं है। अनियंत्रित कल्पना खयाली पुलाव हैं, जो दिवास्वप्न में पकाए जाते हैं। निश्चित योजना पर आधारित लक्ष्य की निश्चितता को अपनाने के साथ ही कल्पना का नियंत्रण शुरू होता है। यह नियंत्रण कड़ी आत्म-अनुशासनात्मक आदतों से परिपूर्ण होता है, जो भावनाओं की फैकल्टी को निश्चित निर्देश देता है। भावनाओं की शक्ति में एक्शन की कल्पना को उत्प्रेरित करने की ताकत है।

7. चेतना की फैकल्टी—चेतना मस्तिष्क की नैतिक पथप्रदर्शक (गाइड) है। इसका असली उद्देश्य व्यक्ति के लक्ष्यों, लक्ष्यों को इस तरह सुधारना है, ताकि इनका मानवता और प्रकृति

के नैतिक नियमों से समन्वय स्थापित हो। चेतना तर्क फैकल्टी का सहोदर है, जो तर्क के संदेह की स्थिति में होने पर इसमें भेदभाव करके उचित निर्देश देती है।

चेतना एक सहयोगी गाइड के रूप में तभी तक काम करती है, जब तक इसका सम्मान और अनुसरण किया जाए। अगर इसकी उपेक्षा की गई या इसके जनादेश को ठुकराया गया, तो यह गाइड की जगह षड्यंत्रकारी बनकर हमारी विध्वंसकारी आदतों को उचित ठहराने लगती है। चेतना की दुहरी प्रकृति के कारण इसे कड़े आत्म-अनुशासन द्वारा निर्देशित करे।

8. छठी इंद्रिय—यह दिमाग का प्रसारण केंद्र है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आप विचारों की तरंगें भेजता और रिसीव करता है, जिसको टेलीपैथी कहा जाता है। यही वह माध्यम है, जहाँ हंचेज के नाम से जानी जानेवाली विचारोत्तेजना रिसीव होती है। इसका नजदीकी ताल्लुक बल्कि यों कहें कि यह मस्तिष्क के अवचेतन प्रकोष्ठ का शायद एक हिस्सा है। छठी इंद्रिय ऐसा माध्यम है, जहाँ से सृजनात्मक दृष्टि संचालित होती है। यही माध्यम है, जहाँ से सारे बुनियादी व नए विचार उभरते हैं। और यही ऐसे व्यक्तियों के दिमाग की प्रमुख संपत्ति है, जो 'जीनियस' कहलाते हैं।

9. याददाश्त—यह दिमाग का 'फिलिंग कैबिनेट' है, जहाँ सारे विचारतंतु, अनुभव, इंद्रियजन्य भावनाएँ जो पाँच शारीरिक इंद्रियों द्वारा महसूस की जाती हैं, सबका भंडारण होता है। इसलिए इसे 'फिलिंग कैबिनेट' कहा जा सकता है, जहाँ से छठी इंद्रिय द्वारा अनुभव किए गए सारे विचार दिमाग में घुसते हैं। कई मनोवैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं। याददाश्त भी चालबाज और अविश्वसनीय है, जब तक कि आत्म-अनुशासन से संगठित और निर्देशित न हो।

10. पाँच शारीरिक इंद्रिय—ये मस्तिष्क की शारीरिक 'बाँहें' हैं, जिनके जरिए इनका संपर्क बाहरी दुनिया से होता है, जहाँ से ये सूचनाएँ ग्रहण करती हैं। शारीरिक इंद्रियाँ भरोसेमंद नहीं हैं, इसलिए इन्हें लगातार आत्म-अनुशासित रखने की जरूरत है। किसी भी तरह की तीव्र भावनात्मक गतिविधियों में इंद्रियाँ दिग्भ्रमित और अविश्वसनीय हो जाती हैं।

पाँच शारीरिक इंद्रियाँ भी धोखा दे सकती हैं और रोजमर्रा के सामान्य अनुभवों में भी ये धोखा देती हैं। भय के प्रभाव में आकर ये इंद्रियाँ प्रायः दैत्यनुमा 'भूत' पैदा करती हैं, जिसका कल्पना की फैकल्टी के सिवाय और कहीं अस्तित्व नहीं होता। जीवन का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है, जिसे ये भय के प्रभाव में आकर पथभ्रष्ट नहीं करतीं या उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश नहीं करतीं।

इस तरह हमने उन दस तत्त्वों का संक्षेप में जिक्र किया, जिनका मानव के सभी मानसिक कार्यकलापों में प्रवेश है। इनसे हमने दिमाग के मैकेनिज्म से संबंधित पर्याप्त सूचनाएँ जुटा ली हैं, ताकि उसके संचालन और इस्तेमाल के लिए जरूरी आत्म-अनुशासन पूरी तरह स्पष्ट हो जाए।

वैचारिक आदतों के नियंत्रण से आत्म-अनुशासन हासिल होता है। आत्म-अनुशासन का संदर्भ सिर्फ विचारशक्ति से है, क्योंकि आत्म के सारे अनुशासन दिमाग में ही जगह बनाते हैं। यह अलग बात है कि इसके प्रभाव अन्य शारीरिक कार्यकलापों को भी डील करते हैं।

विचार की शक्ति वैचारिक आदतों से पनपती है। इसे हम फिर दुहाराते हैं, ताकि इस जानकारी को आप खूब अच्छी तरह समझ लें कि आप जो भी है या जहाँ कहीं भी हैं, वह सब वैचारिक आदतों के कारण है।

वैचारिक आदतें आपके जीवन की सिर्फ परिस्थितियाँ है, जिन पर आपका पूर्ण नियंत्रण है। ये आपके जीवन के सभी तथ्यों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि यह इस बात का प्रमाण है कि सृष्टिकर्ता ने इस जरूरी विशेषाधिकार को मान्यता दी है। अन्यथा इसे एकमात्र परिस्थिति नहीं बनाता, जिस पर हमें पूरा नियंत्रण प्राप्त है। आपकी वैचारिक आदतों पर पूर्ण नियंत्रण देने की सृष्टिकर्ता की इच्छा का अगला सबूत कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम में और भी अच्छी तरह स्पष्ट है। यही माध्यम है, जिसके जरिए वैचारिक आदतें फिक्स और स्थायी बनती हैं, ताकि ये आदतें स्वचालित तरीके से किसी स्वतःस्फूर्त प्रयास के बगैर अपना काम करें। फिलहाल अभी मैं इन तथ्यों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ, जो सृष्टिकर्ता की आश्चर्यजनक देन दिमाग से जुड़े हैं। यह ऐसा डिवाइस है, जो सभी वैचारिक आदतों को अधिग्रहण कर उन्हें स्वचालित अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

आत्म-अनुशासन वह सिद्धांत है, जिसके द्वारा व्यक्ति स्वतःस्फूर्त तरीके से वैचारिक प्रवृत्तियों को आकार देकर अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ तालमेल स्थापित कर सकता है। इस सुविधा के साथ भारी जवाबदेही भी जुड़ी है, क्योंकि यह बाकी अन्य सुविधाओं से ज्यादा जीवन में स्थान तय करता है, जो सभी को हासिल करना है। अगर इसकी उपेक्षा की गई और निश्चित लक्ष्य हासिल करने की ओर ले जाने के हिसाब से आदतों को आकार नहीं दिया गया, तो व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर की परिस्थितियाँ अपना काम करेंगी और इसका बेहद खराब परिणाम सामने आएगा।

प्रत्येक व्यक्ति आदतों का पुलिंदा है। कुछ तो हमारी अपनी बनाई हुई हैं और बाकी आदतों से हम न चाहते हुए भी लदे हैं। ये आदतें भय, संदेह, चिंता, परेशानी, लालच, अंधविश्वास, ईर्ष्या और घृणा से बनी हैं। आत्म-अनुशासन एकमात्र माध्यम है, जिसके जरिए वैचारिक आदतें नियंत्रित और निर्देशित की जा सकती हैं, जब तक कि इन्हें कॉस्मिक हैबिटफोर्स के नियम अपने अधीन लेकर स्वचालित अभिव्यक्ति न दे दें। इस विचार पर सावधानीपूर्वक गौर करें, क्योंकि यह आपकी मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक किस्मत की चाबी है।

आप अपनी वैचारिक आदतों को ऑर्डर में ला सकते हैं और वे आपको अपनी इच्छा के मुताबिक किसी भी मंजिल तक पहुँचाएँगी, जो आपकी पहुँच के दायरे में हो या आप अपने जीवन की अनियंत्रित परिस्थितियों को वैचारिक आदतें बनाना छोड़ सकते हैं, जो आपको जीवन में सफल नहीं होने देंगी।

आप अपने दिमाग को वांछित लक्ष्य पर केंद्रित करके उसे हासिल कर सकते हैं या आप वैसे विचारों से दिमाग को भर सकते हैं, जो आप नहीं चाहते हैं कि आएँ और उसका वैसा ही परिणाम भुगतना होगा।

आपकी वैचारिक आदतें उस भोजन से पैदा होती हैं, जो आपके दिमाग में है। यह उतना ही निश्चित है, जैसे दिन के बाद रात का आना।

अपनी इच्छा की पूरी ताकत की ओर मुखातिब हों और अपने ही दिमाग को पूरी तरह

काबू में करें। यह आपका दिमाग है, यह आपको नौकर की तरह मिला हुआ है, जिसका काम है, आपकी इच्छाओं को सँभालना। इस दिमाग में जरा भी किसी का प्रवेश नहीं हो सकता या इसे कोई अपने प्रभाव में नहीं ले सकता, जब तक आपकी इजाजत और सहयोग न हो। कितना कमाल का तथ्य है यह।

याद करें कि जब वैसी परिस्थितियाँ जिन पर आपका नियंत्रण न हो, यह घुसना शुरू कर दें और विचलित कर डालें। याद करें जब भय, संदेह और चिंता आपके दिमाग के खाली बेडरूम में जगह बनाने लगें। याद करें, जब गरीबी का डर आपके दिमाग के खाली हिस्से को भरने लगे, जो संपन्नता की चेतना से भरना चाहिए। और साथ ही यह भी याद करें कि यह आत्म-अनुशासन है, एकमात्र तरीका है, जिसके जरिए कोई भी अपने दिमाग को भरपूर काबू में ले सकता है। आप जमीन की धूल-जर्द से निकले रेंगनेवाले कीड़े नहीं हैं। अगर आप वैसे होते, तो आपकी शारीरिक बनावट दो पैरों पर चलनेवाले की जगह पेट के बल रेंगनेवाले प्राणी जैसी रहती।

आपके शरीर की वैसी बनावट इसलिए है ताकि आप खड़े हों, चलें और अपने को ऊँचे लक्ष्य की ओर ले जाएँ, जो हासिल करने की आपके अंदर क्षमता है।

थोड़े से संतोष क्यों करना? अपने सृजनकर्ता की अनमोल देन मस्तिष्क शक्ति के इस्तेमाल की उपेक्षा और तिरस्कार करके आप सृष्टिकर्ता का क्यों अपमान कर रहे हैं?

मानव मस्तिष्क की असीमित शक्ति को थोड़े में नहीं समेटा जा सकता और एक बड़ा रहस्य, जो युगों-युगों से हर उम्र में छाया रहा है और वह है इसे मान्यता देने तथा अपनी किस्मत बनाने के लिए इसके उचित इस्तेमाल की उपेक्षा।

मानव मस्तिष्क की बीस महान् शक्तियाँ

दिमाग में चतुराई से शाश्वत विवेक तक पहुँचने का प्रवेश द्वार बनाया गया है और वह है दिमाग का अवचेतन प्रकोष्ठ। और इस प्रवेश द्वार का प्रबंधन कुछ इस तरह से है कि पूरी तैयारी के साथ स्वतःस्फूर्त इस्तेमाल से इसे खोजा जा सकता है, जो आस्था जैसी मानसिकता के माध्यम से संभव है।

इन शक्तियों का विस्तार से वर्णन इस तरह किया जा सकता है—

1. दिमाग के अंदर कल्पना की फैकल्टी काम करती है, जिसमें आशाओं और उद्देश्यों को शारीरिक वास्तविकता में बदलने के तौर-तरीके आकर ले सकते हैं। इसमें इच्छा और उत्साह की भी अपार क्षमता मौजूद है, जो व्यक्ति की योजनाओं तथा लक्ष्यों को अमली जामा पहना सकते हैं। इसमें इच्छाशक्ति मौजूद है, जो योजनाओं और उद्देश्यों को अनिश्चित समय तक कायम रख सकती है।
2. इसके पास आस्था व विश्वास की क्षमता है, जिसके जरिए इच्छा और तर्क साथ काम कर सकते हैं, जब दिमाग की पूरी मशीनरी निर्देशक शक्ति—शाश्वत विवेक पर केंद्रित रहती है। यह छठी इंद्रिय के जरिए तैयार होता है और इसका सीधा संपर्क मास्टरमाइंड सिद्धांत के तहत अन्य दिमागों से रहता है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी दिमागी शक्ति को अन्य दिमागों से जोड़ सकता है, जो कल्पना को साकार रूप दे सके।
3. इसके पास तर्कक्षमता है, जिसके द्वारा तथ्य व सिद्धांत परिकल्पना— विचार और

योजनाओं से मिलते हैं।
4. इसके पास स्वयं को अन्य दिमागों से जोड़ने की शक्ति है, जो टेलीपैथी कहलाती है।
5. इसके पास कसौटी की शक्ति है, जिसके जरिए कोई व्यक्ति अतीत का विश्लेषण करके भविष्य का आकलन कर सकता है। यह क्षमता बताती है कि कोई दार्शनिक अपने भविष्य के बारे में सोचने से पहले पिछली बातों के बारे में क्यों सोचता है।
6. इसमें विचारों की प्रकृति में चुनाव, सुधार और नियंत्रण का साधन शामिल है, ताकि कोई अपने चरित्र, स्वभाव को एक ऑर्डर में रखकर किसी भी इच्छित पैटर्न पर फिक्स कर सके। दिमाग पर हावी रहनेवाले विचारों की प्रकृति निर्धारित करने की भी शक्ति इसके पास है।
7. इसके पास प्रत्येक विचार को प्राप्त करने, रिकॉर्ड करने और उसके भंडारण की चमत्कारिक शक्ति है, जिसे याददाश्त कहा जाता है। यह चमत्कारिक व्यवस्था स्वचालित तरीके से संबंधित विचारों का भंडारण, वर्गीकरण करती है और वह भी इस तरह कि किसी विशेष विचार को याद करते ही इससे जुड़े विचार सामने आ जाते हैं।
8. इसके पास भावनात्मक शक्ति है, जिसके जरिए शरीर अपनी इच्छा के मुताबिक किसी वांछित कार्य की ओर प्रेरित रहता है।
9. इसे गुप्त रूप से शांत रहकर काम करने की शक्ति प्राप्त है, ताकि सभी परिस्थितियों में विचारों की प्राइवेसी सुनिश्चित रहे।
10. इसके पास सभी विषयों पर ज्ञान प्राप्त करने, संगठित करने, भंडारण करने, और व्यक्त करने की असीमित क्षमता है, चाहे वह क्षेत्र भौतिकी, अध्यात्म तथा बाहरी व अंदरूनी जगत् का क्यों न हो।
11. अच्छी सेहत प्राप्त करने और उसे कायम रखने की क्षमता इसके पास है तथा यह अपने रोगों के इलाज का एकमात्र स्रोत है। अन्य सारे साधन सिर्फ अनुपूरक हैं, लेकिन इसमें पूर्ण शारीरिक सेहत के रख-रखाव की व्यवस्था शामिल है, जो अपने आप काम करती है।
12. यह एक कमाल के रसायन-तंत्र का स्वचालित संचालन और रख-रखाव करता है, जिसके जरिए भोजन को उपयुक्त सम्मिश्रण देता है, जो शरीर के लिए आवश्यक है।
13. यह स्वचालित रूप से दिल का संचालन करता है, जिसके माध्यम से रक्तसंचार पूरे शरीर में होता है और शरीर के बेकार तत्त्वों को हटाकर सभी सेलों को मजबूत रखता है।
14. इसके पास आत्म-अनुशासन की शक्ति है, जिसके माध्यम से कोई भी वांछित आदत आकार ग्रहण कर सकती है और तब तक कायम रख सकती है, जब तक कि इसे कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम अपने कब्जे में लेकर स्वचालित अभिव्यक्ति न प्रदान कर दे।
15. यह एक सार्वजनिक सभा स्थल है, जहाँ शाश्वत विवेक के साथ सत्संग स्थापित किया जा सकता है। वह प्रार्थना, जिसमें अपनी इच्छा और लक्ष्य की निश्चितता के साथ-साथ दिमाग के अवचेतन प्रकोष्ठ में आस्था के जरिए पहुँच का प्रवेश-द्वार खोलने का आसान तरीका भी शामिल है।
16. यही प्रत्येक विचार, उपकरण, मशीन और प्रत्येक मैकेनिकल आविष्कार का एकमात्र उत्पादक है, जो भौतिक दुनिया में जीनेवाले व्यावसायिकों की सहूलियत के लिए बनाए जाते हैं।

17. यही खुशी और तकनीक का एकमात्र स्रोत है तथा गरीबी व अमीरी का भी स्रोत है। यह अपनी ऊर्जा उसी अभिव्यक्ति में लगाता है, जो विचारशक्ति के माध्यम से दिमाग पर हावी रहे, चाहे इनमें से कोई भी अवस्था हो—गरीबी की या अमीरी की।
18. यही मानवीय संबंधों का स्रोत है और लोगों के बीच सभी तरह के मेल-जोल का स्रोत भी। यही शत्रु भी बनाता है और मित्र भी, जो इस पर निर्भर करता है कि आप इसे किस दिशा में ले जाते हैं।
19. इसके पास सभी बाहरी परिस्थितियों और अवस्थाओं से प्रतिरोध व रक्षा करने की शक्ति है, वैसे यह हमेशा उसे नियंत्रित नहीं कर पाता।
20. तर्क के अंदर इसकी कोई सीमा नहीं है (उसे छोड़कर, जिसका प्रकृति के नियम से टकराव रहता है।) यह सिर्फ उसी को बचाता है, जिसे व्यक्ति आस्था की कमी के जरिए स्वीकारता है।

वास्तव में जो कुछ भी दिमाग ग्रहण करता है या विश्वास करता है, उसे हासिल कर सकता है।

मैं आपको कम-से-कम बीस और वैसे उदाहरण दे सकता हूँ। जिनसे दिमाग की चमत्कारिक शक्ति उजागर होती है। दिमाग की ऐसी बेमिसाल शक्ति के बावजूद अभी तक अधिकांश लोग अपने दिमाग पर काबू पाने के कोई प्रयास नहीं करते और खुद को डर तथा कठिनाइयों में रखते हैं, जो अपनी कल्पनाओं को बचाने में नहीं उभरतीं।

भय की मूर्खता

सफलता का सबसे बड़ा दुश्मन है भय। अमीरी के शीर्ष पर होने के क्रम में हमें गरीबी का भय सताता है। प्रकृति प्रदत्त व्यवस्था के बावजूद, जिसके जरिए शारीरिक अवयवों का स्वाभाविक रख-रखाव होता है, हमें बीमार पड़ने का भय सताता है। जब कोई आलोचना करनेवाला न हो, तब भी आलोचना का भय बना रहता है, क्योंकि यह कल्पना के नकारात्मक इस्तेमाल के कारण हमारे दिमाग में ही सेट हो जाता है।

हमें अपने मित्रों और रिश्तेदारों का प्रेम छिन जाने का भय सताता है, जबकि हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे अपने आचरण पर ये संबंध निर्भर करते हैं।

हम बुढ़ापे से डरते हैं, जबकि हम इसे ज्यादा अकलमंदी और समझदारी के माध्यम के रूप में स्वीकार कर चुके हैं।

हम आजादी खोने से डरते हैं, जबकि हमें पता है कि यह अन्य लोगों से समन्वयपूर्ण संबंधों का मामला है।

हम मृत्यु से डरते हैं, जबकि जानते हैं कि मृत्यु अवश्यंभावी है और हमारे नियंत्रण से बाहर है। हम असफलता से डरते हैं और इस बात को नहीं स्वीकारते कि हर असफलता में उसी अनुपात में सफलता के बीज होते हैं। हम बिजली से डरते हैं, जबकि फ्रैंकविन और एडीसन जैसे कुछ विरले व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने अपने दिमाग को पूरी तरह वश में किया। उन्होंने साबित कर दिया कि बिजली शारीरिक ऊर्जा का एक रूप है, जिसका इस्तेमाल मानव कल्याण के लिए किया जा सकता है।

आस्था के जरिए शाश्वत विवेक के निर्देश के लिए दिमाग खोलने से पहले हम अपना

दिमाग मजबूती से बंद कर लें और अनावश्यक आशंकाओं पर आधारित स्वपोषित पाबंदियों और ऐसी किसी छाँव को घुसने न दे। हम जानते हैं कि मनुष्य धरती के तमाम प्राणियों का मास्टर है, लेकिन हम अपनी ओर झाँकने में असफल रहे हैं और पक्षियों तथा जंगली जंतुओं से भी सीख नहीं पाए कि इन मूक जानवरों को भी सार्वभौम योजना के तहत भोजन व अस्तित्व में बने रहने लायक सारी जरूरतें प्राप्त हैं, जो सारी आशंकाओं को आधारहीन तथा मूर्खतापूर्ण ठहराती हैं।

हम अवसरों की किल्लत ही शिकायतें करते हैं और उनके खिलाफ हल्ला मचाते हैं, जिन्होंने अपने दिमाग पर काबू पा लिया है, लेकिन यह मानने को तैयार नहीं होते कि ठोस दिमागवाला हर व्यक्ति अपनी जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल के लायक हर साम्रगी हासिल करने की शक्ति और अधिकार रखता है। हम शारीरिक तकलीफ से डरते हैं और यह नहीं स्वीकारते कि दुःख-दर्द सार्वभौमिक भाषा है। इसके जरिए बुराइयों तथा खतरों के प्रति हमें चेतावनी मिलती है कि सुधार की जरूरत है।

डर और आशंकाओं की वजह से हम सृजनकर्ता के आगे हाथ जोड़ते हैं और पूजा-अर्चना करके अपना दुखड़ा रोते हैं, जिनसे छुटकारा हम स्वयं पा सकते हैं, इसलिए हमें वैसा प्रयास करना भी चाहिए। जब उनका अनुकूल फल सामने नहीं आता, तो उपजी आस्था कमजोर पड़ने लगती है और हम आशा या आस्था त्यागने की सोचने लगते हैं। उस स्थिति में आ जाने के बाद मन में यह खयाल आता है कि हमें अपने निर्माता का शुक्रगुजार होना चाहिए और प्रार्थना उस सुंदर वरदान के लिए करनी चाहिए, जो शक्तिशाली दिमाग के रूप में उससे बिना माँगे मिला है।

हम अपने पाप के लिए आसुरी वृत्ति की बात करने लगते हैं और यह नहीं स्वीकारते कि सबसे बड़ा पाप सर्वज्ञाता सृष्टिकर्ता के प्रति आस्था खोना है, जिसने अपनी संतानों को वैसे आशीर्वाद प्रदान किए हैं, जो धरती का कोई माँ-बाप अपने बच्चों को देने की सोच भी नहीं सकता।

आविष्कारों से प्राप्त ज्ञान को हमने विनाश के औजारों में बदल दिया है, जिसे हम विनम्रतापूर्वक युद्ध कहते हैं। हम उसके परिणाम के विरोध में चीख-पुकार तब मचाते हैं, जब क्षतिपूर्ति नियम के तहत उसकी कीमत अकाल और उद्योग-धंधे और कारोबार चौपट होने के रूप में चुकानी होती है। हम दिमागी शक्ति का इतने तरीके से दुरुपयोग करते हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। हमने स्वीकारा नहीं है कि यह शक्ति आत्म-अनुशासन के जरिए बढ़ाई जा सकती है और इससे हम अपनी जरूरतें पूरी कर सकते हैं।

इसी तरह भूसा खाते और प्रभुता को पानी में बहाते हम जिंदगी गुजार देते हैं। विचार की प्रकृति से संबंधित कुछ ज्ञात तथ्यों और आत्म-अनुशासन के विश्लेषण से आगे बढ़ने से पहले (जो विचार मैकेनिज्म पर ही केंद्रित हैं), विचार से संबंधित कुछ आदतों और ज्ञात तथ्यों की चर्चा करते हैं, जिन्हें अमल में लाकर हम बिलकुल सही सोच की कला हासिल कर सकते हैं।''

1. सारे विचार, चाहे वह नकारात्मक हों या सकारात्मक, अच्छे हो या बुरे, सही हों या गलत—अपने शारीरिक अनुपात के हिसाब से आवृत्त होते हैं। ये तार्किक और स्वाभाविक प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति को योजना और वांछित लक्ष्य के साधनों के लिए उत्प्रेरित

करते हैं। किसी निर्दिष्ट विषय पर विचार जब कॉस्मिक हैबिटफोर्स नियम के अधीन आ जाते हैं, तो दिमाग का अवचेतन प्रकोष्ठ इसे तार्किक निष्कर्ष तक उपलब्ध प्राकृतिक माध्यम के जरिए पहुँचाता है। विचार और वस्तु शाब्दिक रूप से भले ही सही हों, लेकिन यह सही है कि विचारों से ही सारी वस्तुएँ निर्मित होती हैं और इससे जो वस्तुएँ बनती हैं, वे विचार पैटर्न की ही प्रतिकृति होती हैं, जिनसे वे आकार ग्रहण करती हैं। कुछ लोग मानते हैं कि प्रत्येक विचार अंतहीन तरंगें शुरू करता है, जिनके माध्यम से विचार जारी करनेवाला व्यक्ति बाद में यह मानने को विवश होता है कि हम विचार की शारीरिक परछाईं हैं, जो शाश्वत विवेक द्वारा छवि लेती है और शारीरिक आकार ग्रहण करती है बहुत लोग यह भी मानते हैं कि जिस ऊर्जा की बदौलत हम सोचते हैं, वह शाश्वत विवेक का सूक्ष्म हिस्सा है, जो मस्तिष्क रूपी उपकरण के जरिए सार्वभौम सप्लाई कोश फिट किया गया है। इस धारणा के पक्ष में दिए गए तर्क अभी तक सही साबित नहीं हुए हैं।

2. आत्म-अनुशासन के प्रयोग से विचार को प्रभावित, नियंत्रित और एक निश्चित लक्ष्य तक निर्देशित किया जा सकता है। लक्ष्य तक पहुँचने में सहूलियत देनेवाली स्वतःस्फूर्त आदतें विकसित करके ऐसा संभव है।

3. दिमाग के अवचेतन प्रकोष्ठ की सहायता से वैचारिक शक्ति का शरीर के हर कोश पर नियंत्रण रहता है। यह घायल या मृत कोशों की मरम्मत और नई तैनाती के साथ-साथ उनकी वृद्धि का क्रम जारी रखती है। शरीर के सभी अंगों के काम को प्रभावित करती है और उन्हें आदत तथा ऑर्डर में काम करने में मदद करती है। यह रोगों से लड़ने में भी सहायक होती है।

ये सारे काम अपने आप होते रहते हैं, मगर अधिकांश को स्वतःस्फूर्त सहायता की जरूरत पड़ सकती है।

4. सारी उपलब्धियों की शुरुआत विचार के रूप में होती है और ये योजनाओं, लक्ष्यों, प्रस्तावों में संगठित होकर शारीरिक एक्शन में अभिव्यक्त होती हैं। सारे एक्शन नौ बुनियादी इरादों में से एक या उससे अधिक द्वारा प्रेरित होते हैं।

5. दिमाग की संपूर्ण शक्ति इसके दो प्रकोष्ठों दिमाग के चेतन और अवचेतन प्रकोष्ठों के जरिए के जरिए काम करती है।

चेतनवाला हिस्सा व्यक्ति के नियंत्रण में रहता है, लेकिन अवचेतन प्रकोष्ठ शाश्वत विवेक से नियंत्रित होता है, जिसका काम चेतन मस्तिष्क और शाश्वत विवेक के बीच संचार व्यवस्था कायम रखना है।

छठी इंद्रिय दिमाग के अवचेतन प्रकोष्ठ के अधीन है और अवचेतन प्रकोष्ठ निश्चित फिक्स मौलिक सिद्धांतों के अंतर्गत अपने आप काम करता है, लेकिन चेतन मस्तिष्क को निर्देशों के अनुसार चलने को प्रेरित किया जा सकता है।

6. दिमाग के चेतन और अवचेतन दोनों ही प्रकोष्ठ फिक्स आदतों के अनुकूल काम करते हैं। व्यक्ति जिस तरह की वैचारिक आदतें स्थापित क.रता है, चाहे वे स्वेच्छिक हों या नहीं, दोनों ही दिमागी प्रकोष्ठ उस हिसाब से अपने को ढालते हैं।

7. व्यक्ति द्वारा गृहीत अधिकांश विचार बिलकुल सही नहीं होते, क्योंकि वे व्यक्तिगत राय से प्रेरित रहते हैं। इसमें नतीजे पर पहुँचने से पहले तथ्यों की जाँच-परख नहीं की जाती।

पूर्वाग्रह, भय और भावनात्मक उत्तेजना का प्रभाव ज्यादा रहता है, जिसमें तर्क फैकल्टी को सुधार का अवसर या तो थोड़ा मिलता है अथवा मिलता ही नहीं।
8. सही दिशा में सोच का पहला कदम तथ्यों को फिक्शन और कहे-सुने साक्ष्यों से अलग करना है। यह कदम सिर्फ पर्याप्त आत्म-अनुशासित व्यक्ति ही अपना सकते हैं। दूसरा कदम तथ्यों की पहचान करके इन्हें दो-दो वर्गों में आवश्यक और अनावश्यक बाँटना है। आवश्यक तथ्य वे हैं, जिनका इस्तेमाल प्रमुख लक्ष्य हासिल करने में या प्रमुख लक्ष्य की ओर ले जानेवाले मामूली उद्देशों में भी किया जा सकता हो।

बाकी सारे तथ्य अनावश्यक हैं। औसत व्यक्ति सूचनाओं के अविश्वसनीय सूत्रों और अनावश्यक तथ्यों पर आधारित अनुमानों से जूझने में ही पूरी उमर गुजारता है। इसलिए वैसे व्यक्ति आत्म-अनुशासन के उस रूप के स्तर तक यदा-कदा ही पहुँचते हैं, जहाँ तथ्यों की जरूरत होती है और जो आवश्यक तथा अनावश्यक तथ्यों में अंतर करता है।
9. निश्चित इरादे पर आधारित आकांक्षा सारे स्वतःस्फूर्त विचारों को कार्यरूप देने की शुरुआत है, जो व्यक्तिगत उपलब्धि से जुड़ी है। दिमाग में कोई उत्कट आकांक्षा की मौजूदगी कल्पना की फैकल्टी की ओर ले जाती है, जिसका लक्ष्य आकांक्षा के लक्ष्य तक पहुँचने के तौर-तरीके निकालना है। अगर यह आकांक्षा दिमाग में लगातार मौजूद रहती है (विचारों की पुनरावृत्ति के जरिए), तो इसे अवचेतन प्रकोष्ठ अपना लेता है और स्वचालित तरीके से तार्किक निष्कर्ष तक पहुँचा देता है। ज्ञात तथ्यों में से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कुछ बातें हैं, ये जो सभी रहस्यों में महान् हैं और मानव विचार के रहस्य हैं। ये स्पष्ट तौर पर बताती हैं कि सही सोच सिर्फ कड़ी आत्म-अनुशासनात्मक आदतों से ही विकसित की जा सकती है।

श्रोताओं में से एक महिला ने हाथ ऊपर करके पूछा, ‘‘कहाँ और कैसे कोई आत्म-अनुशासन का विकास शुरू कर सकता है?’’

अच्छा सवाल है—विशिष्ट व्यक्ति ने जवाब दिया, निश्चित प्रमुख लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करके इसकी बेहतर शुरुआत की जा सकती है। कोई भी महान् उपलब्धि आज तक ध्यान केंद्रित करने की शक्ति के बगैर हासिल नहीं हुई।

आत्म-अनुशासन को कैसे प्रयोग में लाएँ

चार्ट नंबर एक में दस तत्त्वों का विवरण है, जिसके जरिए वैचारिक शक्ति अभिव्यक्त होती है। इनमें छह तत्त्व आत्म-अनुशासन द्वारा काबू में आते हैं—
1. इच्छा की फैकल्टी।
2. भावनाओं की फैकल्टी।
3. तर्क की फैकल्टी।
4. कल्पना की फैकल्टी।
5. चेतना की फैकल्टी।
6. याददाश्त की फैकल्टी।

बादवाले चार तत्त्व स्वतंत्र रूप से काम करते हैं और इन पर आत्मस्फूर्त नियंत्रण की जरूरत नहीं है, बशर्ते कि पाँच शारीरिक इंद्रियों को प्रभावित करके स्वतःस्फूर्त आदतों के निर्माण की ओर निर्देशित न कर लें।

कला-**1,** कला-**2**

चार्ट नंबर 2 में हमने दिमाग के छह प्रकोष्ठों के पारस्परिक महत्त्व की प्रस्तुति की है, जिन पर आत्म-अनुशासन आसानी से कायम रखा जा सकता है। इन प्रकोष्ठों की नंबरिंग उनके सापेक्ष महत्त्व के हिसाब से की गई है। वैसे किसी के लिए भी निश्चित तौर पर यह बताना असंभव है कि इन प्रकोष्ठों में कौन सा ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि विचार अभिव्यक्ति में इनमें से प्रत्येक प्रकोष्ठ में आवश्यक तत्त्व समाहित हैं।

हमने कोई चुनाव नहीं दिया है, लेकिन इच्छाशक्ति की जगह ईगो को पहली श्रेणी में रखा है, क्योंकि इच्छाशक्ति ही दिमाग के अन्य प्रकोष्ठों को नियंत्रण में रख सकती है। इसे दिमाग का 'सुप्रीम कोर्ट' कहा जाता है, जिसके फैसले अंतिम होते हैं, इन फैसलों को उससे ऊपर की किसी अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती है।

भावनाओं की फैकल्टी को दूसरी श्रेणी में रखा गया है। यह जानी हुई बात है कि अधिकांश लोग अपनी भावनाओं द्वारा संचालित होते हैं, इसलिए उनका दरजा 'सुप्रीम कोर्ट' के बाद आता है।

महत्त्व के हिसाब से तर्क की फैकल्टी को तीसरी श्रेणी में रखा गया है। यह सुधार का प्रभाव रखती है, जिसके जरिए भावनात्मक एक्शन सुरक्षित इस्तेमाल के लिए तैयार किया जा सकता है। पूरी तरह संतुलित दिमाग वह है, जो भावनाओं की फैकल्टी और तर्क फैकल्टी के बीच समझौते का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसा समझौता प्रायः 'सुप्रीम कोर्ट' के पावर—इच्छा की फैकल्टी द्वारा कराया जाता है।

इच्छा की फैकल्टी कभी-कभी भावनाओं के साथ निर्णय लेती है, लेकिन बाकी समयों में यह तर्क की फैकल्टी पर अपना प्रभाव डालती है और इसका निर्णय हमेशा अंतिम होता है, मगर चाहे जिसकी भी ये तरफदारी करे, तर्क और भावनाओं के विवाद में जीत उसी की होती है, जिसका साथ इच्छा की फैकल्टी देती है। यह बड़े कमाल की व्यवस्था है ये। कल्पना की फैकल्टी को चौथी श्रेणी में रखा गया है। यह फैकल्टी विचार योजनाएँ पैदा करती है और वांछित लक्ष्य हासिल करने के तौर-तरीके सुझाती है, जिन्हें भावनाओं की फैकल्टी तथा इच्छा की फैकल्टी प्रेरित करती है।

हम कह सकते हैं कि इच्छा की फैकल्टी दिमाग के तौर-तरीके की कमेटी का काम सँभालती है, लेकिन यह प्रायः अपने हिसाब से काम करती है और फंतासी खोजवाली जगहों पर चक्कर लगाती रहती है, जहाँ इच्छा की फैकल्टी से संबंधित कोई काम इसके पास नहीं होता। ऐसी आत्म-प्रेरित घुमक्कड़ी में कल्पना को प्रायः भावनाओं की ओर से पूरा सहयोग और इजाजत होती है। इसी की वजह से भावनाओं की फैकल्टी के अंदर पैदा होनेवाली सारी आकांक्षाओं की तर्क की फैकल्टी द्वारा जाँच-परख कर ली जाती है और जरूरत पड़ने पर इच्छा की फैकल्टी उसे रद्द भी कर देती है।

जब कल्पनाएँ और भावनाएँ तर्क के पर्यवेक्षण तथा इच्छा के नियंत्रण से बाहर निकल आती हैं, तो वे स्कूली शरारती लड़कों की तरह हो जाती हैं।

ये दोनों कोई भी शरारत करने से बाज नहीं आतीं। इसलिए दिमाग की बाकी फैकल्टी के मिश्रित अनुपात से ज्यादा आत्म-अनुशासन की जरूरत इन दोनों को है। अन्य दो प्रकोष्ठ चेतना और याददाश्त की फैकल्टी दिमाग के जरूरी हिस्से हैं, लेकिन अंतिम श्रेणी में होने के

बावजूद महत्त्वपूर्ण हैं, जहाँ इन दोनों प्रकोष्ठों की ड्यूटी निर्धारित होती है। दिमाग के अवचेतन प्रकोष्ठ को बाकी अन्य प्रकोष्ठों से ऊपर का दरजा प्राप्त है, क्योंकि यह चेतन मस्तिष्क और शाश्वत विवेक को जोड़नेवाली कड़ी है। यही वह माध्यम भी है, जिसके जरिए दिमाग के सारे प्रकोष्ठ वैचारिक शक्ति हासिल करते हैं।

दिमाग के अवचेतन प्रकोष्ठ पर नियंत्रण हो, ऐसा संभव नहीं है, लेकिन इस पर प्रभाव डाला जा सकता है। इसका तरीका कुछ यों है—यह अपने स्वतः समझौतों पर काम करता है, मगर भावनाओं को तीव्र करके इसके काम गतिशील बनाए जा सकते हैं। इच्छाशक्ति को खूब अच्छी तरह केंद्रित रूप में पाकर उससे प्राप्त शक्ति का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। निश्चित प्रमुख लक्ष्य की ज्वलंत आकांक्षा दिमाग के अवचेतन प्रकोष्ठ के कार्य में गति ला सकती है।

दिमाग के अन्य हिस्सों से कैसे जुड़ा है अवचेतन

अवचेतन हिस्से का दिमाग के छह अन्य प्रकोष्ठों से संबंध या जिक्र चार्ट नंबर दो में है। यह कई मायनों में किसान और प्रकृति के नियमों के संबंध जैसा है, जिसके माध्यम से अनाज उपजता है।

किसान को बिलकुल फिक्स निश्चित ड्यूटी करनी होती है जैसे पहले जमीन तैयार करता है, सही मौसम में बुआई करता है और अंकुर निकलने का इंतजार करता है और उसके बाद किसान का काम खत्म। फिर प्रकृति उसके बाद का काम अपने जिम्मे ले लेती है—अंकुरों को उगाना, पौधों का बड़ा होना और फसल पकाकर उपज देना।

दिमाग के चेतन प्रकोष्ठ की तुलना किसान से की जा सकती है, जिसमें यह इच्छा की फैकल्टी के निर्देशन में योजना और लक्ष्य तैयार कर रास्ते बनाता है। अगर यह काम ठीक-ठाक हुआ और वांछित लक्ष्य की सही तसवीर बन गई (तसवीर का तात्पर्य उद्देश्य के बीज से है) तो अवचेतन उस तसवीर को अपने जिम्मे ले लेता है, फिर शाश्वत विवेक से आवश्यक मदद लेकर तसवीर का रूपांतर करता है। जरूरी सूचनाएँ प्राप्त कर प्रक्रिया को व्यावहारिक योजना का रूप देकर चेतन प्रकोष्ठ को सौंप देता है।

जिस प्रकार बीज को उगाने और फसल में तबदील करने के लिए प्रकृति के नियम 'एक' निश्चित तथा निर्धारित समय सीमा के अंदर काम करते हैं। ठीक उसी तरह अवचेतन भी अपने जिम्मे लिये उद्देश्यों और योजना के फलीभूत होने के लिए अपना समय निश्चित करता है।

इच्छा की शक्ति, जो ज्वलंत आकांक्षा के रूप में अभिव्यक्त होती है, उसके जरिए अवचेतन के एक्शन को गति प्रदान की जा सकती है। इस प्रकार इच्छा की शक्ति का इस्तेमाल करके अपने दिमाग को पूरी तरह काबू में लेकर व्यक्ति असीमित शक्ति का हकदार बन सकता है। इच्छा की शक्ति पर मास्टरी करने का कदम, ताकि यह वांछित साध्य पूरा करने की ओर बढ़े, बेहद ऊँचे दरजे का आत्म-अनुशासन है। इच्छा पर नियंत्रण के लिए धैर्य, विश्वास और लक्ष्य की निश्चितता की जरूरत होती है।

जहाँ तक बिक्री के क्षेत्र की बात है, सभी मास्टर सेल्समैन जानते हैं कि बिक्री और उत्पादन की खपत के हिसाब से—धैर्य रखनेवाले—सूची में ऊपर रहते हैं। खासकर जीवन

बीमा जैसे क्षेत्र में धैर्य और इत्मीनान ही सेल्समैन की प्रमुख संपत्ति है। बिक्री या अन्य किसी भी क्षेत्र में धैर्य ही आत्म-अनुशासन है।

विज्ञापन के क्षेत्र में भी यही नियम लागू होता है। अधिकांश सफल विज्ञापनदाता महीनों, सालों तक विज्ञापन देते रहते हैं, उसे दुहराते रहते हैं और धैर्य एवं आशा नहीं छोड़ते। व्यावसायिक विज्ञापन विशेषज्ञों के पास इस बात के पक्के सबूत हैं कि संतोषजनक परिणाम प्राप्त करने की एकमात्र नीति यही है।

अमेरिका को स्थापित करनेवाले महान् व्यक्तियों ने उस समय यह दिखा दिया कि इच्छाशक्ति का पूरे धैर्य से इस्तेमाल करने पर क्या हासिल होता है, जब यह देश बियाबान जंगल और जंगली जीव-जंतुओं का बसेरा था।

हमारे देश के इतिहास के बाद के वर्षों में जब सभ्य समाज से तारतम्य स्थापित हो गया, जॉर्ज वाशिंगटन ने अपनी छोटी सी—आधी भूखी, आधे कपड़े पहनी मामूली हथियारों से लैस सेना की बदौलत एक बार फिर साबित कर दिया कि दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ किया गया प्रयास निष्फल नहीं जाता और अमेरिकी उद्योग जगत् के हेनरी फोर्ड, थॉमस एडीसन और एंड्रयू कार्नेगी जैसे महान् उद्यमियों ने भी दृढ़ शक्ति के साथ शुरू किए गए अभियान का लाभ दिखा दिया। ऐसे उन्नायक समेत उनकी तरह के अन्य सभी लोगों के पास आत्म-अनुशासन था, जिन्होंने अमेरिकी जीवन-शैली में महान् योगदान किया। यह सारा कुछ उन लोगों ने इच्छाशक्ति और दृढ़ता की बदौलत हासिल किया।

एंड्रयू कार्नेगी का पूरा कॅरियर उन लाभों का बेमिसाल उदाहरण है, जो आत्म-अनुशासन के जरिए उपलब्ध हैं। युवा उम्र में वे अमेरिका आए और एक मजदूर के रूप में काम शुरू किया। उनके पास सिर्फ कुछ दोस्त थे, मगर वे पैसेवाले और प्रभावशाली नहीं थे, लेकिन कार्नेगी के पास अपनी इच्छाशक्ति व्यक्त करने की अपार क्षमता थी। दिन में मजदूर का काम और रात को अध्ययन करते हुए कार्नेगी ने टेलीग्राफी सीखी, फिर पेनसिलवेनिया रेलरोड कंपनी के डिवीजन सुपरिंटेंडेंट के अधीन प्राइवेट ऑपरेटर के पद तक पहुँच गए। उस पोजीशन पर काम करते हुए कार्नेगी ने इस दर्शन के आत्म-अनुशासन समेत अन्य सिद्धांतों पर इतने बेहतरीन तरीके से अमल किया कि पैसेवाले और प्रभावशाली लोग उनकी मदद को आए, जिससे उन्हें जीवन का प्रमुख लक्ष्य हासिल करने में सहूलियत हुई।

अपने कॅरियर के इस बिंदु पर उन्हें वही सुविधाएँ मिल रही थीं, जो उनके साथ काम कर रहे अन्य टेलीग्राफ ऑपरेटरों को प्राप्त थीं।

उनके पास एक अतिरिक्त संपत्ति थी, जो अन्य ऑपरेटरों को स्पष्ट तौर पर हासिल नहीं थी, जीत की इच्छा और एक निश्चित, वांछित आइडिया, जिसकी चाहत हो; साथ में उसे पूरा करने तक इच्छाशक्ति कमजोर न होने देने का दृढ़ संकल्प हो।

ये भी आत्म-अनुशासन की उपज है

दृढ़ इच्छाशक्ति और कड़े आत्म-अनुशासन की बदौलत एंड्रयू कार्नेगी ने सारी स्थितियों को नियंत्रित करके उन्हें लक्ष्यप्राप्ति की दिशा में मोड़ा। इससे इतर कार्नेगी के पास वैसे कोई गुण मौजूद नहीं थे, जो औसत बुद्धिवाले किसी व्यक्ति के पास न हों। अपनी इच्छाशक्ति का इस्तेमाल करके उन्होंने निश्चित प्रमुख लक्ष्य का सिद्धांत अपनाया और उस लक्ष्य से तब

तक चिपके रहे, जब तक कि अमेरिका के महानतम औद्योगिक नेता न बन गए। कहने की जरूरत नहीं कि कितनी अकूत संपत्ति उन्होंने अर्जित की। इच्छाशक्ति को आत्म-अनुशासित करके कार्नेगी ने निश्चित लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे विशाल यूनाइटेड स्टेटस स्टील कॉर्पोरेशन अस्तित्व में आया। इस कंपनी ने स्टील उद्योग में क्रांति ला दी और कुशल तथा अकुशल श्रमिकों की विशाल फौज को रोजगार दिए।

इस तरह हमने देखा कि सफल व्यक्ति आत्म-अनुशासन के इस्तेमाल से ही अपने लक्ष्य की दिशा में कदम उठाता है और लक्ष्य पूरा होने तक उस सिद्धांत को नहीं छोड़ता।

व्यक्तिगत शक्ति हासिल करना

एंड्रयू कार्नेगी ने जब कहा कि इच्छा की शक्ति ऐसी ऊर्जा प्रदान करनेवाला बल है, जो असफल होना जानता ही नहीं, तो निस्संदेह उनका मतलब उसे इस मायने में असीमित बताना था, जब उसे सही तरीके से संगठित करके विश्वास पर आधारित उत्साह से निश्चित साध्य पर केंद्रित किया जाए। स्पष्ट तौर पर उन्होंने इस दर्शन के तीन सिद्धांतों पर बल देते हुए इन्हें स्वपोषित आत्म-अनुशासन का आधार बताया—

1. लक्ष्य की निश्चितता।
2. नियोजित विश्वास।
3. आत्म-अनुशासन।

यह याद रखना चाहिए कि दिमागी स्थिति, जो इन तीन सिद्धांतों को अपनाकर विकसित की जा सकती है, ज्यादा बेहतर तरीके से और तेजी से दर्शन के अन्य सिद्धांतों को अमल में लाकर हासिल की जा सकती है, जो इस प्रकार हैं—

1.मास्टरमाइंड।
2. प्रसन्न व्यक्तित्व।
3. एक कदम आगे बढ़कर काम करने की आदत।
4. व्यक्तिगत पहल।
5. सृजनात्मक दृष्टि।

इन पाँच सिद्धांतों को लक्ष्य की निश्चितता, नियोजित विश्वास और आत्म-अनुशासन से मिला दें, आपको व्यक्तिगत शक्ति के स्रोत असीमित अनुपात में उपलब्ध मिलेंगे।

इस दर्शन के अध्ययन की शुरुआत करनेवाले को अपनी इच्छा की शक्ति पर नियंत्रण स्थापित करने में दिक्कत हो सकती है, लेकिन इन आठ सिद्धांतों पर मास्टरी करके धीरे-धीरे नियंत्रण पाया जा सकता है।

मास्टरी स्थापित करने का एक ही तरीका है और वह है लगातार दृढ़ता से इन सिद्धांतों को प्रयोग में लाना। इन सिद्धांतों को दैनिक आदतों में शुमार करके इसे तमाम आपसी संबंधों में और सभी व्यक्तिगत समस्याओं के हल में अपनाया जाए।

इच्छा की शक्ति का रिस्पांस तभी मिलता है, जब लक्ष्य पूरा करने के लिए लगातार प्रयत्न जारी रखा जाए। यह उसी तरह मजबूत होता जाता है, जैसे कायदे से बाँहों के इस्तेमाल से इनमें मजबूती आती है।

आत्म-अनुशासन से हासिल स्वपोषित इच्छाशक्ति हासिल करनेवालों को कठिन दौर से

गुजरने के बावजूद आशा नहीं छोड़नी चाहिए, न ही रास्ते से विमुख होना चाहिए। बिना इच्छाशक्तिवालों को तो ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए।

एक फौजी जनरल मंदी के दौर में युद्ध में बुरी तरह हार चुकी अपनी निराश फौज की ताकत की समीक्षा करने लगा। उसके पास भी निराश होने का कारण था, क्योंकि युद्ध उसके खिलाफ जा रहा था। जब उसके एक अफसर ने सुझाव दिया कि युद्ध की हालत निराशाजनक लगती है, तो जनरल ग्रांट ने अपना हैटवाला माथा ऊपर उठाया, आँखें बंद कीं, अपनी दाढ़ी सहलाई और विश्वास के स्वर में बोला, हम ऐसे ही लड़ाई लड़ते रहेंगे, चाहे पूरी गरमी इसे क्यों न जारी रखनी पड़े। और जनरल ने उसी तरीके से लड़ाई लड़ी, जो तरीका उसने चुना। इस तरह मजबूत इच्छाशक्ति से लैस एक व्यक्ति के दृढ़ निर्णय की बदौलत अंतिम जीत हासिल हुई, जिससे देशों का संघ बचा।

एक थॉट स्कूल का कहना है कि—राइट मेक्स माइट (जो सही है, वही मजबूत है।) दूसरे थॉट स्कूल का कहना है—माइट मेक्स राइट (जो मजबूत है, वही सही है।) लेकिन सोचवाले व्यक्ति जानते हैं कि इच्छा की शक्ति मजबूत बनाती है, चाहे वह सही हो या गलत और इतिहास इस बात का गवाह है। महान् उपलब्धियाँ हासिल करनेवाले व्यक्तियों के जीवन व कृतित्व पर गौर करने के बाद आप पाएँगे कि उनकी सफलता में प्रभावी भूमिका का श्रेय इच्छाशक्ति के संगठित और दृढ़तापूर्वक इस्तेमाल को जाता है। उसके साथ-साथ आप यह भी पाएँगे कि सफल व्यक्ति अपने ऊपर थोपी गई नियंत्रण से बाहर की परिस्थितियों में उलझने के बजाय आत्म-अनुशासन की एक बड़ी व्यवस्था के प्रति समर्पित रहे।

जब अन्य लोग सोते रहे, तो वे काम करते रहे। वे एक कदम आगे बढ़े, फिर दुबारा कदम बढ़ाया और बढ़ते ही रहे, जब तक कि अपनी क्षमता के अनुरूप बेहतर सेवा अर्पित न कर दी। सिर्फ एक दिन उनके पदचिह्नों पर चलकर देखें और आप आश्वस्त हो जाएँगे कि उन लोगों को किसी टास्कमास्टर की जरूरत नहीं पड़ी, जो उन्हें हाँके। वे अपनी व्यक्तिगत पहल की प्रेरणा से आगे बढ़े और अपने प्रयासों को कड़े आत्म-अनुशासन से निर्देशित किया। उन्होंने हौसला बढ़ाए जाने का स्वागत किया, लेकिन एक्शन में आने के लिए उन्हें किसी के द्वारा उत्प्रेरित किए जाने की जरूरत नहीं पड़ी। उन लोगों ने अपनी निंदा प्रेमपूर्वक सुनी, लेकिन उसकी परवाह नहीं की और उससे हतोत्साहित नहीं हुए।

वे कभी-कभी असफल भी हुए, अन्य लोगों की तरह उन्हें भी अस्थायी हार का सामना करना पड़ा, लेकिन असफलता उनके लिए सिर्फ और बेहतर प्रयत्न करने में सहायक साबित हुई।

अड़चनों से उन्होंने मोर्चा लिया, जैसे सब लेते हैं, लेकिन अड़चनें उलटे उनके लिए लाभकारी सिद्ध हुईं, क्योंकि अपने लक्ष्य तक पहुँचना आसान हो गया। उन्होंने हौसला पस्त करने के प्रयास भी झेले—ठीक वैसे ही जैसे अन्य लोगों के साथ होता है। लेकिन उन लोगों ने अप्रिय अनुभवों के दिमाग में घुसने का दरवाजा मजबूती से बंद रखा और सारी निराशाओं को नई ऊर्जा में तबदील कर डाला, जिसकी बदौलत जीत की ओर बढ़ते गए। जब मृत्यु ने उनके परिवार पर हमला किया तो मृतक का संस्कार तो किया, मगर अपनी दबंग इच्छाशक्ति का नहीं। उन लोगों ने दूसरों की सलाह ली और उससे प्राप्त उदाहरण में

से काम के लायक रखा तथा बाकी को छोड़ दिया, जबकि सारी दुनिया उनके निर्णय की आलोचना करती रही। वैसे लोग जानते हैं कि अपने जीवन की सारी परिस्थितियों को वे वश में नहीं रख सकते। वे अपनी दिमागी स्थिति और मानसिक प्रतिक्रियाओं को सारी परिस्थितियों के हिसाब से नियंत्रित रखते हैं तथा इसके लिए दिमाग को हमेशा सार्थक सोच में लीन रखते हैं। उनकी भी जाँच अन्य लोगों की तरह नकारात्मक भावनाओं की कसौटी पर होती है, लेकिन ऐसी भावनाओं से ऊपर उनका हाथ रहता है और इन भावनाओं को वे अपने पाँव के नीचे रखते हैं।

हम दिमाग में यह बैठाकर चलें कि आत्म-अनुशासन के माध्यम से कोई व्यक्ति दो महत्त्वपूर्ण काम कर सकता है, दोनों ही उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए जरूरी हैं। पहला है, व्यक्ति अपनी नकारात्मक भावनाओं को पूर्ण नियंत्रण में लेकर उन्हें सृजनात्मक प्रयत्न में तबदील करे, ताकि उनका इस्तेमाल बेहतर प्रयत्नों की प्रेरणा के रूप में हो। दूसरे, व्यक्ति सकारात्मक सोचों को वांछित लक्ष्य हासिल करने की दिशा में लगा सकता है। इस तरह नकारात्मक और सकारात्मक भावनाओं के नियंत्रण में आ जाने से तर्क की फैकल्टी तथा कल्पना की फैकल्टी का स्वतंत्र रूप से काम करना आसान हो जाता है। भावनाओं पर नियंत्रण धीरे-धीरे वैचारिक आदतों के विकास के जरिए हासिल होता है, जिन पर नियंत्रण सहज है। ऐसी आदतें जीवन की छोटी, अनावश्यक परिस्थितियों के सिलसिले में बननी चाहिए। यह सही भी है, जैसा कि सुप्रीम कोर्ट के जज ब्रैंडेइस ने एक बार कहा था—दिमाग हाथ की तरह है। यह इस्तेमाल से बढ़ता है।

दिमाग के छह प्रकोष्ठों पर नियंत्रण

आत्म-अनुशासन के जरिए दिमाग के छह प्रकोष्ठों को एक-एक करके पूरी तरह नियंत्रण में लाया जा सकता है, लेकिन इसकी शुरुआत आदतों से होनी चाहिए तो पहले भावनाओं को नियंत्रित करें। यह सही है कि ज्यादातर लोग जीवन भर अनियंत्रित भावनाओं के मारे रह जाते हैं। अधिकांश लोग अपनी भावनाओं के नौकर हैं, मालिक नहीं, क्योंकि उन लोगों ने भावनाओं पर काबू पाने के लिए कभी निश्चित, व्यवस्थित आदतें स्थापित करने की कोशिश नहीं की।

अपने दिमाग के छह प्रकोष्ठों को नियंत्रित करने की ठान मुझे प्रत्येक व्यक्ति को, जिसने आत्म-अनुशासन की कड़ी व्यवस्था के जरिए प्रयास शुरू किया हो, अपने लक्ष्य को सामने लाने के लिए एक निश्चित योजना का मसौदा तैयार करना चाहिए।

इस दर्शन के एक छात्र ने इसके लिए एक फरमान तैयार किया और ऐसे उसका अनुसरण किया कि वह जल्द ही पूरी तरह से आत्म-अनुशासनात्मक चेतना संपन्न बन गया।

इसने इतना सफलतापूर्वक काम किया कि इस दर्शन को अन्य छात्रों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है छात्र ने उस फरमान पर दस्तखत किए और उसे रोज दो बार दुहराया—एक बार सुबह बिस्तर छोड़ने के समय और दूसरी बार रात को बिस्तर पर जाने के वक्त। इस प्रक्रिया से छात्र को स्वयं को सलाह देनेवाले सिद्धांत का लाभ मिला। इसके माध्यम से उस फरमान का लक्ष्य दिमाग के अवचेतन हिस्से में स्पष्ट रूप में चला गया। वहाँ इस लक्ष्य ने पिक-अप लिया और स्वचालित तरीके से काम करने लगा। उस फरमान की प्रति मैंने

आपके ओरिएंटेशन पैकेट्स में संलग्न कर दी है। मैं उसे अभी पढ़ूँगा, ताकि आपको शुरू करने में सहूलियत हो।

आत्म-अनुशासन के लिए पागलपन

इच्छाशक्ति यह मानकर कि इच्छा की शक्ति हमारे दिमाग के सभी प्रकोष्ठों के लिए सुप्रीम कोर्ट है, मैं इसका रोज अभ्यास करूँगा, जब मुझे किसी लक्ष्य को एक्शन में लाने की जरूरत होगी। फिर मैं एक बार रोज अपनी इच्छाशक्ति को एक्शन में लाने के लिए उस हिसाब से अपनी आदतें बनाऊँगा।

भावनाएँ—यह मानकर कि भावनाएँ नकारात्मक और सकारात्मक दोनों हैं, मैं रोजमर्रा की आदत डालूँगा, जो सकारात्मक भावनाओं के विकास को प्रोत्साहित करेंगी तथा नकारात्मक सोचों को कुछ उपयोगी कामों की योजना में बदल देंगी।

तर्क—यह मानकर चलते हुए कि सकारात्मक और नकारात्मक भावनाएँ अगर नियंत्रित करके वांछित साध्य की ओर न ले जाया जाए, तो ये खतरनाक साबित हो सकती हैं। मैंने अपनी सारी इच्छाओं, लक्ष्यों, उद्देश्यों को तर्क फैकल्टी के जिम्मे लगा दिया और इन्हें व्यक्त करने के लिए, मैं इससे निर्देशित होऊँगा।

कल्पना—अपनी आकांक्षा पूरी करने के लिए ठोस योजना और विचार की जरूरत के मद्देनजर मैं इसे अपनी कल्पना में शामिल करके अपनी योजना बनाने में मदद के लिए रोज एक बार याद करूँगा।

चेतना—यह मानकर कि भावनाएँ बेहद उत्साह में प्रायः गलतियाँ करती हैं और हमारी तर्क फैकल्टी भी अक्सर ही उतनी उष्ण अनुभूति नहीं रखतीं, जो हमें अपने निर्णयों में थोड़ी दया की भावना जोड़ने में जरूरी लगती है। मैं अपनी चेतना को प्रोत्साहित करूँगा, ताकि मुझे सही और गलत का बोध कराए, लेकिन मैं कभी भी इसके फैसले को निरस्त नहीं करूँगा, चाहे उसके लिए कुछ भी भुगतना पड़े, परवाह नहीं।

याददाश्त—सावधान याददाश्त के महत्त्व को समझते हुए मैं स्वयं को इतना एलर्ट बनाऊँगा कि मेरी याददाश्त में हमेशा वे विचार ताजा रहें, जो मैं याद करना चाहूँ और स्पष्ट तौर पर उन विचारों को संबंधित विषयों से जोड़ सकूँ, जो मैं हमेशा दिमाग में रखता हूँ।

अवचेतन मस्तिष्क—इच्छा की शक्ति पर अपने अवचेतन मस्तिष्क के प्रभाव के मद्देनजर मैं इस बात का खयाल रखूँगा कि जीवन के प्रमुख लक्ष्य की स्पष्ट और निश्चित तसवीर इसके हवाले कर दूँ, जिसमें प्रमुख लक्ष्य की ओर ले जानेवाले सारे छोटे-मोटे लक्ष्य भी शामिल हों। मैं यह तसवीर अपने अवचेतन दिमाग के सामने हमेशा रखूँगा तथा रोज इसे दुहराऊँगा। एक दस्तखत भी साथ है। दिमाग पर अनुशासन थोड़ा-थोड़ा करके पाया जाता है। वैसी आदतें डालकर यह संभव है, जिन पर काबू पाया जा सके। आदतें दिमाग में बनती हैं, इसलिए इस फरमान को रोज दुहराकर आदत के प्रति चेतना विकसित होगी। इसका संबंध उस खास तरह की आदतों से है, जिनकी जरूरत दिमाग के छह प्रकोष्ठों के विकास और नियंत्रण के लिए है।

इन प्रकोष्ठों का नाम भी सिर्फ दुहराने का असर होता है। इससे व्यक्ति चेतता है कि इन

सारे प्रकोष्ठों का अस्तित्व है, ये आवश्यक हैं, ये विचारों एवं आदतों से नियंत्रित किए जा सकते हैं और इन आदतों की प्रकृति आत्म-अनुशासन के मामले में किसी की भी सफलता और विफलता निर्धारित करती है।

किसी भी व्यक्ति के जीवन का वह दिन महान् है, जब वह इस तथ्य को समझ ले कि पूरे जीवन में सफलता और विफलता—भावनाओं के नियंत्रण पर काफी कुछ निर्भर करती हैं। इस सत्य को जान लेने से पहले हमें यह भी समझना होगा कि हमारी भावनाओं का अस्तित्व और प्रकृति किस प्रकार की है, इसके साथ ही शक्ति भी, जो उनके पास उपलब्ध है, जो उस पर नियंत्रण रखते हैं। इन भावनाओं का कैसा रूप है, जिसमें कई लोग जीवन भर उलझना नहीं चाहते।

नकारात्मक भावनाएँ—यह सबसे बड़ा शत्रु है। यह सर्वविदित तथ्य है कि वैसा शत्रु जिसे इस रूप में मान्यता मिल चुकी है, वह शत्रु आधा पराजित है। और यह उन शत्रुओं पर लागू होता है, जो अपने ही दिमाग के अंदर मौजूद हैं और वैसे ही शत्रुओं जैसा है, जो बाहर से अपना काम करते हैं। यह तथ्य मुख्य रूप से नकारात्मक भावनाओं के शत्रुओं पर लागू होता है। ऐसे शत्रुओं की पहचान हो जाने के बाद व्यक्ति अवचेतन अवस्था में ही आत्म-अनुशासन के जरिए वैसी आदतें बनाने लगता है, जिनकी बदौलत वैसी नकारात्मक भावनाओं से लड़ा जा सके।

यही तर्क सकारात्मक भावनाओं के लाभों पर भी लागू होता है, जहाँ यह सही है कि जिस लाभ को मान्यता मिल गई, उसका आसानी से उपयोग होता है। सकारात्मक भावनाएँ फायदेमंद हैं, क्योंकि ये दिमाग की संचालन शक्ति का हिस्सा हैं। ये तभी मददगार हैं, जब निश्चित और सृजनात्मक साध्य की दिशा में ये निर्देशित तथा संगठित हों। अगर ये उस तरह से नियंत्रित नहीं की गईं, तो नकारात्मक भावनाओं की तरह ही खतरनाक हो सकती हैं।

भाव नियंत्रण का माध्यम है आत्म-अनुशासन, जो स्वैच्छिक तथा व्यवस्थित तरीके से वैचारिक आदतों के माध्यम से प्रयोग में लाया जाए। उदाहरण के लिए, आस्था की भावना को लें, यह सभी भावनाओं में सबसे ज्यादा शक्तिशाली है, जो तभी मददगार है, जब निश्चित लक्ष्य पर आधारित सृजनात्मक, संगठित एक्शन के जरिए व्यक्त की जाए। आत्म-अनुशासन के माध्यम से कोई भी व्यक्ति निश्चित लक्ष्य पर दृढ़ रहकर आस्था की भावनाओं को गतिशील बना सकता है।

आदतों को स्थापित करके अनुशासन की शुरुआत करनी चाहिए, जो इच्छा की शक्ति के इस्तेमाल को उत्साह प्रदान करता है, क्योंकि यह ईगो इच्छाशक्ति का स्रोत है, जहाँ से इच्छा पैदा होती है। इस तरह इच्छा और आस्था की भावनाएँ निश्चित रूप से आपस में जुड़ी हैं। जब कभी ज्वलंत इच्छा उभरती है, वहीं आस्था की क्षमता का भी अस्तित्व है, जो इच्छा की तीव्रता से संवाद स्थापित करती है। ये दोनों हमेशा साथ चलते हैं। एक को आगे बढ़ाओ, दूसरा भी साथ आगे बढ़ेगा। एक को संगठित आदतों से नियंत्रित और निर्देशित करो, आपका दूसरे पर नियंत्रण स्थापित हो जाएगा तथा आपके निर्देश पर चलेगी। यह बहुत ही ऊँचे दरजे का आत्म-अनुशासन है।

इंग्लैंड के एक प्रधानमंत्री का आत्म-अनुशासन इंग्लैंड के प्रधानमंत्रियों की सूची में सबसे

महान् दरजा बेंजामिन डिजराइली को प्राप्त है। उनकी महान् उपलब्धियों का सिर्फ एक पंक्ति में बखान किया जा सकता है—सफलता का राज लक्ष्य के प्रति तत्परता है। उन्होंने अपना कॅरियर एक लेखक के रूप में शुरू किया, मगर उस क्षेत्र में ज्यादा सफलता नहीं मिली। उनकी एक दर्जन या उससे अधिक किताबें पाठकों पर कोई खास प्रभाव नहीं छोड़ पाईं। उसके बाद डिजराइली ने राजनीति में प्रवेश किया और दिमाग में सेट कर लिया कि उन्हें देश का प्रधानमंत्री बनना है, जब ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार नहीं हुआ था।

वे मेडस्टोन से संसद् सदस्य चुने गए, लेकिन संसद् में उनका पहला भाषण असफलता का परिचायक माना गया।

अपना संघर्ष जारी रखते हुए डिजराइली हाउस ऑफ कॉमंस के नेता और बाद में चांसलर ऑफ एक्सचेकर बने। उसके बाद उन्होंने अपने निश्चित प्रमुख लक्ष्य को पहचाना, जब प्रधानमंत्री के पद तक पहुँचे। यहाँ उन्हें जबरदस्त विरोध का सामना करना पड़ा और इस्तीफा देने की नौबत आ गई, लेकिन वे अपने लक्ष्य की ओर फिर लौटे और दूसरी बार प्रधानमंत्री चुने गए। उसके बाद वे साम्राज्य के महान् निर्माता साबित हुए। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि रही—स्वेज नहर का निर्माण। अगर डिजराइली का कॅरियर आत्म-अनुशासन पर निर्मित नहीं होता, तो इसमें से कुछ भी संभव नहीं होता। डिजराइली ने अधिकांश लोगों के तमाम खतरे के निशानों को पीछे धकेलकर अतीत की परवाह न करते हुए महान् उपलब्धि हासिल की। जब सामने कठिन चुनौती आती है, तो लोग रास्ते से पीछे हट जाते हैं और काम छोड़ देते हैं। उस रास्ते पर भी वे आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं जुटा पाते, जो रास्ता उन्हें विजय की ओर ले जाएगा।

भारी विरोध की चुनौती का सामना करने के लिए सबसे ज्यादा जरूरत होती है मजबूत इच्छाशक्ति की। आत्म-अनुशासन ऐसी किसी भी आपदा में यह इच्छाशक्ति प्रदान करेगा, चाहे वह छोटी हो या बड़ी।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट इस बात के दूसरे उदाहरण हैं कि उस समय क्या होता है, जब एक नेता विकलांग होने के बावजूद जीतने की दृढ़ इच्छा के वशीभूत होकर कदम उठाता है। युवावस्था में वे साँस और आँख की भयंकर बीमारी से पीड़ित थे। उनके मित्रों ने रूजवेल्ट के बारे में धारणा बना ली कि अब वे ठीक नहीं हो सकते, इसीलिए उन्हें उपलब्धि हासिल करनेवालों की सूची से निकाल दिया था, लेकिन युवा रूजवेल्ट अपने मित्रों की राय से सहमत नहीं हुए। इसका श्रेय जाता है आत्म-अनुशासन की शक्ति को, जिसे उन्होंने पहचाना।

वे पश्चिम गए, कड़ी मेहनत करनेवाले मजदूरों की टोली में शामिल हुए और खुद को आत्म-अनुशासन की एक निश्चित व्यवस्था से जोड़ा। उसके जरिए थियोडोर ने अपना शरीर और दिमाग मजबूत बनाया। कुछ डॉक्टरों ने भी कहा कि वे ये काम नहीं कर पाएँगे, लेकिन उन्होंने डॉक्टरों की बात नहीं स्वीकारी।

अपना स्वास्थ्य ठीक करने के लिए उन्होंने अपने को अद्भुत अनुशासन से बाँधा और पूरब की ओर गए, राजनीति में प्रवेश किया। अपनी इच्छाशक्ति का इतनी मजबूती से संचालन किया कि वह रूजवेल्ट को अमेरिका के राष्ट्रपति पद तक ले गई।

रूजवेल्ट को भलीभाँति से जाननेवालों का कहना है कि सबसे बड़ा गुण उनकी

इच्छाशक्ति थी, जिसने अपनी महान् कोशिशों के परिणाम तक पहुँचने से कम किसी भी पड़ाव को हार या असफलता मान लिया था। ऐसी दृढ़ इच्छाशक्ति के सिवाय कोई भी योग्यता, शिक्षा और अनुभव कुछ भी बेहतर नहीं था, जो उनके आसपास के लोगों के पास था।

जब वे राष्ट्रपति बने तो सेना के कुछ अफसरों ने उनके एक आदेश को लेकर शिकायत की, जिसमें फैजियों को शारीरिक रूप से फिट रहने को कहा गया था। यह दिखाने के लिए कि उन्हें पता है कि आदेश क्या है। राष्ट्रपति ने ऊबड़-खाबड़ वर्जीनिया रोड पर लगभग सौ मील तक घुड़सवारी की। उनके साथ सैनिक अधिकारी भी थे, जिन्हें उन्होंने काफी पीछे रखा। इस शारीरिक एक्शन के अलावा रूजवेल्ट के पास एक सक्रिय दिमाग था, जो अडिग था कि शारीरिक कमजोरी से अपने को विकलांग महसूस न करें। ह्वाइट हाउस के पूरे कार्यकाल के दौरान रूजवेल्ट की दिमागी सक्रियता उनके हर काम में झलकती दिखी।

जब दिमाग कहता है कि आगे बढ़ो, शरीर उसके कमांड का अनुपालन करता है और इस तरह एंड्रयू कार्नेगी के इस कथन की सच्चाई साबित होती है कि हमारी सीमाएँ सिर्फ वहीं तक हैं, जो हमने अपने दिमाग में सेट कर रखी हैं। एक फ्रांसीसी अभियान में पनामा नहर बनाने की कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली। थियोडोर रूजवेल्ट ने कहा—नहर बनेगी और वे उसी समय एक्शन में आ गए, ताकि अपने वायदे को विश्वास के साथ अमली जामा पहनाया जाए। पनामा नहर बनकर तैयार हुई। जीत की इच्छा व्यक्तिगत शक्ति में लिपटी थी, लेकिन यह एक्शन का रूप सिर्फ आत्म-अनुशासन के जरिए ले सकती थी और दूसरा कोई तरीका नहीं था।

आशा और प्रयास की कीमत मिलती है

रॉबर्ट लुई स्टीवेंसन जन्म के समय से ही शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर थे। करीब सत्रह वर्ष की उम्र तक उनके स्वास्थ्य ने पढ़ाई के दौरान कठिन कार्य करने की इजाजत नहीं दी। 23 वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते स्टीवेंसन शरीर से इतने लाचार हो गए कि उनके चिकित्सकों ने उन्हें दक्षिण की ओर भेज दिया। वहाँ उन्हें अपनी पसंद की महिला मिली और उन्हें उससे प्रेम हो गया। उस महिला के प्रेम ने वह असर डाला कि युवक स्टीवेंसन ने एक नया जीवन प्राप्त किया, उनकी दुनिया ही बदल गई।

एक नई ऊर्जा के संचार ने उन्हें एक्शन में ला दिया और वे लिखने लगे। हालाँकि उनका शरीर और स्वास्थ्य प्रेमिका की तरह साथ देने लायक नहीं हुआ था, लेकिन मन और अपने लक्ष्य का सफर जारी रखने की शक्ति इतनी मजबूत थी कि प्रयास जारी रखा और वे लगातार लिखते रहे। इसका परिणाम विश्व साहित्य को अद्वितीय योगदान के रूप में सामने आया। स्टीवेंसन की मास्टर पीस देन को आज भी दुनिया याद करती है।

वैसे ही लक्ष्य और प्रेम ने स्टीवेंसन की तरह कई अन्य को भी विचार के पंख दिए, जिनकी बदौलत उन्होंने दुनिया को समृद्ध किया। प्रेम के बिना स्टीवेंसन मानवता को बिना कुछ दिए चले जाते। उन्होंने अपनी पसंद की महिला से प्रेम को साहित्य लेखन में तबदील कर दिया। आत्म-अनुशासन की आदतों की बदौलत प्राप्त इस अनुभूति ने स्टीवेंसन के दिमाग के छह प्रकोष्ठों को उनके अधीन कर दिया।

इसी तरीके से चार्ल्स डिकेंस ने एक प्रेम ट्रैजेडी को साहित्यिक कृतियों में तबदील कर दिया, जिससे विश्व साहित्य समृद्ध हुआ। अपने पहले प्रेम प्रसंग में मिली निराशा के धक्कों में घुलते रहने के बजाय डिकेंस ने स्वयं को लेखन में डुबोकर कार्यशील बनाया। इस तरह चार्ल्स डिकेंस अतीत के दुखद अनुभव को पीछे छोड़ आगे निकल गए, जिस हालत में लोग निराश होकर पलायन का बहाना बना देते हैं।

आत्म-अनुशासन के जरिए डिकेंस ने अपने सबसे बड़े दुःख को अपनी सबसे बड़ी संपत्ति में बदल डाला। यह उनके अंदर दूसरे आत्म की मौजूदगी दरशाती है, जहाँ जीनियस की शक्ति रहती है और जिसने उनकी कलम से उत्कृष्ट रचनाएँ व्यक्त कीं। दुःख और निराशा पर मास्टरी का एक अपराजेय नियम है। नियम यह है कि निश्चित योजना के जरिए खुद को निरंतर काम में व्यस्त रखकर चोट खाई संवेदनाओं को दिमाग से निकाल दिया जाए। इस नियम का कोई सानी नहीं और उनकी शक्ति का राज है—आत्म-अनुशासन।

शरीर और मन की मुक्ति तथा आजादी और आर्थिक सुरक्षा—व्यक्तिगत पहल के परिणाम हैं, जो आत्म-अनुशासन के माध्यम से व्यक्त होते हैं। ये सार्वभौम इच्छाएँ पूरी करने का और कोई जरिया नहीं हैं।

यात्रा के अंतिम पड़ाव पर

हम अब अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव पर हैं। दूर होकर भी आप लोग अब तक की यात्रा के अनुभवों को याद रखें। जो भी निर्देश मैंने आपको दिए हैं, अगर आपने सही मानसिक वृत्ति के साथ उन पर अमल किया है, तो फिर महान् मास्टर चाबी आपके हाथ में है, जो सफलता और धनकुबेर का दरवाजा खोलेगी।

अब मैं आपको बेहद महत्त्वपूर्ण एक महान् सत्य से अवगत कराता हूँ। सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी पूरी तरह मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति में समाई है और वह है विचार की शक्ति।

मास्टर चाबी पर पूर्ण अधिकार आप अपने दिमाग पर काबू करके पा सकते हैं और इसका माध्यम है कड़ा आत्म-अनुशासन। आत्म-अनुशासन के माध्यम से आप अपने विषय में सोच सकते हैं, चाहे जीवन की कोई भी, और कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो।

आत्म-अनुशासन अपनी मानसिक वृत्ति को नियंत्रित करने में आपको मदद करेगा। आपकी मानसिक वृत्ति जीवन की हर परिस्थिति पर काबू पाने में सहूलियत देगी। इसकी बदौलत हर प्रतिकूलता, हार, असफलता को उसी अनुपात में आशा और विश्वास में बदलने में आसानी होगी। यही कारण है कि सकारात्मक मानसिक वृत्ति धनकुबेर के बारह फॉर्मूलों की सूची में शीर्ष पर है। अतएव आपके सामने स्पष्ट है कि महान् धनकुबेर चाबी कमोबेश आत्म-अनुशासन है, जो अपने दिमाग पर पूरी तरह काबू पाने के लिए जरूरी है।

आप जहाँ कहीं भी खड़े हैं, वहीं से शुरू करें और अपने ऊपर नियंत्रण करें। अभी शुरू हो जाएँ और पुराने आत्म को पीछे धकेल दें, जिसने आपको गरीबी तथा परेशानी में रखा। दूसरे आत्म को पहचानें, उसे अपनाएँ, जो आपको वह सारा कुछ देगा, जो आपके मन में कुलबुलाता है। याद रहे, यह बहुत महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि एक ही चीज पर आपका पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए और वह है—आपकी मानसिक वृत्ति।

बत्तियाँ मद्धिम हो गईं। विशिष्ट धनकुबेर अँधेरे में उसी रहस्यमय ढंग से गायब हो गए, जैसे मंच पर आए थे, लेकिन श्रोताओं की उस विशाल मंडली के प्रत्येक सदस्य को उस विशिष्ट वक्ता ने एक नई आशा, विश्वास और नया हौसला प्रदान किया।

जब बत्ती दुबारा जली तो श्रोताओं में से कई अपनी-अपनी सीटों पर बैठे आपसी विचार-विमर्श से सफलता दर्शन को पचाने की कोशिश में जुटे दिखे, जो उन्होंने अभी सुना था। सभी ने महसूस किया कि वे बड़े भाग्यशाली रहे कि उन्हें ऐसे ज्ञानी और आश्चर्यजनक व्यक्ति के साथ समय गुजारने का अवसर मिला। हमें उम्मीद है कि इस कहानी को पढ़ने के बाद आप उन आशीर्वचनों से लाभान्वित होंगे, जो इसमें वर्णित हैं। हमें आशा है कि आज और अभी से ही आप अपने दिमाग और मानसिक वृत्ति पर पूरा नियंत्रण महसूस करेंगे। यही एकमात्र चीज है, जिस पर आपका पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए, ताकि आप इसे अपने जीवन के किसी भी बिंदु की ओर अपनी इच्छानुकूल और पसंदीदा तरीके से मोड़ सकें।

अगर यह किताब आपको इस महान् सत्य के सिवाय और कुछ नहीं दे पाए, तो इसका मतलब आपको अतुलनीय महत्त्व की संपत्ति इससे हासिल हो गई और वही है—सुपर अमीर बनने की मास्टर चाबी!

❑❑❑

E-Books

Best Telegram Channel for Every Book Lovers. Join today and Enjoy Reading .

Link of this Channel - t.me/Ebooks_Encyclopedia27

What you can find here?

Thousands of Books

Every Category of E-Books

New and Popular Books

And many More Things

Don't forget to Join Our All Channels

For Marathi Books - @MarathiEbooks4all

For Hindi Books - @HindiEbooks4all